CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

॥ श्रीहरिः ॥

गीता-दैनन्दिनी

सन् १९९४ ई०

(संवत् २०५०-५१)

गीताप्रेस, गोरखपुर

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

॥ श्रीहरिः ॥

गीताप्रेसकी निजी दूकानें तथा स्टेशन-स्टालें

(१) **कलकत्ता**– गोविन्दभवन-कार्यालय; ☎ २३८६८९४
१५१, महात्मा गाँधीरोड। पिन ७००००७ ,, २३८०२५१

(२) **दिल्ली**– गीताप्रेस, गोरखपुरकी पुस्तक-दूकान; ,, ३२६९६७८
२६०९, नयी सड़क। पिन ११०००६

(३) **पटना**– गीताप्रेस, गोरखपुरकी पुस्तक-दूकान;
अशोक-राजपथ, बड़े अस्पतालके सदर
फाटकके सामने, पिन ८००००४

(४) **कानपुर**– गीताप्रेस, गोरखपुरकी पुस्तक-दूकान; ,, २५२३५१
२४/५५, बिरहाना रोड। पिन २०८००१

(५) **वाराणसी**–गीताप्रेस, कागज-एजेन्सी; ,, ५७१५१
५९/९, नीचीबाग। पिन २२१००१

(६) **हरिद्वार**– गीताप्रेस, गोरखपुरकी पुस्तक-दूकान;
सब्जीमण्डी, मोतीबाजार। पिन २४९४०१

(७) **ऋषिकेश**–गीताभवन, गङ्गापार, पो० स्वर्गाश्रम। ,, ३०१२२
पिन २४९३०४

स्टेशन-स्टालें

(१) दिल्ली-जंक्शन, प्लेट फार्म नं० १; (२) नयी दिल्ली, प्लेटफार्म नं० ८-९; (३) अन्तर्राज्यीय बस-अड्डा-दिल्ली; (४) निजामुद्दीन, (नयी दिल्ली) प्लेटफार्म नं० ४-५; (५) कानपुर, प्लेटफार्म नं० १; (६) गोरखपुर, प्लेटफार्म नं० १; (७) वाराणसी, प्लेटफार्म नं० ३; (८) हरिद्वार, प्लेटफार्म नं० १; (९) कोटा (राजस्थान) प्लेटफार्म नं० १; (१०) पटना-जंक्शन, पुस्तक-ट्रॉली; (११) हॉवड़ा, न्यू कॉम्प्लेक्स, प्लेटफार्म नं० १८के पास।

सं० २०४९ प्रथम संस्करण	२५,०००
सं० २०५० द्वितीय संस्करण	५०,०००
	योग ७५,०००

मूल्य—बीस रुपये

प्रकाशक—**गोविन्दभवन-कार्यालय, गीताप्रेस, गोरखपुर**
मुद्रक—**गीताप्रेस, गोरखपुर—२७३००५, दूरभाष-३३४७२१**

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

॥ श्रीहरिः ॥

गीता-दैनन्दिनी

पूरे वर्षमें सम्पूर्ण गीताका पाठ और मनन करनेकी दैनिक चर्या

[सन् १९९४ ई०]

हिन्दी, अंग्रेजी, पंजाबी और नये भारतीय शक-संवत्के
दिनाङ्क एवं तिथि, पर्व, नक्षत्रादिसहित

अभ्यासकर्ताके नाम-पता आदि

नाम दण्डि स्वामी विमलानन्द सरस्वती

पता (१) बी० ३/१७५, शिवालाघाट, वाराणसी।

(२) श्री स्वामी सहजानन्द सरस्वती-आश्रम,
बक्सर-चौसा-राजपथ, बक्सर.

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

विवेकका आदर करे और विवेकसे श्रेष्ठ जो सत्य-तत्त्व है, उसकी प्राप्तिमें अपना समय लगाये, बुद्धि लगाये और उसीको प्राप्त करे; तो फिर मरनेके बाद भी दुःख नहीं होगा। रुपये, वस्तु, व्यक्ति आदि सब यहीं रह जायँगे, साथ नहीं चलेंगे, पर सत्य पीछे नहीं रहेगा, उसकी प्राप्ति हो जायगी और सदाके लिये शान्ति हो जायगी।

जो सत्य-तत्त्व है, उसीको परमात्मा कहते हैं। जो सर्वथा सत्य है, जिसका कभी विनाश नहीं होता, ऐसे अविनाशी तत्त्वको प्राप्त करना ही मनुष्यका खास ध्येय है, लक्ष्य है। उसको प्राप्त कर लिया, तो मनुष्यजन्म सफल हो गया। अगर उसको प्राप्त नहीं किया, तो मनुष्यजन्म सफल नहीं हुआ।

खाना-पीना आदि तो कुत्ते, सूअर और गधे भी करते हैं। इसकी कोई विशेष महिमा नहीं है। विशेष महिमा तो परमात्मतत्त्वको प्राप्त करनेमें ही है, जिसमें हमारा और दुनियाका बड़ा भारी हित है। गोस्वामी तुलसीदासजी-जैसे जो अच्छे-अच्छे महात्मा हो गये हैं, उन्होंने अपना भी कल्याण किया और दुनियाका भी कल्याण किया। उनकी वाणीसे आज भी दुनियाका कल्याण होता है। ऐसे उपकार कोई धनी-से-धनी व्यक्ति भी नहीं कर सकता। अतः सत्यकी प्राप्तिका ही उद्देश्य मुख्य रहना चाहिये। रुपये भी सत्यकी तरफ लगें, वस्तुएँ भी सत्यकी तरफ लगें, मनुष्य भी सत्यकी तरफ लगे और विवेक भी सत्यकी तरफ लगे, तब तो उन्नति है। परन्तु परमात्माकी परवाह न करके नाशवान् पदार्थोंकी परवाह की जाय और पदार्थोंसे भी अधिक रुपयोंको पैदा करने और संग्रह करनेको महत्त्व दिया जाय, तब तो पतन-ही-पतन है।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

ॐ

अथ श्रीमद्भगवद्गीता

प्रथमोऽध्यायः

धृतराष्ट्र उवाच

धर्मक्षेत्रे कुरुक्षेत्रे समवेता युयुत्सवः। मामकाः पाण्डवाश्चैव किमकुर्वत संजय ॥ १ ॥

संजय उवाच

दृष्ट्वा तु पाण्डवानीकं व्यूढं दुर्योधनस्तदा। आचार्यमुपसङ्गम्य राजा वचनमब्रवीत् ॥ २ ॥

सूर्योदय ६।४६ सूर्यास्त ५।१४	*dhṛtarāṣṭra uvāca* *dharmakṣetre kurukṣetre samavetā yuyutsavaḥ।* *māmakāḥ pāṇḍavāścaiva kimakurvata sañjaya ॥ 1 ॥* *sañjaya uvāca* *dṛṣṭvā tu pāṇḍavānīkaṁ vyūḍhaṁ duryodhanastadā।* *ācāryamupasaṅgamya rājā vacanamabravīt ॥ 2 ॥*	भा० ११ पौष शक १९१५ पं० १८ पौष

पौष कृष्ण ४, वि०सं० २०५०, शनिवार, व्ययनाम संवत्सर,
श्रीकृष्ण-सं० ५२१९, JAN.1.1994

श्रीगणेशचतुर्थीव्रत

(१) सुषुप्तिकाले मनसि प्रलीने
नैवास्ति किञ्चित् सकल प्रसिद्धे।
अतः मनोकल्पित एव पुंसः
संसार एतस्य न वस्तुतोऽस्ति॥

(२) देहादि सर्वं विषये परिकल्प्य रागं
बध्नाति तेन पुरुषं पशुवद् गुणेन,
वैरस्यमत्र विषवस्तु विधाय पश्चा-
देनं विमोचयति तन्मनस्य बन्धात्॥

आज प्रमोद कुमार देह से घर बीरपुर से आये
अतः काशी नहीं जा सका। सामान स्टेशन भेजदिया,

आत्मविश्वाससे धैर्य उत्पन्न होता है।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

पश्यैतां पाण्डुपुत्राणामाचार्य महतीं चमूम्। व्यूढां द्रुपदपुत्रेण तव शिष्येण धीमता ॥ ३ ॥
अत्र शूरा महेष्वासा भीमार्जुनसमा युधि। युयुधानो विराटश्च द्रुपदश्च महारथः ॥ ४ ॥

सूर्योदय ६।४६ सूर्यास्त ५।१५

paśyaitāṁ pāṇḍupūtrāṇāmācārya mahatīṁ camūm।
vyūḍhāṁ drupadaputreṇa tava śiṣyeṇa dhīmatā ॥ 3 ॥
atra śūrā maheṣvāsā bhīmārjunasamā yudhi।
yuyudhāno virāṭaśca drupadaśca mahārathaḥ ॥ 4 ॥

भा० १२ पौष पं० १९ पौष

आज प्रमोद कुमार के साथ स्टेशन, केवाव राय, बोकसा, पोस्टमास्टर, के यहाँ जलपान करके - गंगा-गुप्ता - एक्सप्रेस से काशी पहुँचे। एक बोरी चावल, एक बोरी गेहूँ तथा अन्य फुटकर कुछ सामान साथ आया।

स्वास्थ्य की स्थिति शोचनीय है।

(3) अनात्मबुद्धिं त्यज मूढबुद्धेः
त्वङ्मांस मेदोऽस्थि रोष राशौ।
सर्वात्मनि ब्रह्मणि निर्विकल्पे
कुरुष्व शांतिं परमां भजस्व॥

× × ×

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

धृष्टकेतुश्चेकितानः काशिराजश्च वीर्यवान्। पुरुजित्कुन्तिभोजश्च शैब्यश्च नरपुङ्गवः ॥ ५ ॥
युधामन्युश्च विक्रान्त उत्तमौजाश्च वीर्यवान्। सौभद्रो द्रौपदेयाश्च सर्व एव महारथाः ॥ ६ ॥

सूर्योदय ६।४६ सूर्यास्त ५।१५

dhṛṣṭaketuścekitānaḥ kāśirājaśca vīryavān।
purujitkuntibhojaśca śaibyaśca naraputigavaḥ ॥ 5॥
yudhāmanyuśca vikrānta uttamaujāśca vīryavān।
saubhadro draupadeyāśca sarva eva mahārathāḥ ॥ 6॥

भा० १३ पौष पं० २० पौष

आज भी जागरण का आयोजन किया। सायंकाल सुरेन्द्रनाथ शर्मा - सेवा - महेन्द्र आये। उनकी राय हुई कि नन्दमेहता वाले भी चिकित्सक को निदान के लिये दिखाया जाय। स्वीकार किया। संप्रति रुग्णावस्था एकदा अच्छी है।

लोकानुवर्तनं त्यक्त्वा त्यक्त्वा देहानुवर्तनम्।
शास्त्रानुवर्तनं त्यक्त्वा स्वाध्यायपरो भव ॥

× × ×

लोकवासनया जन्तोः शास्त्रवासनयापि च।
देहवासनया ज्ञानं यथावन्नैव जायते ॥
प्रारब्धं भुज्यते तूर्णं विदुषाऽविदुषापि किल।
धीरस्तत्रापि मनसा स्वाध्यायपरो भवेत् ॥

नाऽहं जीवः परं ब्रह्मेत्यात्मदृष्टिः सुनिश्चला।
वासना देहगा प्रायः स्वाध्यायपरो भव ॥

नेगा ज्योति काम नहीं देती, उसे पढ़ाने में भी माथा पच्ची है। जिसने अपरिग्रह गाँठ से जा लिया।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

अस्माकं तु विशिष्टा ये तान्निबोध द्विजोत्तम। नायका मम सैन्यस्य संज्ञार्थं तान्ब्रवीमि ते ॥ ७ ॥
भवान्भीष्मश्च कर्णश्च कृपश्च समितिंजयः। अश्वत्थामा विकर्णश्च सौमदत्तिस्तथैव च ॥ ८ ॥

सूर्योदय ६।४७ सूर्यास्त ५।१६

asmākaṁ tu viśiṣṭā ye tānnibodha dvijottama।
nāyakā mama sainyasya saṁjñārthaṁ tānbravīmi te ॥ 7 ॥
bhavānbhīṣmaśca karṇaśca kṛpaśca samitiñjayaḥ।
aśvatthāmā vikarṇaśca saumadattistathaiva ca ॥ 8 ॥

भा० १४ पौष पं० २१ पौष

आज प्रातः सुरेन्द्रनाथ शर्मा एवं चन्द्रभोहन प्राजनेयी का आश्रम लिखा। सुरेन्द्र और प्रमोद कुमार के लक्षण इनमें द्विगुणित गये। पत्र यथा शीघ्र सुरेन्द्र में दिया। जांघ की लौंडसगरा, रुधिरसर, तथा वंक्षण (जांघजन्या) ब्रह्मसूत्र ३३ पौंड।

लिंफ ग्रंथि में कोई दोष नहीं। क्लोमस्थान में कुष्ठकणी का शक्ति को अणुभाग हुआ। कुल मिलाकर तीन सप्ताह तक दवा चलेगी। भावना, आलू एवं मीठा का त्याग आदि वर्जित। कुलत्थ दो सप्ताह तक की दवा लेने में तथा जांच आदि में लोमकूपक लगे। पुनः कुष्ठ दवा तीन दिन की क्रम की। लंबी छड़ी ७ रुपये लगे।

"केश के संबंध में यह करुणाकल्पा प्रचलित है कि 'यह संसार में अन्त तक वेदना का भार वहन करेगा।' किसी वेदना [redacted] को वज्र करने वाले परमात्मा में विश्वास करना बेवकूफी की बात है और देहधारी परमात्मा में ही विश्वास नहीं करता। परन्तु मेरा विश्वास है कि सुख-दुख सहित प्रत्येक वस्तु, जिसका कि अस्तित्व है, उसमें और प्रत्येक प्रकार के जीवधारियों; मनुष्यजाति और मनुष्यों में, तथा समस्त विश्व में, केवल वही परमात्मा है, जो निरंतर उन्नतशील है। क्षण-क्षण में नई सृष्टि का निर्माण हो रहा है। धर्म की पूर्ण वही होता। यह अधिनियम कैसे है। अधिकांश संसार में जो आजकल है — एक जलप्रपात की तरह परंपरागत आदि है, एक दंड जो दोष हम औरों में देखते हैं, अपने में देखें, अपने से शुरू करें।
अन्याय नहीं।" सम्भाषण — रामकृष्णजी जीवनी से उद्धृत

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

अन्ये च बहवः शूरा मदर्थे त्यक्तजीविताः। नानाशस्त्रप्रहरणाः सर्वे युद्धविशारदाः॥ ९॥
अपर्याप्तं तदस्माकं बलं भीष्माभिरक्षितम्। पर्याप्तं त्विदमेतेषां बलं भीमाभिरक्षितम्॥ १०॥

सूर्योदय ६।४७ सूर्यास्त ५।१७

anye ca bahavaḥ śūrā madarthe tyaktajīvitāḥ।
nānāśastrapraharaṇāḥ sarve yuddhaviśāradāḥ॥ 9॥
aparyāptaṁ tadasmākaṁ balaṁ bhīṣmābhirakṣitam।
paryāptaṁ tvidameteṣāṁ balaṁ bhīmābhirakṣitam॥ 10॥

भा० १५ पौष पं० २२ पौष

जिस वस्तु के विषय में विचार किया जा रहा है, उस वस्तु से नहीं, अपितु जिस प्रकार विचार किया जाता है, इसके द्वारा ही विचार के मूल का निर्धारण होता है और इसके द्वारा ही हम यह जान (पा) सकते हैं कि कौन-सा विचार धर्ममूलक है। यदि कोई विचार किसी प्रकार की भी क्षति की परवाह किये बिना, निर्भीक रूप से एकान्त एकाग्रता के साथ स्वार्थरहित होकर सत्य की खोज में अग्रसर होता है तो उस विचार को ही मैं धर्ममूलक कहता हूँ।

* * *

सब नदियों में पवित्रतम नदी वह है जो आत्मा के अन्तरतम प्रदेश से, आत्मा की चट्टानों, बालू व हिमशैलों से अमन्द गति से प्रवाहित हो रही है। उसी में वह आदिमतम शक्ति निहित है, और उसे ही मैं धर्म कहता हूँ। सब पदार्थ इसी आत्मा की स्रोतस्विनी के अन्तर्गत हैं। यह आत्मा की स्रोतस्विनी इच्छा की सत्ता के गम्भीर अगाध रसभण्डार से निःसृत होकर, अनिवार्य छलनों को पार करती हुई, इसी चिन्मय, अनुच्छृत नियन्त्रित व समाधिमय मध्यस्थता के समुद्र में विलीन हो जाती है। तथा जिस प्रकार नदियों के →

ऊँचे-से-ऊँचा आसन उसीको मिलता है जो सब समय अपनेको सबसे नीचा रखना चाहता है।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

अयनेषु च सर्वेषु यथाभागमवस्थिताः। भीष्ममेवाभिरक्षन्तु भवन्तः सर्व एव हि ॥ ११ ॥
तस्य संजनयन्हर्षं कुरुवृद्धः पितामहः। सिंहनादं विनद्योच्चैः शङ्खं दध्मौ प्रतापवान् ॥ १२ ॥

सूर्योदय ६।४७ सूर्यास्त ५।१८

ayaneṣu ca sarveṣu yathābhāgamavasthitāḥ।
bhīṣmamevābhirakṣantu bhavantaḥ sarva eva hi ॥ 11 ॥
tasya sañjanayanharṣaṁ kuruvṛddhaḥ pitāmahaḥ।
siṁhanādaṁ vinadyoccaiḥ śaṅkhaṁ dadhmau pratāpavān ॥ 12 ॥

भा० १६ पौष पं० २३ पौष

शून्य-जल-भण्डार को पूर्ण करने के लिए समुद्र का जल घनीभूत होकर वाष्प बनकर मेघों के रूप में आकाश में एकत्र हो जाता है, सृष्टि का यह अविराम चक्र भी ठीक इसी प्रकार घूमता रहता है। मूल स्रोत से महासागर तक, और महासागर से मूल स्रोत तक यह सब ही एक शक्ति है, एक ही सत्ता है — जो अनादि और अनन्त है। इस सत्ता को भगवान (और कौन सा भगवान?) कहें या शक्ति (और कौन सी शक्ति?) कहें, इससे मुझे प्रयोजन नहीं है। इस सत्ता को प्रकृति भी कह सकते हैं। (परन्तु यह किस प्रकार की प्रकृति है, जबकि इसमें आत्मा की शक्तियाँ भी [redacted] विद्यमान हैं?) शब्द! शब्द! शब्दों के सिवाय यह और कुछ नहीं है। एकता, अमूर्त्त एकता नहीं, अपितु प्राणमय [redacted] जीवित एकता, यही इस सबका सार है। इसी एकता का मैं पुजारी हूँ, और यही वह एकता है [redacted] जिसकी सब धार्मिक [redacted], विश्वासी, और सब संशयवादी भी जो श्याम या अज्ञान रूप से अपने अन्दर वहन किये हुए हैं, समान रूप से पूजा करते हैं।"

* * *

बुरी पुस्तकोंका पढ़ना जहर पीनेके समान है।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

ततः शङ्खाश्च भेर्यश्च पणवानकगोमुखाः। सहसैवाभ्यहन्यन्त स शब्दस्तुमुलोऽभवत्॥ १३॥
ततः श्वेतैर्हयैर्युक्ते महति स्यन्दने स्थितौ। माधवः पाण्डवश्चैव दिव्यौ शङ्खौ प्रदध्मतुः॥ १४॥

सूर्योदय ६।४७ सूर्यास्त ५।१९

tataḥ śaṅkhāśca bheryaśca paṇavānakagomukhāḥ।
sahasaivābhyahanyanta sa śabdastumulo'bhavat॥ 13॥
tataḥ śvetairhayairyukte mahati syandane sthitau।
mādhavaḥ pāṇḍavaścaiva divyau śaṅkhau pradadhmatuḥ॥ 14॥

भा० १७ पौष पं० २४ पौष

श्री ओमप्रकाश राय
c/o श्री के० एन यादव
इण्को गेट नं०-1
घीयानगर - फूलपुर
इलाहाबाद।

सुरेन्द्र नाथ राय
क्वाटर नं० - 3141
सेक्टर - 4F
BOKARO STEEL CITY
PIN- 827004

भाग्यको वही कोसते हैं जो कर्महीन होते हैं।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2.

पाञ्चजन्यं हृषीकेशो देवदत्तं धनंजयः। पौण्ड्रं दध्मौ महाशङ्खं भीमकर्मा वृकोदरः॥ १५॥
अनन्तविजयं राजा कुन्तीपुत्रो युधिष्ठिरः। नकुलः सहदेवश्च सुघोषमणिपुष्पकौ॥ १६॥
काश्यश्च परमेष्वासः शिखण्डी च महारथः। धृष्टद्युम्नो विराटश्च सात्यकिश्चापराजितः॥ १७॥

सूर्योदय ६।४७ सूर्यास्त ५।१९

pāñcajanyaṁ hṛṣīkeśo devadattaṁ dhanañjayaḥ।
pauṇḍraṁ dadhmau mahāśaṅkhaṁ bhīmakarmā vṛkodaraḥ॥ 15॥
anantavijayaṁ rājā kuntīputro yudhiṣṭhiraḥ।
nakulaḥ sahadevaśca sughoṣamaṇipuṣpakau॥ 16॥
kāśyaśca parameṣvāsaḥ śikhaṇḍī ca mahārathaḥ।
dhṛṣṭadyumno virāṭaśca sātyakiścāparājitaḥ॥ 17॥

भा॰ १८ पौष पं॰ २५ पौष

सफला एकादशीव्रत

प्लेग की होमियोपैथिक दवा

(1) आरसनिक 1000 एक या दो खुराक 10 दिन
(2) रसटास्क 30
(3) रेडियामा 30 तीन-तीन घन्टे के अन्तर पर
(4) औपर क्यूलीना 30

श्री रामेश्वर नाथ पाण्डेय — 1,000) स्वयं
खैरापट्टी सिमरी 1,000 रसीद द्वारा
बक्सर 2,000

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

द्रुपदो द्रौपदेयाश्च सर्वशः पृथिवीपते। सौभद्रश्च महाबाहुः शङ्खान्दध्मुः पृथक् पृथक् ॥ १८ ॥
स घोषो धार्तराष्ट्राणां हृदयानि व्यदारयत्। नभश्च पृथिवीं चैव तुमुलो व्यनुनादयन् ॥ १९ ॥
अथ व्यवस्थितान्दृष्ट्वा धार्तराष्ट्रान् कपिध्वजः। प्रवृत्ते शस्त्रसंपाते धनुरुद्यम्य पाण्डवः ॥ २० ॥

सूर्योदय ६।४७ सूर्यास्त ५।२०

drupado draupadeyāśca sarvaśaḥ pṛthivīpate।
saubhadraśca mahābāhuḥ śaṅkhāndadhmuḥ pṛthak pṛthak ॥ 18 ॥
sa ghoṣo dhārtarāṣṭrāṇāṁ hṛdayāni vyadārayat।
nabhaśca pṛthivīṁ caiva tumulo vyanunādayan ॥ 19 ॥
atha vyavasthitāndṛṣṭvā dhārtarāṣṭrān kapidhvajaḥ।
pravṛtte śastrasampāte dhanurudyamya pāṇḍavaḥ ॥ 20 ॥

भा० १९ पौष पं० २६ पौष

प्रदोषव्रत

ब्रज किशोर पाण्डेय C/O श्री
श्यामलाल गोस्वामी
मकान नं० 3/53
श्याम नगर अलीगढ़ उ० प्र०

Dr. S. V. Sohani
Manali
Prabhat Road (15)
Pune – 411004

श्री त्रिपुरारि राय
स्वामी सहजानन्द सरस्वती हितकारी समाज
109-P, आरामबाग – नयी दिल्ली
110055

धर्मकी क्षति जिस अनुपातसे होती है, उसी अनुपातसे आडम्बरकी वृद्धि होती है।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

हृषीकेशं तदा वाक्यमिदमाह महीपते।

अर्जुन उवाच

सेनयोरुभयोर्मध्ये रथं स्थापय मेऽच्युत ॥ २१ ॥

यावदेतान्निरीक्षेऽहं योद्धुकामानवस्थितान्। कैर्मया सह योद्धव्यमस्मिन्रणसमुद्यमे ॥ २२ ॥

सूर्योदय ६।४७ सूर्यास्त ५।२१

hṛṣīkeśaṁ tadā vākyamidamāha mahīpate।

arjuna uvāca

senayorubhayormadhye rathaṁ sthāpaya me'cyuta ॥ 21 ॥

yāvadetānnirīkṣe'haṁ yoddhukāmānavasthitān।

kairmayā saha yoddhavyamasminraṇasamudyame ॥ 22 ॥

भा० २० पौष पं० २७ पौष

डा० जगन्नाथ प्रसाद मौर्य
ग्राम - शाहाबाद
वार्ड नं० १
पोस्ट - गढ़ी मानिकपुर
जनपद - प्रतापगढ़ (उ०प्र०)
पिन - २३० २०२

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

तत्रापश्यत्स्थितान्पार्थः पितॄनथ पितामहान्। आचार्यान्मातुलान्भ्रातॄन्पुत्रान्पौत्रान्सखींस्तथा ॥ २६ ॥
श्वशुरान्सुहृदश्चैव सेनयोरुभयोरपि। तान्समीक्ष्य स कौन्तेयः सर्वान्बन्धूनवस्थितान्॥ २७ ॥

सूर्योदय ६। ४७ सूर्यास्त ५। २३

tatrāpaśyatsthitānpārthaḥ pitṛīnatha pitāmahān।
ācāryānmātulānbhrātṛīnputrānpautrānsakhīṁstathā ॥ 26॥
śvaśurānsuhṛdaścaiva senayorubhayorapi।
tānsamīkṣya sa kaunteyaḥ sarvānbandhūnavasthitān ॥ 27॥

भा० २२ पौष पं० २९ पौष

श्री त्रिपुरारी राय (संस्थापक-अध्यक्ष)
स्वामी सहजानन्द सरस्वती हिलफारी समाज
109-P, आराम बाग
नयी दिल्ली - 110055
शिलांग

सिवाय अज्ञानके और कुछ अन्धकार नहीं है।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

कृपया परयाविष्टो विषीदन्निदमब्रवीत्।

अर्जुन उवाच

दृष्ट्वेमं स्वजनं कृष्ण युयुत्सुं समुपस्थितम्॥ २८॥
सीदन्ति मम गात्राणि मुखं च परिशुष्यति। वेपथुश्च शरीरे मे रोमहर्षश्च जायते॥ २९॥

सूर्योदय ६।४७ सूर्यास्त ५।२३	*kṛpayā parayāviṣṭo viṣīdannidamabravīt।* *dṛṣṭvemaṁ svajanaṁ kṛṣṇa yuyutsuṁ samupasthitam॥ 28॥* *arjuna uvāca* *sīdanti mama gātrāṇi mukhaṁ ca pariśuṣyati।* *vepathuśca śarīre me romaharṣaśca jāyate॥ 29॥*	भा० २३ पौष पं० ३० पौष

राधेश्वर प्रसाद सिंह
32, आनन्दपुरी
बारीगंज कैनाल रोड पटना 800001
पटना I

जो सबमें दोष देखता है, उसकी गुण-ग्रहण करनेकी शक्ति नष्ट हो जाती है।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

सङ्करो नरकायैव कुलघ्नानां कुलस्य च। पतन्ति पितरो ह्येषां लुप्तपिण्डोदकक्रियाः ॥ ४२ ॥
दोषैरेतैः कुलघ्नानां वर्णसङ्करकारकैः। उत्साद्यन्ते जातिधर्माः कुलधर्माश्च शाश्वताः ॥ ४३ ॥
उत्सन्नकुलधर्माणां मनुष्याणां जनार्दन। नरकेऽनियतं वासो भवतीत्यनुशुश्रुम ॥ ४४ ॥

सूर्योदय ६।४७ सूर्यास्त ५।२७

saṅkaro narakāyaiva kulaghnānāṁ kulasya ca।
patanti pitaro hyeṣāṁ luptapiṇḍodakakriyāḥ ॥ 42 ॥
doṣairetaiḥ kulaghnānāṁ varṇasaṅkarakārakaiḥ।
utsādyante jātidharmāḥ kuladharmāśca śāśvatāḥ ॥ 43 ॥
utsannakuladharmāṇāṁ manuṣyāṇāṁ janārdana।
narake'niyataṁ vāso bhavatītyanuśuśruma ॥ 44 ॥

भा० २९ पौष पं० ६ माघ

गिद्धकूट में तपसी आया,
शीश जटा मुनि को फुसलाया।
संजय शिष्यों को बहकाया, अब किसको भरमायेगा?
निःश्रेयस की राह तथागत, सबको सुगम दिखाया है।
जन्म मृत्यु से भाग दिलाता, दोषी कौन बताता है? ॥

सारिपुत्र, महामौद्गल्यायन, पिंडोल भारद्वाज,
कुमार काश्यप।

झिड़कियाँ और बदनामी वही सह सकते हैं जो प्रशंसाके योग्य होते हैं।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

अहो बत महत्पापं कर्तुं व्यवसिता वयम्। यद्राज्यसुखलोभेन हन्तुं स्वजनमुद्यताः ॥ ४५ ॥
यदि मामप्रतीकारमशस्त्रं शस्त्रपाणयः। धार्तराष्ट्रा रणे हन्युस्तन्मे क्षेमतरं भवेत् ॥ ४६ ॥

सूर्योदय ६। ४७
सूर्यास्त ५। २८

aho bata mahatpāpaṁ kartuṁ vyavasitā vayam।
yadrājyasukhalobhena hantuṁ svajanamudyatāḥ ॥ 45॥
yadi māmapratikāramaśastraṁ śastrapāṇayaḥ।
dhārtarāṣṭrā raṇe hanyustanme kṣemataraṁ bhavet ॥ 46॥

भा० ३० पौष पं० ७ माघ

राजगृह :—

① अँजसटिल्य में पाँच पहाड़ों के नाम हैं। — विपुलगिरि
(ख) रत्नगिरि (ग) उदयगिरि (घ) सोनगिरि
(ङ) वैभारगिरि (शैलगिरि - छठ गिरि)

पूर्वी पहाड़ — शैलगिरि, छठ गिरि (विपुलगिरि)
शैलगिरि और उदयगिरि के बीच - गिरिव्रज.
वायु पुराण के अनुसार कीकट देश के चार पवित्र स्थान
१- गया, राजगृहवन, ऋषभ आश्रम, पुण्यपुर।

वायु पुराण में वर्णित राजगृह महात्म्य में वसु के अश्वमेध यज्ञ संपन्न कराने के प्रकरण में दक्षिणाल्य १४ गोत्रों के ब्राह्मण राजगृह बुलाये गये थे। उनके अतिरिक्त मगध के अन्य गोत्रीय ब्राह्मणों को भी यज्ञ में सम्मिलित की गई थी।

शतपथ ब्राह्मण में विदेघ माधव का विजय अभियान सदानीरा तक है सदानीरा तक।

× × ×

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

ॐ

द्वितीयोऽध्यायः

संजय उवाच

तं तथा कृपयाविष्टमश्रुपूर्णाकुलेक्षणम्। विषीदन्तमिदं वाक्यमुवाच मधुसूदनः ॥ १ ॥

श्रीभगवानुवाच

कुतस्त्वा कश्मलमिदं विषमे समुपस्थितम्। अनार्यजुष्टमस्वर्ग्यमकीर्तिकरमर्जुन ॥ २ ॥

सूर्योदय ६।४६ सूर्यास्त ५।३०	*sañjaya uvāca*	भा० २ माघ पं० ९ माघ
	taṁ tathā kṛpayāviṣṭamaśrupūrṇākulekṣaṇam।	
	viṣīdantamidaṁ vākyamuvāca madhusūdanaḥ ॥ 1 ॥	
	śrībhagavānuvāca	
	kutastvā kaśmalamidaṁ viṣame samupasthitam।	
	anāryajuṣṭamasvargyamakīrtikaramarjuna ॥ 2 ॥	

पौष शुक्ल १०, वि० सं० २०५०, शनिवार, JAN. 22. 1994

आज खदेशबिहारी तिवारी धर्मपत्नीसहित आये। द्वारिका जाने वाले हैं। स्वामी केशवानंद जी, सनातन सेवा मंडल के नाम मेरा पत्र मांगा।

पौष शुक्ल ११, वि०सं० २०५०, रविवार, JAN. 23. 1994 [दिन २३

सूर्योदय ६।४६ सूर्यास्त ५।३० पं० १० माघ भा० ३ माघ

पुत्रदा एकादशीव्रत

आज स्वामी धर्मप्रकाशानन्द सरस्वती, अनिन्द्याभाव से प्रमोद कुमार के नाम मेरा निजी पत्र लेकर वीरपुर गये। अपराह्न मिहारी के लड़के आये। मंजन लाने को कहा।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

क्लैब्यं मा स्म गमः पार्थ नैतत्त्वय्युपपद्यते। क्षुद्रं हृदयदौर्बल्यं त्यक्त्वोत्तिष्ठ परंतप ॥ ३ ॥

अर्जुन उवाच

कथं भीष्ममहं संख्ये द्रोणं च मधुसूदन। इषुभिः प्रतियोत्स्यामि पूजार्हावरिसूदन ॥ ४ ॥

सूर्योदय ६।४५ सूर्यास्त ५।३१

klaibyaṁ mā sma gamaḥ pārtha naitattvayyupapadyate।
kṣudraṁ hṛdayadaurbalyaṁ tyaktvottiṣṭha paraṁtapa ॥ 3 ॥

arjuna uvāca

kathaṁ bhīṣmamahaṁ saṅkhye droṇaṁ ca madhusūdana।
iṣubhiḥ pratiyotsyāmi pūjārhāvarisūdana ॥ 4 ॥

भा० ४ माघ पं० ११ माघ

आज मैंने श्री स्वामी केशवानंद जी - संवात सेवा मंडल के संस्थापक अध्यक्ष के नाम लेबापक लिखवाकर तैयार किया। कुछ पुस्तकें उन्हें भेजने को प्रस्तुत किया।
① गीतहृदय ② ब्रह्मविद्या विस्तर ③ लड्डूपाठ।
④ लड्डूपाठ लोचदीपक, ⑤ युगप्रवर्तक जगन्नाथ स्वामी सहजानंद सरस्वती ⑥ स्वामी हंसानंद सरस्वती - बीनजनी एक झलक
⑦ ब्राह्मण कौन? आदि! उन्हें सूचित किया। कल आनेवाले हैं।

अधर्मसे इकट्ठी की हुई सम्पत्तिसे तो सदाचारीकी दरिद्रता कहीं अच्छी है।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

गुरूनहत्वा हि महानुभावान्
श्रेयो भोक्तुं भैक्ष्यमपीह लोके।
हत्वार्थकामांस्तु गुरूनिहैव
भुञ्जीय भोगान्रुधिरप्रदिग्धान् ॥ ५ ॥

सूर्योदय ६।४५
सूर्यास्त ५।३२

gurūnahatvā hi mahānubhāvān
śreyo bhoktuṁ bhaikṣyamapīha loke।
hatvārthakāmāṁstu gurūnihaiva
bhuñjīya bhogānrudhirapradigdhān ॥ 5 ॥

भा० ५ माघ
पं० १२ माघ

भौमप्रदोष

आज प्रमोद कुमार दो बजे आये। शांति मिली। मनिहारी का लड़का मंजन लेकर आया। सायंकाल स्वदेश पहाड़ी तिवारी सपत्नीक आये और पुस्तकें तथा पत्र ले गये। सायंकाल सुरेन्द्रनाथ शर्मा पुनः आये।

कल चन्द्रमोहन वाजपेयी को पुनः निदान हेतु दिखाने का निश्चय हुआ।

ईश्वरीय प्रेमको छोड़कर दूसरा कोई प्रेम मातृप्रेमसे श्रेष्ठ नहीं है।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

न चैतद्विद्मः कतरन्नो गरीयो
यद्वा जयेम यदि वा नो जयेयुः।
यानेव हत्वा न जिजीविषाम-
स्तेऽवस्थिताः प्रमुखे धार्तराष्ट्राः ॥ ६ ॥

सूर्योदय ६।४५ सूर्यास्त ५।३३

na caitadvidmaḥ kataranno garīyo
yadvā jayema yadi vā no jayeyuḥ।
yāneva hatvā na jijīviṣāma-
ste'vasthitāḥ pramukhe dhārtarāṣṭrāḥ ॥ 6॥

भा॰ ६ माघ पं॰ १३ माघ

गणतन्त्रदिवस

आज सायंकाल बाजेवाली के यहाँ जैम। उन्होंने स्वयं 'गीताहृदय' की प्रति उपहार किया। आत्मकथा है। गीता प्रगति है। किन्तु कमऊस्वरूप वर्णन है। मूल्य मूल्य कहीं लिखा उचित था। २०० जीवन में लगे। पहले कुछ सूत्र पढ़ा था इस बार कई बार पढ़ गया। नई नई पुरानी दवाएँ पुनः आगे चलेंगी।

श्री कमलेश्वरप्रसादजी कालिका मार्ग पर आकाशगंगा पुस्तक केन्द्र में मुझे नहीं मिला। यह विश्वासघात है, धिक्कार है। मैंने उन्हें तत्काल लिखित सूचना भेजा। श्री केशवराम पोस्टमास्टर आये, वर्षों में उनसे कुशल समाचार हुआ। पत्र उन्हीं के माध्यम से कमलेश्वरप्रसाद को भेजा गया।

श्रीदेवीप्रसाद शर्मा गौड़ा -- रामलक्ष्मण रामायणी, प्राध्यापक, देवरिया। आलेख की संवाददाता, इतिहास के मूलतत्त्व, वर्षा अवधी लोकगीत पुस्तकों के संबंध में विस्तृत पत्र भेजा।

श्रीकृष्णकथा राजा के आकर्षण बड़े विस्तृत में हैं।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

कार्पण्यदोषोपहतस्वभावः
पृच्छामि त्वां धर्मसंमूढचेताः ।
यच्छ्रेयः स्यान्निश्चितं ब्रूहि तन्मे
शिष्यस्तेऽहं शाधि मां त्वां प्रपन्नम् ॥ ७ ॥

सूर्योदय ६ । ४४
सूर्यास्त ५ । ३४

kārpaṇyadoṣopahatasvabhāvaḥ
pṛcchāmi tvāṁ dharmasaṁmūḍhacetāḥ ।
yacchreyaḥ syānniścitaṁ brūhi tanme
śiṣyaste'haṁ śādhi māṁ tvāṁ prapannam ॥ 7 ॥

भा० ७
माघ
पं० १४
माघ

पूर्णिमा, माघ-स्नानारम्भ

आज दवा के निमित्त हनुमानघाट पो० बैंक से ८०४९०३ से तीन सौ रुपये दवा आदि के निमित्त उतारे गये।

परमात्माकी प्राप्तिमें सर्वोत्तम साधन है विलास-वासनाका त्याग और इन्द्रिय-संयम।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

अ० २] माघ कृष्ण २, वि० सं० २०५०, शनिवार, JAN. 29. 1994 [दिन २९

संजय उवाच

एवमुक्त्वा हृषीकेशं गुडाकेशः परंतप। न योत्स्य इति गोविन्दमुक्त्वा तूष्णीं बभूव ह ॥ ९ ॥
तमुवाच हृषीकेशः प्रहसन्निव भारत। सेनयोरुभयोर्मध्ये विषीदन्तमिदं वचः ॥ १० ॥

सूर्योदय ६। ४३ सूर्यास्त ५। ३५

sañjaya uvāca

evamuktvā hṛṣīkeśaṁ guḍākeśaḥ paraṁtapa।
na yotsya iti govindamuktvā tūṣṇīṁ babhūva ha ॥ 9 ॥
tamuvāca hṛṣīkeśaḥ prahasanniva bhārata।
senayorubhayormadhye viṣīdantamidaṁ vacaḥ ॥ 10 ॥

भा० ९ माघ पं० १६ माघ

श्री प्रकाशराय (यूनियन बैंक एक्सपोर्ट भवन
डी० ६१/३-एफ सिद्धगिरीबाग (नदेसर)
अखाड़े के बगल में

माघ कृष्ण ३, वि०सं० २०५०, रविवार, JAN. 30. 1994 [दिन ३०

सूर्योदय ६। ४३ सूर्यास्त ५। ३६ पं० १७ माघ भा० १० माघ

(संकष्ट) श्रीगणेशचतुर्थीव्रत

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

श्रीभगवानुवाच

अशोच्यानन्वशोचस्त्वं प्रज्ञावादांश्च भाषसे। गतासूनगतासूंश्च नानुशोचन्ति पण्डिताः॥ ११॥
न त्वेवाहं जातु नासं न त्वं नेमे जनाधिपाः। न चैव न भविष्यामः सर्वे वयमतः परम्॥ १२॥

सूर्योदय ६। ४३
सूर्यास्त ५। ३७

śrībhagavānuvāca

aśocyānanvaśocastvaṁ prajñāvādāṁśca bhāṣase।
gatāsūnagatāsūṁśca nānuśocanti paṇḍitāḥ॥ 11॥
na tvevāhaṁ jātu nāsaṁ na tvaṁ neme janādhipāḥ।
na caiva na bhaviṣyāmaḥ sarve vayamataḥ param॥ 12॥

भा॰ ११ माघ पं॰ १८ माघ

※ सूत-संहिता में भगवान् शिव ※

"ग्रंथारंभ के मंगलाचरण में कहा गया है कि ईश्वर के दो रूप हैं — अपर और पर। हिमाचल नंदिनी पार्वती के पति आदि नाम-रूप की उपाधि से युक्त अपर रूप और निरस्त समस्त उपाधिकलंक स्वप्रतिष्ठ अखंड सच्चिदानन्द एकरस अद्वितीय तत्व परतत्व रूप से लक्षित हुआ है। तात्पर्य यह है कि परमेश्वर के निष्कल और सकल दो रूप प्रसिद्ध हैं। निष्कल है शुद्ध तत्व और सकल है शम्भु लिंगात्मक मूर्तिरूप। सकल रूप भी दो प्रकार का है — एक तो जगदात्मक रूप, दूसरा है समस्त जगत का नियन्ता।

समस्त जगदात्मक कहने से उपादान कारण का संकेत है तथा जगन्नियन्ता का रूप लौकिक अवतार के रूप में व्यक्त हुआ है।

अभिधेय में जिस अभिन्ननिमित्तोपादान कारण ईश्वर का लक्षण है वह एक ही सगुण तथा निर्गुण ब्रह्म पर-ब्रह्मरूप से सर्वत्र लक्षित होता है। उसी को सूत-संहिता में परतत्व बतलाया गया है।"

साहित्यका पतन राष्ट्रके पतनका द्योतक है।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

देहिनोऽस्मिन्यथा देहे कौमारं यौवनं जरा। तथा देहान्तरप्राप्तिर्धीरस्तत्र न मुह्यति ॥ १३ ॥
मात्रास्पर्शास्तु कौन्तेय शीतोष्णसुखदुःखदाः। आगमापायिनोऽनित्यास्तांस्तितिक्षस्व भारत ॥ १४ ॥
यं हि न व्यथयन्त्येते पुरुषं पुरुषर्षभ। समदुःखसुखं धीरं सोऽमृतत्वाय कल्पते ॥ १५ ॥

सूर्योदय ६।४२ सूर्यास्त ५।३८

dehino'sminyathā dehe kaumāraṁ yauvanaṁ jarā।
tathā dehāntaraprāptirdhīrastatra na muhyati ॥ 13 ॥
mātrāsparśāstu kaunteya śītoṣṇasukhaduḥkhadāḥ।
āgamāpāyino'nityāstāṁstitikṣasva bhārata ॥ 14 ॥
yaṁ hi na vyathayantyete puruṣaṁ puruṣarṣabha।
samaduḥkhasukhaṁ dhīraṁ so'mṛtatvāya kalpate ॥ 15 ॥

भा० १२ माघ पं० १९ माघ

ईश्वर के अवतार का प्रयोजन भी यतियों, मंत्र-जापकों, तथा ज्ञानियों और योगियों के लिये ध्यान-पूजा के निमित्त साकार विग्रह के रूप में अवतरित होना है —

'यतीनां मन्त्रिणां चैव ज्ञानिनां योगिनां तथा।
ध्यानपूजा निमित्तं हि तनुं गृह्णाति आत्मना ॥'

× × ×

सूत-संहिता में यह प्रतिपादित किया गया है कि सभी मार्ग शिव-स्वरूप के प्रतिपादक हैं। वैदिक, तान्त्रिक या अन्य जो कोई मार्ग हैं, वे सब स्वतंत्र अंबिकापति शिव की माया से ही कल्पित हुए हैं। जो-जो यहाँ है, जो-जो नहीं है उन्हें भी महादेव की माया से परिकल्पित समझना चाहिये। ब्रह्म के जो चेतन-अचेतन आकार कल्पित हुए वे वास्तविक अर्थ विचारने पर शिव से अन्य कुछ नहीं सिद्ध होते। सर्वज्ञता आदि के भेद अल्पज्ञ-जीवपर्यन्त जो भी कल्पित हुए वे सत्य का निरूपण करने पर शिव के अतिरिक्त अन्यत्र नहीं प्राप्त होते।

→ 'वैदिकास्तान्त्रिकाः मार्गा अपभ्रंशास्तथैव च।
स्वतंत्रस्याम्बिकाभर्तुर्मायैव परिकल्पिताः ॥

सादगी बनावटी नहीं, स्वाभाविक होनी चाहिये।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

नासतो विद्यते भावो नाभावो विद्यते सतः। उभयोरपि दृष्टोऽन्तस्त्वनयोस्तत्त्वदर्शिभिः॥ १६॥
अविनाशि तु तद्विद्धि येन सर्वमिदं ततम्। विनाशमव्ययस्यास्य न कश्चित्कर्तुमर्हति॥ १७॥
अन्तवन्त इमे देहा नित्यस्योक्ताः शरीरिणः। अनाशिनोऽप्रमेयस्य तस्माद्युध्यस्व भारत॥ १८॥

सूर्योदय ६।४२ सूर्यास्त ५।३८

nāsato vidyate bhāvo nābhāvo vidyate sataḥ।
ubhayorapi dṛṣṭo'ntastvanayostattvadarśibhiḥ॥ 16॥
avināśi tu tadviddhi yena sarvamidaṁ tatam।
vināśamavyayasyāsya na kaścitkartumarhati॥ 17॥
antavanta ime dehā nityasyoktāḥ śarīriṇaḥ।
anāśino'prameyasya tasmādyudhyasva bhārata॥ 18॥

भा॰ १३ माघ पं॰ २० माघ

यद्यदस्तितया भाति यद्यनास्तितया तथा।
तत्तत्सर्वं मयैवेदं मायया परिकल्पितम्॥
चेत्याचेत्याकारैर्व्रजणी यैव प्रकल्पिता।
तैव शिवादन्यैव न स्तः सम्भगवन्निरूपणे॥
सर्वेश्वर्यादिका भेदाः स्वप्नान्ता ये प्रकल्पिताः।
ते शिवादन्यहो नित्यं न सन्त्येव निरूपणे॥"

अतः संक्षेप में यही निश्चित होता है कि सम्पूर्ण जगत् चित्-अचित् भेदयुक्त अथवा शक्ति से कल्पित शिवमात्र ही है। उस देवाधिदेव से पृथक् कुछ भी नहीं। वास्तव में सब कुछ शिव ही है और शिव के प्रसाद से ही मुक्ति अथवा मुक्ति प्राप्त होती है। यही सूतसंहिता के उपदेशों का परम कथ्य है—

"भूतानि शम्भुर्भुवनानि शम्भु-
र्वेदाश्च शम्भुर्विषयश्च शम्भुः।
स एव सर्वं न ततोऽतिरिक्तं
वदः स एवः परमार्थमेतत्॥

बल तो निर्भयतामें है, शरीरमें मांस बढ़ जानेमें नहीं।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

य एनं वेत्ति हन्तारं यश्चैनं मन्यते हतम्। उभौ तौ न विजानीतो नायं हन्ति न हन्यते ॥ १९ ॥
न जायते म्रियते वा कदाचि-
न्नायं भूत्वा भविता वा न भूयः।
अजो नित्यः शाश्वतोऽयं पुराणो
न हन्यते हन्यमाने शरीरे ॥ २० ॥

सूर्योदय ६।४२ सूर्यास्त ५।३९

ya enaṁ vetti hantāraṁ yaścainaṁ manyate hatam।
ubhau tau na vijānīto nāyaṁ hanti na hanyate ॥ 19 ॥
na jāyate mriyate vā kadāci-
nnāyaṁ bhūtvā bhavitā vā na bhūyaḥ।
ajo nityaḥ śāśvato'yaṁ purāṇo
na hanyate hanyamāne śarīre ॥ 20 ॥

भा० १४ माघ पं० २१ माघ

शिवप्रसादेन हि मुक्तिरुत्तमा
शिवप्रसादेन हि मुक्तिरुत्तमा।
शिवप्रसादेन बिना न मुक्तयः ॥'
— (यज्ञवैभव-खण्ड १५।१८, — १४।५७।)

आलस्य मनुष्यका सबसे बड़ा शत्रु है और परिश्रम सबसे बड़ा मित्र।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

वेदाविनाशिनं नित्यं य एनमजमव्ययम्। कथं स पुरुषः पार्थ कं घातयति हन्ति कम्॥ २१॥

वासांसि जीर्णानि यथा विहाय
नवानि गृह्णाति नरोऽपराणि।
तथा शरीराणि विहाय जीर्णा-
न्यन्यानि संयाति नवानि देही॥ २२॥

सूर्योदय ६।४१ सूर्यास्त ५।४०

vedāvināśinaṁ nityaṁ ya enamajamavyayam।
kathaṁ sa puruṣaḥ pārtha kaṁ ghātayati hanti kam॥ 21॥
vāsāṁsi jīrṇāni yathā vihāya
navāni gṛhṇāti naro'parāṇi।
tathā śarīrāṇi vihāya jīrṇā-
nyanyāni saṁyāti navāni dehī॥ 22॥

भा० १५ माघ पं० २२ माघ

आज परसिमां-आराके श्री शुकदेव चौधरी आकर मिले, श्री रामनरेशाचार्य के परिवार, माता-पिता तथा राधाकृष्ण का समाचार कहा।

आज महामंडलेश्वर स्वामी विद्यानंद गिरिजी को प्रयाग के पते पर दूसरा पत्र भेजा तथा उन्हें सूचित किया कि पट्टाभिषेक महोत्सव में ५.४.५४ से १७.४.५४ तक हृषीकेश में भाग लूंगा तथा दूसरे कार्यक्रम १-७-५४ से १४.७.५४ तक जुलाई में हृषीकेश में उपस्थित होना चाहूंगा।

सबसे कठिन विजय आत्म-विजय है।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

स्वधर्ममपि चावेक्ष्य न विकम्पितुमर्हसि। धर्म्याद्धि युद्धाच्छ्रेयोऽन्यत्क्षत्रियस्य न विद्यते ॥ ३१ ॥
यदृच्छया चोपपन्नं स्वर्गद्वारमपावृतम्। सुखिनः क्षत्रियाः पार्थ लभन्ते युद्धमीदृशम् ॥ ३२ ॥
अथ चेत्त्वमिमं धर्म्यं संग्रामं न करिष्यसि। ततः स्वधर्मं कीर्तिं च हित्वा पापमवाप्स्यसि ॥ ३३ ॥

सूर्योदय ६।३८ सूर्यास्त ५।४३

svadharmamapi cāvekṣya na vikampitumarhasi।
dharmyāddhi yuddhāccchreyo'nyatkṣatriyasya na vidyate ॥ 31 ॥
yadṛcchayā copapannaṁ svargadvāramapāvṛtam।
sukhinaḥ kṣatriyāḥ pārtha labhante yuddhamīdṛśam ॥ 32 ॥
atha cettvamimaṁ dharmyaṁ saṅgrāmaṁ na kariṣyasi।
tataḥ svadharmaṁ kīrtiṁ ca hitvā pāpamavāpsyasi ॥ 33 ॥

भा॰ २० माघ पं॰ २७ माघ

आज से लगभग ग्यारह वर्ष पहले, अर्थात् वसन्त आश्रम पर था। अपराह्न वीरपुर के एक कलकत्तिया विप्रबन्धु श्री वज्रजय-दत्त राय के फोन-प्रतीक्षा में. वे एक तरुण को लेकर आये। लोगों से पूछने उनका ठिकाना मिला। इस तरुण दूसरा तरुण दाढ़ी झाँटा वाला कुछ विचित्र मुद्रा में था।

इस तरुण का नाम प्रमोद कुमार दीक्षित था। वह देवीदत्त से दीक्षित हो चुका था। उस तरुण ने मुझसे पूछा कि आप कहाँ जाना चाहते हैं। मैंने कहा कि काशी जाना चाहता हूँ किन्तु मेरे पास उपयुक्त साधन नहीं है। तरुण ने कहा कि मेरे पास एक छोटी नाव डोंगा है। मैं उसे गंगा में यदा-कदा चलाता हूँ। उससे जीवन-यापन करता हूँ। किन्तु आपको उस नाव से धीरे-धीरे काशी पहुँचा दूँगा। मुझे आपसे कुछ पाने का लालच नहीं।

मैं उस मल्लाह की छोटी नाव पर चढ़ कर उसकी मनोरंजकता में भला करता-ग्यारह वर्षों में

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

अकीर्तिं चापि भूतानि कथयिष्यन्ति तेऽव्ययाम्। सम्भावितस्य चाकीर्तिर्मरणादतिरिच्यते ॥ ३४ ॥
भयाद्रणादुपरतं मंस्यन्ते त्वां महारथाः। येषां च त्वं बहुमतो भूत्वा यास्यसि लाघवम् ॥ ३५ ॥
अवाच्यवादांश्च बहून्वदिष्यन्ति तवाहिताः। निन्दन्तस्तव सामर्थ्यं ततो दुःखतरं नु किम् ॥ ३६ ॥

सूर्योदय ६। ३७ सूर्यास्त ५। ४४

akīrtiṁ cāpi bhūtāni kathayiṣyanti te'vyayām।
sambhāvitasya cākīrtirmaraṇādatiricyate ॥ 34 ॥
bhayādraṇāduparataṁ maṁsyante tvāṁ mahārathāḥ।
yeṣāṁ ca tvaṁ bahumato bhūtvā yāsyasi lāghavam ॥ 35 ॥
avācyavādāṁśca bahūnvadiṣyanti tavāhitāḥ।
nindantastava sāmarthyaṁ tato duḥkhataraṁ nu kim ॥ 36 ॥

भा० २१ माघ पं० २८ माघ

मौनी अमावास्या

काशी आ पहुँचा। तरुण मलाई का साथ। उसकी कार्य क्षमता, उसके असीम धैर्य को देखकर मैं दंग रह गया। भला यह कैसा मलाई मिला जिसने मुझे मुक्ति की जन्मभूमि- ज्ञान की खान, पापों का नाश करने वाली काशी में, पहुँचाया। काशी तत्त्वज्ञान प्रकाशिका है। कालकूट पीनेवाले नीलकंठ महादेव शंकर लोकशंकर जहाँ, पार्वती के साथ विवाह करते हैं, जो जगत के मातापिता हैं जिनके विषय में - "जगतः पितरौ वन्दे पार्वती परमेश्वरौ"; तथा गोस्वामी जी ने - भवानी शङ्करौ वन्दे श्रद्धाविश्वास रूपिणौ" कहकर में पार्वतिपति हैं, जिनकी कृपा के बिना - सिद्धपुरुष भी अपने अंतःकरण में स्थित ईश्वर को नहीं देख पाते - "याभ्यां विना न पश्यन्ति सिद्धाः स्वान्तस्थमीश्वरं"।

आज वर्षों की लंबी यात्रा के बाद आज मैं काशीपुरी में कुशलपूर्वक पहुँचा। अब्रह्मण्यम् लोक

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

हतो वा प्राप्स्यसि स्वर्गं जित्वा वा भोक्ष्यसे महीम्। तस्मादुत्तिष्ठ कौन्तेय युद्धाय कृतनिश्चयः ॥ ३७ ॥
सुखदुःखे समे कृत्वा लाभालाभौ जयाजयौ। ततो युद्धाय युज्यस्व नैवं पापमवाप्स्यसि ॥ ३८ ॥
एषा तेऽभिहिता सांख्ये बुद्धिर्योगे त्विमां शृणु। बुद्ध्या युक्तो यया पार्थ कर्मबन्धं प्रहास्यसि ॥ ३९ ॥

सूर्योदय ६। ३६ सूर्यास्त ५। ४५

hato vā prāpsyasi svargaṁ jitvā vā bhokṣyase mahīm।
tasmāduttiṣṭha kaunteya yuddhāya kṛtaniścayaḥ ॥ 37 ॥
sukhaduḥkhe same kṛtvā lābhālābhau jayājayau।
tato yuddhāya yujyasva naivaṁ pāpamavāpsyasi ॥ 38 ॥
eṣā te'bhihitā sāṅkhye buddhiryoge tvimāṁ śṛṇu।
buddhyā yukto yayā pārtha karmabandhaṁ prahāsyasi ॥ 39 ॥

भा॰ २२ माघ पं॰ २९ माघ

इआ निवास कलत्ते। इसबंधी मागामें मैंने मलाइ को न भोजन-जलपान दिया न भोगमानी। वह विश्व पाश्चिम के आत्मबलके सहारे. मूखे वह - मेरी अपक्षित सेवा की। भैंने याग के क्रम में पेलअवेरे, वा दक्षिण मजदूरी के बदले, उस मलाइ को कुटुम्बन कहे, भिड़किया सुनाई, अपमानित किया, डाँय-फटकारा। तरुण मे मेरी निस्पृह सेवा की, मुझे संतुलन मा। किन्तु मैं संतुष्ट उदिग्न हुई। मेरे वेष संन्यासी का मेल ही हो पर मैं हृदय से निकल गई। मेरे वेष इस का और कारण क्या है:- कलत्र वासस वेष मलाइ की, गोसाई की उक्ति. मेरे जैसे लोगों के लिये है।

आखिर मैं देता मीरा की कौन बड़ी कलत्र व उसके मुख इसे आना. संन्यास ले और प्रवक

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

नेहाभिक्रमनाशोऽस्ति प्रत्यवायो न विद्यते। स्वल्पमप्यस्य धर्मस्य त्रायते महतो भयात्॥ ४०॥
व्यवसायात्मिका बुद्धिरेकेह कुरुनन्दन। बहुशाखा ह्यनन्ताश्च बुद्धयोऽव्यवसायिनाम्॥ ४१॥
यामिमां पुष्पितां वाचं प्रवदन्त्यविपश्चितः। वेदवादरताः पार्थ नान्यदस्तीति वादिनः॥ ४२॥

सूर्योदय ६।३६ सूर्यास्त ५।४६

nehābhikramanāśo'sti pratyavāyo na vidyate।
svalpamapyasya dharmasya trāyate mahato bhayāt॥ 40॥
vyavasāyātmikā buddhirekeha kurunandana।
bahuśākhā hyanantāśca buddhayo'vyavasāyinām॥ 41॥
yāmimāṁ puṣpitāṁ vācam pravadantyavipaścitaḥ।
vedavādaratāḥ pārtha nānyadastīti vādinaḥ॥ 42॥

भा० २३ माघ पं० १ फाल्गुन

को कुरूप देना चाहा तो, मेरी फटीजरा की झोली में कुरूप रहा नहीं। उसने अंचला लंगोटी के अतिरिक्त मेरे पास कुरूप है नहीं। भला इस फकीर ने अंचला लंगोटी का ग्राहक कौन है? वह इसे क्यों देखेगा?

बहुत सोच समझकर मैं अवधूतानी बंधन की प्रतीक्षा करता हूं, उसी कारण मैं मानता हूं कि आप मेरे सागर के मल्लाह हैं। आप 'प्रिंस आफ वेल्स' और 'ग्राफ स्पी' जैसे जंगी जहाजों के मालिक हैं।

माघ शुक्ल ३, वि०सं० २०५०, रविवार, FEB. 13. 1994 [दिन ४४
सूर्योदय ६।३५ सूर्यास्त ५।४६ पं० २ फाल्गुन भा० २४ माघ

आप आप अपने जातिभाइयों के तरुण की सहायता लें, मल्लाह-मल्लाह से क्या नहीं लेता। आप कृपाकर प्रसादकुमार [illegible] नाव को पार करें, उसे खेवें, उसे पानी में फेंकें। उसके पतवार का उपयोग करें। वह आपका ही

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

कामात्मानः स्वर्गपरा जन्मकर्मफलप्रदाम्। क्रियाविशेषबहुलां भोगैश्वर्यगतिं प्रति ॥ ४३ ॥
भोगैश्वर्यप्रसक्तानां तयापहृतचेतसाम्। व्यवसायात्मिका बुद्धिः समाधौ न विधीयते ॥ ४४ ॥
त्रैगुण्यविषया वेदा निस्त्रैगुण्यो भवार्जुन। निर्द्वन्द्वो नित्यसत्त्वस्थो निर्योगक्षेम आत्मवान् ॥ ४५ ॥

सूर्योदय ६। ३५
सूर्यास्त ५। ४७

kāmātmānaḥ svargaparā janmakarmaphalapradām।
kriyāviśeṣabahulāṁ bhogaiśvaryagatiṁ prati ॥ 43 ॥
bhogaiśvaryaprasaktānāṁ tayāpahṛtacetasām।
vyavasāyātmikā buddhiḥ samādhau na vidhīyate ॥ 44 ॥
traiguṇyaviṣayā vedā nistraiguṇyo bhavārjuna।
nirdvandvo nityasattvastho niryogakṣema ātmavān ॥ 45 ॥

भा॰ २५
माघ
पं॰ ३
फाल्गुन

पणिकाहै। आदिजगत्के स्रष्टा पिता, भवसागरके पार्षाधार ॐ ब्रह्मांडाधिपति हैं। ऐसेके बच्चोंको उपदेश है। आपकी मर्यादा की शंका पड़ेगा कि मेरेमें इसकी कल्पना नहीं थी। मैं अर्जुना संज्ञा वाला, सर्वोत्तम आत्मा पिताकाहूँ, कि सेवाका मूल्यांकन है। परमगुरु सेवाधर्मिको जिस मनसे वचनसे मनीषीगण विभाषा वह मूर्खो क्यों वह रहेहैं? पासिकुछ शंका समझ नहीं "जाकिये गिरिजापति-काशी जासु भक्त अविनाशि दासी" आदि गोस्वामी जीके वचन सत्यहैं। वे अनुभवतः हैं, मुझे संलक्षणीमणि के इन वचनोंमें विश्वास है।

* * *

— दंडीस्वामी विमलानन्द सरस्वती का निवेदन

शिष्टाचारके द्वारा संसारमें कोई भी मनुष्य उन्नति कर सकता है।

RajGuru Math, Shivala,.Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

यावानर्थ उदपाने सर्वतः सम्प्लुतोदके। तावान्सर्वेषु वेदेषु ब्राह्मणस्य विजानतः ॥ ४६ ॥
कर्मण्येवाधिकारस्ते मा फलेषु कदाचन। मा कर्मफलहेतुर्भूर्मा ते सङ्गोऽस्त्वकर्मणि ॥ ४७ ॥
योगस्थः कुरु कर्माणि सङ्गं त्यक्त्वा धनंजय। सिद्ध्यसिद्ध्योः समो भूत्वा समत्वं योग उच्यते ॥ ४८ ॥

सूर्योदय ६। ३४
सूर्यास्त ५। ४८

yāvānartha udapāne sarvataḥ samplutodake।
tāvānsarveṣu vedeṣu brāhmaṇasya vijānataḥ ॥ 46 ॥
karmaṇyevādhikāraste mā phaleṣu kadācana।
mā karmaphalaheturbhūrmā te saṅgo'stvakarmaṇi ॥ 47 ॥
yogasthaḥ kuru karmāṇi saṅgaṁ tyaktvā dhanañjaya।
siddhyasiddhyoḥ samo bhūtvā samatvaṁ yoga ucyate ॥ 48 ॥

भा० २६ माघ पं० ४ फाल्गुन

वसन्तपञ्चमी

Prof. Lakshmi Narayan Tiwariji (Director)
Bhogilal Leherchand Institute of
Indology
20 Th km G.T. Karnal Road, Delhi
Phone (OBR) 7202065

मनुष्यकी खुशहालियाँ उसकी सच्चरित्रताका फल है।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

दूरेण ह्यवरं कर्म बुद्धियोगाद्धनंजय। बुद्धौ शरणमन्विच्छ कृपणाः फलहेतवः ॥ ४९ ॥
बुद्धियुक्तो जहातीह उभे सुकृतदुष्कृते। तस्माद्योगाय युज्यस्व योगः कर्मसु कौशलम् ॥ ५० ॥
कर्मजं बुद्धियुक्ता हि फलं त्यक्त्वा मनीषिणः। जन्मबन्धविनिर्मुक्ताः पदं गच्छन्त्यनामयम् ॥ ५१ ॥

सूर्योदय ६।३३ सूर्यास्त ५।४९

dūreṇa hyavaraṁ karma buddhiyogāddhanañjaya।
buddhau śaraṇamanviccha kṛpaṇāḥ phalahetavaḥ ॥ 49 ॥
buddhiyukto jahātīha ubhe sukṛtaduṣkṛte।
tasmādyogāya yujyasva yogaḥ karmasu kauśalam ॥ 50 ॥
karmajaṁ buddhiyuktā hi phalaṁ tyaktvā manīṣiṇaḥ।
janmabandhavinirmuktāḥ padaṁ gacchantyanāmayam ॥ 51 ॥

भा० २७ माघ पं० ५ फाल्गुन

आज अनिलकुमार उर्फ मुन्ना-पुत्र मधुमंगलराय मंगराव के पुत्र ने अपने वक्सर-सोमेश्वरनाथ स्थित नवनिर्मित घर के गृहप्रवेश का समारोह संपन्न किया। शिवनारायण राय कमरपुर-कृतपुरा के सभी गणमान्य, भू०ब्रा० उ० विद्यालय के सभी सजातीय शिक्षक तथा आ० के हित-मित्र बंधु-बांधव उपस्थित हुए।

प्रशंसाकें भूखे यह साबित करते हैं कि वे योग्यताके कंगाल हैं।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

यदा ते मोहकलिलं बुद्धिर्व्यतितरिष्यति। तदा गन्तासि निर्वेदं श्रोतव्यस्य श्रुतस्य च ॥ ५२ ॥
श्रुतिविप्रतिपन्ना ते यदा स्थास्यति निश्चला। समाधावचला बुद्धिस्तदा योगमवाप्स्यसि ॥ ५३ ॥

सूर्योदय ६।३२ सूर्यास्त ५।४९

yadā te mohakalilaṁ buddhirvyatitariṣyati।
tadā gantāsi nirvedaṁ śrotavyasya śrutasya ca ॥ 52 ॥
śrutivipratipannā te yadā sthāsyati niścalā।
samādhāvacalā buddhistadā yogamavāpsyasi ॥ 53 ॥

भा० २८ माघ पं० ६ फाल्गुन

रथसप्तमी

आज खड्गधारी शर्मा को पेंठ के सामान पन्ना से लाने के लिये ११०० ग्यारह सौ रुपये दिये गये।

जो ज्ञान केवल मस्तिष्कमें रह जाता है, हृदयमें प्रवेश नहीं करता वह जीवनके अनुभवमें, संकटके समय व्यर्थ ही प्रमाणित होता है।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

अर्जुन उवाच

स्थितप्रज्ञस्य का भाषा समाधिस्थस्य केशव। स्थितधीः किं प्रभाषेत किमासीत व्रजेत किम्॥ ५४॥

श्रीभगवानुवाच

प्रजहाति यदा कामान्सर्वान्पार्थ मनोगतान्। आत्मन्येवात्मना तुष्टः स्थितप्रज्ञस्तदोच्यते॥ ५५॥

सूर्योदय ६।३१ सूर्यास्त ५।५०	*arjuna uvāca* *sthitaprajñasya kā bhāṣā samādhisthasya keśava।* *sthitadhīḥ kiṁ prabhāṣeta kimāsīta vrajeta kim॥ 54॥* *śrībhagavānuvāca* *prajahāti yadā kāmānsarvānpārtha manogatān।* *ātmanyevātmanā tuṣṭaḥ sthitaprajñastadocyate॥ 55॥*	भा० २९ माघ पं० ७ फाल्गुन

भीष्माष्टमी

प्रमोद घर गये। वहां से कार्वी जायेंगे। उन्हें स्थान खर्च गैस आदि के लिये २०० रुपये दिये। ६०० रुपये शिलापट्ट- 'आत्मपरक्रम' एवं सत्यंग महिमा के 'मानस' एवं दिनपत्रिका के कुछ मर्मवचन अंकित करने के लिये दिये। नमूना बना दिया।

डा० रामतपस्या शर्मा एवं कृपालजी का कार्यक्रम १७ता० को दूरभाष द्वारा तय होगा।

संतोषकुमार सिंह उर्फ देवी, औरंगाबाद, वाराणसी को डा० रघुनाथ सिंह के कीर्तिपट लिखने का संकेत किया कराया।

यथार्थता और ईमानदारी दोनों सगी बहनें हैं।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

दुःखेष्वनुद्विग्नमनाः सुखेषु विगतस्पृहः। वीतरागभयक्रोधः स्थितधीर्मुनिरुच्यते ॥ ५६ ॥
यः सर्वत्रानभिस्नेहस्तत्तत्प्राप्य शुभाशुभम्। नाभिनन्दति न द्वेष्टि तस्य प्रज्ञा प्रतिष्ठिता ॥ ५७ ॥
यदा संहरते चायं कूर्मोऽङ्गानीव सर्वशः। इन्द्रियाणीन्द्रियार्थेभ्यस्तस्य प्रज्ञा प्रतिष्ठिता ॥ ५८ ॥

सूर्योदय ६।३० सूर्यास्त ५।५०

duḥkheṣvanudvignamanāḥ sukheṣu vigataspṛhaḥ।
vītarāgabhayakrodhaḥ sthitadhīrmunirucyate ॥ 56 ॥
yaḥ sarvatrānabhisnehastattatprāpya śubhāśubham।
nābhinandati na dveṣṭi tasya prajñā pratiṣṭhitā ॥ 57 ॥
yadā saṁharate cāyaṁ kurmo'ṅgānīva sarvaśaḥ।
indriyāṇīndriyārthebhyastasya prajñā pratiṣṭhitā ॥ 58 ॥

भा० ३० माघ पं० ८ फाल्गुन

आज कूदपुराने अत्यंत ही नाजुकतीसे और प्रेमसे मिलकर. अतिप्रेम जानने तथा विश्वासपात्र के नमूने पहुँचाने का आलोच्य किया। मार्गिक्स १०० रुपये लघुप्रेमद कुमार को ३०० रुपये शिवाला पड़ाव केसर में दिए। दो पोस्टरी चादल भेजा।

आज गणेश को ठीकादेवाद नहा दिवनश्चिंता काली छुट्टी जाएगा। ८० रु० अगांमने दिये।

माघ शुक्ल ९, वि०सं० २०५०, रविवार, FEB. 20. 1994 [दिन ५१

सूर्योदय ६।२९ सूर्यास्त ५।५१ पं० ९ फाल्गुन भा० १ फाल्गुन शक १९१५

आज भी नीम काटने तथा रेड़ीपीने का काम हुआ।

गणेश को १०० रुपये दिये तथा ~~[illegible]~~ बालू के पैसे दिये।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

विषया विनिवर्तन्ते निराहारस्य देहिनः । रसवर्जं रसोऽप्यस्य परं दृष्ट्वा निवर्तते ॥ ५९ ॥
यततो ह्यपि कौन्तेय पुरुषस्य विपश्चितः । इन्द्रियाणि प्रमाथीनि हरन्ति प्रसभं मनः ॥ ६० ॥
तानि सर्वाणि संयम्य युक्त आसीत मत्परः । वशे हि यस्येन्द्रियाणि तस्य प्रज्ञा प्रतिष्ठिता ॥ ६१ ॥

सूर्योदय ६।२८ सूर्यास्त ५।५२

viṣayā vinivartante nirāhārasya dehinaḥ ।
rasavarjaṁ raso'pyasya paraṁ dṛṣṭvā nivartate ॥ 59 ॥
yatato hyapi kaunteya puruṣasya vipaścitaḥ ।
indriyāṇi pramāthīni haranti prasabhaṁ manaḥ ॥ 60 ॥
tāni sarvāṇi saṁyamya yukta āsīta matparaḥ ।
vaśe hi yasyendriyāṇi tasya prajñā pratiṣṭhitā ॥ 61 ॥

भा॰ २ फाल्गुन पं॰ १० फाल्गुन

आज रामसिंहासन की चार किलो मजदूरी मंगलसे शुक्रवारतक की पण्डलेंने दिया। भावलगेंहूं दिया। एक थाली वालू के रुपये दिया। साक्षी राखि कोलिने - ४० रुपये - उधरिने तथा सिंहासन के दोनों ओर २५+२५ का मैंजा।

सायंकाल कम लाकांत जी आये। कलेंयेवोन प्राप्त होगे - भिनंगणा मन्त्र का नमूना बनाकर मुद्रण के लिये ले गये।

आज अधिक कार्यव्यस्तता से लौटे। कार्यसंपन्न किया। प्रसादकृपा से पूर्णफल मिले। पूर्ण हुआ।

मंगलधाम से अक्षतपत्र लौटे - लिखित रूप से स्वामीजी को परिचय कराने के लिये भेजा। वृद्ध म॰ रामसिंहासन छात्र - उपकार्य के रूपमें।

४० रुपये दूकोदू को 'कुलपुरुष' के लिये कलकाकूंत के लिये दिये थे। दो रुपये भेंट डालने में लगे। पक्का रुपये - भिनंगणा मन्त्र की भेंट में।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

ध्यायतो विषयान्पुंसः सङ्गस्तेषूपजायते। सङ्गात्संजायते कामः कामात्क्रोधोऽभिजायते ॥ ६२ ॥
क्रोधाद्भवति सम्मोहः सम्मोहात्स्मृतिविभ्रमः। स्मृतिभ्रंशाद् बुद्धिनाशो बुद्धिनाशात्प्रणश्यति ॥ ६३ ॥
रागद्वेषवियुक्तैस्तु विषयानिन्द्रियैश्चरन्। आत्मवश्यैर्विधेयात्मा प्रसादमधिगच्छति ॥ ६४ ॥

सूर्योदय ६।२८ सूर्यास्त ५।५३

dhyāyato viṣayānpumsaḥ saṅgasteṣūpajāyate।
saṅgātsaṁjāyate kāmaḥ kāmātkrodho'bhijāyate ॥ 62 ॥
krodhādbhavati sammohaḥ sammohātsmṛtivibhramaḥ।
smṛtibhraṁśād buddhināśo buddhināśātpraṇaśyati ॥ 63 ॥
rāgadveṣaviyuktaistu viṣayānindriyaiścaran।
ātmavaśyairvidheyātmā prasādamadhigacchati ॥ 64 ॥

आ० ३ फाल्गुन पं० ११ फाल्गुन

॥ साकेत — जया एकादशीव्रत दिव्य अयोध्या ॥

आज जिस ब्रह्माण्ड में हमलोग रहते हैं — "यह प्रकृति से उत्पन्न रमणीय ब्रह्माण्ड (भूः भुवः आदि सात ऊपर के तथा अतल वितल आदि सात नीचे के — कुल) चौदह लोकों से व्याप्त है। द्वीप से प्रकट सागरों से (स्वेदज, अण्डज, जरायुज एवं उद्भिज — इन) इन चार कोटि के जीवों से तथा आनंदप्रद पर्वतों से परिपूर्ण है। इतना ही नहीं, वह स्त्री की परतों के समान पञ्च उल्बतट पिताल (illegible) आवरणों से घिरा हुआ है। यह प्राकृत ब्रह्माण्ड साठ करोड़ योजन ऊँचा [redacted] और पचास करोड़ योजन विस्तार वाला है। यह अण्ड अपने इर्द गिर्द तथा ऊपर-नीचे कड़ाई के समान कठोर भाग से उसी प्रकार सब ओर घिरा हुआ है, जैसे अनाज का बीज भूसी से घिरा रहता है। जैसे केला फल बीजों के आधार पर स्थित रहता है, उसी प्रकार जड़-चेतनात्मक ब्रह्माण्ड इसी अण्डकटाह के आधार पर स्थित है। पृथ्वी का घेरा एक करोड़ योजन का है, जल का घेरा दस करोड़ योजन का कहा गया है, अग्नि का घेरा सौ करोड़ (एक अरब) योजन के परिमाण का है, वायु का घेरा हजार करोड़ (दस अरब) योजन [redacted] परिमाण का है। अहंकार का आवरण दस हजार करोड़ (एक खरब) योजन का है, महत्तत्त्व का आवरण, एक लाख करोड़ (दस खरब) योजन का, और प्रकृति का आवरण इससे दस योजन का कहा गया है।

आज ऐसे जिओ, मानो यह आखिरी दिन हो।

Rajguru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

प्रसादे सर्वदुःखानां हानिरस्योपजायते। प्रसन्नचेतसो ह्याशु बुद्धिः पर्यवतिष्ठते ॥ ६५ ॥
नास्ति बुद्धिरयुक्तस्य न चायुक्तस्य भावना। न चाभावयतः शान्तिरशान्तस्य कुतः सुखम् ॥ ६६ ॥
इन्द्रियाणां हि चरतां यन्मनोऽनुविधीयते। तदस्य हरति प्रज्ञां वायुर्नावमिवाम्भसि ॥ ६७ ॥

सूर्योदय ६। २७ सूर्यास्त ५। ५३

prasāde sarvaduḥkhānāṁ hānirasyopajāyate।
prasannacetaso hyāśu buddhiḥ paryavatiṣṭhate ॥ 65 ॥
nāsti buddhirayuktasya na cāyuktasya bhāvanā।
na cābhāvayataḥ śāntiraśāntasya kutaḥ sukham ॥ 66 ॥
indriyāṇāṁ hi caratāṁ yanmano'nuvidhīyate।
tadasya harati prajñāṁ vāyurnāvamivāmbhasi ॥ 67 ॥

भा० ४ फाल्गुन पं० १२ फाल्गुन

प्रदोषव्रत

प्रकृति के अन्तर्गत समस्त लोक कालरूप अग्नि के द्वारा (प्रलयकाल में) जला दिये जाते हैं।

भगवान का (साकेत) धाम प्रकृति के परे, सदा रहने वाला, अपने ही प्रकाश से प्रकाशित, निर्विकार, माया रूपी मल से रहित, काल एवं प्रलय के प्रभाव से मुक्त तथा एकमात्र भक्ति से ही प्राप्त होता है। उसी के संबंध में गीता के वक्ता, श्रीकृष्ण कहते हैं:— "उसे न सूर्य प्रकाशित करता है, न चन्द्रमा और न अग्नि। जहाँ पहुँच कर, कोई भी लौटकर इस प्राकृत ब्रह्माण्ड में नहीं आता। ऐसा मेरा सर्वश्रेष्ठ परमधाम है। (गीता १५·६).

जिस मायिक प्रपंच का मैंने ज़रा [redacted] किया है, वह अविद्यारूप घने अन्धकार से व्याप्त है, उसके ऊपरी भाग में विद्या नाम की नदी, जिसकी कोई सीमा नहीं है, विश्व-ब्रह्माण्ड के ऊपर उसका आवरण बनी हुई स्थित है। विद्या नदी, प्रकृति एवं षट्कोण (भगवद्धाम) के बीच में विद्यमान है। (~~पद्म-पुराण-संहिता~~ - पाप से अत्यधिक भय, श्लो० पापोंसे भी पापका विचार करनेवाला अधिक भयंकर होता है।
- (१९९ अक्षर, ८० से ४३)।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

तस्माद्यस्य महाबाहो निगृहीतानि सर्वशः। इन्द्रियाणीन्द्रियार्थेभ्यस्तस्य प्रज्ञा प्रतिष्ठिता ॥ ६८ ॥
या निशा सर्वभूतानां तस्यां जागर्ति संयमी। यस्यां जाग्रति भूतानि सा निशा पश्यतो मुनेः ॥ ६९ ॥

सूर्योदय ६।२७ सूर्यास्त ५।५४

tasmādyasya mahābāho nigṛhītāni sarvaśaḥ।
indriyāṇīndriyārthebhyastasya prajñā pratiṣṭhitā ॥ 68 ॥
yā niśā sarvabhūtānāṁ tasyāṁ jāgarti saṁyamī।
yasyāṁ jāgrati bhūtāni sā niśā paśyato muneḥ ॥ 69 ॥

भा० ५ फाल्गुन पं० १३ फाल्गुन

भूलोक और महर्लोक के बीच में, भुवर्लोक और स्वर्लोक है। कहा गया है — कहा गया है 'महर्लोक' पृथ्वी के ऊपर (भुवर्लोक और स्वर्लोक से भी आगे) एक करोड़ योजन परिमाण का है। उसके ऊपर दो करोड़ योजन परिमाण का 'जनलोक' है, उसके ऊपर चार करोड़ योजन का 'तपोलोक' और उसके भी ऊपर आठ करोड़ योजन का सत्यलोक है। उसके बाद 'सद्भावणं' नाम का बाड़ी घेरा है।

** (उपासना सम्बन्धित जानकारी के ग्रन्थ में प्रमुख सम्प्रदाय-संहिता के) **

विरजा नदी के उस पार स्थित त्रिपाद्विभूति को ही उपासकों की भाषा में परमधाम, नित्यलोक, साकेत, गोलोक एवं मध्य वैकुण्ठ आदि कहा जाता है और सम्प्रदायिक ग्रन्थों में अलग-अलग इसका विस्तृत वर्णन किया जाता है।

शिवइन्स्टेट से संवत् १९७९ में प्रकाशित शिव संहिता के पञ्चम पटल के बीसवें अध्याय में वर्णन है: —

"अयोध्या मन्दिरं सत्यमाम साकेत इत्यपि।
कोसला राजधानी च ब्रह्मपुर पराजित ॥ १४ ॥

[redacted]

कर्जदार होना सबसे बड़ी गरीबी है।

अथ-चक्रा मथुरा नगरी धर्म सम्यक्।
दृष्टिं ज्ञानमेवेण प्रातव्या सरयुस्तथा ॥" १६ ॥

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

आपूर्यमाणमचलप्रतिष्ठं
समुद्रमापः प्रविशन्ति यद्वत्।
तद्वत्कामा यं प्रविशन्ति सर्वे
स शान्तिमाप्नोति न कामकामी ॥ ७० ॥

सूर्योदय ६।२६ सूर्यास्त ५।५५

āpūryamāṇamacalapratiṣṭhaṁ
samudramāpaḥ praviśanti yadvat।
tadvatkāmā yaṁ praviśanti sarve
sa śāntimāpnoti na kāmakāmī ॥ 70 ॥

भा० ६ फाल्गुन पं० १४ फाल्गुन

व्रत-पूर्णिमा

अयोध्या नगरी के अनेक नाम हैं जैसे — नन्दिनी, सत्या, साकेत, कोसला, राजधानी, ब्रह्मपुरी और अपराजिता। वह अष्टदल पद्म के आकार की है, नवद्वारों से युक्त है। यह धर्म के धनी लोगों की नगरी है। इसे ज्ञान के नेत्रों से देखकर इसका तथा (साथ ही साथ) सरयू नदी का (भी) ध्यान करना चाहिये।

इस ब्रह्मपुरी अष्टचक्रा, नवद्वारा 'साकेत' के नाम ही अयोध्या, अपराजिता, सत्यलोक, सत्यधाम आदि भी हैं।

अथर्ववेद मंत्र-संहिता के दसवें काण्ड के दूसरे सूक्त के २७.१/२ से ३३ तक अंतिम साढ़े पाँच मंत्रों में अयोध्या (साकेत) का जितना विपुल, विशद, सुस्पष्ट अथच साम्प्रदायिक वर्णन है, उतना किसी भी पुरी का वर्णन वेदमंत्र-संहिताओं में नहीं है। इसका कारण यह भी है कि वेद भी तो श्रीरामजी के गुणों का गान करता है।

सत्य भी गलत ढंगसे कहनेपर झूठ हो जाता है।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

न हि कश्चित्क्षणमपि जातु तिष्ठत्यकर्मकृत्। कार्यते ह्यवशः कर्म सर्वः प्रकृतिजैर्गुणैः ॥ ५ ॥
कर्मेन्द्रियाणि संयम्य य आस्ते मनसा स्मरन्। इन्द्रियार्थान्विमूढात्मा मिथ्याचारः स उच्यते ॥ ६ ॥
यस्त्विन्द्रियाणि मनसा नियम्यारभतेऽर्जुन। कर्मेन्द्रियैः कर्मयोगमसक्तः स विशिष्यते ॥ ७ ॥

सूर्योदय ६।२० सूर्यास्त ५।५८

na hi kaścitkṣaṇamapi jātu tiṣṭhatyakarmakṛt।
kāryate hyavaśaḥ karma sarvaḥ prakṛtijairguṇaiḥ ॥ 5॥
karmendriyāṇi saṃyamya ya āste manasā smaran।
indriyārthānvimūḍhātmā mithyācāraḥ sa ucyate ॥ 6॥
yastvindriyāṇi manasā niyamyārabhate'rjuna।
karmendriyaiḥ karmayogamasaktaḥ sa viśiṣyate ॥ 7॥

भा० ११ फाल्गुन पं० १९ फाल्गुन

** लोभ रावण और शान्ति सीता **

त्याग का मार्ग कठिनाई का मार्ग है। इससे घबराने की आवश्यकता नहीं। कठिनाई को पार करो। साइंस से काम लो। वैज्ञानिकों ने कहा है कि भय से भय बढ़ता है। भय की छाती को चीरकर चले जाओ, फिर कोई भय नहीं। ठीक इसी प्रकार कठिनाइयों से घबराओगे तो बढ़ेंगी। उनका सामना करो, वे मिट जायेंगी। यदि राम समुद्र से घबरा जाते, अपनी थोड़ी-सी सेना देखकर निराश हो जाते, तो उन्हें सीता कैसे मिलती? वे घबराये नहीं, उन्होंने साइंस से काम लिया। अपने छोटे साधनों के अवरुद्ध भी रावण के समस्त दुराशाओं के साथ जमीं का पूत बना दिया। एक कवि ने कहा है:—

"विजेतव्या लंका चरणतरणीयो जलनिधि-
र्विपक्षः पौलस्त्यो रणभुवि सहायाश्च-
कपयः।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

नियतं कुरु कर्म त्वं कर्म ज्यायो ह्यकर्मणः। शरीरयात्रापि च ते न प्रसिद्ध्येदकर्मणः ॥ ८ ॥
यज्ञार्थात्कर्मणोऽन्यत्र लोकोऽयं कर्मबन्धनः। तदर्थं कर्म कौन्तेय मुक्तसङ्गः समाचर ॥ ९ ॥
सहयज्ञाः प्रजाः सृष्ट्वा पुरोवाच प्रजापतिः। अनेन प्रसविष्यध्वमेष वोऽस्त्विष्टकामधुक् ॥ १० ॥

सूर्योदय ६।२०
सूर्यास्त ५।५८

niyataṁ kuru karma tvaṁ karma jyāyo hyakarmaṇaḥ।
śarīrayātrāpi ca te na prasiddhyedakarmaṇaḥ ॥ 8 ॥
yajñārthātkarmaṇo'nyatra loko'yaṁ karmabandhanaḥ।
tadarthaṁ karma kaunteya muktasaṅgaḥ samācara ॥ 9 ॥
sahayajñāḥ prajāḥ sṛṣṭvā purovāca prajāpatiḥ।
anena prasaviṣyadhvameṣa vo'stviṣṭakāmadhuk ॥ 10 ॥

भा० १२ फाल्गुन पं० २० फाल्गुन

तथाप्येको रामः सकलमवधीद्राक्षसकुलं,
क्रियासिद्धिः सत्त्वे वसति महतां नोपकरणे॥

"महान् पुरुषों की क्रियासिद्धि उनके सत्त्व (बल), साहस और व्यक्तित्व में रहती है।" [redacted] वह बाहरी उपकरणों में नहीं मिलती। आज आपकी प्रियतमा सुदूरवर्ती टापू लंका में अपहृत हो चुकी है। बीच में भौतिकता का विशालकाय समुद्र पड़ा है। दुनियाँ के सबसे बड़े शत्रु लोभ — रावण को मारकर आपको अपनी शान्ति — सीता को लाना है। डरो मत, घबराओ नहीं। हिम्मत रखो। साहस बटोरो। युवक जहाँ गोलियों की बौछार में सीना तानकर खड़े हो जाते हैं, वहाँ इसमें घबराने की क्या बात है?

— आचार्य तुलसी जी.

मित्रोंसे लेन-देनको मित्रताकी कतरनी समझो।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

कर्मणैव हि संसिद्धिमास्थिता जनकादयः। लोकसंग्रहमेवापि संपश्यन्कर्तुमर्हसि ॥ २० ॥
यद्यदाचरति श्रेष्ठस्तत्तदेवेतरो जनः। स यत्प्रमाणं कुरुते लोकस्तदनुवर्तते ॥ २१ ॥
न मे पार्थास्ति कर्तव्यं त्रिषु लोकेषु किंचन। नानवाप्तमवाप्तव्यं वर्त एव च कर्मणि ॥ २२ ॥

सूर्योदय ६।१४ सूर्यास्त ६।१

karmaṇaiva hi saṁsiddhimāsthitā janakādayaḥ।
lokasaṅgrahamevāpi sampaśyankartumarhasi ॥ 20 ॥
yadyadācarati śreṣṭhastattadevetaro janaḥ।
sa yatpramāṇaṁ kurute lokastadanuvartate ॥ 21 ॥
na me pārthāsti kartavyaṁ triṣu lokeṣu kiṁcana।
nānavāptamavāptavyaṁ varta eva ca karmaṇi ॥ 22 ॥

भा० १७ फाल्गुन पं० २५ फाल्गुन

विजया एकादशीव्रत

श्री अरविंद गीताप्रबंध में कहते हैं:—
"अवतार का आना इसलिये है मानव-प्रकृति में भागवत-प्रकृति को प्रकट करने के लिये, जिससे कि मानव-प्रकृति भागवत-प्रकृति में रूपान्तरित हो जाय। भीष्म का अवतार पराक्रम की उदाहरण है:—

"सोऽयं पुरुषः पुराण
एकः स्वयं ज्योतिरनन्त आद्यः।
मायात्मनं लोकविमोहनीयं
धत्ते परब्रह्म एक रामः॥"

(अग्नि, हुई पुराण पुरुष (८ अ० स० ७।५।१९५) परमात्मा राम ने संसार का परम अनुग्रह अनेक रूपों में एकरूप प्रकाश अमृत और सर्वत्र आदि कारण होते हुए भी मनुष्य मायावत धारण किया है।)

सोचो ज्यादा, लिखो थोड़ा, बोलो कम।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

यदि ह्यहं न वर्तेयं जातु कर्मण्यतन्द्रितः। मम वर्त्मानुवर्तन्ते मनुष्याः पार्थ सर्वशः ॥ २३ ॥
उत्सीदेयुरिमे लोका न कुर्यां कर्म चेदहम्। संकरस्य च कर्ता स्यामुपहन्यामिमाः प्रजाः ॥ २४ ॥
सक्ताः कर्मण्यविद्वांसो यथा कुर्वन्ति भारत। कुर्याद्विद्वांस्तथासक्तश्चिकीर्षुर्लोकसंग्रहम् ॥ २५ ॥

सूर्योदय ६।१३ सूर्यास्त ६।१

yadi hyahaṁ na varteyaṁ jātu karmaṇyatandritaḥ।
mama vartmānuvartante manuṣyāḥ pārtha sarvaśaḥ॥ 23॥
utsīdeyurime lokā na kuryāṁ karma cedaham।
saṅkarasya ca kartā syāmupahanyāmimāḥ prajāḥ॥ 24॥
saktāḥ karmaṇyavidvāṁso yathā kurvanti bhārata।
kuryādvidvāṁstathāsaktaścikīrṣurlokasaṅgraham ॥ 25॥

भा॰ १८ फाल्गुन पं॰ २६ फाल्गुन

प्रदोषव्रत

"अपार सृष्टि-विकास की लीला के प्रेरणा [redacted] या अग्रहन वमकर आते हैं और अहं से अगली श्रेणी की ओर संगठित इस विकास-प्रक्रिया में केवल एक कदम आगे रहते हैं।" भगवान तो सूक्ष्म रूप में भूतमात्र में चेतना के रूप में तथा इन्द्रियों के उत्पन्न होने पर मनरूप में उपस्थित हैं। यह मन सदरूप है।"

× × ×

"भीष्म ने जिस तरह व्यक्ति के आत्मगत की मर्यादाएँ बताईं, उसी तरह समाज और देश की विभिन्न व्यवस्थाओं के संचालन का आदर्श हमारे लोगों ने दिया।"

स्वतन्त्र वही हो सकता है जो अपना कार्य स्वयं कर ले।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

न बुद्धिभेदं जनयेदज्ञानां कर्मसङ्गिनाम्। जोषयेत्सर्वकर्माणि विद्वान्युक्तः समाचरन्॥ २६॥
प्रकृतेः क्रियमाणानि गुणैः कर्माणि सर्वशः। अहङ्कारविमूढात्मा कर्ताहमिति मन्यते॥ २७॥
तत्त्ववित्तु महाबाहो गुणकर्मविभागयोः। गुणा गुणेषु वर्तन्त इति मत्वा न सज्जते॥ २८॥

सूर्योदय ६।१२ सूर्यास्त ६।२

na buddhibhedaṁ janayedajñānāṁ karmasaṅginām।
joṣayetsarvakarmāṇi vidvānyuktaḥ samācaran॥ 26॥
prakṛteḥ kriyamāṇāni guṇaiḥ karmāṇi sarvaśaḥ।
ahaṅkāravimūḍhātmā kartāhamiti manyate॥ 27॥
tattvavittu mahābāho guṇakarmavibhāgayoḥ।
guṇā guṇeṣu vartanta iti matvā na sajjate॥ 28॥

भा० १९ फाल्गुन पं० २७ फाल्गुन

महाशिवरात्रिव्रत

आज पूज्यपाद स्वामी श्री की जयंती का समारोह विधिवत् संपन्न हुआ। डा० रामलखन शर्मी, कलकत्ता में ही आ गये थे। देवदयाल चौधरी आज फलाहार दे रहे थे। ऊलाकुमार शर्मी रामफलसे मी आधुनी गाड़ी से आये। कैप्टेन राय दयाल के मध्यीकरण मोतिहारी के शिष्यजी के कुमारेन्द्र किशन। डा० स्वामी नाथ पांडेय और रामगोपाल राम दे भाग्य० पाठशिक्षक भी उपस्थित थे। इसकी प्रति भी भेजी रहेगी। देवीदयाल चौधरी प्रसन्न दिखे के अध्यक्ष थे। व्याख्यान ठीक हो हुआ। राम गरीब पांडे की चंचलता और बहुधंधी कृति से भोजन-व्यवस्था पूर्ववत् नहीं हो पाती। चन्द्रमा लाल भी थे। अब संध्याकाल गाने लगा। समीक्षित उपस्थित चले गये। संध्या में गण सकुशल है। स्वामी शिवानंद स्वयं प्रेमानंद, शिवकल्याण आदि आये थे। कृष्णु के कमाण्डिंग ही चंचलता की मात्रा अधिक रहा।

बहुतसे विचारोंवाला नहीं, एक निश्चयवाला महान् बनता है।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

प्रकृतेर्गुणसंमूढाः सज्जन्ते गुणकर्मसु। तानकृत्स्नविदो मन्दान्कृत्स्नविन्न विचालयेत्॥ २९॥
मयि सर्वाणि कर्माणि संन्यस्याध्यात्मचेतसा। निराशीर्निर्ममो भूत्वा युध्यस्व विगतज्वरः॥ ३०॥
ये मे मतमिदं नित्यमनुतिष्ठन्ति मानवाः। श्रद्धावन्तोऽनसूयन्तो मुच्यन्ते तेऽपि कर्मभिः॥ ३१॥

सूर्योदय ६।११
सूर्यास्त ६।३

prakṛterguṇasaṁmūḍhāḥ sajjante guṇakarmasu।
tānakṛtsnavido mandānkṛtsnavinna vicālayet॥ 29॥
mayi sarvāṇi karmāṇi saṁnyasyādhyātmacetasā।
nirāśīrnirmamo bhūtvā yudhyasva vigatajvaraḥ॥ 30॥
ye me matamidaṁ nityamanutiṣṭhanti mānavāḥ।
śraddhāvanto'nasūyanto mucyante te'pi karmabhiḥ॥ 31॥

भा॰ २० फाल्गुन
पं॰ २८ फाल्गुन

चंपाकला गड़ता रहा। रामसिंहासन राम सफाई में लगी रहे। बाहर तार एवं पाया बनाकर घेरावंदी का कार्य हुआ। गुंबज बना। चंपाकला गड़ता रहा। गाधुआ वापस गये। भोजन कराया गया।

दुष्टोंकी न शत्रुता और न मित्रता।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

ये त्वेतदभ्यसूयन्तो नानुतिष्ठन्ति मे मतम्। सर्वज्ञानविमूढांस्तान्विद्धि नष्टानचेतसः ॥ ३२ ॥
सदृशं चेष्टते स्वस्याः प्रकृतेर्ज्ञानवानपि। प्रकृतिं यान्ति भूतानि निग्रहः किं करिष्यति ॥ ३३ ॥
इन्द्रियस्येन्द्रियस्यार्थे रागद्वेषौ व्यवस्थितौ। तयोर्न वशमागच्छेत्तौ ह्यस्य परिपन्थिनौ ॥ ३४ ॥

सूर्योदय ६।१० सूर्यास्त ६।३

ye tvetadabhyasūyanto nānutiṣṭhanti me matam।
sarvajñānavimūḍhāṁstānviddhi naṣṭānacetasaḥ ॥ 32 ॥
sadṛśaṁ ceṣṭate svasyāḥ prakṛterjñānavānapi।
prakṛtiṁ yānti bhūtāni nigrahaḥ kiṁ kariṣyati ॥ 33 ॥
indriyasyendriyasyārthe rāgadveṣau vyavasthitau।
tayorna vaśamāgacchettau hyasya paripanthinau ॥ 34 ॥

भा० २१ फाल्गुन पं० २९ फाल्गुन

अमावास्या

आज हिसाबकिताब करके क्रीमिट-का कुछ रुपया दीदार कायमे देदिया। तीन सौ बाकी है। ईंटका हिसाब जोड़कर २४०० रुपये देदिया पिन्नालालजी को। पांचसौ बाकी रहे।

फाल्गुन शुक्ल १, वि०सं० २०५०, रविवार, MARCH 13. 1994 [दिन ७२
सूर्योदय ६।९ सूर्यास्त ६।४ पं० ३० फाल्गुन भा० २२ फाल्गुन

सिंहासन दुकान सफाई तथा मलाईदुकान मड़ैं धोने का काम होता रहा। मड़ैमें मजदूरी पच्चीस देना।
सागरजी बाले आकर बाकी- ९०-१२ रुपये देना गंगालाल खुश पत्रलेखनीलिखित।
बड़ पांचतथा ते फेरुंगे सभी आलाहा।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

श्रीभगवानुवाच

काम एष क्रोध एष रजोगुणसमुद्भवः। महाशनो महापाप्मा विद्ध्येनमिह वैरिणम्॥ ३७॥
धूमेनाव्रियते वह्निर्यथादर्शो मलेन च। यथोल्बेनावृतो गर्भस्तथा तेनेदमावृतम्॥ ३८॥

सूर्योदय ६।७ सूर्यास्त ६।५

śrībhagavānuvāca

kāma eṣa krodha eṣa rajoguṇasamudbhavaḥ।
mahāśano mahāpāpmā viddhyenamiha vairiṇam॥ 37॥
dhūmenāvriyate vahniryathādarśo malena ca।
yatholbenāvṛto garbhastathā tenedamāvṛtam॥ 38॥

भा० २४ फाल्गुन पं० २ चैत्र

मजदूरों का हिसाब करके पेंटरमिस्त्री का सब मजदूरी १०८० रुपये दे दिया। ८०० रुपये पहले दिया था। एक जनी कंबल काला नयी नहीं था हिदाय तुल्ला को पुरस्कार दे दिया।

कलकत्ते से शिलापट्ट आया। उसे दिवाल में लगाने का प्रबंध करना है। रंगाई पोताई जो शेष थी उसे पूरा कराया।

चिढ़ता हुआ दोस्त मुस्कराते हुए दुश्मनसे अच्छा है।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

आवृतं ज्ञानमेतेन ज्ञानिनो नित्यवैरिणा। कामरूपेण कौन्तेय दुष्पूरेणानलेन च ॥ ३९ ॥
इन्द्रियाणि मनो बुद्धिरस्याधिष्ठानमुच्यते। एतैर्विमोहयत्येष ज्ञानमावृत्य देहिनम् ॥ ४० ॥

सूर्योदय ६।६ सूर्यास्त ६।५

āvṛtaṁ jñānametena jñānino nityavairiṇā।
kāmarūpeṇa kaunteya duṣpūreṇānalena ca ॥ 39 ॥
indriyāṇi mano buddhirasyādhiṣṭhānamucyate।
etairvimohayatyeṣa jñānamāvṛtya dehinam ॥ 40 ॥

भा० २५ फाल्गुन पं० ३ चैत्र

बोर्सिंग का कार्ड हो चला। १८५ फुट की गलाई हुई।

आलस्य एक तरहकी हिंसा है।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

तस्मात्त्वमिन्द्रियाण्यादौ नियम्य भरतर्षभ। पाप्मानं प्रजहि ह्येनं ज्ञानविज्ञाननाशनम्॥ ४१॥
इन्द्रियाणि पराण्याहुरिन्द्रियेभ्यः परं मनः। मनसस्तु परा बुद्धिर्यो बुद्धेः परतस्तु सः॥ ४२॥

सूर्योदय ६।५
सूर्यास्त ६।६

tasmāttvamindriyāṇyādau niyamya bharatarṣabha।
pāpmānaṁ prajahi hyenaṁ jñānavijñānanāśanam॥ 41॥
indriyāṇi parāṇyāhurindriyebhyaḥ paraṁ manaḥ।
manasastu parā buddhiryo buddheḥ paratastu saḥ॥ 42॥

भा० २६
फाल्गुन
पं० ४
चैत्र

आज वोसिंगपूए हो गया। जाली पट्टी।
दो दिनबाद सिलिंडर एवं मुंडा बैठेंगे।

साइन बोर्ड शिलापट्ट - रामगैरेश ने आकर
ग्रैसलैसे बैठाया। रामसिंहासन से रंग पा-
पोतेका कार्यपूर्ण किया।

घृणा केवल प्रेमसे ही जीती जा सकती है।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

एवं बुद्धेः परं बुद्ध्वा संस्तभ्यात्मानमात्मना। जहि शत्रुं महाबाहो कामरूपं दुरासदम्॥ ४३॥

ॐ तत्सदिति श्रीमद्भगवद्गीतासूपनिषत्सु ब्रह्मविद्यायां योगशास्त्रे
श्रीकृष्णार्जुनसंवादे कर्मयोगो नाम तृतीयोऽध्यायः॥३॥

सूर्योदय ६।३ सूर्यास्त ६।६

evaṁ buddheḥ paraṁ buddhvā saṁstabhyātmānamātmanā।
jahi śatruṁ mahābāho kāmarūpaṁ durāsadam॥ 43॥

oṁ tatsaditi śrīmadbhagavadgītāsūpaniṣatsu brahmavidyāyāṁ yogaśāstre
śrīkṛṣṇārjunasaṁvāde karmayogo nāma tṛtīyo'dhyāyaḥ॥ 3॥

भा० २७ फाल्गुन पं० ५ चैत्र

आज प्रमोद आ रहे - आये।
मुझे खीझते हैं। प्रभात में वे घर भी जायेंगे।
न मालूम क्यों झिड़कते हैं? मैं अपनी
शक्तिभर तैयार हूँ - हाजिर रहता हूँ।
हिसाब करके गणेश की मजदूरी तथा रामसिंहासन
को दे दिया। बस सिंहासन की सफाई के बाद
१० रुपये नरेश के तथा १५ रुपये गणेश के बाकी
रहे। एकमासवाद लौटने पर दिये जायेंगे।

विषयोंको विष समझो और भगवान्‌को दिव्य अमृत।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

ॐ

चतुर्थोऽध्यायः

श्रीभगवानुवाच

इमं विवस्वते योगं प्रोक्तवानहमव्ययम्। विवस्वान्मनवे प्राह मनुरिक्ष्वाकवेऽब्रवीत् ॥ १ ॥
एवं परम्पराप्राप्तमिमं राजर्षयो विदुः। स कालेनेह महता योगो नष्टः परंतप ॥ २ ॥

सूर्योदय ६।२ सूर्यास्त ६।७

śrībhagavānuvāca

imaṁ vivasvate yogaṁ proktavānahamavyayam।
vivasvānmanave prāha manurikṣvākave'bravīt ॥ 1 ॥
evaṁ paramparāprāptamimaṁ rājarṣayo viduḥ।
sa kāleneha mahatā yogo naṣṭaḥ paraṁtapa ॥ 2 ॥

भा० २८ फाल्गुन पं० ६ चैत्र

फाल्गुन शुक्ल ७, विक्रमसं० २०५०, शनिवार, MARCH 19.1994

आज रात को प्रमोद कुमार के घर से आने पर मालूम हुआ कि तबियत ठीक नहीं है और विस्मृति एवं असमर्थता का खेद हुआ। मलाटक न्यासपरिषद राजगुरुनगर की कार्यसमिति की बैठक में जाना। मंत्रीजनों का अच्छा सहयोग था।
१०० तथा मनु - अग्निहोत्रम् के चंपाकली का स्वाद बगाने की निर्देश दे आया।
रात में ढलाव के कारण सूजन दिखाई आरंभ हुई।
१०:३० तथा १२ तक। १०० तथा चंपाकली का स्वाद बगाने के लिये उन्हें को देखा।

फाल्गुन शुक्ल ८, विक्रमसं० २०५०, रविवार, MARCH 20. 1994 [दिन ७९
सूर्योदय ६।१ सूर्यास्त ६।७ पं० ७ चैत्र भा० २९ फाल्गुन

(होलाष्टकारम्भ)

प्रातः चलकर १०।। बजे राजगुरुनगर पहुँचे। चन्द्रशेखर विद्यार्थी एवं राजेन्द्रनाथ के अतिरिक्त कोई नहीं आया। गणपति के आश्रम में बैठक हुई। अनौपचारिक बैठक हुई। विद्यार्थी विचार गये। राजेन्द्रनाथ रात को रुके। स्वास्थ्य ठीक है।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

स एवायं मया तेऽद्य योगः प्रोक्तः पुरातनः। भक्तोऽसि मे सखा चेति रहस्यं ह्येतदुत्तमम् ॥ ३ ॥

अर्जुन उवाच

अपरं भवतो जन्म परं जन्म विवस्वतः। कथमेतद्विजानीयां त्वमादौ प्रोक्तवानिति ॥ ४ ॥

सूर्योदय ६।०० सूर्यास्त ६।८

sa evāyaṁ mayā te'dya yogaḥ proktaḥ purātanaḥ।
bhakto'si me sakhā ceti rahasyaṁ hyetaduttamam ॥ 3 ॥

arjuna uvāca

aparaṁ bhavato janma paraṁ janma vivasvataḥ।
kathametadvijānīyāṁ tvamādau proktavāniti ॥ 4 ॥

भा॰ ३० फाल्गुन पं॰ ८ चैत्र

आज प्रातः राजमेसिनाथ का दर्शन हुये। अगली बैठक १६ अप्रैल को रखने की कल तलाइडुई। आज इस अनुपस्थित चल्ली सदस्यों को कई जगह फल भेजा (राजेन्द्रगोयनी, सुरेन्द्र अग्रवाल मी, रामजीश पांडे, कालीकोयो। और राजगोपालआचारी। डा॰ विनोदिनीराज, के पं॰ राजन्द्र चौधुरी के पत्रों का उत्तर दिया। पं॰ कीर्तिवहुर शर्मा-मैसवाड़िया भी पत्र लिखा। पं॰ हरिहरानन्द को पत्र लिखा। स्वामी सत्यमित्रानन्द को पत्र लिखा। पं॰ अम्बेदत्त जी पंचोली को पत्र लिखा। पं॰ अम्बेदत्त जी पंचोली को पत्र लिखा। पं॰ अम्बेदत्त जी पंचोली को पत्र लिखा। पं॰ अम्बेदत्त जी पंचोली को पत्र लिखा।

पशुका आनन्द इन्द्रिय-तृप्ति और मनुष्यका आनन्द बुद्धिगत है।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

श्रीभगवानुवाच

बहूनि मे व्यतीतानि जन्मानि तव चार्जुन। तान्यहं वेद सर्वाणि न त्वं वेत्थ परंतप ॥ ५ ॥
अजोऽपि सन्नव्ययात्मा भूतानामीश्वरोऽपि सन्। प्रकृतिं स्वामधिष्ठाय संभवाम्यात्ममायया ॥ ६ ॥

सूर्योदय ५।५९ सूर्यास्त ६।८

śrībhagavānuvāca

bahūni me vyatītāni janmāni tava cārjuna।
tānyahaṁ veda sarvāṇī na tvaṁ vettha paraṁtapa ॥ 5 ॥
ajo'pi sannavyayātmā bhūtānāmīśvaro'pi san।
prakṛtiṁ svāmadhiṣṭhāya saṁbhavāmyātmamāyayā ॥ 6 ॥

भा० १ चैत्र शक १९१६ पं० ९ चैत्र

श्री केशव राय, पोस्टमास्टर एवं स्वामी हरिदरीनागांद को पत्र लिखा। प्रभुनारायणसिंह जी महामलपुर आये और मिले। विचार किया हुआ।

वाड़े में - मैथिल भिक्षुक धूमंतू वाराणसी (गांधी) का कंबल स्वेटर - स्वामी शिवानंद प्रेमानंद द्वारा पुराने की बात जान कर भारी खेद हुआ। ये सब कैसे नीच है? वेदों संन्यासी का वेष बनाकर जघन्य कार्य करते हैं। धिक्कार है - 'कातय वामन वेष मराला।' ।

यो० राजनारायण शर्मा को पत्र लिखा - पुनः उनका लिफाफे में दूसरा पत्र आज प्राप्त हुआ।

आनन्द वह खुशी है जिसके भोगनेपर पछताना नहीं पड़ता।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

यदा यदा हि धर्मस्य ग्लानिर्भवति भारत। अभ्युत्थानमधर्मस्य तदात्मानं सृजाम्यहम्॥ ७॥
परित्राणाय साधूनां विनाशाय च दुष्कृताम्। धर्मसंस्थापनार्थाय संभवामि युगे युगे॥ ८॥
जन्म कर्म च मे दिव्यमेवं यो वेत्ति तत्त्वतः। त्यक्त्वा देहं पुनर्जन्म नैति मामेति सोऽर्जुन॥ ९॥

सूर्योदय ५।५८ सूर्यास्त ६।९

yadā yadā hi dharmasya glānirbhavati bhārata।
abhyutthānamadharmasya tadātmānaṁ ·srjāmyaham॥ 7॥
paritrāṇāya sādhūnāṁ vināśāya ca duṣkṛtām।
dharmasaṁsthāpanārthāya saṁbhavāmi yuge yuge॥ 8॥
janma karma ca me divyamevaṁ yo vetti tattvata ḥ।
tyaktvā dehaṁ punarjanma naiti māmeti so'rjuna॥ 9॥

भा० २ चैत्र पं० १० चैत्र

आमलकी एकादशीव्रत

आज अखिलदेवभाई-बहनों आपका वेडोलीमें स्वागत है। आपकी दया आमी १० ता० ५ मई। कार्यालय अधिकारी। सिर्फ देखी कार्यक्रम रहा। कार्यक्रम में हिमालय जैसा आया। प्रमोदभाई सेवा आपका है। आपके सेवा-ग्रहण से अनुग्रहीत हो सकता। अंतःकरण से उन्हें सच्चा साधुवाद देता हूँ। भगवान से प्रार्थना करता हूँ कि उन्हें सुख सुविधा प्राप्त होते कोलिये वे कृपालु बने। प्रमोदका भविष्य उज्ज्वल बने।

विद्याका फल उत्तम शील और सदाचार है।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

वीतरागभयक्रोधा मन्मया मामुपाश्रिताः। बहवो ज्ञानतपसा पूता मद्भावमागताः ॥ १० ॥
ये यथा मां प्रपद्यन्ते तांस्तथैव भजाम्यहम्। मम वर्त्मानुवर्तन्ते मनुष्याः पार्थ सर्वशः ॥ ११ ॥
काङ्क्षन्तः कर्मणां सिद्धिं यजन्त इह देवताः। क्षिप्रं हि मानुषे लोके सिद्धिर्भवति कर्मजा ॥ १२ ॥

सूर्योदय ५।५७ सूर्यास्त ६।९

vītarāgabhayakrodhā manmayā māmupāśritāḥ।
bahavo jñānatapasā pūtā madbhāvamāgatāḥ ॥ 10 ॥
ye yathā māṁ prapadyante tāṁstathaiva bhajāmyaham।
mama vartmānuvartante manuṣyāḥ pārtha sarvaśaḥ ॥ 11 ॥
kāṅkṣantaḥ karmaṇāṁ siddhiṁ yajanta iha devatāḥ।
kṣipraṁ hi mānuṣe loke siddhirbhavati karmajā ॥ 12 ॥

भा० ३ चैत्र पं० ११ चैत्र

आज राजगुरुमठ की न्यास-समिति की बैठक के लिये सदस्यों को सूचना भेजी गयी। श्री हरिकृष्ण ठाकुर जी एवं वोकारों के श्री सुरेन्द्रनाथ शर्मा को मैंने स्वयं सूचना देते हुए विवरणात्मक पत्र लिख भेजा।

भोजन विश्राम। स्वास्थ्यठीक नहीं। कल से डा० तिवारी की आयुर्वेदिक दवा शुरू कर दिया है। प्रमोद ने न्यासी सदस्यों को बैठक की सूचना के पत्र लिखे।

जो तुम्हारे दोषोंको दिखाता है उसे गड़े हुए धनका दिखानेवाला समझो।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

चातुर्वर्ण्यं मया सृष्टं गुणकर्मविभागशः। तस्य कर्तारमपि मां विद्ध्यकर्तारमव्ययम्॥ १३॥
न मां कर्माणि लिम्पन्ति न मे कर्मफले स्पृहा। इति मां योऽभिजानाति कर्मभिर्न स बध्यते॥ १४॥
एवं ज्ञात्वा कृतं कर्म पूर्वैरपि मुमुक्षुभिः। कुरु कर्मैव तस्मात्त्वं पूर्वैः पूर्वतरं कृतम्॥ १५॥

सूर्योदय ५।५६ सूर्यास्त ६।१०

cāturvarṇyaṁ mayā sṛṣṭaṁ guṇakarmavibhāgaśaḥ।
tasya kartāramapi māṁ viddhyakartāramavyayam॥ 13॥
na māṁ karmāṇi limpanti na me karmaphale spṛhā।
iti māṁ yo'bhijānāti karmabhirna sa badhyate॥ 14॥
evaṁ jñātvā kṛtaṁ karma pūrvairapi mumukṣubhiḥ।
kuru karmaiva tasmāttvaṁ pūrvaiḥ pūrvataraṁ kṛtam॥ 15॥

भा० ४ चैत्र पं० १२ चैत्र

प्रदोषव्रत

आज प्रमोदकुमार मोजल कराकर घर गये। वे मंगलवार को आने को बोल कहगये। शिलालेख लिखनेवाले को पूरा पैसा देकर दिये गये। शनिवार एवं सोमवार को छुट्टी के कारण वे दो दिन कहां भोजन होगा। रविवार को स्वयं शहीद स्मारक पर जाकर आज लिखाई देखा गया। ५७०० रुपये दिये गये।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

किं कर्म किमकर्मेति कवयोऽप्यत्र मोहिताः। तत्ते कर्म प्रवक्ष्यामि यज्ज्ञात्वा मोक्ष्यसेऽशुभात्॥ १६॥
कर्मणो ह्यपि बोद्धव्यं बोद्धव्यं च विकर्मणः। अकर्मणश्च बोद्धव्यं गहना कर्मणो गतिः॥ १७॥
कर्मण्यकर्म यः पश्येदकर्मणि च कर्म यः। स बुद्धिमान्मनुष्येषु स युक्तः कृत्स्नकर्मकृत्॥ १८॥

सूर्योदय ५।५५ सूर्यास्त ६।११

kiṁ karma kimakarmeti kavayo'pyatra mohitāḥ।
tatte karma pravakṣyāmi yajjñātvā mokṣyase'śubhāt॥ 16॥
karmaṇo hyapi boddhavyaṁ boddhavyaṁ ca vikarmaṇaḥ।
akarmaṇaśca boddhavyaṁ gahanā karmaṇo gatiḥ॥ 17॥
karmaṇyakarma yaḥ paśyedakarmaṇi ca karma yaḥ।
sa buddhimānmanuṣyeṣu sa yuktaḥ kṛtsnakarmakṛt॥ 18॥

भा० ५ चैत्र पं० १३ चैत्र

व्रत-पूर्णिमा

होलिकादाह (रात्रि २.२६ से ३.३८ तक)

आज मौज्ञ भोजनोपरान्त दर्पाह कहां हुआ। उन्हें वैतरणी निमित्त तिल दिया।

फाल्गुन शुक्ल १५, वि०सं० २०५०, रविवार, MARCH 27. 1994 [दिन ८६
सूर्योदय ५।५४ सूर्यास्त ६।११ पं० १४ चैत्र भा० ६ चैत्र

(पूर्णिमा)

आज खेद के दिवंगत पितरों के नहीं भोजन किया। वे भोजनोपरान्त ९ बजे आये। किन्तु आज वीणा हो गया। सिर में दर्द-वायुविकार। जिसे ज्वर। शरीर में थकावट। भोजन अरुचिकर है। कल्पित व रोगी हो गया। कोई रुचिकर खाद्यादि पदार्थ खाने का मन नहीं।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

यदृच्छालाभसंतुष्टो द्वन्द्वातीतो विमत्सरः। समः सिद्धावसिद्धौ च कृत्वापि न निबध्यते ॥ २२ ॥
गतसङ्गस्य मुक्तस्य ज्ञानावस्थितचेतसः। यज्ञायाचरतः कर्म समग्रं प्रविलीयते ॥ २३ ॥
ब्रह्मार्पणं ब्रह्म हविर्ब्रह्माग्नौ ब्रह्मणा हुतम्। ब्रह्मैव तेन गन्तव्यं ब्रह्मकर्मसमाधिना ॥ २४ ॥

सूर्योदय ५।५१ सूर्यास्त ६।१२

yadṛcchālābhasaṁtuṣṭo dvandvātīto vimatsaraḥ।
samaḥ siddhāvasiddhau ca kṛtvāpi na nibadhyate ॥ 22 ॥
gatasaṅgasya muktasya jñānāvasthitacetasaḥ।
yajñāyācaratah karma samagraṁ pravilīyate ॥ 23 ॥
brahmārpaṇaṁ brahma havirbrahmāgnau brahmaṇā hutam।
brahmaiva tena gantavyaṁ brahmakarmasamādhinā ॥ 24 ॥

भा० ८ चैत्र पं० १६ चैत्र

आज प्रातः श्री राम भोजनके लिए आए।
मेरी प्रतिष्ठा एवं श्रीमद्भागवत की बातें कराते हैं।
मैंने उन्हें भोजपुरी अध्ययन संस्थान, जिगिना कैंट, वाराणसी के उनके अधीन कार्य से प्रकाशित पुस्तकों का सुझाव दिया। उन्होंने ली का विषय और मैंने व्याकरण की बातें की।
उनकी बातें बिल्कुल प्रामाणिक होंगी यह भविष्य की गतिविधि एवं कार्यों से पता चलेगा।
श्री लंका नारायण राम - बाबू पुलिस कर्मी इलाहाबाद की लाल्टेन के परीक्षण हेतु पत्रों का लंबा विवरणात्मक पत्र लिखा। पत्र के संबंध में तीन दिन पहले से सोच रहा था।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

दैवमेवापरे यज्ञं योगिनः पर्युपासते। ब्रह्माग्नावपरे यज्ञं यज्ञेनैवोपजुह्वति ॥ २५ ॥
श्रोत्रादीनीन्द्रियाण्यन्ये संयमाग्निषु जुह्वति। शब्दादीन्विषयानन्य इन्द्रियाग्निषु जुह्वति ॥ २६ ॥
सर्वाणीन्द्रियकर्माणि प्राणकर्माणि चापरे। आत्मसंयमयोगाग्नौ जुह्वति ज्ञानदीपिते ॥ २७ ॥

सूर्योदय ५।५० सूर्यास्त ६।१२

daivamevāpare yajñaṁ yoginaḥ paryupāsate।
brahmāgnāvapare yajñaṁ yajñenaivopajuhvati ॥ 25 ॥
śrotrādīnīndriyāṇyanye saṁyamāgniṣu juhvati।
śabdādīnviṣayānanya indriyāgniṣu juhvati ॥ 26 ॥
sarvāṇīndriyakarmāṇi prāṇakarmāṇi cāpare।
ātmasaṁyamayogāgnau juhvati jñānadīpite ॥ 27 ॥

भा० ९ चैत्र पं० १७ चैत्र

श्रीगणेशचतुर्थीव्रत

आज प्रेमाधिकुमार घर से लौटे। जीवन आया। मुझे शांति मिली। समाचार ज्ञात हुआ।

आज वैद्यनाराणका वह पत्र लिखकर मैंने बंद किया। दिल्ली गया।

दो पत्र अंतर्देशीय, पूं० राजवंशी पाराडेय एवं श्री डा० योगेश्वरनाथ शर्मा को लिखकर भेजा।

मनाए केलेंडर खिलौना आदि - नोट मोहनका।

आज्ञापत्रिका लेख भी पढ़ा।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

द्रव्ययज्ञास्तपोयज्ञा योगयज्ञास्तथापरे। स्वाध्यायज्ञानयज्ञाश्च यतयः संशितव्रताः ॥ २८ ॥
अपाने जुह्वति प्राणं प्राणेऽपानं तथापरे। प्राणापानगती रुद्ध्वा प्राणायामपरायणाः ॥ २९ ॥
अपरे नियताहाराः प्राणान्प्राणेषु जुह्वति। सर्वेऽप्येते यज्ञविदो यज्ञक्षपितकल्मषाः ॥ ३० ॥

सूर्योदय ५।४९ सूर्यास्त ६।१३

dravyayajñāstapoyajñā yogayajñāstathāpare।
svādhyāyajñānayajñāśca yatayaḥ saṁśitavratāḥ ॥ 28 ॥
apāne juhvati prāṇaṁ prāṇe'pānaṁ tathāpare।
prāṇāpānagatī ruddhvā prāṇāyāmaparāyaṇāḥ ॥ 29 ॥
apare niyatāhārāḥ prāṇānprāṇeṣu juhvati।
sarve'pyete yajñavido yajñakṣapitakalmaṣāḥ ॥ 30 ॥

भा० १० चैत्र पं० १८ चैत्र

** राष्ट्रीय स्वाभिमान के प्रतीक श्री राम **

मेरी दृष्टि में रामायण लोकतन्त्र का आदि शास्त्र है — ऐसा शास्त्र जो लोकतंत्र की कहानी ही नहीं सुनाता, लोकतंत्र का प्रहरी, प्रेरक और निर्माता भी है। इसलिये तो मैं कहता हूँ कि अगर मैं इस देश का डिक्टेटर (तानाशाह) होता सबसे पहले रामायण पर प्रतिबंध, जबतक रामायण यहाँ है तबतक इस देश में कोई भी डिक्टेटर पनप नहीं सकता। स्वाधीनता की भावना को कोई कुचल नहीं सकता।

रामायण की शक्ति का और क्या कहें, क्या कहीं नजर आता है ऐसा सम्राट, सामान्य, अवतार, पैगम्बर जो भगवान श्रीराम की तुलना में ठहर सके? सबके खण्डहर आर्तनाद कर रहे हैं किन्तु रामायण का राजा, उसकी मर्यादा, उसका धर्म, उसके द्वारा स्थापित रामराज्य भारतवासियों के मानस को आज भी ओत-प्रोत प्रेरित प्रभावित कर रहा है।

चक्रवर्ती राज्य को त्यागकर वल्कलवेश में भी प्रसन्नवदन रहनेवाले, राजपुत्र किन्तु अयोध्या से

'सुहृदं सर्वभूतानां' — भगवान् सबके सुहृद् हैं, पर हमलोग इस भगवद्वचनपर विश्वास नहीं करते।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

यज्ञशिष्टामृतभुजो यान्ति ब्रह्म सनातनम्। नायं लोकोऽस्त्ययज्ञस्य कुतोऽन्यः कुरुसत्तम ॥ ३१ ॥
एवं बहुविधा यज्ञा वितता ब्रह्मणो मुखे। कर्मजान्विद्धि तान्सर्वानेवं ज्ञात्वा विमोक्ष्यसे ॥ ३२ ॥
श्रेयान्द्रव्यमयाद्यज्ञाज्ज्ञानयज्ञः परंतप। सर्वं कर्माखिलं पार्थ ज्ञाने परिसमाप्यते ॥ ३३ ॥

सूर्योदय ५।४८ सूर्यास्त ६।१३

yajñaśiṣṭāmṛtabhujo yānti brahma sanātanam।
nāyaṁ loko'styayajñasya kuto'nyaḥ kurusattama ॥ 31 ॥
evaṁ bahuvidhā yajñā vitatā brahmaṇo mukhe।
karmajānviddhi tānsarvānevaṁ jñātvā vimokṣyase ॥ 32 ॥
śreyāndravyamayādyajñājjñānayajñaḥ paraṁtapa।
sarvaṁ karmākhilaṁ pārtha jñāne parisamāpyate ॥ 33 ॥

भा० ११ चैत्र पं० १९ चैत्र

रामेश्वरम् तक लोकजीवन के बीच एक सामान्यजन की भाँति विचरण करनेवाले, शबरी की भक्ति के वशीभूत हो उसके जूठे बेर खानेवाले, और अहल्या का उद्धार करनेवाले श्रीराम ने रावण की लंका जीती किन्तु फूल की तरह उसे अर्पण कर दिया उस विभीषण को जिसने डिक्टेटर तथा धर्मद्रोही भाई (रावण) का विरोध कर स्वतंत्रता का ध्वज फहराया था।

ऐसे थे रामायण के श्रीराम जिनकी

जीवन-गाथा रामायण में अजर-अमर है। इस देश को मिटाने के लिये बड़ी-बड़ी ताकतें आयीं— मुगल, शक, हूण, आये किन्तु किन्तु वे इसे मिटा न सके। कैसे मिटते? रामायण जन-जन को प्रेरणा जो दे रही थी, स्वधर्म तथा स्वदेश की रक्षा की।

x x ——— o ——— x x

'विनायक दामोदर सावरकर'
'वीर सावरकर'

अपने उस निकटतम कर्तव्यका पालन करो, जिसे सचमुच तुम अपना कर्तव्य समझते हो। दूसरा कर्तव्य अपने आप स्पष्ट हो जायगा।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

तस्मादज्ञानसंभूतं हृत्स्थं ज्ञानासिनात्मनः। छित्त्वैनं संशयं योगमातिष्ठोत्तिष्ठ भारत ॥ ४२ ॥

ॐ तत्सदिति श्रीमद्भगवद्गीतासूपनिषत्सु ब्रह्मविद्यायां योगशास्त्रे श्रीकृष्णार्जुनसंवादे
ज्ञानकर्मसंन्यासयोगो नाम चतुर्थोऽध्यायः ॥४॥

सूर्योदय ५।४३ सूर्यास्त ६।१६	*tasmādajñānasaṁbhūtaṁ hṛtsthaṁ jñānāsinātmanaḥ।* *chittvainaṁ saṁśayaṁ yogamātiṣṭhottiṣṭha bhārata* ॥ 42 ॥ *oṁ tatsaditi śrīmadbhagavadgītāsūpaniṣatsu brahmavidyāyāṁ* *yogaśāstre śrīkṛṣṇārjunasaṁvāde jñānakarmasaṁnyāsayogo* *nāma caturtho'dhyāyaḥ* ॥ 4 ॥	भा० १६ चैत्र पं० २४ चैत्र

पापमोचनी एकादशीव्रत

बौद्धधर्म में प्रथम आर्यसत्य में बताया गया है कि सर्वत्र दुखही दुख है तथा सब कुछ क्षणभंगुर है। इस दुखमय और क्षणिक संसार को सुखमय और स्थायी समझते हैं। ऐसा अज्ञान और अविद्या के कारण होता है। अविद्या के कारण क्षणिक सुखकी कल्पना की जाती है तथा अस्थायी वस्तुओं को स्थायी और शाश्वत मान लिया जाता है। फिर अहंभावना के कारण व्यक्ति उनमें को भोक्ता मान लेता है। वह कहता है "मैं हूँ", "यह मेरा है"। अहंभावना का निराकरण अविद्या के नाश से ही संभव है। संक्षेप में कह सकते हैं कि जीवन और जगत के प्रति गलत दृष्टि के फलस्वरूप हम बंधन में रहते हैं। अतः बौद्धधर्म में दुख के निवारण के लिये बताये गये अष्टांगिक सोपान में 'सम्यक दृष्टि' प्रथम प्रथम है। अविद्या के कारण ही मानव को क्षणिक वस्तुएँ शाश्वत और दुःखदायी वस्तुएँ सुखदायी नजर आती हैं। इस अविद्या को हटाने के लिये मिथ्या दृष्टि को त्यागकर सही दृष्टि को अपनाना होगा।

सुन्दरी कामिनी आत्माका नरक, सम्पत्तिका नाश और नेत्रोंका स्वर्ग है।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

ॐ

पञ्चमोऽध्यायः

अर्जुन उवाच

संन्यासं कर्मणां कृष्ण पुनर्योगं च शंससि। यच्छ्रेय एतयोरेकं तन्मे ब्रूहि सुनिश्चितम्॥ १॥

श्रीभगवानुवाच

संन्यासः कर्मयोगश्च निःश्रेयसकरावुभौ। तयोस्तु कर्मसंन्यासात्कर्मयोगो विशिष्यते॥ २॥

सूर्योदय ५। ४२ सूर्यास्त ६। १६	*arjuna uvāca* *saṁnyāsaṁ karmaṇāṁ kṛṣṇa punaryogaṁ ca śaṁsasi।* *yacchreya etayorekaṁ tanme brūhi suniścitam॥ 1॥* *śrībhagavānuvāca* *saṁnyāsaḥ karmayogaśca niḥśreyasakarāvubhau।* *tayostu karmasaṁnyāsātkarmayogo viśiṣyate॥ 2॥*	भा० १७ चैत्र पं० २५ चैत्र

चैत्र कृष्ण १२, वि०सं० २०५०, गुरुवार, APRIL 7 .1994

'सम्यक दृष्टि' का अर्थ है वस्तुओं को उसके वास्तविक रूप में देखना। जब तक हम वस्तुओं को उनके वास्तविक स्वरूप में न देखें तब तक हम सही मार्ग पर आगे नहीं बढ़ सकते।

अतः मिथ्या ज्ञान के इच्छुक व्यक्ति को वस्तुओं के कारण तथा जीवन के उद्देश्य समझना चाहिये। सम्यक संकल्प के अन्तर्गत आठ सत्यों को जीवन में उतारने का पक्का निर्णय करना चाहिये। आसक्ति, द्वेष, हिंसा, घृणा आदि का त्याग आवश्यक है। सम्यक् वाक् के अन्तर्गत झूठ नहीं बोलना, निन्दा से बचना, कटु वचन से दूर रहना आदि आते हैं। अशोभनीय संकल्पों को मन में जागने नहीं देना चाहिये।

सम्यक् कर्मान्त का अर्थ है सोचना। दैनिक जीवन के व्यवहार में अहिंसा में जागरूक रहने का प्रयत्न करते रहना चाहिये।

निजका घर और साध्वी स्त्री सोने और मोतियोंके समान हैं।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

ज्ञेयः स नित्यसंन्यासी यो न द्वेष्टि न काङ्क्षति। निर्द्वन्द्वो हि महाबाहो सुखं बन्धात्प्रमुच्यते ॥ ३ ॥
सांख्ययोगौ पृथग्बालाः प्रवदन्ति न पण्डिताः। एकमप्यास्थितः सम्यगुभयोर्विन्दते फलम् ॥ ४ ॥
यत्सांख्यैः प्राप्यते स्थानं तद्योगैरपि गम्यते। एकं सांख्यं च योगं च यः पश्यति स पश्यति ॥ ५ ॥

सूर्योदय ५।४१ सूर्यास्त ६।१७

jñeyaḥ sa nityasaṁnyāsī yo na dveṣṭi na kāṅkṣati।
nirdvandvo hi mahābāho sukhaṁ bandhātpramucyate ॥ 3 ॥
sāṅkhyayogau pṛthagbālāḥ pravadanti na paṇḍitāḥ।
ekamapyāsthitaḥ samyagubhayorvindate phalam ॥ 4 ॥
yatsāṅkhyaiḥ prāpyate sthānaṁ tadyogairapi gamyate।
ekaṁ sāṅkhyaṁ ca yogaṁ ca yaḥ paśyati sa paśyati ॥ 5 ॥

भा० १८ चैत्र पं० २६ चैत्र

प्रदोषव्रत

अहिंसा, अस्तेय, इन्द्रिय संयम आदि इस सोपान के अन्तर्गत हैं। सम्यक् जीवन या जीवन यापन के लिए उचित साधन अपनाना चाहिये। गलत साधन का प्रयोग जीवन जीने के लिये नहीं करना चाहिये। सम्यक् व्यायाम → मस्तिष्क से बुरे विचारों को निकालना चाहिये तथा अच्छे विचारों को भरना चाहिये। बिना प्रयास के ऐसा संभव नहीं है। सम्यक् स्मृति में बताया गया है कि वस्तुओं के दुखमय और क्षणभंगुर स्वरूप को याद रखना चाहिये। इसके बाह्य और अवास्तविक स्वरूप से मोहित नहीं होना चाहिये। अष्टांगिक मार्ग का अंतिम सोपान सम्यक् समाधि है। ध्यान या समाधि में चार अवस्थाएँ जिन्हें सफलता पूर्वक पार करने के बाद निर्वाण की प्राप्ति हो जाती है। इस अवस्था में दुःख से पूर्ण छुटकारा मिल जाता है।

निर्वाण दुःख-सुख, जन्म-पुनर्जन्म से पूर्ण छुटकारे की अवस्था है।

अहिंसाका अर्थ ईश्वरपर भरोसा रखना है।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

संन्यासस्तु महाबाहो दुःखमाप्तुमयोगतः। योगयुक्तो मुनिर्ब्रह्म नचिरेणाधिगच्छति ॥ ६ ॥
योगयुक्तो विशुद्धात्मा विजितात्मा जितेन्द्रियः। सर्वभूतात्मभूतात्मा कुर्वन्नपि न लिप्यते ॥ ७ ॥
नैव किंचित्करोमीति युक्तो मन्येत तत्त्ववित्। पश्यञ्शृण्वन्स्पृशञ्जिघ्रन्नश्नन्गच्छन्स्वपञ्श्वसन् ॥ ८ ॥

सूर्योदय ५।४० सूर्यास्त ६।१७

saṁnyāsastu mahābāho duḥkhamāptumayogataḥ।
yogayukto munirbrahma nacireṇādhigacchati ॥ 6 ॥
yogayukto viśuddhātmā vijitātmā jitendriyaḥ।
sarvabhūtātmabhūtātmā kurvannapi na lipyate ॥ 7 ॥
naiva kiṅcitkaromīti yukto manyeta tattvavit।
paśyañśṛṇvanspṛśañjighrannaśnangacchansvapañśvasan ॥ 8 ॥

भा० १९ चैत्र पं० २७ चैत्र

बौद्ध धर्म में निर्वाण ईश्वर का अनुग्रह नहीं है, बल्कि मानव के अपने प्रयासों का परिणाम। प्रत्येक मुमुक्षु अपने प्रयासों से अष्टांगिक मार्ग का अनुसरण करके निर्वाण की प्राप्ति कर सकता है। मानव अपना भाग्य दिखाता है। इस तरह हम देखते हैं कि बौद्ध धर्म में यहूदी, ईसाई और इस्लाम धर्म के प्रतिकूल ईश्वर कृपा का कोई स्थान नहीं है। इसे मानवतावाद की संज्ञा भी दी गई है। क्योंकि बुद्ध ने बताया है कि मानव अपने प्रयास के द्वारा दुःख से छुटकारा पा सकता है। निर्वाण प्राप्ति के लिये किसी शक्ति पर आश्रित नहीं रहना पड़ता है।

चैत्र कृष्ण ३०, वि०सं० २०५०, रविवार, APRIL 10. 1994 [दिन १००
सूर्योदय ५।३९ सूर्यास्त ६।१८ पं० २८ चैत्र भा० २० चैत्र

अमावास्या

बुद्ध ने कहा था :— "तुम अपने लिए स्वयं अपना प्रकाश बनो। बाह्य किसी शरण की सहायता मत लो। धर्म ही तुम्हारा दीप और शरण है।"

"अत्त दीपा विहरथ अत्त सरणा अनञ्ञ सरणा। धम्म दीपा धम्म सरणा अनञ्ञ सरणा।।"

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

प्रलपन्विसृजन्गृह्णन्नुन्मिषन्निमिषन्नपि । इन्द्रियाणीन्द्रियार्थेषु वर्तन्त इति धारयन् ॥ ९ ॥
ब्रह्मण्याधाय कर्माणि सङ्गं त्यक्त्वा करोति यः । लिप्यते न स पापेन पद्मपत्रमिवाम्भसा ॥ १० ॥
कायेन मनसा बुद्ध्या केवलैरिन्द्रियैरपि । योगिनः कर्म कुर्वन्ति सङ्गं त्यक्त्वात्मशुद्धये ॥ ११ ॥

सूर्योदय ५।३८
सूर्यास्त ६।१८

pralapanvisrjangrhṇannunmiṣannimiṣannapi ।
indriyāṇīndriyārtheṣu vartanta iti dhārayan ॥ 9 ॥
brahmaṇyādhyāya karmāṇi saṅgaṁ tyaktvā karoti yaḥ ।
lipyate na sa pāpena padmapatramivāmbhasā ॥ 10 ॥
kāyena manasā buddhyā kevalairindriyairapi ।
yoginaḥ karma kurvanti saṅgaṁ tyaktvātmaśuddhaye ॥ 11 ॥

भा॰ २१ चैत्र
पं॰ २९ चैत्र

चैत्र नवरात्रारम्भ, 'सर्वजित्' नाम संवत्सर

'बोधिसत्व' की अवधारणा बौद्ध धर्म में पायी जाती है। वे अर्हत हैं जो अपनी निर्वाणगति को लोकहित में तथतः स्वीकार लेते हैं जब तक अन्य सीधों को निर्वाण प्राप्त अभिगृहीत न करें। इन्हें पूर्ण प्रज्ञा तथा करुणा के लक्षणों भी अनेक जन्म इसलिये लेने पड़ते हैं कि सब सत्व मानवों को दुख निवृत्ति मार्गदर्शन तथा लोककल्याण में लिप्त रहें।

अगर तुम्हारे एक शब्दसे भी किसीको पीड़ा पहुँचती है तो तुम अपनी सब नेकी नष्ट हुई समझो।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

युक्तः कर्मफलं त्यक्त्वा शान्तिमाप्नोति नैष्ठिकीम्। अयुक्तः कामकारेण फले सक्तो निबध्यते ॥ १२ ॥
सर्वकर्माणि मनसा संन्यस्यास्ते सुखं वशी। नवद्वारे पुरे देही नैव कुर्वन्न कारयन् ॥ १३ ॥
न कर्तृत्वं न कर्माणि लोकस्य सृजति प्रभुः। न कर्मफलसंयोगं स्वभावस्तु प्रवर्तते ॥ १४ ॥

सूर्योदय ५। ३७ सूर्यास्त ६। १९	*yuktaḥ karmaphalaṁ tyaktvā śāntimāpnoti naiṣṭ hikīm।* *ayuktaḥ kāmakāreṇa phale sakto nibadhyate ॥ 12 ॥* *sarvakarmāṇi manasā saṁnyasyāste sukhaṁ vaśī।* *navadvāre pure dehī naiva kurvanna kārayan ॥ 13 ॥* *na kartṛtvaṁ na karmāṇi lokasya sṛjati prabhuḥ।* *na karmaphalasaṁyogaṁ svabhāvastu pravartate ॥ 14 ॥*	भा० २२ चैत्र पं० ३० चैत्र

"ॐ ह्रौं जूं सः। ॐ भूर्भुवः स्वः। ॐ त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्धनम्। उर्व्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय मामृतात्। स्वः भुवः भूः ॐ। सः जूँ ह्रौं ॐ" → यह मृत्युञ्जय का संपुट मंत्र है।

ॐकार का प्रतीक प्रत्येक शिवलिङ्ग है। उसी के ऊपर अविच्छिन्न, अनवरत जलधारा के प्रवाहवत्

अपनी दृष्टि स्थिर करते हुए विश्वासपूर्वक मृत्युञ्जय-महामंत्र का जप करता रहे तो ध्यानावस्था प्रत्यक्ष खड़ी हो जाती है और एक विलक्षण आनंद की अनुभूति होती है।

सृष्टि के आदि, मध्य और अन्त — तीनों 'ह्रौं' और 'जूँ' .... से अपने समक्ष उपस्थित करते हुए त्रिलोकी में जप करने वाला व्यक्ति त्र्यम्बकेश्वर के प्रति अपने आपका समर्पण कर रहा है। त्र्यम्बकेश्वर की कृपारूपी सुगंध फैल रही है और उपासक के रोम-रोम में ऐसी स्फूर्ति होने लगती है कि उसका

भगवान्‌के मनकी बात पूरी हो जाय—यह भक्तियोग है।

आध्यात्मिक भाव छिप नहीं सकता। जैसे इन्द्रायण (तूँबे) की बेल सूख जाने पर फल-बन्धन से मुक्त—

Raj Guru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

नादत्ते कस्यचित्पापं न चैव सुकृतं विभुः। अज्ञानेनावृतं ज्ञानं तेन मुह्यन्ति जन्तवः ॥ १५ ॥
ज्ञानेन तु तदज्ञानं येषां नाशितमात्मनः। तेषामादित्यवज्ज्ञानं प्रकाशयति तत्परम् ॥ १६ ॥
तद्बुद्धयस्तदात्मानस्तन्निष्ठास्तत्परायणाः। गच्छन्त्यपुनरावृत्तिं ज्ञाननिर्धूतकल्मषाः ॥ १७ ॥

सूर्योदय ५।३५ सूर्यास्त ६।१९

nādatte kasyacitpāpaṁ na caiva sukṛtaṁ vibhuḥ।
ajñānenāvṛtaṁ jñānaṁ tena muhyanti jantavaḥ ॥ 15 ॥
jñānena tu tadajñānaṁ yeṣāṁ nāśitamātmanaḥ।
teṣāmādityavajjñānaṁ prakāśayati tatparam ॥ 16 ॥
tadbuddhayastadātmānastanniṣṭhāstatparāyaṇāḥ।
gacchantyapunarāvṛttiṁ jñānanirdhūtakalmaṣāḥ ॥ 17 ॥

भा० २३ चैत्र पं० १ वैशाख

मत्स्य-जयन्ती

→ होकर आस-पास की अनन्तता में छिप जाता है, उसी प्रकार जप करनेवाला उपासक अपनी मोक्ष की अवस्था को प्रत्यक्ष कर सकता है।

—— ✗ —— ✗ —— ✗

ऊपर कहा गया है कि शिवलिङ्ग ॐकार का प्रतीक है। वह कैसे है —— यह जानने के लिये "उ ᳲ ᳲ ॐ" इनके तीन भागों पर विचार करें। उपासक पूर्वाभिमुख बैठता है। जल झेलनेवाला भाग उ — उत्तर भाग की ओर बहाकर ले जाता है। 'ᳲ' यह भाग आधार है, जो जलहरी को ऊँचे उठाये रहता है। 'ᳲ' यह भाग लिङ्ग के रूप में ऊपर को विराजमान रहता है। किसी भी शिवमन्दिर में जाकर पूर्वाभिमुख रहकर इस दृश्य का साक्षात्कार किया जा सकता है।

संसारके मनकी हो जाय—यह कर्मयोग है।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

बाह्यस्पर्शेष्वसक्तात्मा विन्दत्यात्मनि यत्सुखम्। स ब्रह्मयोगयुक्तात्मा सुखमक्षयमश्नुते ॥ २१ ॥
ये हि संस्पर्शजा भोगा दुःखयोनय एव ते। आद्यन्तवन्तः कौन्तेय न तेषु रमते बुधः ॥ २२ ॥
शक्नोतीहैव यः सोढुं प्राक्शरीरविमोक्षणात्। कामक्रोधोद्भवं वेगं स युक्तः स सुखी नरः ॥ २३ ॥

सूर्योदय ५।३३ सूर्यास्त ६।२०

bāhyasparśeṣvasaktātmā vindatyātmani yatsukham।
sa brahmayogayuktātmā sukhamakṣayamaśnute ॥ 21 ॥
ye hi saṁsparśajā bhogā duḥkhayonaya eva te।
ādyantavantaḥ kaunteya na teṣu ramate budhaḥ ॥ 22 ॥
śaknotīhaiva yaḥ soḍhuṁ prākśarīravimokṣaṇāt।
kāmakrodhodbhavaṁ vegaṁ sa yuktaḥ sa sukhī naraḥ ॥ 23 ॥

भा० २५ चैत्र पं० ३ वैशाख

आज तीक जंने पत्र श्री श्रीराम पाराडेय, प्रधानमन्त्री आनंद चौधरी तथा वहुत सी सन्तुष्टजन शेषे कारण सभी प्रमुख शिष्यों और शुभेच्छुओं को लिखा।
प्रसाद साधकाश्रम चकिया होकर ३ बजे पहुँचे। उनकी धर्मपत्नी अत्यन्त सीधी। उनके मामा पूछा उन्हें को लेकर के आये। मौकी नहीं मिले, यह विडम्बना है।
मेरे लगेा मनुष्य माई में दुःख संघर्ष नाम उनके उत्पन्न कारण मारीमें वाधक हो रहे हैं। मौकी पाने के लिए सेवा शिक्षा में श्रद्धा चाहिए। दलवंदी के चाले भारी संकट है।
प्रसाद ने मेरी अगवानी ११ बजे तक की। मैं दीक्षित हूँ अभिन्न हूँ क्या ये सकवाहुक उनकी सेवा करने चिन्तित रहेंगे। उन्हें किसी सद्गुरु के शरण में जाने में मदद करेंगे।
सेवाश्रम दे हमने। कुछ पत्रिकाएँ। सबकी तीव्र इच्छा स्वयंसेवी संस्था खोलें। परन्तु उनके पास धन के लिये दे सके।

जबतक भोगेच्छा रहती है, तभीतक जीनेकी इच्छा तथा मरनेका भय रहता है।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

योऽन्तःसुखोऽन्तरारामस्तथान्तर्ज्योतिरेव यः। स योगी ब्रह्मनिर्वाणं ब्रह्मभूतोऽधिगच्छति ॥ २४ ॥
लभन्ते ब्रह्मनिर्वाणमृषयः क्षीणकल्मषाः। छिन्नद्वैधा यतात्मानः सर्वभूतहिते रताः ॥ २५ ॥
कामक्रोधवियुक्तानां यतीनां यतचेतसाम्। अभितो ब्रह्मनिर्वाणं वर्तते विदितात्मनाम् ॥ २६ ॥

सूर्योदय ५।३२ सूर्यास्त ६।२१

yo'ntaḥsukho'ntarārāmastathāntarjyotireva yaḥ।
sa yogī brahmanirvāṇaṁ brahmabhūto'dhigacchati ॥ 24 ॥
labhante brahmanirvāṇamṛṣayaḥ kṣīṇakalmaṣāḥ।
chinnadvaidhā yatātmānaḥ sarvabhūtahite ratāḥ ॥ 25 ॥
kāmakrodhaviyuktānāṁ yatīnāṁ yatacetasām।
abhito brahmanirvāṇaṁ vartate viditātmanām ॥ 27 ॥

भा० २६ चैत्र पं० ४ वैशाख

आज प्रातः पं० गोपेश पाँडे, अंगद, तथा एक नवयुवक श्री अमृतलाल शुक्ल महाराजगंज मोहल्ला से - भोजपुरी पढ़ाने के लिए आए हैं। ये लोग वाराणसी में होनेवाले उत्तरप्रदेश भोजपुरी साहित्य सम्मेलन के लिए आए हैं। श्री अंजनेयजी को एक कार्ड लिखने जा। श्री जगदानन्द को भी एक-एक लिखा।

चैत्र शुक्ल ६, वि०सं० २०५१, रविवार, APRIL 17. 1994 [दिन १०७

सूर्योदय ५।३१ सूर्यास्त ६।२१ पं० ५ वैशाख भा० २७ चैत्र

आज राम गुलाम-आसन-समिति की बैठक हुई। सभी सदस्य उपस्थित थे। इस्कुछ नवल, अक्षयवटलिपारी, रामसेवा पाण्डेय, मुन्नेश्वर राय, श्री दुर्गाचरण श्री अनुपस्थित रहे, हिरोपंत-सभापति-की प्रेरणा से मंडल तथा कार्यालय के सुधार आदि। कार्यालय को कार्यक्षमता तथा कार्यक्षेत्र बढ़ाने के संबंध में विचार हुआ। [illegible] गोलाघाट पर श्री अमृतलाल शुक्ल [illegible]

RajGuru Matt, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

स्पर्शान्कृत्वा बहिर्बाह्यांश्चक्षुश्चैवान्तरे भ्रुवोः । प्राणापानौ समौ कृत्वा नासाभ्यन्तरचारिणौ ॥ २७ ॥
यतेन्द्रियमनोबुद्धिर्मुनिर्मोक्षपरायणः । विगतेच्छाभयक्रोधो यः सदा मुक्त एव सः ॥ २८ ॥

सूर्योदय ५।३१ सूर्यास्त ६।२२

sparśānkṛtvā bahirbāhyāṁścakṣuścaivāntare bhruvoḥ ।
prāṇāpānau samau kṛtvā nāsābhyantaracāriṇau ॥ 27 ॥
yatendriyamanobuddhirmunirmokṣaparāyaṇaḥ ।
vigatecchābhayakrodho yaḥ sadā mukta eva saḥ ॥ 28 ॥

भा० २८ चैत्र पं० ६ वैशाख

आज प्रभोदघुआ गये। कुशवार के। वापस आने की बातें हुईं। इसी में उन्हें मालिश दिया। प्रभोद से उनके शीघ्र आने तथा दो मोजपुरी गीत कहे— झंडा फहराने तथा उमानाथ [illegible] के संबंध में बातें हुईं। स्वास्थ्य ठीक नहीं बताया।

पं० गणेशदत्त भोजपुरी भाषा कवि के अभिनंदन से लौटकर आये और पिताजी को सुनाया। शंकरपाल [illegible] सहित गंगाजी के [illegible] उमानाथ-उमा आचार्य-बलदेव उपाध्याय सभी एक साथ हुए थे। उनका भोजपुरी साहित्य सम्मेलन के [illegible] गुरुजी की महत्ता मालूम पड़ी। कुछ मन्दिर कुछ कार्यक्रम, [illegible] संत के [illegible]। उन को [illegible]

माता-पिता साक्षात् परमात्माके स्वरूप हैं, उनकी सेवासे भगवान् प्रसन्न होते हैं।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

भोक्तारं यज्ञतपसां सर्वलोकमहेश्वरम्। सुहृदं सर्वभूतानां ज्ञात्वा मां शान्तिमृच्छति ॥ २९ ॥

ॐ तत्सदिति श्रीमद्भगवद्गीतासूपनिषत्सु ब्रह्मविद्यायां योगशास्त्रे श्रीकृष्णार्जुनसंवादे
कर्मसंन्यासयोगो नाम पञ्चमोऽध्यायः ॥५॥

सूर्योदय ५।३० सूर्यास्त ६।२२

bhoktāraṁ yajñatapasāṁ sarvalokamaheśvaram।
suhṛdaṁ sarvabhūtānāṁ jñātvā māṁ śāntimṛcchati ॥ 29 ॥

oṁ tatsaditi śrīmadbhagavadgītāsūpaniṣatsu brahmavidyāyāṁ
yogaśāstre śrīkṛṣṇārjunasaṁvāde karmasaṁnyāsayogo
nāma pañcamo'dhyāyaḥ ॥ 5 ॥

भा० २९ चैत्र पं० ७ वैशाख

आज प्रातः गोरखपुर की लड़की के लिए। दो तीन वर्ष पहले उनका लड़का इंजीनियर है। लखनऊ में रहता है। उनके अनुरोध पर उनके लड़के को एक पत्र 'कर्मयोग' के बारे में देना पड़ा। वह पंडित (ब्राह्मण) है। कानपुर (कालेज) में पढ़ता है। भोजपुरी पढ़ने के लिए प्रयत्नशील है। [illegible] गाय-पोषण के आन्दोलन [illegible] वर्तमान विध्वंसात्मक [illegible]।

सायंकाल- सहसा भोजपुरी साप्ताहिक पत्रिका के संपादक [illegible] ओ० सी० लखनऊ के पते पर। पासवाले [illegible] अपने साथ चन्द्रशेखर के साथ आ रहे हैं। वे जानते हैं होनेवाले भोजपुरी भाषा-परिषद् के भी निमंत्रित हो [illegible]। उन्होंने [illegible]। पं० गंगेश्वराचार्य से उनकी [illegible] नहीं। [illegible] पंडितों को उदार तथा समन्वयवादी दृष्टि का होना [illegible]। दृग-दृष्टि-दर्शन और [illegible] के [illegible] आंखें। [illegible] के जानने पर [illegible]।

~~[illegible] को [illegible]~~

माता-पिताके दोष देखना पुत्रका कर्तव्य नहीं है।

वे [illegible] [illegible] [illegible]

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

ॐ

षष्ठोऽध्यायः

श्रीभगवानुवाच

अनाश्रितः कर्मफलं कार्यं कर्म करोति यः। स संन्यासी च योगी च न निरग्निर्न चाक्रियः॥ १॥
यं संन्यासमिति प्राहुर्योगं तं विद्धि पाण्डव। न ह्यसंन्यस्तसंकल्पो योगी भवति कश्चन॥ २॥

सूर्योदय	श्रीभगवानुवाच	भा० ३०
५। २९	anāśritaḥ karmaphalaṁ kāryaṁ karma karoti yaḥ।	चैत्र
सूर्यास्त	sa saṁnyāsī ca yogī ca na niragnirna cākriyaḥ॥ 1॥	पं० ८
६। २३	yaṁ saṁnyāsamiti prāhuryogaṁ taṁ viddhi pāṇḍava।	वैशाख
	na hyasaṁnyastasaṅkalpo yogī bhavati kaścana॥ 2॥	

चैत्र शुक्ल ९, वि०सं० २०५१, बुधवार, APRIL 20. 1994
श्रीरामनवमीव्रत

आज प्रातः वशिष्ठमुनिआश्रमउपसम्पदक-आमा स्वर्गीय[illegible]
के रामनवमीव्रत सहस्रचण्डी के पैसे का चेक लिखा। सायंकाल
स्वर्गीय बिहारी तिवारी पत्नी सहित आये। देर तक
चर्चा चली। उनके दो भाइयों ने क्रमशः ११ रु० एवं
३१।०० रुपये तथा बड़े भाई की पत्नी ने २५।०० दिये
थे, वह तथा दुध्यौं कुल ७४४।०० मिले। इसमें पहले
बलिराम विनायक देने थे। यह ई-अमल गीम सरस्वती
विद्या की श्रद्धांजलि। यह डिपु मु० ब्रा० बन्धु के माध्यमों
से भिक्षक तथा मेरी भावनाओं की अभिव्यक्ति है।
दूध-एक औरत भिक्षा के लिये।
बीच कच्ची रोटी उठाने वाला कुत्ता।
बैल के गाल के घाव।
प्रसाद अन्न की थाली के
किनारे में तथा फल की छिलका के पंचड़े में, सम्बन्ध
के मोह में पड़े फल नहीं शायद मैं आवें।
कर्मयोग है, समझने का।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

आरुरुक्षोर्मुनेर्योगं कर्म कारणमुच्यते। योगारूढस्य तस्यैव शमः कारणमुच्यते ॥ ३ ॥
यदा हि नेन्द्रियार्थेषु न कर्मस्वनुषज्जते। सर्वसंकल्पसंन्यासी योगारूढस्तदोच्यते ॥ ४ ॥
उद्धरेदात्मनात्मानं नात्मानमवसादयेत्। आत्मैव ह्यात्मनो बन्धुरात्मैव रिपुरात्मनः ॥ ५ ॥

सूर्योदय ५। २८
सूर्यास्त ६। २४

ārurukṣormuneryogaṁ karma kāraṇamucyate।
yogārūḍhasya tasyaiva śamaḥ kāraṇamucyate ॥ 3॥
yadā hi nendriyārtheṣu na karmasvanuṣajjate।
sarvasaṅkalpasaṁnyāsī yogārūḍhastadocyate ॥ 4॥
uddharedātmanātmānaṁ nātmānamavasādayet।
ātmaiva hyātmano bandhurātmaiva ripurātmanaḥ ॥ 5॥

भा० १ वैशा० शक १९१६ पं० ९ वैशाख

अब प्रातः ४ बजे उठा। सतू भोजन किया। सौन्दर्यमन्दिर [illegible] नरेन्द्र शर्मी को लंबा पत्र लिखा वंदना। [illegible] को पत्र भेजा। तीव्र एक प्रमोद का पत्र नहीं। उपवास है रहा है। जीवन में संघर्ष तो बहुत किया बहुत तरह के अनुभव हुए- धर्म-कर्म, समाजसेवा, देशसेवा आदि के क्षेत्र में प्रत्येक पद के साथ तिकड़म, अन्याय छल और प्रवंचना के चक्र देखे। वास्तविकता को समझना सहज नहीं। जिन्होंने को अब कभी ईष्ट अब राजनीतिक उच्चवृत्तियों से प्रभावित मूर्च्छित समाज, पुंजीभूत सम्पदा की व्यक्तित्व में कैसा अपना सत्कृत्य [illegible] है। आत्मा के जख्मों को, सहिष्णु के, जीवमूल्यों को मूल्यकार लोग, मानवता को कलंकित करते देखे जाते हैं। कथनी कुछ - करनी कुछ और। समाज आज [illegible] का [illegible] घृणा होता है।

[illegible] नरेन्द्र - आशा - [illegible] [illegible] देह [illegible] को लड़ा। यह लड़का सीधा [illegible] [illegible] [illegible] कारण है। [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

बन्धुरात्मात्मनस्तस्य येनात्मैवात्मना जितः। अनात्मनस्तु शत्रुत्वे वर्तेतात्मैव शत्रुवत्॥ ६॥
जितात्मनः प्रशान्तस्य परमात्मा समाहितः। शीतोष्णसुखदुःखेषु तथा मानापमानयोः॥ ७॥
ज्ञानविज्ञानतृप्तात्मा कूटस्थो विजितेन्द्रियः। युक्त इत्युच्यते योगी समलोष्टाश्मकाञ्चनः॥ ८॥

सूर्योदय ५। २७ सूर्यास्त ६। २४

bandhurātmātmanastasya yenātmaivātmanā jitaḥ।
anātmanastu śatrutve vartetātmaiva śatruvat॥ 6॥
jitātmanaḥ praśāntasya paramātmā samāhitaḥ।
śītoṣṇasukhaduḥkheṣu tathā mānāpamānayoḥ॥ 7॥
jñānavijñānatṛptātmā kūṭastho vijitendriyaḥ।
yukta ityucyate yogī samaloṣṭāśmakāñcanaḥ॥ 8॥

भा॰ २ वैशाख पं॰ १० वैशाख

कामदा एकादशीव्रत

डा॰ भोगीन्द्रनाथ नर्सिंहे शीतु केपते पर लेखा पत्र आज लिखना प्रारंभ किया कीर्तन को इस्कन के मंगलाचरण लखनऊ है के लोग किसी प्रकार के कृत्रिम भोजन किया कई १०-२० वर्ष लंबा और डेढ़ के लगभग के साथ वीरान्ना पु॰ - इस्कान। अमरीका तीन पत्र, वैंकूवर, ऑरलैंड, सेंट्लास के अमेरिका तथा दो भूमि प्रेषित पत्र गोलोकधाम एवं दीक्षा के लिये। आज लखनऊ के चैतन्यदास हाथी की पत्नी के साथ एक और भैंसा-लखनऊ गाय के गलत्रिक्षा की प्रार्थना। ये लेखा सकुशल नहीं कैसे कुशल नहीं। आप लोगों के लिये।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

प्रभु: मई में आपसे मिलकर जाऊंगा। बड़ी मुश्किल है।

सुहृन्मित्रार्युदासीनमध्यस्थद्वेष्यबन्धुषु । साधुष्वपि च पापेषु समबुद्धिर्विशिष्यते ॥ ९ ॥
योगी युञ्जीत सततमात्मानं रहसि स्थितः । एकाकी यतचित्तात्मा निराशीरपरिग्रहः ॥ १० ॥
शुचौ देशे प्रतिष्ठाप्य स्थिरमासनमात्मनः । नात्युच्छ्रितं नातिनीचं चैलाजिनकुशोत्तरम् ॥ ११ ॥

सूर्योदय ५।२६ सूर्यास्त ६।२५

suhṛnmitrāryudāsīnamadhyasthadveṣyabandhuṣu ।
sādhuṣvapi ca pāpeṣu samabudhirviśiṣyate ॥ 9 ॥
yogī yuñjīta satatamātmānaṁ rahasi sthitaḥ ।
ekākī yatacittātmā nirāśīraparigrahaḥ ॥ 10 ॥
śucau deśe pratiṣṭhāpya sthiramāsanamātmanaḥ ।
nātyucchritaṁ nātinīcaṁ cailājinakuśottaram ॥ 11 ॥

भा० ३ वैशाख पं० ११ वैशाख

शनिप्रदोष

आज प्रभास की आने की आशा लगाने बैठा था पर नहीं आये। दूध और पावरोटी से गुजारा किया। रात्रि को शास्त्र पढ़ते पढ़ते बड़े जोर से आंधी और बौछार आई। बेमन्यु के कारण वे सेवा नहीं दे सकेंगे। प्रमोद बीरेन्द्र को रक्त चढ़ाने का प्रबन्ध करने लगा। पूर्णिमा के दर्शन के लिये चलने की इच्छा नहीं थी। तीन दिन बाद से आने मिलेंगे। देखें क्या होता है। प्रतीक्षा करेंगे। बड़ी कष्ट से पादपद्म लिखी। कमला पत्र-व्यवहार का लेखा-जोखा ठीक किया।

चैत्र शुक्ल १३, वि०सं० २०५१, रविवार, APRIL 24. 1994 [दिन ११४

सूर्योदय ५।२५ सूर्यास्त ६।२५ पं० १२ वैशाख भा० ४ वैशाख

श्रीमहावीर-जयन्ती (जैन)

आज प्रातः अब प्रभास नहीं आये तो ऊन और तेल का दूध पीकर सोऊंगा। प्रभास-पाटन (गुजरात) के पुराने परिचित डॉक्टर जगजीवन दास-गंडल दिनों के बाद सपरिवार यहां कुछ दिन तक रहने आये हैं। पंडित प्रहलाद भाई के साथ आनन्द करते हैं। पुत्रवधू आदि के विषय में प्रश्न होते रहे। रामकृष्ण मठ सम्बन्धी रहे हैं। एकनाथ "गीताहृदय" ले लेकर चले गये। व्याख्यान के सम्बन्ध में मुलाकात की। [illegible] की खबरों चिंता [illegible] के [illegible]

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

तत्रैकाग्रं मनः कृत्वा यतचित्तेन्द्रियक्रियः। उपविश्यासने युञ्ज्याद्योगमात्मविशुद्धये ॥ १२ ॥
समं कायशिरोग्रीवं धारयन्नचलं स्थिरः। संप्रेक्ष्य नासिकाग्रं स्वं दिशश्चानवलोकयन् ॥ १३ ॥
प्रशान्तात्मा विगतभीर्ब्रह्मचारिव्रते स्थितः। मनः संयम्य मच्चित्तो युक्त आसीत मत्परः ॥ १४ ॥

सूर्योदय ५। २४
सूर्यास्त ६। २६

tatraikāgraṁ manaḥ kṛtvā yatacittendriyakriyaḥ।
upaviśyāsane yuñjyādyogamātmaviśuddhaye ॥ 12 ॥
samaṁ kāyaśirogrīvaṁ dhārayannacalaṁ sthiraḥ।
saṁprekṣya nāsikāgraṁ svaṁ diśaścānavalokayan ॥ 13 ॥
praśāntātmā vigatabhīrbrahmacārivrate sthitaḥ।
manaḥ saṁyamya maccitto yukta āsīta matparaḥ ॥ 14 ॥

भा० ५ वैशाख
पं० १३ वैशाख

पूर्णिमा, श्रीहनुमज्जयन्ती, वैशाखस्नानारम्भ

आज दोपहर के समय प्रमोद कुमार आए। इसके पूर्व तिकड़मी व्रजकिशोर आये। वैशाख भर नहीं बोलना है। जून में दशहरा बाद उन्हें निश्चितरूप से हटाना ही है। योगाश्रम, वृन्दावन के सच्चिदानन्द तथा औरों को [illegible] डाक में छोड़वाया।

आनन्दका मूल स्रोत संतोष है।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

युञ्जन्नेवं सदात्मानं योगी नियतमानसः। शान्तिं निर्वाणपरमां मत्संस्थामधिगच्छति ॥ १५ ॥
नात्यश्नतस्तु योगोऽस्ति न चैकान्तमनश्नतः। न चातिस्वप्नशीलस्य जाग्रतो नैव चार्जुन ॥ १६ ॥
युक्ताहारविहारस्य युक्तचेष्टस्य कर्मसु। युक्तस्वप्नावबोधस्य योगो भवति दुःखहा ॥ १७ ॥

सूर्योदय ५। २३ सूर्यास्त ६। २७	*yuñjannevaṁ sadātmānaṁ yogī niyatamānasaḥ।* *śāntiṁ nirvāṇaparamāṁ matsaṁsthāmadhigacchati ॥ 15 ॥* *nātyaśnatastu yogo'sti na caikāntamanaśnataḥ।* *na cātisvapnaśīlasya jāgrato naiva cārjuna ॥ 16 ॥* *yuktāhāravihārasya yuktaceṣṭasya karmasu।* *yuktasvapnāvabodhasya yogo bhavati duḥkhahā ॥ 17 ॥*	भा॰ ६ वैशाख पं॰ १४ वैशाख

प्रमोद की पत्नी दच्चे आये। दवा-दारू और बाजार बदले - उनकी व्यवस्था के बाद २८ ता॰ को पटना जाना होगा।

कोई कार्य नहीं हो सका। न पत्थर लेख मिला - न मंजन आया न चौखंभा दिमागदमके यहां से प्रस्तुत आयी।

वे ही सचमुच महान् हैं, जो सचमुच भले हैं।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

यदा विनियतं चित्तमात्मन्येवावतिष्ठते। निःस्पृहः सर्वकामेभ्यो युक्त इत्युच्यते तदा ॥ १८ ॥
यथा दीपो निवातस्थो नेङ्गते सोपमा स्मृता। योगिनो यतचित्तस्य युञ्जतो योगमात्मनः ॥ १९ ॥
यत्रोपरमते चित्तं निरुद्धं योगसेवया। यत्र चैवात्मनात्मानं पश्यन्नात्मनि तुष्यति ॥ २० ॥

सूर्योदय ५। २२
सूर्यास्त ६। २७

yadā viniyataṁ cittamātmanyevāvatiṣṭhte।
niḥspṛhaḥ sarvakāmebhyo yukta ityucyate tadā ॥ 18 ॥
yathā dīpo nivātastho neṅgate sopamā smṛtā।
yogino yatacittasya yuñjato yogamātmanaḥ ॥ 19 ॥
yatroparamate cittaṁ niruddhaṁ yogasevayā।
yatra caivātmanātmānaṁ paśyannātmani tuṣyati ॥ 20 ॥

भा० ७ वैशाख
पं० १५ वैशाख

आज बहुत दिनों के बाद कोटा से ६० किलो चीनी मिली।
प्रमोद को वार के लिये दे दिया गया - ४२ रुपये लगे।

बुद्धिमान् पुरुष मानको जहर समझकर उसका दूरसे ही त्याग करते हैं।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

सुखमात्यन्तिकं यत्तद्बुद्धिग्राह्यमतीन्द्रियम्। वेत्ति यत्र न चैवायं स्थितश्चलति तत्त्वतः ॥ २१ ॥
यं लब्ध्वा चापरं लाभं मन्यते नाधिकं ततः। यस्मिन्स्थितो न दुःखेन गुरुणापि विचाल्यते ॥ २२ ॥
तं विद्याद् दुःखसंयोगवियोगं योगसंज्ञितम्। स निश्चयेन योक्तव्यो योगोऽनिर्विण्णचेतसा ॥ २३ ॥

सूर्योदय ५। २२
सूर्यास्त ६। २८

sukhamātyantikaṁ yattadbuddhigrāhyamatīndriyam।
vetti yatra na caivāyaṁ sthitaścalati tattvataḥ ॥ 21 ॥
yaṁ labdhvā cāparaṁ lābhaṁ manyate nādhikaṁ tataḥ।
yasminsthito na duḥkhena gurunāpi vicālyate ॥ 22 ॥
taṁ vidyād duḥkhasaṁyogaviyogaṁ yogasaṁjñitam।
sa niścayena yoktavyo yogo'nirviṇṇacetasā ॥ 23 ॥

भा० ८ वैशाख
पं० १६ वैशाख

श्रीगणेशचतुर्थीव्रत

आज प्रातः जलपाईगुड़ी से लगभग एक घंटे की हवाई यात्रा के पश्चात् पटना पहुँचे। कुशलता पूर्वक यात्रा सम्पन्न होने का उपलक्ष्य "सिंडेसनापूर्ति" यज्ञ उपरोक्त में [illegible] स्वामीजी तथा [illegible] वक्ष के [illegible] वाणीरूप कॉलोनी-गांधीमैदान में [illegible] में दुर्गास्थान के भी दर्शनार्थ श्री-सच्चिदानन्द शक्तिपीठ यहां पहुँचे। भोजन विश्राम किया।

दूसरोंका अनिष्ट करना बहुत बड़ा पाप है।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

संकल्पप्रभवान्कामांस्त्यक्त्वा सर्वानशेषतः। मनसैवेन्द्रियग्रामं विनियम्य समन्ततः॥ २४॥
शनैः शनैरुपरमेद्बुद्ध्या धृतिगृहीतया। आत्मसंस्थं मनः कृत्वा न किंचिदपि चिन्तयेत्॥ २५॥
यतो यतो निश्चरति मनश्चञ्चलमस्थिरम्। ततस्ततो नियम्यैतदात्मन्येव वशं नयेत्॥ २६॥

सूर्योदय ५।२१ सूर्यास्त ६।२८

saṅkalpaprabhavānkāmāṁstyaktvā sarvānaśeṣataḥ।
manasaivendriyagrāmaṁ viniyamya samantataḥ॥ 24॥
śanaiḥ śanairuparamedbuddhyā dhṛtigṛhītayā।
ātmasaṁsthaṁ manaḥ kṛtvā na kiṁcidapi cintayet॥ 25॥
yato yato niścarati manaścañcalamasthiram।
tatastato niyamyaitadātmanyeva vaśaṁ nayet॥ 26॥

भा॰ ९ वैशाख पं॰ १७ वैशाख

आज प्रातः काल कोटा से रामेश्वरजी शर्मा का [illegible]
वीरगति। स्वामीनारायणजी से संपर्क किया गया।
पहले प्रमोद [illegible] रामीघाट गये थे पर [illegible] रामेश्वरजी नहीं मिले थे।
सायंकाल प्रमोद जैसा अलेका व पेलोड पर मालवीय-जगत-पार्टी का पीतल्दे में स्वागत-सत्कार किये यहाँ पिदहोत्सव की पोशाक पर पहुँचे। मेला एकदम [illegible] पूर्व ७०० स्वामीनारायणजी सहित बहुतलोग थे।
पहले बैनीजी के श्रीइन्द्रासन पूराउ में मिले। बाद में विधायक राणा पद्मसिंह जी मिले। बाद नरेन्द्रसिंह जी बहुत से श्रीरंगराय-पिताजी तथा बैनीजी को बधाई दी सभी से परिचय हुआ। [illegible] पेलेस गये। ढाई-ढाई घंटे बाद श्रीमेलारामजी मिश्रजी आये मिलकर परस्पर रूसेसाटे दिये पर्स्टुडें फलप्रान्त। बोड़े पड़ के में मेरे भवन पर आना किया की बात तय हुई।
५० के अवशेषासादगिंद-प्राकृतिक की चर्चा हुई। [illegible] के बाद [illegible] अनुभवस्थ हुई।
[illegible] मिले। निर्णय [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]

वार्ता खुदको फिरसे संभाल लेनेमें है

RajGuru Math, Sujvala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

प्रशान्तमनसं ह्येनं योगिनं सुखमुत्तमम्। उपैति शान्तरजसं ब्रह्मभूतमकल्मषम् ॥ २७ ॥
युञ्जन्नेवं सदात्मानं योगी विगतकल्मषः। सुखेन ब्रह्मसंस्पर्शमत्यन्तं सुखमश्नुते ॥ २८ ॥
सर्वभूतस्थमात्मानं सर्वभूतानि चात्मनि। ईक्षते योगयुक्तात्मा सर्वत्र समदर्शनः ॥ २९ ॥

सूर्योदय ५।२० सूर्यास्त ६।२९	*praśāntamanasaṁ hyenaṁ yoginaṁ sukhamuttamam।* *upaiti śāntarajasaṁ brahmabhūtamakalmaṣam ॥ 27 ॥* *yuñjannevaṁ sadātmānaṁ yogī vigatakalmaṣaḥ।* *sukhena brahmasaṁsparśamatyantaṁ sukhamaśnute ॥ 28 ॥* *sarvabhūtasthamātmānaṁ sarvabhūtāni cātmani।* *īkṣate yogayuktātmā sarvatra samadarśanaḥ ॥ 29 ॥*	भा० १० वैशाख पं० १८ वैशाख

नृत्ता

'नृत्तावसाने नटराजराजो ननाद ढक्कां नवपञ्चवारम्।
उद्धर्तुकामः सनकादिसिद्धानेतद् विमर्शे शिवसूत्रजालम्॥'

महाप्रलय के अन्त में नटराजराज शिव ने अपने 'शब्दब्रह्म' का नाद घोषित किया। जब सूर्य, चन्द्र, नक्षत्र, पर्वतादि कुछ भी नहीं थे, उस समय आकाश से ऊपर अन्तरिक्ष में, केवल ध्वनि मात्र ही थी। वह ध्वनि ही शब्दब्रह्म 'ॐ' कारस्वरूप है। वही ध्वनि चौदहवार ध्वनित होकर व्याकरणशास्त्र के वाक्-शक्ति के, चौदह सूत्र हुए। ये चौदह सूत्र प्रतीकात्मक अक्षरब्रह्म हैं। यहीं से शब्दब्रह्म का आविर्भाव हुआ। इन चौदह प्रतिध्वनियों से चौदह भुवनों का एवं चतुर्दश विद्याओं का विकास हुआ।

वैशाख कृष्ण ६, वि०सं० २०५१, रविवार, MAY 1. 1994 [दिन १२१

सूर्योदय ५।१९ सूर्यास्त ६।२९ पं० १९ वैशाख भा० ११ वैशाख

यथा: →

"अनादि निधनं ब्रह्म शब्दतत्वं यदक्षरम्।
विवर्ततेऽर्थभावेन प्रक्रिया जगतो यतः॥"

वाक्यपदीय की इस कारिका के अनुसार यही शब्दब्रह्म जो शिवतत्व से निकला है, समग्र सृष्टि का कारण है।

शिवतत्व की मीमांसा करने की पृष्ठभूमि में यह देखना अनिवार्य है कि आखिर यहाँ शिवतत्व कैसे विश्वकल्याणकारी — अति रहस्यात्मक उत्स है?

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

यो मां पश्यति सर्वत्र सर्वं च मयि पश्यति। तस्याहं न प्रणश्यामि स च मे न प्रणश्यति ॥ ३० ॥
सर्वभूतस्थितं यो मां भजत्येकत्वमास्थितः। सर्वथा वर्तमानोऽपि स योगी मयि वर्तते ॥ ३१ ॥
आत्मौपम्येन सर्वत्र समं पश्यति योऽर्जुन। सुखं वा यदि वा दुःखं स योगी परमो मतः ॥ ३२ ॥

सूर्योदय ५।१८ सूर्यास्त ६।३०

yo māṁ paśyati sarvatra sarvaṁ ca mayi paśyati।
tasyāhaṁ na praṇaśyāmi sa ca me na praṇaśyati ॥ 30॥
sarvabhūtasthitaṁ yo māṁ bhajatyekatvamāsthitaḥ।
sarvathā vartamāno'pi sa yogī mayi vartate ॥ 31॥
ātmaupamyena sarvatra samaṁ paśyati yo'rjuna।
sukhaṁ vā yadi vā duḥkhaṁ sa yogī paramo mataḥ ॥ 32॥

भा॰ १२ वैशाख पं॰ २० वैशाख

यह शिव ही ब्रह्मरूप सूर्य और चन्द्रादि के रूप में दृश्य हुआ तथा इन्हीं की विकीर्ण सहस्र किरणें शिव की बिखरी हुई जटायें हैं। ये सूर्य रश्मियाँ ही सभी रसतत्वों, जीव-जन्तुओं, प्राणियों एवं वृक्ष-वनस्पतियों के संरक्षक-संवर्द्धक हैं। ये ही रश्मियाँ ही जल-ग्रहण, जल-वर्षण करते हैं।

फलतः ये सूर्य परब्रह्मस्वरूप शिव-तत्व से विकसित हैं। 'सूर्य आत्मा जगतस्तस्थुषश्च' सूर्य ही सबकी आत्मा हैं (यजुर्वेद-७।४२)। 'सूर्यो वै ब्रह्म' — सूर्य ही ब्रह्म हैं। (उपनिषद्) 'सूर्याचन्द्रमसौ धाता यथा पूर्वमकल्पयत्' (यजुर्वेद)। जैसे धाता — सृष्टिकर्ता ने सूर्य, चन्द्रमा की (कल्पना की) सृष्टि की। ये धाता वही परम शिव हैं, जिनसे सृष्टि की रचना हुई। उसी परम शिव-तत्व के कार्य-विभाजन-प्रक्रिया में ब्रह्मा, विष्णु तथा महेश्वर हैं।

उसी अन्तरिक्ष में निहित, शाश्वत, शब्द-ब्रह्म, 'ॐकार' विद्यमान है। वही वाक्-शक्ति है। यथा —

"न सोऽस्ति प्रत्ययो लोके यः शब्दानुगमादृते।

पीड़क होनेसे पीड़ित होना कहीं श्रेष्ठ है।

अनुविद्धमिव ज्ञानं सर्वं शब्देन भासते ॥"

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

अर्जुन उवाच

योऽयं योगस्त्वया प्रोक्तः साम्येन मधुसूदन। एतस्याहं न पश्यामि चञ्चलत्वात्स्थितिं स्थिराम्॥ ३३॥
चञ्चलं हि मनः कृष्ण प्रमाथि बलवद्दृढम्। तस्याहं निग्रहं मन्ये वायोरिव सुदुष्करम्॥ ३४॥

सूर्योदय ५।१८ सूर्यास्त ६।३०

arjuna uvāca

yo'yaṁ yogastvayā proktaḥ sāmyena madhusūdana।
etasyāhaṁ na paśyāmi cañcalatvātsthitiṁ sthirām॥ 33॥
cañcalaṁ hi manaḥ kṛṣṇa pramāthi balavaddṛḍham।
tasyāhaṁ nigrahaṁ manye vāyoriva suduṣkaram॥ 34॥

भा० १३ वैशाख पं० २१ वैशाख

सभी ज्ञान शब्दों में ही अन्तर्भूत होकर प्रकाशित [redacted] या अभिव्यक्त होते हैं।

अब कुछ और गम्भीर, रहस्यपूर्ण वाक्-तत्व, शिव-तत्व-कुण्डलिनी-तत्व की ओर बढ़ें। शब्दशास्त्र का 'स्फोटवाद' और आगमशास्त्र का 'कुण्डलिनी-रहस्य' दोनों एक ही तत्व की ओर इङ्गित करते हैं। यहाँ थोड़ा-सा विश्लेषण दोनों का किया जा रहा है—

परा-पश्यन्ती-मध्यमा-वैखरी—ये वाक् के चार भेद हैं। यथा—

'परा वाङ्मूलचक्रस्था पश्यन्ती नाभिसंस्थिता।
हृदिस्था मध्यमा ज्ञेया वैखरी कण्ठदेशगा॥
वैखर्यां हि कृतो [redacted] नादः परश्रवणगोचरः।
मध्यमायां कृतो नादः स्फोटव्यञ्जक उच्यते॥'

अर्थात् मूलाधार-चक्रस्थित ध्वनि 'परा' वाक् है। उससे ऊपर 'नाभि' संस्थ ध्वनि 'पश्यन्ती' है। उससे ऊपर हृदय में स्थित 'मध्यमा' नादध्वनि है एवं वैखरी ध्वनि द्वारा ही वाणी—वाक् का लोगों में विस्तार होता है—आवाज-प्रधान होता है। इनमें 'परा' एवं 'पश्यन्ती'—ये दोनों वाक् के [redacted] द्वारा हैं अगम्य हैं।

खुशामद तेज शराबकी भाँति मगजमें चढ़ जाती है और सिरको फिरा देती है।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

श्रीभगवानुवाच

असंशयं महाबाहो मनो दुर्निग्रहं चलम्। अभ्यासेन तु कौन्तेय वैराग्येण च गृह्यते ॥ ३५ ॥
असंयतात्मना योगो दुष्प्राप इति मे मतिः। वश्यात्मना तु यतता शक्योऽवाप्तुमुपायतः ॥ ३६ ॥

सूर्योदय ५। १७
सूर्यास्त ६। ३१

śrībhagavānuvāca

asaṁśayaṁ mahābāho mano durnigrahaṁ calam।
abhyāsena tu kaunteya vairāgyeṇa ca gṛhyate ॥ 35 ॥
asaṁyatātmanā yogo duṣprāpa iti me matiḥ।
vaśyātmanā tu yatatā śakyo'vāptumupāyataḥ ॥ 36 ॥

भा॰ १४ वैशाख
पं॰ २२ वैशाख

'मध्यमा' वाक् को व्याकरणशास्त्र के अनुसार 'स्फोट' कहा गया है। 'स्फुटति अर्थ यस्मात् स स्फोटः' अर्थात् जहाँ पहुँचकर अर्थ का ज्ञान सुस्पष्ट होता है। कोई भी शब्द या वाक्य मौनरूप में उच्चरित करें — वे आपको सुस्पष्ट श्रवणगोचर होंगे तथा उनके अर्थ का भी ज्ञान मध्यमा-नाद के स्फोट से होगा।

कण्ठ से निकलनेवाली वैखरी ध्वनि तो परस्पर वाक्यों के आदान-प्रदान के लिये है। वे वैखरी शब्द अनित्य हैं। लेकिन मध्यमा नादध्वनि जो स्फोटवाद के नाम से ख्यात है, वह नित्य है। यहाँ व्याकरणशास्त्र के विशाल स्फोटवाद के विवरण में न जाकर केवल प्रसंग-संगति के लिये इनका यहाँ उल्लेख किया गया है।

अब आयें कुण्डलिनी-तत्व की प्रक्रिया पर।

आगम-शास्त्रानुसार — "मूलाधारात् कुण्डलिनीं मुत्थाप्य सुषुम्णा मार्गेण हृदयस्थजीवात्मना सह संयोज्य कण्ठस्थ वैखरी [redacted] स्पृशन् मस्तकस्थिताधोमुखे सहस्रारदले स्थितेन परमशिवेन संयोजयेत्, येन ततोऽमृतक्षरणं जायते।" — (तन्त्रसार)

अन्याय करनेवाला सहनेवालेकी अपेक्षा सदैव अधिक कष्टमें पड़ता है।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

अर्जुन उवाच

अयतिः श्रद्धयोपेतो योगाच्चलितमानसः। अप्राप्य योगसंसिद्धिं कां गतिं कृष्ण गच्छति ॥ ३७ ॥
कच्चिन्नोभयविभ्रष्टश्छिन्नाभ्रमिव नश्यति। अप्रतिष्ठो महाबाहो विमूढो ब्रह्मणः पथि ॥ ३८ ॥

सूर्योदय ५।१६ सूर्यास्त ६।३१

arjuna uvāca

ayatiḥ śraddhayopeto yogāccalitamānasaḥ।
aprāpya yogasaṁsiddhiṁ kāṁ gatiṁ kṛṣṇa gacchati ॥ 37 ॥
kaccinnobhayavibhraṣṭaśchinnābhramiva naśyati।
apratiṣṭho mahābāho vimūḍho brahmaṇaḥ pathi ॥ 38 ॥

भा० १५ वैशाख पं० २३ वैशाख

अर्थात् नाभि के नीचे मूलाधार से सर्पिणी के आकार की कुण्डलिनी को योगबल से उठाकर उसे पीठ की रीढ़ के मध्य स्थित इड़ा, पिङ्गला, सुषुम्ना — इन तीन नाड़ियों के मध्य सुषुम्ना नाड़ी — सूक्ष्मतम नाड़ी के मार्ग से हृदय में स्थित जीवात्मा के साथ संयोग कराकर कुण्डलिनी को कण्ठस्थित वैखरी के मार्ग से मस्तक — ब्रह्माण्ड में अधोमुख विकसित सहस्रदल-कमल [illegible] के बीचस्थित परमशिव (परब्रह्म) में उस कुण्डलिनी को मिला दे। उसके मिलते ही वहाँ से अमृत-क्षरण होने लगेगा जो सृष्टि-तत्व के विकास का कारण है।

अब प्रायः यह स्पष्ट हो जायेगा कि शरीरस्थ-जीवात्मा-परमात्मा का संयोग इड़ा, पिङ्गला, सुषुम्णा द्वारा जिस कुंडलिनी से होता है, वही वाक्-तत्व परा-पश्यन्ती-मध्यमा द्वारा स्फुटित होकर शब्दशक्ति के रूप में परिणत हो सृष्टि का कारण बनता है। अतएव "शब्द ब्रह्मणि निष्णातः परब्रह्माभिधीयते" — शब्द ब्रह्म में निष्णात ही परब्रह्म को प्राप्त करता है, ऐसा सिद्धान्त है।

घृणा राक्षसोंकी सम्पत्ति है, क्षमा मनुष्यका चिह्न है; परन्तु प्रेम देवताओंका स्वभाव है।

वाक्यपदीय का कथन है —

"इदमाद्यं पदं स्थानं सिद्धिसोपान पर्वणाम्।
इयं सा [illegible] ॥"

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

एतन्मे संशयं कृष्ण छेत्तुमर्हस्यशेषतः। त्वदन्यः संशयस्यास्य छेत्ता न ह्युपपद्यते ॥ ३९ ॥

श्रीभगवानुवाच

पार्थ नैवेह नामुत्र विनाशस्तस्य विद्यते। न हि कल्याणकृत्कश्चिद्दुर्गतिं तात गच्छति ॥ ४० ॥

सूर्योदय ५।१५ सूर्यास्त ६।३१

etanme saṁśayaṁ kṛṣṇa chettumarhasyaśeṣataḥ।
tvadanyaḥ saṁśayasyāsya chettā na hyupapadyate ॥ 39 ॥

śrībhagavānuvāca

pārtha naiveha nāmutra vināśastasya vidyate।
na hi kalyāṇakṛtkaściddurgatiṁ tāta gacchati ॥ 40 ॥

भा॰ १६ वैशाख पं॰ २४ वैशाख

वरूथिनी एकादशीव्रत

अर्थात् यही शाण्डिल्य आदि — प्रथम स्थान, सिद्धियों का सोपान है और यही वाक्शक्ति मोक्ष चाहने वालों के लिये सरलतम राजमार्ग है।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

तत्र तं बुद्धिसंयोगं लभते पौर्वदेहिकम्। यतते च ततो भूयः संसिद्धौ कुरुनन्दन ॥ ४३ ॥
पूर्वाभ्यासेन तेनैव ह्रियते ह्यवशोऽपि सः। जिज्ञासुरपि योगस्य शब्दब्रह्मातिवर्तते ॥ ४४ ॥

सूर्योदय ५।१३ सूर्यास्त ६।३३

tatra tam buddhisamyogam labhate paurvadehikam।
yatate ca tato bhūyaḥ saṁsiddhau kurunandana ॥ 43 ॥
pūrvābhyāsena tenaiva hriyate hyavaśo'pi saḥ।
jijñāsurapi yogasya śabdabrahmātivartate ॥ 44 ॥

भा० १९ वैशाख पं० २७ वैशाख

** शरीर की अपवित्रता या मलिनता **

वस्तुतः यह शरीर मूलतः मलिन है। इसकी मलिनता के तीन कारण माने गये हैं — (१) उत्पत्तिजन्य मल, (२) इन्द्रियजन्य मल, (३) आभ्यन्तरिक मल। प्रथम मल का संबंध शरीर-रचना से है। यह तो निर्विवाद सत्य है कि यह देह मल (रज-वीर्य) से संजनित होकर जो जन्म तक मल-मूत्र के मध्यभाग में पड़ा रहता है और गर्भ से बाहर आकर भी मलोत्पादन के गर्त में डूबा रहता है।

दूसरे प्रकार के मल का संबंध इन्द्रियों से है। सांसारिक विषय-भोगों के सेवन से पञ्च-कर्मेन्द्रियाँ एवं पञ्च-ज्ञानेन्द्रियाँ कलुषित होती हैं। कविकुलशेखर महात्मा गोस्वामी तुलसीदास जी ने विनयपत्रिका (पद ८२) में इसका स्पष्ट चित्रण किया है। पर-स्त्री की ओर देखने से नेत्र, परनिंदा सुनने से श्रवण, और दोष-कथन से वचन मलिन होते हैं। —

"नयन मलिन परनारि निरखि ..... ।
परनिंदा सुनि स्रवन मलिन भे, बचन दोष पर गाये" ॥

महाभारत में आया है कि इंद्रिय-रूपी पञ्च इन्द्रियाँ पञ्चदेवता रूपी अग्नि में पञ्च विषय-रूपी इन्द्रिय एवं समिधाओं का हवन करती रहती हैं। इस प्रकार इन्द्रियाँ सतत विषयों का सेवन करती रहती हैं।

विचार फूलोंके समान हैं और सोचना उनको मालामें गूँथना है।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

प्रयत्नाद्यतमानस्तु योगी संशुद्धकिल्बिषः। अनेकजन्मसंसिद्धस्ततो याति परां गतिम्॥ ४५॥
तपस्विभ्योऽधिको योगी ज्ञानिभ्योऽपि मतोऽधिकः। कर्मिभ्यश्चाधिको योगी तस्माद्योगी भवार्जुन॥ ४६॥

सूर्योदय ५।१२ सूर्यास्त ६।३३	*prayatnādyatamānastu yogī saṁśuddhakilbiṣaḥ।* *anekajanmasaṁsiddhastato yāti parāṁ gatim॥ 45॥* *tapasvibhyo'dhiko yogī jñānibhyo'pi mato'dhikaḥ।* *karmibhyaścādhiko yogī tasmādyogī bhavārjuna॥ 46॥*	भा० २० वैशाख पं० २८ वैशाख

अमावास्या

③ तीसरे प्रकार के मलों का सम्बन्ध अन्तःकरण-चतुष्टय (मन, बुद्धि, चित्त, अहंकार) से है। काम, क्रोध, लोभ, मोह, आदि छः विकार जीव के अन्तर-मल माने गये हैं। विषयों के संग (चिन्तन) से मन मलिन होता है — 'मन मलिन विषय सँग लागे।' (विनयपत्रिका पद ८२) आत्मतत्त्व को न स्वीकार कर मायिक भोगों एवं जागतिक सुखों को सर्वस्व मानना बुद्धि का मल है। जन्म-जन्मान्तरों से कर्म-कीच से सने रहने के अभ्यास को चित्त का अशौच कहा जाता है:—

'जनम अनेक कियो नाना-विधि करम-कीच चित सान्यो।' — (विनयपत्रिका-पद ८८)

वस्तुतः अनेक जन्मों के शुभाशुभ कर्म भव-बन्धन के हेतु हैं:—

'एवं नृणां क्रियायोगाः सर्वे संसृति-हेतवः।' — (श्रीमद्भागवत० १।५।३४)

सूरदास जी कहते हैं कि जन्म-जन्मान्तरों के कर्मों से जीव अपने आपको बाँध लेता है:—

'जनम जनम बहु कर्म किये हैं जिनमें आपु न आप बँधायो।' — सूर-सागर

किन्तु जैसे पानी के मथने से घी की प्राप्ति नहीं होती, वैसे ही मल से मल का प्रक्षालन नहीं होता —

जीवन एक पुष्प है और प्रेम उसमें मधु।

☆ दिउम्बना तो यह है कि जीव शुभ कर्मों के मल से अशुभ कर्मों के मल को धोना चाहता है। यही मल से मल को धोना है।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

योगिनामपि सर्वेषां मद्गतेनान्तरात्मना। श्रद्धावान्भजते यो मां स मे युक्ततमो मतः ॥ ४७ ॥

ॐ तत्सदिति श्रीमद्भगवद्गीतासूपनिषत्सु ब्रह्मविद्यायां योगशास्त्रे
श्रीकृष्णार्जुनसंवादे आत्मसंयमयोगो नाम षष्ठोऽध्यायः ॥६॥

सूर्योदय ५।११
सूर्यास्त ६।३४

yogināmapi sarveṣām madgatenāntarātmanā।
śraddhāvānbhajate yo māṁ sa me yuktatamo mataḥ ॥ 47 ॥

om tatsaditi śrīmadbhagavadgītāsūpaniṣatsu brahmavidyāyāṁ
yogaśāstre śrīkṛṣṇārjunasaṁvāde ātmasaṁyamayogo
nāma ṣaṣṭho'dhyāyaḥ ॥ 6 ॥

भा० २१ वैशाख
पं० २९ वैशाख

"धूय मल कि मलहि के धोये। घृत कि पाव कोउ बारि विलोये।" — (रा० च० मा० ७।९७।५)

सच तो यह है कि मल से धोने की क्रिया जीव को और अधिक मलाविष्ट कर देती है। सुकृत के संपादन से भी अहंभाव का संजनन होता है और अहंकार पुनः संसृतिमूल एवं शूलप्रद है। अतएव पुण्यकर्मों से भी प्रकारान्तर से पाप-वृत्ति का जन्म होता रहता है। इसी को गोस्वामीजी के इस रूप में कहा है:— करउँ सुकृत न पाप सिराहीं। एक बीज तिन्ह कर मन माहीं॥ — (विनय० पद १२२)।

मल-नाश के साधन — शास्त्रों में अनेक तीर्थों में मलों के धोने के उपाय बतलाये गये हैं। शरीर के सर्वज मन्य मलों के प्रक्षालन के लिये योगदर्शन में प्राणायाम का विधान है। — "प्राणायामादविद्याक्षयः।" इन्द्रियजन्य मलों का नाश इन्द्रियों के विषय-भोगों से मोड़कर उन्हें भगवदर्पित कामों से होता है। "श्रवन कथा, मुख नाम, हाथ हरि, सिर प्रनाम, आँखन्ह लखउँ, नयन गिरिजा कृपा-सुजन हरि अंग-अंग-रूप-भूप सीतावर"॥ — (विनय० पद २७५)

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

ॐ

सप्तमोऽध्यायः

श्रीभगवानुवाच

मय्यासक्तमनाः पार्थ योगं युञ्जन्मदाश्रयः। असंशयं समग्रं मां यथा ज्ञास्यसि तच्छृणु ॥ १ ॥
ज्ञानं तेऽहं सविज्ञानमिदं वक्ष्याम्यशेषतः। यज्ज्ञात्वा नेह भूयोऽन्यज्ज्ञातव्यमवशिष्यते ॥ २ ॥

śrībhagavānuvāca

सूर्योदय ५।११ सूर्यास्त ६।३५	*mayyāsaktamanāḥ pārtha yogaṁ yuñjanmadāsrayaḥ।* *asaṁśayaṁ samagraṁ māṁ yatha jñāsyasi tacchṛṇu* ॥ 1 ॥ *jñānaṁ te'haṁ savijñānamidaṁ vakṣyāmyaśeṣataḥ।* *yajjñātvā neha bhūyo'nyajjñātavyamavaśiṣyate* ॥ 2 ॥	भा० २२ वैशाख पं० ३० वैशाख

वैशाख शुक्ल २, वि०सं० २०५१, गुरुवार, MAY 12. 1994

परम भागवत श्री अम्बरीष जी का कर्मकलाप इसका श्रेष्ठ दृष्टान्त है। उन्होंने अपने मन को श्रीकृष्ण के चरणों में, वाणी को भगवद्गुण-कथन में, हाथों को मंदिर-मार्जन में, नेत्रों को श्रीविग्रह के दर्शन में, अंगों को भगवद्भक्तों के स्पर्श में, नासिका को तुलसी के दिव्य-गंध में, और रसना को नैवेद्य के आस्वादन में, संलग्न कर दिया था। —

तीसरी आभ्यन्तरिक अशुद्धि का [illegible] विनाश प्रेमाभक्ति के जल से ही होता है →

'प्रेम भगति [illegible] जल बिनु रघुराई।
अभिअंतर मल कबहुँ न जाई॥' — (रा०च०मा०७।४९।६)

राम चरन अनुराग-नीर-बिनु, मल अति नास न पावै।'
— (विनय-पद ८२)

वही सच्चा साहसी है जो कभी निराश नहीं होता।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

मनुष्याणां सहस्रेषु कश्चिद्यतति सिद्धये। यततामपि सिद्धानां कश्चिन्मां वेत्ति तत्त्वतः ॥ ३ ॥
भूमिरापोऽनलो वायुः खं मनो बुद्धिरेव च। अहंकार इतीयं मे भिन्ना प्रकृतिरष्टधा ॥ ४ ॥
अपरेयमितस्त्वन्यां प्रकृतिं विद्धि मे पराम्। जीवभूतां महाबाहो ययेदं धार्यते जगत् ॥ ५ ॥

सूर्योदय ५।१० सूर्यास्त ६।३५

manuṣyāṇāṁ sahasreṣu kaścidyatati siddhaye।
yatatāmapi siddhānāṁ kaścinmāṁ vetti tattvataḥ ॥ 3 ॥
bhūmirāpo'nalo vāyuḥ khaṁ mano buddhireva ca।
ahaṅkāra itīyaṁ me bhinnā prakṛtiraṣṭadhā ॥ 4 ॥
apareyamitastvanyāṁ prakṛtiṁ viddhi me parām।
jīvabhūtāṁ mahābāho yayedaṁ dhāryate jagat ॥ 5 ॥

भा० २३ वैशाख पं० ३१ वैशाख

अक्षय तृतीया, परशुराम-जयन्ती

'रमन्ते योगिनोऽनन्ते नित्यानन्दे चिदात्मनि।
इति रामपदेनासौ परं ब्रह्माभिधीयते ॥'
—(श्री रामपूर्वतापिन्युपनिषद्)

× × ×

लीलाशरीरं रणरङ्गधीरं विश्वैकसारं रघुवंशधरम्।
गम्भीरनादं जितसर्ववादं श्रीरामचन्द्रं सततं नमामि ॥

'-क्ति' शब्द 'भज् सेवायाम्' इस धातु से 'क्तिन्' प्रत्यय से बना है। 'भजनम् एव भक्तिः'
'भज्यते अनया इति भक्तिः' 'यद्वा भजन्ति अनया इति भक्तिः' इत्यादि व्युत्पत्तियाँ 'भक्ति' शब्द की हो सकती हैं। अर्थात्, इसका अर्थ है आराध्यदेव का भजन-पूजन, उनकी एकनिष्ठ सेवा। अथवा वह साधना या क्रिया जिससे आराध्य का भजन किया जाता है या जिससे भक्तजन भजनीय का भजन-पूजन करते हैं।

सोनेसे पूर्व सत्-शास्त्रोंका स्वाध्याय और भगवत्-स्मरण अवश्य करना चाहिये।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

एतद्योनीनि भूतानि सर्वाणीत्युपधारय। अहं कृत्स्नस्य जगतः प्रभवः प्रलयस्तथा ॥ ६ ॥
मत्तः परतरं नान्यत्किञ्चिदस्ति धनंजय। मयि सर्वमिदं प्रोतं सूत्रे मणिगणा इव ॥ ७ ॥
रसोऽहमप्सु कौन्तेय प्रभास्मि शशिसूर्ययोः। प्रणवः सर्ववेदेषु शब्दः खे पौरुषं नृषु ॥ ८ ॥

सूर्योदय ५।१० सूर्यास्त ६।३६

etadyonīni bhūtāni sarvāṇītyupadhāraya।
aham kṛtsnasya jagataḥ prabhavaḥ pralayastathā ॥ 6 ॥
mattaḥ parataraṁ nānyatkiñcidasti dhanañjaya।
mayi sarvamidaṁ protaṁ sūtre maṇigaṇā iva ॥ 7 ॥
raso'hamapsu kaunteya prabhāsmi śaśisūryayoḥ।
praṇavaḥ sarvavedeṣu śabdaḥ khe pauruṣaṁ nṛṣu ॥ 8 ॥

भा० २४ वैशाख पं० १ ज्येष्ठ

ब्राह्मण के नव गुण

शठ्नुः तपस्वि संतुष्टा,
क्षमा दया जितेन्द्रिया।
इज्या दाता दयालश्च,
ब्राह्मणे नवभि गुणा॥

वैशाख शुक्ल ५, वि०सं० २०५१, रविवार, MAY 15. 1994 [दिन १३५
सूर्योदय ५।९ सूर्यास्त ६।३७ पं० २ ज्येष्ठ भा० २५ वैशाख

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

पुण्यो गन्धः पृथिव्यां च तेजश्चास्मि विभावसौ। जीवनं सर्वभूतेषु तपश्चास्मि तपस्विषु ॥ ९ ॥
बीजं मां सर्वभूतानां विद्धि पार्थ सनातनम्। बुद्धिर्बुद्धिमतामस्मि तेजस्तेजस्विनामहम् ॥ १० ॥
बलं बलवतां चाहं कामरागविवर्जितम्। धर्माविरुद्धो भूतेषु कामोऽस्मि भरतर्षभ ॥ ११ ॥

सूर्योदय ५।८ सूर्यास्त ६।३७

puṇyo gandhaḥ pṛthivyāṁ ca tejaścāsmi vibhāvasau।
jīvanaṁ sarvabhūteṣu tapaścāsmi tapasviṣu ॥ 9 ॥
bījaṁ māṁ sarvabhutānāṁ viddhi pārtha sanātanam।
buddhirbuddhimatāmasmi tejastejasvināmaham ॥ 10 ॥
balaṁ balavatāṁ cāhaṁ kāmarāgavivarjitam।
dharmāviruddho bhūteṣu kāmo'smi bharatarṣabha ॥ 11 ॥

भा० २६ वैशाख पं० ३ ज्येष्ठ

आज फरवरी से अप्रैल तक तीन महीने की पेंशन केन्द्रीय प्राप्त किया [illegible] रुपये रिक्शा भाड़ा-५ रु० कुल की कोदिया गया।

मिथ्या वचन मीठा हो तब भी न बोले और अप्रिय सत्यसे बचा रहे।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

ये चैव सात्त्विका भावा राजसास्तामसाश्च ये। मत्त एवेति तान्विद्धि न त्वहं तेषु ते मयि॥ १२॥
त्रिभिर्गुणमयैर्भावैरेभिः सर्वमिदं जगत्। मोहितं नाभिजानाति मामेभ्यः परमव्ययम्॥ १३॥
दैवी ह्येषा गुणमयी मम माया दुरत्यया। मामेव ये प्रपद्यन्ते मायामेतां तरन्ति ते॥ १४॥

सूर्योदय ५।८ सूर्यास्त ६।३८

ye caiva sāttvikā bhāvā rājasāstāmasāśca ye।
matta eveti tānviddhi na tvahaṁ teṣu te mayi॥ 12॥
tribhirguṇamayairbhāvairebhiḥ sarvamidaṁ jagat।
mohitaṁ nābhijānāti māmebhyaḥ paramavyayam॥ 13॥
daivī hyeṣā guṇamayī mama māyā duratyayā।
māmeva ye prapadyante māyāmetāṁ taranti te॥ 14॥

भा० २७ वैशाख पं० ४ ज्येष्ठ

आज मैंने श्री रथम प्राप्त की है। मिल तो यद्यपि स्वीकृत हो गई थी। रसक ताला। ५०० रुपये विज्ञापन राशि कृतज्ञता के ईंट का कार्ड किया गया था। तीन सौ रुपये रोगियों की सेवा में दिया।

फाटक में चांदी लगाने की कीमत दी, सिकड़ी तीन की अंकुसी आदि के पैसे दिये। २ बजे भोजन प्रसाद। ४ बजे तक्खी तथा ७ बजे राम सिंहासन में मूर्ति की गई।

आज ६०० राम तक्खा भक्तों को 'नवमी' के प्रसाद कोहड़ा पूरी कचौड़ी खीर हलुवा दो के मिश्रित भोजन कराया। श्री सिंहासन पूजा भी एक अनोखा प्रसाद के कारण सिद्धि प्रसाद दिया। इन जीव मात्र को देंगे जो नवमी को करतलाये जायेंगे।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

उदाराः सर्व एवैते ज्ञानी त्वात्मैव मे मतम्। आस्थितः स हि युक्तात्मा मामेवानुत्तमां गतिम्॥ १८॥
बहूनां जन्मनामन्ते ज्ञानवान्मां प्रपद्यते। वासुदेवः सर्वमिति स महात्मा सुदुर्लभः॥ १९॥
कामैस्तैस्तैर्हृतज्ञानाः प्रपद्यन्तेऽन्यदेवताः। तं तं नियममास्थाय प्रकृत्या नियताः स्वया॥ २०॥

सूर्योदय ५।७ सूर्यास्त ६।३९

udārāḥ sarva evaite jñānī tvātmaiva me matam।
āsthitaḥ sa hi yuktātmā māmevānuttamāṁ gatim॥ 18॥
bahūnāṁ janmanāmante jñānavānmāṁ prapadyate।
vāsudevaḥ sarvamiti sa mahātmā sudurlabhaḥ॥ 19॥
kāmaistaistairhṛtajñānāḥ prapadyante'nyadevatāḥ।
taṁ taṁ niyamamāsthāya prakṛtyā niyatāḥ svayā॥ 20॥

भा० २९ वैशाख पं० ६ ज्येष्ठ

श्रीसीतानवमी

लोग कहते हैं कि पार्वती की उत्पत्ति पर्वत और मेनका से हुई है। वैदिक कोष का नाम निघण्टु है। उसमें 'पर्वत' का अर्थ आकाश और 'मेनका' का अर्थ बुद्धि लिखा है। पार्वती जी आकाश में सब स्थलों में व्याप्त हैं और बुद्धि से जानी जाती हैं। यही उनकी उत्पत्ति का मतलब है। श्री शंकराचार्य जी ने तलवकार उपनिषद् की व्याख्या में 'उमा' शब्द की (व्याख्या में) का अर्थ-ब्रह्मविद्या किया है। उनके मत में शिव-पार्वती दोनों ज्ञान-स्वरूप सिद्ध होते हैं। हमारी समझ में वे मात-पिता हैं। लड़कों के लिये माता-पिता की गोद से बढ़कर कोई वस्तु नहीं है। हम उसी के प्रार्थी हैं, वही परमपद है।

'तद्धामं परमं मम'

जो 'शिव' ये दो अक्षर उच्चारण करते हैं उनके घर में सब मंगल होते हैं।

'सुमंगलं तस्य गृहे विराजते
शिवेति वर्णैर्भुवि यो हि भाषते।'

पं० सकल नारायण शर्मा

प्रतिभावान् वह है जिसमें समझदारी और कार्यशक्ति विशेष हो।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

यो यो यां यां तनुं भक्तः श्रद्धयार्चितुमिच्छति। तस्य तस्याचलां श्रद्धां तामेव विदधाम्यहम्॥ २१॥
स तया श्रद्धया युक्तस्तस्याराधनमीहते। लभते च ततः कामान्मयैव विहितान्हि तान्॥ २२॥
अन्तवत्तु फलं तेषां तद्भवत्यल्पमेधसाम्। देवान्देवयजो यान्ति मद्भक्ता यान्ति मामपि॥ २३॥

सूर्योदय ५।६ सूर्यास्त ६।३९

yo yo yāṁ yāṁ tanuṁ bhaktaḥ śraddhayārcitumicchati।
tasya tasyācalāṁ śraddhāṁ tāmeva vidadhāmyaham॥ 21॥
sa tayā śraddhayā yuktastasyārādhanamīhate।
labhate ca tataḥ kāmānmayaiva vihitānhi tān॥ 22॥
antavattu phalaṁ teṣāṁ tadbhavatyalpamedhasām।
devāndevayajo yānti madbhaktā yānti māmapi॥ 23॥

भा॰ ३० वैशाख पं॰ ७ ज्येष्ठ

आज प्रातः स्वामी ह्रदयानंद सरस्वती गया से पुरैना समाचार तार से आया। स्वर्गीय लौ हुई गोड़ना चिंव पहुँचे हुए शेवफल आदि ले आये।
विन्ध्याचल पं॰ वाचस्पति के महायोग-दीपावली सत्संग में कुरुक्षेत्र संवाद। 99-15 दि॰ पर अंक 12 वर्ष ग्रंथ में पढ़ें। दर से भोजन वाराणसी (काशी) गया। रवि जागरण नैमा।
वक्षाधार पर जा॰ उदयनारायण राकेश तथा सोनकांवे जा॰ देवकी तार के तार की ओर से गया जा॰ देवदेवे तार का ओवरकोट से धनी तथा दाढ़ि गई। चन्द्रशेखर से ओं। आदेश पर विवाह के लिए दिन स्वास्थ्य में ठीक नहीं रहे अंगरेजी में।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

अव्यक्तं व्यक्तिमापन्नं मन्यन्ते मामबुद्धयः। परं भावमजानन्तो ममाव्ययमनुत्तमम् ॥ २४ ॥
नाहं प्रकाशः सर्वस्य योगमायासमावृतः। मूढोऽयं नाभिजानाति लोको मामजमव्ययम् ॥ २५ ॥
वेदाहं समतीतानि वर्तमानानि चार्जुन। भविष्याणि च भूतानि मां तु वेद न कश्चन ॥ २६ ॥

सूर्योदय ५।६ सूर्यास्त ६।४०

avyaktaṁ vyaktimāpannaṁ manyante māmabuddhayaḥ।
paraṁ bhāvamajānanto mamāvyayamanuttamam ॥ 24 ॥
nāhaṁ prakāśaḥ sarvasya yogamāyāsamāvṛtaḥ।
mūḍho'yaṁ nābhijānāti loko māmajamavyayam ॥ 25 ॥
vedāhaṁ samatītāni vartamānāni cārjuna।
bhaviṣyāṇi ca bhūtāni māṁ tu veda na kaścana ॥ 26 ॥

भा० ३१ वैशाख पं० ८ ज्येष्ठ

मोहिनी एकादशीव्रत

आज वरिष्ठ [illegible] श्री. शर्वत पीकर पारणा रात्रि [illegible] रखकर दिन [illegible] सर्व रात्रि [illegible] जपादि [illegible]।

वैशाख शुक्ल १२, वि०सं० २०५१, रविवार, MAY 22. 1994 [दिन १४२

सूर्योदय ५।६ सूर्यास्त ६।४० पं० ९ ज्येष्ठ भा० १ ज्येष्ठ शक १९१६

प्रदोषव्रत

आज प्रातः [illegible] [illegible] [illegible]

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

इच्छाद्वेषसमुत्थेन द्वन्द्वमोहेन भारत। सर्वभूतानि संमोहं सर्गे यान्ति परंतप ॥ २७ ॥
येषां त्वन्तगतं पापं जनानां पुण्यकर्मणाम्। ते द्वन्द्वमोहनिर्मुक्ता भजन्ते मां दृढव्रताः ॥ २८ ॥
जरामरणमोक्षाय मामाश्रित्य यतन्ति ये। ते ब्रह्म तद्विदुः कृत्स्नमध्यात्मं कर्म चाखिलम् ॥ २९ ॥

सूर्योदय ५।५ सूर्यास्त ६।४१

icchādveṣasamutthena dvandvamohena bhārata!
sarvabhūtāni sammoham sarge yānti paramtapa ॥ 27 ॥
yeṣām tvantagatam pāpam janānām puṇyakarmaṇām!
te dvandvamohanirmuktā bhajante mām dṛḍhavratāḥ ॥ 28 ॥
jarāmaraṇamokṣāya māmāśritya yatanti ye!
te brahma tadviduḥ kṛtsnamadhyātmam karma cākhilam ॥ 29 ॥

भा॰ २ ज्येष्ठ पं॰ १० ज्येष्ठ

नृसिंहचतुर्दशी

पद्मपुराण में यह भी कहा है कि काशी में मरने के अनन्तर - सालोक्यादि चारों प्रकार की मुक्तियाँ क्रमशः होती हैं। यथा :—

"काश्यां मृतस्तु सालोक्यं साक्षात् प्राप्नोति सत्तमः।
ततः सरूपतां याति ततः सांनिध्यमश्नुते।
ततो ब्रह्मैकतां याति न पश्चात्तिष्ठते पुनः॥"

इसमें सालोक्य मुक्ति का तात्पर्य शिवलोक में निवास करना, सारूप्य का शिव के समान रूप प्राप्त करना, सांनिध्य का शिव के समीप रहना, और सायुज्य का अर्थ शिव में मिल जाना है। सालोक्यादि मुक्ति का भी क्षेत्र भेद से तारतम्य है, जैसे — काशी क्षेत्र में सालोक्य मुक्ति वाराणसी क्षेत्र में सारूप्य-मुक्ति, अविमुक्त क्षेत्र में सांनिध्य-मुक्ति और अन्तर्गृह-क्षेत्र में सायुज्य-मुक्ति होती है। इसी को पद्मपुराण में कहा गया है:—

"चतुर्थी भिद्यते क्षेत्रे सदैव भगवान्शिवः।
आचष्टे तारकं वाक्यं ब्रह्मात्मैकम् प्रबोधकम्॥
काश्यां मृतस्तु सालोक्यं साक्षात् प्राप्नोति सत्तमः।
वाराणस्यां मृतो जन्तुः सारूप्यं लभते ध्रुवम्॥

यह कितनी गलत बात है कि हम मैले रहें और दूसरोंको साफ रहनेकी सलाह दें। ✓

अविमुक्ते विमुक्तस्तु साक्षात् सांनिध्यमाप्नुयात्॥

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

साधिभूताधिदैवं मां साधियज्ञं च ये विदुः। प्रयाणकालेऽपि च मां ते विदुर्युक्तचेतसः ॥ ३० ॥

ॐ तत्सदिति श्रीमद्भगवद्गीतासूपनिषत्सु ब्रह्मविद्यायां योगशास्त्रे श्रीकृष्णार्जुनसंवादे
ज्ञानविज्ञानयोगो नाम सप्तमोऽध्यायः ॥ ७ ॥

सूर्योदय ५।५
सूर्यास्त ६।४१

sādhibhūtādhidaivaṁ māṁ sādhiyajñaṁ ca ye viduḥ।
prayāṇakāle'pi ca māṁ te viduryuktacetasaḥ ॥ 30 ॥
om tatsaditi śrīmadbhagavadgītāsūpaniṣatsu brahmavidyāyāṁ
yogaśāstre śrīkṛṣṇārjunasaṁvāde jñānavijñānayogo
nāma saptamo dhyāyaḥ ॥ 7 ॥

भा० ३ ज्येष्ठ पं० ११ ज्येष्ठ

व्रत-पूर्णिमा

→ सालोक्यवाँञ्च सरूपं संतिष्ठं वापि सत्तमः।
काश्यां कथमपीति वदो ब्रह्मलोकं भवेत् ॥"

× × ×

× काश्यां मरणान्मुक्तिः ×

काशीखण्ड में → कहा है →

"संसार भयभीता ये ये वक्ष्ये कर्मबन्धनैः।
तेषां कृतापि गतिर्नास्ति तेषां वाराणसीं गतिः॥
श्रुति स्मृति विहीना ये शौच्याचार विवर्जिताः।
तेषां कृतापि गतिर्नास्ति तेषां वाराणसीं गतिः॥"
ऐसे अर्थवाद नहीं समझना चाहिये क्योंकि: →
"यत्र विश्वेश्वरो देवः साक्षात् स्वर्गवरप्रदः।
किन्तत्र वक्तुमुत्सहते तार्किकाश्चाल्पसूचकाः॥
उदाहरन्ति ये मूढाः कुतर्कबल दर्पिताः।
काश्यां मरीकवादोऽयं हा विडम्बा पुरोभुवि॥
मा भवानीत्यथो वादिः कथं मुक्ति विदिष्यते ॥"

× × ×

परम न्यायकारी और दयालु परमेश्वरके राज्यमें ठगनेवाला ही ठगाता है।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

ॐ

अष्टमोऽध्यायः

अर्जुन उवाच

किं तद्ब्रह्म किमध्यात्मं किं कर्म पुरुषोत्तम। अधिभूतं च किं प्रोक्तमधिदैवं किमुच्यते ॥ १ ॥
अधियज्ञः कथं कोऽत्र देहेऽस्मिन्मधुसूदन। प्रयाणकाले च कथं ज्ञेयोऽसि नियतात्मभिः ॥ २ ॥

सूर्योदय ५।५ सूर्यास्त ६।४२	*arjuna uvāca* *kiṁ tadbrahma kimadhyātmaṁ kiṁ karma puruṣottama।* *adhibhūtaṁ ca kiṁ proktamadhidaivaṁ kimucyate ॥ 1 ॥* *adhiyajñaḥ kathaṁ ko'tra dehe'sminmadhusūdana।* *prayāṇakāle ca kathaṁ jñeyo'si niyatātmabhiḥ ॥ 2 ॥*	भा० ४ ज्येष्ठ पं० १२ ज्येष्ठ

वैशाख शुक्ल १५, वि०सं० २०५१, बुधवार, MAY 25. 1994

पूर्णिमा, बुद्ध-जयन्ती, वैशाख-स्नान समाप्त

सनत्कुमार संहिता में कहा है:→

"मृत्यान्तरे मूत्रपुरीष मध्ये।
चाण्डाल वेश्मन्यथा वा श्मशाने।
कृतप्रयत्नोऽप्यकृतप्रयत्नो।
देहावसाने लभतेऽत्र मोक्षम्॥"

काशीखण्ड में कहा है:→

"ब्राह्मणाः क्षत्रिया वैश्याः शूद्रा वा पापयोनयः।
कृमि म्लेच्छाश्च ये चान्ये संकीर्णाः पापयोनयः॥
कीटाः पिपीलिकाश्चैव ये चान्ये मृगपक्षिणः।
कालेन निधनं प्राप्ताः अविमुक्ते शृणु प्रिये॥
चन्द्रार्धमौलयः सर्वे ललाटाक्षा वृषध्वजाः।
अकामो वा सकामो वा तिर्यग्योनि गतोऽपि वा॥
अविमुक्ते त्यजन् प्राणान् मम लोके महीयते॥"

पाप और पतनका मूल है विषय-चिन्तन और विषयोंमें सुख-बुद्धि।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

ज्येष्ठ कृष्ण १, वि॰सं॰ २०५१, गुरुवार, श्रीकृष्ण-सं॰ ५२२०, MAY 26. 1994

श्रीभगवानुवाच

अक्षरं ब्रह्म परमं स्वभावोऽध्यात्ममुच्यते। भूतभावोद्भवकरो विसर्गः कर्मसंज्ञितः ॥ ३ ॥
अधिभूतं क्षरो भावः पुरुषश्चाधिदैवतम्। अधियज्ञोऽहमेवात्र देहे देहभृतां वर ॥ ४ ॥

सूर्योदय ५।५ सूर्यास्त ६।४३

śrībhagavānuvāca

akṣaraṁ brahma paramaṁ svabhāvo'dhyātmamucyate।
bhūtabhāvodbhavakaro visargaḥ karmasaṁjñitaḥ ॥ 3 ॥
adhibhūtaṁ kṣaro bhāvaḥ puruṣaścādhidaivatam।
adhiyajño'hamevātra dehe dehabhṛtāṁ vara ॥ 4 ॥

भा॰ ५ ज्येष्ठ पं॰ १३ ज्येष्ठ

२ छमई को पियरी के लिए प्रस्थान और सहसराव - श्री राजनीति राय के निवास पर पहुँचना खबर पियरी भेजी गई कि कहना आकर मुझे पियरी ले चलें। सहसराव में सत्येन्द्र और उनके [illegible] - पिता राजनीति राय मिले।
पियरी के [illegible] बाद की बातें मालूम हुईं।
केशव के लड़के पुष्ट और उदास हैं। देवास्वम की मर्यादा भंग करते हैं तथा परिवार को छिन्नभिन्न करेंगे।

विषयीका शरीर मृतक आत्माका जनाजा है।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

अन्तकाले च मामेव स्मरन्मुक्त्वा कलेवरम्। यः प्रयाति स मद्भावं याति नास्त्यत्र संशयः ॥ ५ ॥
यं यं वापि स्मरन्भावं त्यजत्यन्ते कलेवरम्। तं तमेवैति कौन्तेय सदा तद्भावभावितः ॥ ६ ॥
तस्मात्सर्वेषु कालेषु मामनुस्मर युध्य च। मय्यर्पितमनोबुद्धिर्मामेवैष्यस्यसंशयम् ॥ ७ ॥

सूर्योदय ५।४ सूर्यास्त ६।४३

antakāle ca māmeva smaranmuktvā kalevaram।
yaḥ prayāti sa madbhāvaṁ yāti nāstyatra saṁśayaḥ ॥ 5 ॥
yaṁ yaṁ vāpi smaranbhāvaṁ tyajatyante kalevaram।
taṁ tamevaiti kaunteya sadā tadbhāvabhāvitaḥ ॥ 6 ॥
tasmātsarveṣu kāleṣu māmanusmara yudhya ca।
mayyarpitamanobuddhirmāmevaiṣyasyasaṁśayam ॥ 7 ॥

भा॰ ६ ज्येष्ठ पं॰ १४ ज्येष्ठ

मैं सहस्र एवं से करहगर पहुँचा।
आज प्रातः करहगर से धनाराम केलड़के के
साथ ट्रैक्टर से पिचरी पहुँचा। श्री नारायण मिले।
शोभा-शमराम बाल राम आदि निमंत्रण पर बाहर
मातेश्वरियों में गये मिले।

दुनिया मूर्ख कहे तो परवाह नहीं, इस बातका सदा ध्यान रखो कि वह तुम्हें दुष्ट न कहे।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

अ० ८] ज्येष्ठ कृष्ण ४, वि०सं० २०५१, शनिवार, MAY 28. 1994 [दिन १४८

अभ्यासयोगयुक्तेन चेतसा नान्यगामिना। परमं पुरुषं दिव्यं याति पार्थानुचिन्तयन्॥ ८॥
कविं पुराणमनुशासितार
मणोरणीयांसमनुस्मरेद्यः ।
सर्वस्य धातारमचिन्त्यरूप-
मादित्यवर्णं तमसः परस्तात्॥ ९॥

सूर्योदय ५।४ सूर्यास्त ६।४४

abhyāsayogayuktena cetasā nānyagāminā।
paramaṁ puruṣaṁ divyaṁ yāti pārthānucintayan॥ 8॥
kaviṁ purāṇamanuśāsitāra
maṇoraṇīyāṁsamanusmaredyaḥ ।
sarvasya dhātāramacintyarūpa-
mādityavarṇaṁ tamasaḥ parastāt॥ 9॥

भा० ७ ज्येष्ठ पं० १५ ज्येष्ठ

श्रीगणेशचतुर्थीव्रत

आज शोभा आ पहुँचे। सत्यकाल रामगंगा तथा राजगृही आदि से भेंट हुई। श्री सीताराम राय तथा लक्ष्मीनारायण राय आदि भी मिले।

ज्येष्ठ कृष्ण ५, वि०सं० २०५१, रविवार, MAY 29. 1994 [दिन १४९

सूर्योदय ५।३ सूर्यास्त ६।४४ पं० १६ ज्येष्ठ भा० ८ ज्येष्ठ

आज रामपुर सेवाए से भगिना के दरसाने पर बात आयी। रामगंगा की लड़की की शादी है। जगन्नाथ के यहाँ हुआ।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

यदक्षरं वेदविदो वदन्ति
विशन्ति यद्यतयो वीतरागाः ।
यदिच्छन्तो ब्रह्मचर्यं चरन्ति
तत्ते पदं संग्रहेण प्रवक्ष्ये ॥ ११ ॥

सूर्योदय ५।१३
सूर्यास्त ६।४६

yadakṣaraṁ vedavido vadanti
viśanti yadyatayo vītarāgāḥ ।
yadicchanto brahmacaryaṁ caranti
tatte padaṁ saṅgraheṇa pravakṣye ॥ 11 ॥

भा० १०
ज्येष्ठ
पं० १८
ज्येष्ठ

राजगृहीके राजाके पुत्रने दीक्षा ली,
अंकः शिवाद। अङ्कनन्दीजी दीक्षा दीक्षा ली। ग्राम उदयगाएगणवाद है।
अक्षोभीराजगणराजा के पुत्र इनने भी उसी काल दीक्षा ली।
केशवंतराजा के दो पुत्रों - सुमाषराजा एवं इनने शंभुकाश्यपजी से दीक्षा ली। यह आ मंत्री, राजाधार राजके भाई अनेक राजाने दीक्षा ली। केशवके पुत्रदीक्षामें बड़ी धूमधाम हुयी।
वीरगवाड़के यहां ७० हजोड़ेले। धवलराजके पुत्र जालवधड़ राजने ७० हजार राजगृहीके घर आकर दीक्षा राजगृहीराजने उस पर बड़ा धूमधाम किया। सत्येन्द्र के यहां २५ हजार और घोड़ी मिली। राजधरीजी के यहां एक घोड़ी एवं सारी तैयारी की। राजगणिका के यहां १२५ हजार मिले। अक्षमीराजके यहां १२ हजार और एक घोड़ी मिली।

पढ़नेसे सस्ता कोई मनोरञ्जन नहीं और न कोई खुशी इतनी चिरस्थायी है।

घर - अंकः शिवाद दीक्षा दीक्षा आज धवलराज
दीक्षा ली

CC-0. RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

सर्वद्वाराणि संयम्य मनो हृदि निरुध्य च। मूर्ध्न्याधायात्मनः प्राणमास्थितो योगधारणाम्॥ १२॥
ओमित्येकाक्षरं ब्रह्म व्याहरन्मामनुस्मरन्। यः प्रयाति त्यजन्देहं स याति परमां गतिम्॥ १३॥

सूर्योदय ५।३ सूर्यास्त ६।४६

sarvadvārāṇi samyamya mano hṛdi nirudhya ca।
mūrdhnyādhāyātmanaḥ prāṇamāsthito yogadhāraṇām॥ 12॥
omityekākṣaraṁ brahma vyāharanmāmanusmaran।
yaḥ prayāti tyajandehaṁ sa yāti paramāṁ gatim॥ 13॥

भा० ११ ज्येष्ठ पं० १९ ज्येष्ठ

आज सरसरावँ लौटना था किन्तु समहुता रोजीतेन्द्र शमी एवं भी निवास आ गये कि कल दीक्षा के लिये चलना आवश्यक है। बात स्वीकार कर ली गई।
दीक्षा के शमी कार्य कमल को हुए यह बात भगवान उनकी मेरी के पन्ने में अंकित हो गई है।
और आज की लिखने समझना चाहिये।

मैं कब मुक्त होऊँगा ? जब 'मैं' खत्म हो जायगा।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

अनन्यचेताः सततं यो मां स्मरति नित्यशः। तस्याहं सुलभः पार्थ नित्ययुक्तस्य योगिनः ॥ १४ ॥
मामुपेत्य पुनर्जन्म दुःखालयमशाश्वतम्। नाप्नुवन्ति महात्मानः संसिद्धिं परमां गताः ॥ १५ ॥

सूर्योदय ५।३ सूर्यास्त ६।४७

ananyacetāḥ satataṁ yo māṁ smarati nityaśaḥ।
tasyāhaṁ sulabhaḥ pārtha nityayuktasya yoginaḥ ॥ 14 ॥
māmupetya punarjanma duḥkhālayamaśāśvatam।
nāpnuvanti mahātmānaḥ saṁsiddhiṁ paramāṁ gatāḥ ॥ 15 ॥

भा० १२ ज्येष्ठ पं० २० ज्येष्ठ

आज प्रातः समहुता गये। श्रीतेन्द्र शर्मा एवं उनके भाई भी पहले दीक्षा हुई। सपत्नीक। षट्क्षर मंत्र दिया गया उनके भाई कामेश्वर शर्मा हैं।
मणीन्द्र शर्मा श्री राजकेश्वर राय,
राजेन्द्र शर्मा श्री राजकिशोर राय -
वीरेन्द्र शर्मा श्री कालेश्वर राय
मालती देवी जनार्दन राय -
केदार राय श्री शिवदास राय
योगेन्द्र राय - सूर्यनाथ राय -
ये सभी समहुता के शिष्य हैं।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

आब्रह्मभुवनाल्लोकाः पुनरावर्तिनोऽर्जुन। मामुपेत्य तु कौन्तेय पुनर्जन्म न विद्यते ॥ १६ ॥
सहस्रयुगपर्यन्तमहर्यद्ब्रह्मणो विदुः। रात्रिं युगसहस्रान्तां तेऽहोरात्रविदो जनाः ॥ १७ ॥

सूर्योदय ५।२ सूर्यास्त ६।४७

ābrahmabhuvanāllokāḥ punarāvartino'rjuna।
māmupetya tu kaunteya punarjanma na vidyate ॥ 16 ॥
sahasrayugaparyantamaharyadbrahmaṇo viduḥ।
rātriṁ yugasahasrāntāṁ te'horātravido janāḥ ॥ 17 ॥

भा० १३ ज्येष्ठ पं० २१ ज्येष्ठ

आज प्रातः पियरी से ट्रैक्टर से चलकर श्रीनारायण शर्मा के साथ, शंभुनाथ भी थे, सहसरावे - राजनेतिराम के निवास पर पहुँचे। भोजन, जलपान एवं विश्राम किया गया।

पियरी-समदुता श्री सवपूजा मिलकर कुल १६८० रुपये सोलह सौ अस्सी रुपये मगर तथा लगभग ६०० रुपये के कपड़े मिले।

श्रीनारायण के संबंधी मास्टर साहब से भेंट एवं परिचय। वहीं के पास के एक डाक्टर भी मिले जो यहां रोहतास में सेवारत हैं।

ये सभी गांव नालंदा राजगृह के चतुर्दिक हैं। पावापुरी से नालंदा तक - राजगृह तक सजातीय लोग बहुत हैं और हैं समृद्ध।

जो कभी नहीं सोचते, वह हमेशा बोलते हैं।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

अव्यक्तादव्यक्तयः सर्वाः प्रभवन्त्यहरागमे। रात्र्यागमे प्रलीयन्ते तत्रैवाव्यक्तसंज्ञके ॥ १८ ॥
भूतग्रामः स एवायं भूत्वा भूत्वा प्रलीयते। रात्र्यागमेऽवशः पार्थ प्रभवत्यहरागमे ॥ १९ ॥
परस्तस्मात्तु भावोऽन्योऽव्यक्तोऽव्यक्तात्सनातनः। यः स सर्वेषु भूतेषु नश्यत्सु न विनश्यति ॥ २० ॥

सूर्योदय ५।२ सूर्यास्त ६।४८

avyaktādvyaktayaḥ sarvāḥ prabhavantyaharāgame।
rātryāgame pralīyante tatraivāvyaktasaṁjñake ॥ 18॥
bhūtagrāmaḥ sa evāyaṁ bhūtvā bhūtvā pralīyate।
rātryāgame'vaśaḥ pārtha prabhavatyaharāgame ॥ 19॥
parastasmāttu bhāvo'nyo'vyakto'vyaktātsanātanaḥ।
yaḥ sa sarveṣu bhūteṣu naśyatsu na vinaśyati ॥ 20॥

भा० १४ ज्येष्ठ पं० २२ ज्येष्ठ

सहसराकं से देहरादून एक्सप्रेस से वाराणसी आये। स्टेशन पर राजेश्वर राम, त्रिनाथ ब्राह्मण आदि उनके सम्बन्धी मिलने आये थे। स्टेशन से शिवपालगंज मोटर एक्सीडेन्ट केस जाने जा रहे थे। रास्ते में कथा शिवपालगंज में उनके गुरुभाई थे। पत्नी साथ में जा रही थीं। कोई विशेष बात नहीं हुई।

ज्येष्ठ कृष्ण ११, वि०सं० २०५१, रविवार, JUNE 5. 1994 [दिन १५६
सूर्योदय ५।२ सूर्यास्त ६।४८ पं० २३ ज्येष्ठ भा० १५ ज्येष्ठ

अचला एकादशीव्रत

प्रातः वर्माजी [illegible] में [illegible] प्रसाद दिये। भोलाशंकर को [illegible] बनाने तथा अन्य कमरे में [illegible] के बारे में। स्थानीय व्यक्ति से [illegible] से आने वाले।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

अव्यक्तोऽक्षर इत्युक्तस्तमाहुः परमां गतिम्। यं प्राप्य न निवर्तन्ते तद्धाम परमं मम ॥ २१ ॥
पुरुषः स परः पार्थ भक्त्या लभ्यस्त्वनन्यया। यस्यान्तःस्थानि भूतानि येन सर्वमिदं ततम् ॥ २२ ॥
यत्र काले त्वनावृत्तिमावृत्तिं चैव योगिनः। प्रयाता यान्ति तं कालं वक्ष्यामि भरतर्षभ ॥ २३ ॥

सूर्योदय ५।२ सूर्यास्त ६।४८

avyakto'kṣara ityuktastamāhuḥ paramāṁ gatim।
yaṁ prāpya na nivartante taddhāma paramaṁ mama ॥ 21 ॥
puruṣaḥ sa paraḥ pārtha bhaktyā labhyastvananyayā।
yasyāntaḥsthāni bhūtāni yena sarvamidaṁ tatam ॥ 22 ॥
yatra kāle tvanāvṛttimāvṛttiṁ caiva yoginaḥ।
prayātā yānti taṁ kālaṁ vakṣyāmi bharatarṣabha ॥ 23 ॥

भा० १६ ज्येष्ठ पं० २४ ज्येष्ठ

प्रदोषव्रत

प्रातः गंगा स्नान। उन्हें घोटीप तक दोपहिया से छोड़ने आया। आपरेशन दो बजे आदि किया। दीनानाथ के यहां से वापस ७२ रुपये लेकर ७ बजे वापस आया। पंडा का कष्यप्त्क शीघ्र नहीं मिले। स्वामी इन्द्रदेवानंद के उद्बोधन तथा दर्शन आदि के संबंध में चर्चा। श्रीराम को पांडे की फल। वरुणा पर नए पुल के पास से उनके लड़की दामाद, प्रमोद को फल लेकर आये। वापस चले।

आज वरुणा में पानी देखने गये मोसा को, बिजली न था गयी। रीमोट ६५०. सिक्की ४५०।

✓ ज्ञानी विवेकसे शासित होता है, मूर्ख क्रोधसे।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

अग्निर्ज्योतिरहः शुक्लः षण्मासा उत्तरायणम्। तत्र प्रयाता गच्छन्ति ब्रह्म ब्रह्मविदो जनाः ॥ २४ ॥
धूमो रात्रिस्तथा कृष्णः षण्मासा दक्षिणायनम्। तत्र चान्द्रमसं ज्योतिर्योगी प्राप्य निवर्तते ॥ २५ ॥

सूर्योदय ५।२ सूर्यास्त ६।४८

agnirjyotirahaḥ śuklaḥ ṣaṇmāsā uttarāyaṇam।
tatra prayātā gacchanti brahma brahmavido janāḥ ॥ 24 ॥
dhūmo rātristathā kṛṣṇaḥ ṣaṇmāsā dakṣiṇāyanam।
tatra cāndramasaṁ jyotiryogī prāpya nivartate ॥ 25 ॥

भा० १७ ज्येष्ठ पं० २५ ज्येष्ठ

आज प्रातः मंगल सामान्य होने लगा था।
चीनी ४० किलो रुपये एवं दूध ६० रुपये लीटर।
दूध ४० रुपये क्वार्ट था। प्रमाद का गर्म उत्तेजक होने ५० रुपये दिया। ये वाक्य आगे नहीं चलते हैं अतः कि करिये। कोई ३ बजे तक दौड़ी गड़ी आया। जाकेकाल पंच राजधिराज निश्चली आये। वे इन दो घंटे साथ रहे। कुवाल लेमोनेड बिना बिस्वी होता रहा। सच० एस्पिडाइट्रा को वृद्धा चमेली का आखिर मरीज था। वेटीग्राम का मोड़। समयो की मांग। अपने ये लिये इन्हा की सेक्टाडन्ड स्थिति कोई कहीं सोचता है अंतरा सिद्धा सवर्णा है, मेरे कर कमलों की दिखाई देती है। कुल मिलाकर सकल से सकलादेवाई दिन संगोपाय पहले मर्यादा अंगक कथा जाय। फिर भी मर्यादा बहुत महत्व रखती है। प्रमोदसे मनाचलाकि हेराफेरे प्रयाग का काम छोड़ दिया।

ज्ञानी हर बातकी अपनेसे आशा रखता है, मूर्ख दूसरोंकी ओर ताकता है।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

शुक्लकृष्णे गती ह्येते जगतः शाश्वते मते। एकया यात्यनावृत्तिमन्ययावर्तते पुनः ॥ २६ ॥
नैते सृती पार्थ जानन्योगी मुह्यति कश्चन। तस्मात्सर्वेषु कालेषु योगयुक्तो भवार्जुन ॥ २७ ॥

सूर्योदय ५।२ सूर्यास्त ६।४९

śuklakṛṣṇe gatī hyete jagataḥ śāśvate mate।
ekayā yātyanāvṛttimanyayāvartate punaḥ ॥ 26 ॥
naite sṛtī pārtha jānanyogī muhyati kaścana।
tasmātsarveṣu kāleṣu yogayukto bhavārjuna ॥ 27 ॥

भा० १८ ज्येष्ठ पं० २६ ज्येष्ठ

आजप्रातः ८०बजे वत्सके लिये मुन्नाको दिया। मीठेकवाद के १९०० रुपये सौंपे गेंहू-सिलिंडर आदि खरीदने के लिये दिया। अपना खर्चा चूल्हा-गैस महादेवप्रसाद आश्रम के लिये आवश्यक था। एक आदमी हो गया। गोरखपुर अमलियागंज निगम एकेन्द्र बुलाकी को एक पत्र भेजकर - आनेवाले की सेवा में लगने का आदेश किया।

सायंकाल चलि आए जिला पंचायत अध्यक्ष प्रमोद-नरायण राय पधारे हैं। बातों का आज कुछ तिलक है - कबला इका कोई नहीं आया।

बहुत लोगों के लिये कुतुबों के मतों का सहारा लेना ही होगा। आत्मविद्या और ब्रह्मविद्या के माध्यम से कोई इन मिलेगा।

खड़गपती सायंकाल गालमाती को बुला ले आए मिले। दुआ-सलाम के पश्चात- मीठकवाद के साथ आए। उन्होंने बताया कि वे बुलाने पर भी नहीं आए। एक सज्जन सी० स० मैं काम करते। दुख हुआ १०बजे रात्रि वे गए।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

वेदेषु यज्ञेषु तपःसु चैव
दानेषु यत्पुण्यफलं प्रदिष्टम्।
अत्येति तत्सर्वमिदं विदित्वा
योगी परं स्थानमुपैति चाद्यम्॥ २८॥

ॐ तत्सदिति श्रीमद्भगवद्गीतासूपनिषत्सु ब्रह्मविद्यायां योगशास्त्रे श्रीकृष्णार्जुनसंवादे
अक्षरब्रह्मयोगो नामाष्टमोऽध्यायः॥ ८॥

सूर्योदय ५।२ सूर्यास्त ६।४९

vedeṣu yajñeṣu tapaḥsu caiva
dāneṣu yatpuṇyaphalaṁ pradiṣṭam।
atyeti tatsarvamidaṁ viditvā
yogī paraṁ sthānamupaiti cādyam॥ 28॥
oṁ tatsaditi śrīmadbhagavadgītāsūpaniṣatsu brahmavidyāyāṁ
yogaśāstre śrīkṛṣṇārjunasaṁvāde akṣarabrahmayogo
nāmāṣṭamo'dhyāyaḥ॥ 8॥

भा० १९ ज्येष्ठ पं० २७ ज्येष्ठ

अमावास्या, वटसावित्रीव्रत

आज प्रातः कृतपुर गये। रघुनाथजी शर्मा, पंडित रामेश्वर शर्मा एवं श्यामसुंदर शर्मा, वासुदेव शर्मा, श्रीगंगाधर शर्मा से भेंट हुई। कल्पसूत्र के बाद मखपाल में पूजा हुई। वे कल प्रातः मेरे साथ वटवृक्ष चलेंगे। आज ही सायंकाल वक्तव्य अभ्यास करूँगा। वृहदेव को विक्रम माड़र-दर्शन में कृतपुर आमंत्रित किया।

हनुमान् जी के स्थान रासबिहारी राय के पौत्र गंगाराम से भेंट हुई। पुनः माँ मुन्नी के परिवार का विवाद वृत्तान्त पता चला। [illegible] वे [illegible] पत्नी-बच्चे परेशान। [illegible] मैं सुलझाऊँ। [illegible] आत्मीयता का भाव विचारणीय नहीं है, कर्तव्य [illegible]। [illegible] लौटे।

थोड़ा पढ़ना, अधिक सोचना, कम बोलना, अधिक सुनना—यही बुद्धिमान् बननेका उपाय है।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

ॐ

नवमोऽध्यायः

श्रीभगवानुवाच

इदं तु ते गुह्यतमं प्रवक्ष्याम्यनसूयवे। ज्ञानं विज्ञानसहितं यज्ज्ञात्वा मोक्ष्यसेऽशुभात्॥ १॥
राजविद्या राजगुह्यं पवित्रमिदमुत्तमम्। प्रत्यक्षावगमं धर्म्यं सुसुखं कर्तुमव्ययम्॥ २॥

सूर्योदय ५।२
सूर्यास्त ६।४९

śrībhagavānuvāca

idaṁ tu te guhyatamaṁ pravakṣyāmyanasūyave।
jñānaṁ vijñānasahitaṁ yajjñātvā mokṣyase'śubhāt॥ 1॥
rājavidyā rājaguhyaṁ pavitramidamuttamam।
pratyakṣāvagamaṁ dharmyaṁ susukhaṁ kartumavyayam॥ 2॥

भा० २०
ज्येष्ठ
पं० २८
ज्येष्ठ

ज्येष्ठ शुक्ल १, वि०सं० २०५१, शुक्रवार, JUNE 10. 1994

आज कृतपुराकेदशपाल के साथ बक्सर से भोजस होते बहुत
रहना। दरवाजे पर सुरेन्द्र शमी थे। सच्चिदानंद ऊपरी गये थे।
दरभंगा शमी, रवीन्द्र, चन्द्रभानु शमी तथा श्रीपति नारायण आदि से
भेंट। सायंकाल गंगा प्रसाद से भेंट-समाचार आदि। डा० योगीन्द्र
नाथ शमी को पत्र लिखा। रिमफाफा कैलेंडर शीर्ष आदि पूछ गये।
गजेन्द्र

हमारी सबसे बड़ी शान कभी न गिरनेमें नहीं है, बल्कि जब-जब हम गिरें हरबार उठनेमें है।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

अश्रद्दधानाः पुरुषा धर्मस्यास्य परंतप। अप्राप्य मां निवर्तन्ते मृत्युसंसारवर्त्मनि ॥ ३ ॥
मया ततमिदं सर्वं जगदव्यक्तमूर्तिना। मत्स्थानि सर्वभूतानि न चाहं तेष्ववस्थितः ॥ ४ ॥
न च मत्स्थानि भूतानि पश्य मे योगमैश्वरम्। भूतभृन्न च भूतस्थो ममात्मा भूतभावनः ॥ ५ ॥

सूर्योदय ५। २
सूर्यास्त ६। ४९

aśraddadhānāḥ puruṣā dharmasyāsya parantapa।
aprāpya mān nivartante mṛtyusaṁsāravartmani ॥ 3 ॥
mayā tatamidaṁ sarvaṁ jagadavyaktamūrtinā।
matsthāni sarvabhūtāni na cāhaṁ teṣvavasthitaḥ ॥ 4 ॥
na ca matsthāni bhūtāni paśya me yogamaiśvaram।
bhūtabhṛnna ca bhūtastho mamātmā bhūtabhāvanaḥ ॥ 5 ॥

भा० २१ ज्येष्ठ
पं० २९ ज्येष्ठ

आज ईश्वरी दे श्री जीतबहादुर शास्त्री - उनके विषयमें लेखक शिवकर - ईका-रिश्ते के संबंध में मधुर उपलेभव था सद्भावनों की तीर्तलाने की दिशा में अनुरोध किया। श्री धर्मराज साधु धनुषधारी शिरी धारीप्रकाशजी आदि - उन्हें ने कहा कि महाराज आपका जो है वे शीघ्र ही पुनः स्वास्थ्य लाभ करें। मेरे मन में मंगलकामना पूर्ण है। उन्हें पंचतत्व पूजा के थे। मालेकाल वालेश्वर, नर्मदेश्वर - रुक्मिणीनाथजी में गए - पूजा आदि के संबंध में तैलंग का अनुष्ठान।

ज्येष्ठ शुक्ल ३, विक्रम संवत् २०५१, रविवार, JUNE 12. 1994 [दिन १६३
सूर्योदय ५। २ सूर्यास्त ६। ५० पं० ३० ज्येष्ठ भा० २२ ज्येष्ठ

आज श्री सच्चिदानंद जी के यहाँ भोजन पूजा कोलिये उनको बधाई। आज पूजा एकाग्र होने लगी। पीली के अभिषेक शांति कोलो। राधाजी के जन्म की जी आंदोलने की उपवास मिली। मार्गदर्शन उनके पीली सूचना नहीं दी। [illegible] कैसे काले। माँ सिलाई के कपड़े।

भगवान इनाम - उनके।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

यथाकाशस्थितो नित्यं वायुः सर्वत्रगो महान्। तथा सर्वाणि भूतानि मत्स्थानीत्युपधारय ॥ ६ ॥
सर्वभूतानि कौन्तेय प्रकृतिं यान्ति मामिकाम्। कल्पक्षये पुनस्तानि कल्पादौ विसृजाम्यहम् ॥ ७ ॥
प्रकृतिं स्वामवष्टभ्य विसृजामि पुनः पुनः। भूतग्राममिमं कृत्स्नमवशं प्रकृतेर्वशात् ॥ ८ ॥

सूर्योदय ५।२ सूर्यास्त ६।५०

yathākāśasthito nityaṃ vāyuḥ sarvatrago mahān।
tathā sarvāṇi bhūtāni matsthānītyupadhāraya ॥ 6॥
sarvabhūtāni kaunteya prakṛtiṃ yānti māmikām।
kalpakṣaye punastāni kalpādau visṛjāmyaham ॥ 7॥
prakṛtiṃ svāmavaṣṭabhya visṛjāmi punaḥ punaḥ।
bhūtagrāmamimaṃ kṛtsnamavaśaṃ prakṛtervaśāt ॥ 8॥

भा० २३ ज्येष्ठ पं० ३१ ज्येष्ठ

आज प्रातः जलपान करके बहुत से चलने की तैयारी। फेरबंदा से मोटर, नवदेश्वर धाम। सच्चिदानन्द - तंबू कॉलोनी में एकत्र हुए। प्रकृति से प्रेम। एकत्र की गई। शिवजी द्वारा राधाकाल और प्रेम आत्म शक्ति के बल गये। जहाँ से वापसी कैसे गये। पूजा की। बहुत सी फूल पूजा २५० व्यक्ति के आठ आने डाले। राधा उमिला शक्ति। भक्तों एवं का परिवार। इनके बिना का परिवार। कोलाहल। सांवलदास शक्ति आदि की पूजा नहीं मिल सकी। कल में मिलने का प्रयास किया जायेगा। मोटरगाड़ी-३० व्यक्ति। १० व्यक्ति वृन्दावन को। चीनी ८ कि० ४० पैसे। तेल-५० पैसे।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

न च मां तानि कर्माणि निबध्नन्ति धनंजय। उदासीनवदासीनमसक्तं तेषु कर्मसु॥ ९॥
मयाध्यक्षेण प्रकृतिः सूयते सचराचरम्। हेतुनानेन कौन्तेय जगद्विपरिवर्तते॥ १०॥
अवजानन्ति मां मूढा मानुषीं तनुमाश्रितम्। परं भावमजानन्तो मम भूतमहेश्वरम्॥ ११॥

सूर्योदय ५।२ सूर्यास्त ६।५१

na ca mām tāni karmāṇi nibadhnanti dhanañjaya।
udāsīnavadāsīnamasaktaṁ teṣu karmasu॥ 9॥
mayādhyakṣeṇa prakṛtiḥ sūyate sacarācaram।
hetunānena kaunteya jagadviparivartate॥ 10॥
avajānanti māṁ mūḍhā mānuṣīṁ tanumāśritam।
paraṁ bhāvamajānanto mama bhūtamaheśvaram॥ 11॥

भा० २४ ज्येष्ठ पं० ३२ ज्येष्ठ

आज प्रातः बक्सर से ६ कि० पुरानीतें दीनापुर पहुँचा। प्रभात के मिलक सम्मेलन (नारायणजी) में भाग लेने के लिए। मिश्रदम्पति भारत धर्मराज के बड़े लड़के के यहाँ। विशाल भाग-१२ कमरों का। देखा एक स्वप्न। दिवस दो पूर्व आने में कुछ शंकित था हुआ। मन में कोई नहीं हुआ शांति रही। गीतवाद्यपूर्वक यज्ञोपवीत नाथ वाला एक ब्रह्म में छोड़ा।

फिर एक दीवा कलकत्ता झंझट से भी कि पास के एवं दास प्रयाग पुरानेके का निमंत्रण एवं फोन मिला किंतु असमर्थ और भेजा। अतः मंत्रित एक लिखकर इसका उनलोगों को सूचित कर देंगे कि वस्तुस्थिति क्या है।

नारायणजी के मिलक में १०.३० बजे पूर्वाह्न मुरलीधर बड़ा एवं रामविलास मिश्र के संबंध। अतीव संक्षिप्त बना चारुचन्द्रके मैत्रीसंबंध के कारण। मिलकर वहाँ प्रभात ने अत्यंत अच्छी बोली-बड़ा प्रेम किया। एक वर्षों के पश्चात्जीवन में यह पहला ही मिलन था। एक-दो घंटे बाद शेष नारायण।

भाग्यवान् वही हैं, जिनका भगवच्चरणोंमें अनन्य अनुराग है।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

मोघाशा मोघकर्माणो मोघज्ञाना विचेतसः। राक्षसीमासुरीं चैव प्रकृतिं मोहिनीं श्रिताः ॥ १२ ॥
महात्मानस्तु मां पार्थ दैवीं प्रकृतिमाश्रिताः। भजन्त्यनन्यमनसो ज्ञात्वा भूतादिमव्ययम् ॥ १३ ॥
सततं कीर्तयन्तो मां यतन्तश्च दृढव्रताः। नमस्यन्तश्च मां भक्त्या नित्ययुक्ता उपासते ॥ १४ ॥

सूर्योदय ५।२ सूर्यास्त ६।५१

moghāśā moghakarmāṇo moghajñānā vicetasaḥ।
rākṣasīmāsurīṁ caiva prakṛtiṁ mohinīṁ śritāḥ ॥ 12॥
mahātmānastu māṁ pārtha daivīṁ prakṛtimāśritāḥ।
bhajantyananyamanaso jñātvā bhūtādimavyayam ॥ 13॥
satataṁ kīrtayanto māṁ yatantaśca dṛḍhavratāḥ।
namasyantaśca māṁ bhaktyā nityayuktā upāsate ॥ 14॥

भा० २५ ज्येष्ठ पं० १ आषाढ़

आजकल पं० रामकिंकरजी के पास रामचरितमानस की कथा चल रही है। उसमें उन्होंने एक प्रसंग सुनाया। एक बार नारदजी के हृदय में यह लालसा जगी कि मैं भी विवाह करूँ। उन्होंने अपनी यह इच्छा भगवान् विष्णु के सामने प्रकट की। भगवान् ने उनकी इच्छा को समझकर उनके हित के लिए उन्हें वानर का मुख दे दिया। नारदजी को अपने रूप पर बड़ा अभिमान था। वे सोचते थे कि मेरे समान सुन्दर कोई नहीं है। इसलिए वे विवाह के लिए बहुत उत्सुक थे। वानर का मुख देखकर उन्हें लगा कि अब तो विवाह होना असम्भव है। इसलिए वे बहुत दुःखी हुए। उन्होंने भगवान् को बहुत कोसा। भगवान् ने उन्हें समझाया कि तुम्हारा कल्याण इसी में है। तुम्हें अपने रूप पर अभिमान है। इसलिए तुम्हारा अभिमान दूर करने के लिए ही मैंने तुम्हें वानर का मुख दिया है। तुम्हारा कल्याण इसी में है। नारदजी ने भगवान् की बात मान ली। उनका अभिमान दूर हो गया। उन्होंने भगवान् से क्षमा माँगी। भगवान् ने उन्हें क्षमा कर दिया। नारदजी ने भगवान् से कहा कि मैं आपकी माया से मोहित हो गया था। अब मैं आपकी शरण में हूँ। आप मुझे अपनी भक्ति दीजिए। भगवान् ने उन्हें भक्ति का वरदान दिया।

भक्त इसीलिये सबको पावन करता है कि वह परम पावन भगवान्‌का भजन करता है।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

ज्ञानयज्ञेन चाप्यन्ये यजन्तो मामुपासते। एकत्वेन पृथक्त्वेन बहुधा विश्वतोमुखम्॥ १५॥
अहं क्रतुरहं यज्ञः स्वधाहमहमौषधम्। मन्त्रोऽहमहमेवाज्यमहमग्निरहं हुतम्॥ १६॥
पिताहमस्य जगतो माता धाता पितामहः। वेद्यं पवित्रमोंकार ऋक्साम यजुरेव च॥ १७॥

सूर्योदय ५।२
सूर्यास्त ६।५१

jñānayajñena cāpyanye yajanto māmupāsate।
ekatvena pṛthaktvena bahudhā viśvatomukham॥ 15॥
aham kraturaham yajñaḥ svadhāhamahamauṣadham।
mantro'hamahamevājyamahamagnirahaṁ hutam॥ 16॥
pitāhamasya jagato mātā dhātā pitāmahaḥ।
vedyaṁ pavitramomkāra ṛksāma yajureva ca॥ 17॥

भा० २६
ज्येष्ठ
पं० २
आषाढ़

आज प्रातः प्रबोधके घर गये। उनके पारिवारिक सदस्योंसे भाचरणों ले लिये। श्रीमतीजी कुशलतासे थीं पधारे हैं। आजसे प्रबोधके साथ बच्चे [illegible] आसन पर बैठेंगे। कई वर्षसे श्री जगदीशराय अधिवक्ता (सम्मति) के घर निवास पर गये। पंo रामकिशोर द्विवेदी से मुलाकात। जगदीश दादा से कमलेश्वरनाथ कल्याण सुखमाला के बारेमें चर्चा। शाम होते ही पानी बीच बरसने लगे। [illegible] रिक्शा पर [illegible] घर आये। [illegible] चीनी सब्जी [illegible] सायंकाल अभिलाषा [illegible] गुरुजी" लिखे। [illegible] लाल हुआ। परन्तु [illegible] [illegible] हुआ। अभी और पढ़ना पड़ेगा। हिन्दी [illegible] [illegible] कोचीपुरी [illegible] [illegible] [illegible]

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

गतिर्भर्ता प्रभुः साक्षी निवासः शरणं सुहृत्। प्रभवः प्रलयः स्थानं निधानं बीजमव्ययम्॥ १८॥
तपाम्यहमहं वर्षं निगृह्णाम्युत्सृजामि च। अमृतं चैव मृत्युश्च सदसच्चाहमर्जुन॥ १९॥

सूर्योदय ५।२ सूर्यास्त ६।५२

gatirbhartā prabhuḥ sākṣī nivāsaḥ śaraṇaṁ suhṛt।
prabhavaḥ pralayaḥ sthānaṁ nidhānaṁ bījamavyayam॥ 18॥
tapāmyahamahaṁ varṣaṁ nigṛhṇāmyutsṛjāmi ca।
amṛtaṁ caiva mṛtyuśca sadasaccāhamarjuna॥ 19॥

भा॰ २७ ज्येष्ठ पं॰ ३ आषाढ़

प्रातः स्टेरागमेंट कमलापति पांडेयमास्टर मोहनिया।
उनके पहले - विमला के कार्डियोवस्कुलर आर्डर है। उनके
भी भोलापांडेय - ब्लड के कार्सिनोमा होने भाई
आशीर्वचन - को उनके मिजर्सवेल्थ - अधिकारी
में होने वाला है। प्रातः विमला कुमारी। सज्जी चतुर्वेदी
जनार्दनराय को उनके पिता भोलापांडेय को उनके
पारिवारिक - प्रभाव के कारण अवश्य मिले।

बात तब नहीं बनी। मुझे - जगदीश चन्द्र बनर्जी के यहां
गये थे। अतः कालेजिएट इंटर कालेज में
पढ़ते थे, पूर्व से वहां जाते। बंगाल में लगभग
पूरा परिवार कि सभी को कुटुम्ब कहते हैं। जो आत्मीय
होते हैं। मेरी इकलौती बहन का लड़का
को पूरी आंखों देखी देखना नहीं चाहते। उनकी
अड़ोस्ट चाहते हैं। विवाह में उनकी कार्डियोवस्कुलर चाहते
हैं। चक्कर आते। अतः उनकी ब्लड प्रेशर
कहते हैं। उनसे मेरे। मुझे कहते हैं
पर मोतीलाल के आगे वाले हो। उनसे
ये रोग कहां से हुए - उसके लिए

अगर तुम हर जीवके प्रति यत्नपूर्वक दयालु नहीं हो तो तुम बहुधा बहुतोंके प्रति क्रूर होगे।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

त्रैविद्या मां सोमपाः पूतपापा
यज्ञैरिष्ट्वा स्वर्गतिं प्रार्थयन्ते।
ते पुण्यमासाद्य सुरेन्द्रलोक-
मश्नन्ति दिव्यान्दिवि देवभोगान्॥ २०॥

सूर्योदय ५। ३ सूर्यास्त ६। ५२

traividyā māṁ somapāḥ pūtapāpā
yajñairiṣṭvā svargatiṁ prārthayante।
te puṇyamāsādya surendralokā-
maśnanti divyāndivi devabhogān॥ 20॥

भा० २८ ज्येष्ठ पं० ४ आषाढ़

श्रीगङ्गा-दशहरा

आज प्रातः प्रमोद को बीपुर लौटना। अपराजकारे लौट आना। पतालपुरी ६७०० शुक्रवार को पर्वत पैक में पौराणिक-वैज्ञानिकी के पेन-सहस्रहस्य रहस्यों का पर्यवेक्षण होगा। आज अंतिम दिन। मैं विद्या लौकर अलकुरा १०३०० पहुंचगया। अर्थात् बड़ी-बड़ी [illegible] मिले। मैं भी उन विचारों में खड़ा होगया। फोटो आदि लिये गये। अभी तो गंगाजी प्रस्थान करेंगे मैं १२ बजे दिन तक पहुंच आना पड़ेगा। पतालपुरी विद्या को दिया। पतालपुरी से सर्वेक्षण दल को डा० अखिलेश कुमार सिंह को पत्र लिखा। मेरे अभी में शिवाला वाराणसी में इंदौर।

ज्येष्ठ शुक्ल ११, वि०सं० २०५१, रविवार, JUNE 19. 1994 [दिन १७०
सूर्योदय ५। ३ सूर्यास्त ६। ५३ पं० ५ आषाढ़ भा० २९ ज्येष्ठ
भीमसेनी, निर्जला एकादशीव्रत (स्मार्त)

प्रातः अभिनव राजकुमार के गुरु अवधूत से भेंट। उनके पिता की उनके स्वास्थ्य दशा की जानकारी। उन्हें भोजन-दूध गंगाजल। जलपान किया। आशीर्वाद की कृपाकांक्षा है वहां से चौकुंडे। भंगाल पहाड़ी के किनारे रहेंगे भीकुंड वाराणसी। [illegible]

RaiGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

ते तं भुक्त्वा स्वर्गलोकं विशालं
क्षीणे पुण्ये मर्त्यलोकं विशन्ति।
एवं त्रयीधर्ममनुप्रपन्ना
गतागतं कामकामा लभन्ते ॥ २१ ॥
अनन्याश्चिन्तयन्तो मां ये जनाः पर्युपासते। तेषां नित्याभियुक्तानां योगक्षेमं वहाम्यहम् ॥ २२ ॥

te taṁ bhuktvā svargalokaṁ viśālaṁ
kṣīṇe puṇye martyalokaṁ viśanti।
evaṁ trayīdharmamanuprapannā
gatāgataṁ kāmakāmā labhante ॥ 21 ॥
ananyāścintayanto māṁ ye janāḥ paryupāsate।
teṣāṁ nityābhiyuktānāṁ yogakṣemaṁ vahāmyaham ॥ 22 ॥

सूर्योदय ५।३ सूर्यास्त ६।५३

भा॰ ३० ज्येष्ठ पं॰ ६ आषाढ़

भीमसेनी, निर्जला एकादशीव्रत (वैष्णव)

आज कल्पना जैसे। खड़गधारी-केवल-प्रकाश-किरणें जैसे मिलें। राजहंसों का कुलरोर और उसकी ओजस्वी भक्ति गंभीर। वैसा वस्तु की याचना भी अत्यल्प है, प्राकृतिकों के लेखों में [illegible] वाले वर्तमान पत्रिकों के इन्द्रधनुष मिलें वहीं जैसे। उनका पूर्वाभास पंचरंग धुला। सो मेघाच्छन्न प्रपंच हीन है।

सायंकाल खड़गधारी आँखें उन्मीलित वर्तुलों के हृदय के लिए पंक्तित ओजस्विता वाले का विश्वासक।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

येऽप्यन्यदेवता भक्ता यजन्ते श्रद्धयान्विताः। तेऽपि मामेव कौन्तेय यजन्त्यविधिपूर्वकम्॥ २३॥
अहं हि सर्वयज्ञानां भोक्ता च प्रभुरेव च। न तु मामभिजानन्ति तत्त्वेनातश्च्यवन्ति ते॥ २४॥
यान्ति देवव्रता देवान्पितॄन्यान्ति पितृव्रताः। भूतानि यान्ति भूतेज्या यान्ति मद्याजिनोऽपि माम्॥ २५॥

सूर्योदय ५।३ सूर्यास्त ६।५३

ye'pyanyadevatā bhaktā yajante śraddhayānvitāḥ।
te'pi māmeva kaunteya yajantyavidhipūrvakam॥ 23॥
ahaṁ hi sarvayajñānāṁ bhoktā ca prabhureva ca।
na tu māmabhijānanti tattvenātaścyavanti te॥ 24॥
yānti devavratā devānpitṝnyānti pitṛvratāḥ।
bhūtāni yānti bhūtejyā yānti madyājino'pi mām॥ 25॥

भा० ३१ ज्येष्ठ पं० ७ आषाढ़

भौमप्रदोष

प्रमोद कुमार आदि - विवाहादि का प्रपंच का उसकी उचित व्यवस्था में लगे रहे। सायंकाल स्वामी दुर्गाचरण गये। पं० रामलालजी को हीरा दिन अकस्मात् घुलाना पड़ा। पं० कैलाश पति मिश्र स्वयं विवाह में उपस्थित हुए। आशीर्वाद दिये। आज स्वामी सच्चिदानंद सरस्वती आश्रम की प्रबंधकारिणी सभा की बैठक १०.३० बजे हुई। डा० भागीरथ झा, स्वामी, ब्रह्मदत्त, लक्ष्मी दीक्षित, केशव राय, सच्चिदानंद राय के अतिरिक्त लगभग कुमार स्वामी उपस्थित थे। रघुनाथधारी सिंह कुछ देर थे। उनकी उपस्थिति नगण्य है। मैं तो था ही। श्रीकृष्ण कुमार राय भी थे। सभी आवश्यक प्रस्ताव स्वीकृत हुए।

श्री वशिष्ठ से सहसा आ पड़े। उन्होंने वैद्य प्रकट किया तथा स्पष्टीकरण किया कि मैंने साधु के लक्षण नहीं कहा। उनकी सेवा किया। जगन्नाथ धाम जाने की उन्हें आज्ञा दी। मैंने उनके पुस्तक लेखन कार्य की चर्चा उन्हें की कि मैं विश्वासघात हो जाऊँ तो उसे संभालें। उन्होंने स्वीकार किया। [illegible] वे कोई उत्तरदायित्व नहीं लेंगे। मतलब यह कि उन्होंने कहा कि जो कहेंगे वह करूँगा। [illegible]

सच्चा ज्ञान तो वही है, जो आचरणमें उतर आया हो।

Rajguru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

पत्रं पुष्पं फलं तोयं यो मे भक्त्या प्रयच्छति। तदहं भक्त्युपहृतमश्नामि प्रयतात्मनः॥ २६॥
यत्करोषि यदश्नासि यज्जुहोषि ददासि यत्। यत्तपस्यसि कौन्तेय तत्कुरुष्व मदर्पणम्॥ २७॥
शुभाशुभफलैरेवं मोक्ष्यसे कर्मबन्धनैः। संन्यासयोगयुक्तात्मा विमुक्तो मामुपैष्यसि॥ २८॥

सूर्योदय ५।३ सूर्यास्त ६।५३

patraṁ puṣpaṁ phalaṁ toyaṁ yo me bhaktyā prayacchati।
tadahaṁ bhaktyupahṛtamaśnāmi prayatātmanaḥ॥ 26॥
yatkaroṣi yadaśnāsi yajjuhoṣi dadāsi yat।
yattapasyasi kaunteya tatkuruṣva madarpaṇam॥ 27॥
śubhāśubhaphalairevaṁ mokṣyase karmabandhanaiḥ।
saṁnyāsayogayuktātmā vimukto māmupaiṣyasi॥ 28॥

भा० १ आषाढ़ शक १९१६ पं० ८ आषाढ़

प्रातः कृत्यादि से। स्नानादि से शीघ्र ही रघुपति राघवकी अंत्येष्टि के संबंध में विचार किया। डॉ० कामेश्वर एवं आमेवाड़ी की पुस्तिका पढ़ी एवं प्रातमी कामेश्वरी का मोमबत्ती। कल की पत्रिका का लेखा बताया। आश्रम पालोटे। प्रभा दलाल वाराणसे लौटकर प्रसन्नमन मिले। जगदीश तथा कहा। पंथ कैलाश पाठे एवं रामविलास मिश्र के सानंद विवाह में भाग लेकर लंबा वार्तालाप बताया। वेद का वासुदेवजी। पुराणों की प्रति। आरक्षण कल से मिल जायेंगे। कार्य आरंभ। श्री नारायण शर्मा मिलने पुनः आये। कल आकर गुरु सिमरी के लेखें। श्री वैद्य पुरुषोत्तम तेजनारायण कुमार कालेरी होते। मंत्रोच्चार आ पहुँचे। अन्न पुत्र मंगलम् पुत्र तिलक विवाह का निमंत्रण लेकर रहे थे। उनके पुत्र लाला होली - डुमराय - पहुँचना होगा। ब्रह्मवेद के पहले। हनुमत्पर्व।

प्रातःकाल कमलेश मिश्रा लेकर आया से आये। चाय पीये। तथा धूपवती आदि।

पुस्तिका पढ़ प्रसन्न की है। गुरुवर गजब सेवा उपकार। दया। ये ही सत्य हैं। जो परमात्म मार्ग के कंगड़े तक उपेक्षित झलॉडगाव के देवा पहुँचाते हैं। मिश्रजी ओंकार को ब्रह्म के ओंकार बताते हैं। "सीताजी राजा जनकजी के घर जाई। एक अचल सिंहासन दीपाई॥"

सत्पुरुषोंका भूषण सदाचार ही है।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

समोऽहं सर्वभूतेषु न मे द्वेष्योऽस्ति न प्रियः। ये भजन्ति तु मां भक्त्या मयि ते तेषु चाप्यहम्॥ २९॥
अपि चेत्सुदुराचारो भजते मामनन्यभाक्। साधुरेव स मन्तव्यः सम्यग्व्यवसितो हि सः॥ ३०॥
क्षिप्रं भवति धर्मात्मा शश्वच्छान्तिं निगच्छति। कौन्तेय प्रतिजानीहि न मे भक्तः प्रणश्यति॥ ३१॥

सूर्योदय ५।४ सूर्यास्त ६।५३

samo'ham sarvabhūteṣu na me dveṣyo'sti na priyaḥ।
ye bhajanti tu mām bhaktyā mayi te teṣu cāpyaham॥ 29॥
api cetsudurācāro bhajate māmananyabhāk।
sādhureva sa mantavyaḥ samyagvyavasito hi saḥ॥ 30॥
kṣipraṃ bhavati dharmātmā śaśvacchāntiṃ nigacchati।
kaunteya pratijānīhi na me bhaktaḥ praṇaśyati॥ 31॥

भा० २ आषाढ़ पं० ९ आषाढ़

पूर्णिमा

प्रातः ७० मार्गशीर्ष नाथ शर्मिका पौत्र पुत्र "बबलू" शेषपुर ग्राम पं० रामसिंहासन जी के आमंत्रण पर श्रीमद्भागवत कथा ज्ञानयज्ञ की सूचना तथा मुख्याधिकारी की सूची लेकर मार्गशीर्ष के पास आये। उन्हें तथा मातामही कल्पलता के पौत्र-श्यामकिशोर आदि के लिये दो-दो कूपन की व्यवस्था की गई। पत्नी तन्नू आदि नहाया। प० ठीक ९ बजे भोजन हुआ।

वेनीमाधव आये। उनके पूर्व ही बबलू शेषपुर से पं० रामसिंहासन का दो गड्डी पूजा सामग्री का पत्र पहुँचा था। उसे और मातामही पुत्र को दोनों ने देखा। अनेक चर्चा सहित पूजा सामग्री किया। वेनीमाधव आये। उनके लिये चाय की व्यवस्था किया। उनके पुत्र अपने सुविधा वाला आवास के लिये फोटो व्यवस्था तथा कहलो के फोटो लेकर गये। पत्र लिखने लगा दिया।

प बजे दूरभाष-सुरेश्वर के द्वारा पहुँच गये।

जगत्-नाम-रूप बन्धनकारक है और भगवान्‌का नाम-रूप मुक्तिदायक है।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

मां हि पार्थ व्यपाश्रित्य येऽपि स्युः पापयोनयः। स्त्रियो वैश्यास्तथा शूद्रास्तेऽपि यान्ति परां गतिम्॥ ३२॥
किं पुनर्ब्राह्मणाः पुण्या भक्ता राजर्षयस्तथा। अनित्यमसुखं लोकमिमं प्राप्य भजस्व माम्॥ ३३॥

सूर्योदय ५।४ सूर्यास्त ६।५३

mām hi pārtha vyapāśritya ye'pi syuḥ pāpayonayaḥ।
striyo vaiśyāstathā śūdrāste'pi yānti parām gatim॥ 32॥
kim punarbrāhmaṇāḥ puṇyā bhaktā rājarṣayastathā।
anityamasukham lokamimam prāpya bhajasva mām॥ 33॥

भा० ३ आषाढ़ पं० १० आषाढ़

आज बड़ी पैयाटैंक पर दो बैंक परिवार नथुनी राम शर्मा एवं सुदेवा के यहाँ- श्री विक्रम शर्मा, डॉ० वेणीमाधव शास्त्रीजी रमण शेखर पंडित को पूजा पाठ के साथ यज्ञोपवीत की दीक्षा दिया। काफी विधिवत हुआ। देर में चरी से ५०० रुपये दक्षिणा तथा कोदी के कपड़ा वस्त्र मिले।

भुदेश्वर शर्मी १००+ विक्रम वेणीमाधव ३२३ कुल ३२३ के तथा रमण शेखर पंडित १५५ रुपये - शेष ३८ रुपये ब्लासफिडशर्मी। दक्षिणाकाका पत्रिका तथा रामशिरोमणि-उच्चा। कुल ५७८ रुपये प्राप्त हुए। श्री विश्वनाथ शर्मी विद्यानाथ के पुत्रों के यज्ञोपवीत हुए। श्री रामनरेश चौबे- कलकत्ता से आकर वहीं मेरे पास पहुँचे। सायंकाल रामनरेश के वाराणसी जाने विषय पर आवश्यक चर्चा किया। श्री रामनरेश पाण्डेय के आँखों की व्यवस्था और कौन बदलु गयी। रामनरेश की श्रद्धा-अनोखी एक। अद्भुत है। अद्भुत है।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

मन्मना भव मद्भक्तो मद्याजी मां नमस्कुरु। मामेवैष्यसि युक्त्वैवमात्मानं मत्परायणः ॥ ३४ ॥

ॐ तत्सदिति श्रीमद्भगवद्गीतासूपनिषत्सु ब्रह्मविद्यायां योगशास्त्रे श्रीकृष्णार्जुनसंवादे
राजविद्याराजगुह्ययोगो नाम नवमोऽध्यायः ॥ ९ ॥

सूर्योदय ५।४ सूर्यास्त ६।५३

manmanā bhava madbhakto madyājī mām namaskuru।
māmevaiṣyasi yuktvaivamātmānaṃ matparāyaṇaḥ ॥ 34 ॥
oṃ tatsaditi śrīmadbhagavadgītāsūpaniṣatsu brahmavidyāyāṃ
yogaśāstre śrīkṛṣṇārjunasaṃvāde rājavidyārājaguhyayogo
nāma navamo'dhyāyaḥ ॥ 9 ॥

भा० ४ आषाढ़ पं० ११ आषाढ़

श्री [illegible] भगवान को प्रणाम भेजा। बहुत दिनों की सच्चिदानंद विभूतिनारायण जी का पत्र आया - शेष कुशल है। आदि के संबंध में। बहुतसा गीता, विवेकानंद, रामायण और शिवपूजन शास्त्री आदि के चार पार्सल आये। तीनों ग्रंथों को कालेवार पर रक्तपत्र लिखे। लिफाफा लालचंद फाटक को लौटा दिया। अजय के संबंध में पिछले पत्र में लिखा था। प्रो० तेजनारायण के यहां जाना पड़ेगा। कुशल मंगल है। बनेसिंह का तिलक आ गया है।

बहुत दिनों के बाद श्री तेजनारायण कुमार के सभी पुत्रों संजय कुमार, सुमन कुमार, कुमार मंगलम एवं कुमार रंगम से भेंट। [illegible] उपाध्याय। सारदा प्रसाद नारायण, हरिनंदन पुत्र के, रामजीकुंवर, कृपालु कुंवर आदि से भेंट - समाचार - राम जी, सरयू पांडे के लड़के लोग मिले - 10 वर्ष के बाद भेंट हुई। हमारे का एक पार्सल गया कुंवर जयका शाखा [illegible] विवाही। कुशल मिला - अध्यात्म की [illegible]

आषाढ़ कृष्ण ३, वि०सं० २०५१, रविवार, JUNE 26. 1994 [दिन १७७]

सूर्योदय ५।४ सूर्यास्त ६।५३ पं० १२ आषाढ़ भा० ५ आषाढ़

श्रीगणेशचतुर्थीव्रत

प्रातः [illegible] के बाद सदैव आठ के तेजनारायण कुशवाहा के यहां विवेकानंद पढ़े। विभूति का इरेंद्र नाथ। भोजपुर होते 9 बजे [illegible] पहुंचे। चौरासी सिद्धों में [illegible] भाई थे। भोजा सिद्ध - इन्द्र के लौटाया। उसे दत्त तपस्विनी। वृक्षवेद को दूध के लिये चांच लगे। तेजनारायण के 9 बजे दिन में श्री रामजी कुंवर - कृपालु कुंवर आदि के [illegible] मिलो। सबेरा [illegible] के आने के [illegible] [illegible] [illegible]

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

ॐ

दशमोऽध्यायः

श्रीभगवानुवाच

भूय एव महाबाहो शृणु मे परमं वचः। यत्तेऽहं प्रीयमाणाय वक्ष्यामि हितकाम्यया ॥ १ ॥
न मे विदुः सुरगणाः प्रभवं न महर्षयः। अहमादिर्हि देवानां महर्षीणां च सर्वशः ॥ २ ॥

सूर्योदय ५।४
सूर्यास्त ६।५३

śrībhagavānuvāca

bhūya eva mahābāho śṛṇu me paramaṁ vacaḥ।
yatte'haṁ prīyamāṇāya vakṣyāmi hitakāmyayā ॥ 1 ॥
na me viduḥ suragaṇāḥ prabhavaṁ na maharṣayaḥ।
ahamādirhi devānāṁ maharṣīṇāṁ ca sarvaśaḥ ॥ 2 ॥

भा० ६
आषाढ़
पं० १३
आषाढ़

आषाढ़ कृष्ण ४, वि०सं० २०५१, सोमवार, JUNE 27. 1994

प्रातः सर्वेषां सत्संगे कथनार्थं। पं० शम्भुदयालजी मिश्र का० रु० [illegible] की विधवा [illegible] के उर्ध्वदैहिक के उपलक्ष में दिया हुआ। गरुड़ पु० का [illegible] विषय आषाढ़ दिवस — कर्मफल एवं भोग दिवस।

← ३१ पृष्ठ १८ का शेषांश →

भारतीय संस्कृति की विशेषताएँ :—

वादग्रीक अनेकता में तात्त्विक एकता और प्रकृति-जीव जगत की विषमता में परमात्मा की नित्यसमता एवम् हिन्दू संस्कृति की विशेषता है।

परलोकवाद - यह हिन्दू संस्कृति की तीसरी विशेषता है। इस विश्वास से वह बुरे कर्मों से बचता है। यही कारण है कि वह साध्य से साधन (means) को अपेक्षाकृत अधिक महत्व देता है; अतः कणाद के शब्दों में

'यतोऽभ्युदय निःश्रेयस सिद्धिः स धर्मः' कहागया।

इस संस्कृति की चौथी विशेषता उच्चतत्ववाद है।

पांचवीं विशेषता वर्णाश्रम-व्यवस्था है।

सौ रिश्तेदारों से एक दोस्त हमेशा अच्छा है।

आश्रम व्यवस्था — (अ) हिन्दू की दृष्टि में जीवन कर्मक्षेत्र भोग नहीं, त्याग [illegible] है।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

यो मामजमनादिं च वेत्ति लोकमहेश्वरम्। असंमूढः स मर्त्येषु सर्वपापैः प्रमुच्यते ॥ ३ ॥
बुद्धिर्ज्ञानमसंमोहः क्षमा सत्यं दमः शमः। सुखं दुःखं भवोऽभावो भयं चाभयमेव च ॥ ४ ॥
अहिंसा समता तुष्टिस्तपो दानं यशोऽयशः। भवन्ति भावा भूतानां मत्त एव पृथग्विधाः ॥ ५ ॥

सूर्योदय ५।५
सूर्यास्त ६।५४

yo māmajamanādiṁ ca vetti lokamaheśvaram।
asaṁmūḍhaḥ sa martyeṣu sarvapāpaiḥ pramucyate ॥ 3 ॥
buddhirjñānamasaṁmohaḥ kṣamā satyaṁ damaḥ śamaḥ।
sukhaṁ duḥkhaṁ bhavo'bhāvo bhayaṁ cābhayameva ca ॥ 4 ॥
ahiṁsā samatā tuṣṭistapo dānaṁ yaśo'yaśaḥ।
bhavanti bhāvā bhūtānāṁ matta eva pṛthagvidhāḥ ॥ 5 ॥

भा० ७ आषाढ़
पं० १४ आषाढ़

आज इतवार गया - केवल राम मिले। रेलवे यात्रा वर्तमान का विनोबिन रहा।

कुलपति आश्रम - पूर्वोत्तर दिशा में कुलपति आश्रम [illegible] में रमणीय स्थान में बना है।
सायंकाल में आश्रम के ओर की सड़क से गाय आती
कुलपति के आने को लोग ध्यान से देखते रहे। [illegible]
पात्र की - नाम नहीं लिखा। [illegible]
इतनी अच्छी व्यवस्था से [illegible] संपन्न हुआ
आया था।

(ख) धर्म-व्यवस्था — जीवन संग्राम में प्रतिस्पर्धा का अभाव इस संस्कृति का दोष है। बस मानव संस्कृति की यही विशेषता है उसका प्रकृति पर महत्व।

पुरुषार्थ - चार हैं - अर्थ, धर्म, काम, मोक्ष.
संस्कार - हिंदू संस्कृति की सातवीं विशेषता है।

किसीकी खुशामद मत करो। खुशामदीके मुँह और मनमें सदा ही भेद रहता है।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

महर्षयः सप्त पूर्वे चत्वारो मनवस्तथा। मद्भावा मानसा जाता येषां लोक इमाः प्रजाः॥ ६॥
एतां विभूतिं योगं च मम यो वेत्ति तत्त्वतः। सोऽविकम्पेन योगेन युज्यते नात्र संशयः॥ ७॥
अहं सर्वस्य प्रभवो मत्तः सर्वं प्रवर्तते। इति मत्वा भजन्ते मां बुधा भावसमन्विताः॥ ८॥

सूर्योदय ५।५ सूर्यास्त ६।५४

maharṣayaḥ sapta pūrve catvāro manavastathā।
madbhāvā mānasā jātā yeṣāṁ loka imāḥ prajāḥ॥ 6॥
etāṁ vibhūtiṁ yogaṁ ca mama yo vetti tattvataḥ।
so'vikampena yogena yujyate nātra saṁśayaḥ॥ 7॥
ahaṁ sarvasya prabhavo mattaḥ sarvaṁ pravartate।
iti matvā bhajante māṁ budhā bhāvasamanvitāḥ॥ 8॥

भा॰ ८ आषाढ़ पं॰ १५ आषाढ़

अब छंद का विश्लेषण - दो वाक्यों में पूरा होता है। पहला वाक्य दोनों पंक्ति - गीतात्मक है के साथ समाप्त किया। [illegible] संबंधित [illegible] अंतर। अंतर पूर्वक भिन्नता दोनों वाक्य महत्व के लगे। [illegible] सिद्धि के लक्षण दोनों मिले। सायंकाल [illegible] अध्ययन पर कक्षा लगा। कार्य।

"भगवान् शिव शुद्ध, सनातन, विज्ञानानन्दघन परब्रह्म हैं, उनकी उपासना, परमलाभ के लिये है, या उनका पुनीत प्रेम प्राप्त करने के लिये ही करनी चाहिये। सांसारिक हानि-लाभ प्रारब्धवश होते रहते हैं। इनके लिये चिन्ता करने की आवश्यकता नहीं। शंकर की शरण लेने से सभी शुभ और निष्काम हो जायेंगे, जिससे आप ही सांसारिक कार्यों का अन्त हो जायेगा और भविष्य के शेष रहने तक कष्ट होते भी रहें तो क्या आपत्ति है। उनके लिये न तो चिन्ता करनी चाहिये और न भगवान् शंकर से उनके नाश की प्रार्थना करनी चाहिये।"

मित्र पचास रहें तो भी कम हैं, मगर शत्रु एक ही बहुत है।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

मच्चित्ता मद्गतप्राणा बोधयन्तः परस्परम्। कथयन्तश्च मां नित्यं तुष्यन्ति च रमन्ति च ॥ ९ ॥
तेषां सततयुक्तानां भजतां प्रीतिपूर्वकम्। ददामि बुद्धियोगं तं येन मामुपयान्ति ते ॥ १० ॥

सूर्योदय ५।५ सूर्यास्त ६।५४

maccittā madgataprāṇā bodhayantaḥ parasparam।
kathayantaśca māṁ nityaṁ tuṣyanti ca ramanti ca ॥ 9 ॥
teṣāṁ satatayuktānāṁ bhajatāṁ prītipūrvakam।
dadāmi buddhiyogaṁ taṁ yena māmupayānti te ॥ 10 ॥

भा० ९ आषाढ़ पं० १६ आषाढ़

आज भोजन करने कृतपुर गया। दो दर्जे [illegible] से वायस आज से आश्रम में मरम्मत का कार्य हो रहा है। रामसिंहासन बाबू मरम्मत कर रहे हैं। ब्रह्मदेव भी मदद देते हैं।

[illegible] से हरेन्द्र [illegible] गेहूँ लेकर आया। उसे [illegible] तथा [illegible] जाने का [illegible] दिया। [illegible] आदि [illegible] के लिये। [illegible] सायंकाल आये। [illegible] की [illegible] जाते हुए।

[illegible] से वायस-मंजू ने पत्र [illegible] दिया उसके कामी थी। रामसिंहासन आये कामी हुआ।

क्रोधको वैसे ही दूर रखना चाहिये, जैसे साँप और बिच्छूको दूर फेंका जाता है।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

तेषामेवानुकम्पार्थमहमज्ञानजं तमः। नाशयाम्यात्मभावस्थो ज्ञानदीपेन भास्वता ॥ ११ ॥

अर्जुन उवाच

परं ब्रह्म परं धाम पवित्रं परमं भवान्। पुरुषं शाश्वतं दिव्यमादिदेवमजं विभुम् ॥ १२ ॥

सूर्योदय ५।५ सूर्यास्त ६।५४

teṣāmevānukampārthamahamajñānajaṁ tamaḥ।
nāśayāmyātmabhāvastho jñānadīpena bhāsvatā ॥ 11 ॥

arjuna uvāca

paraṁ brahma paraṁ dhāma pavitraṁ paramaṁ bhavān।
puruṣaṁ śāśvataṁ divyamādidevamajaṁ vibhum ॥ 12 ॥

भा० १० आषाढ़ पं० १७ आषाढ़

आज भी संहारक आये - कार्य हुआ। प्रो० तेजनारायण सोमवार जाने समय फाटक पर उत्तरार्ध मिले जो मांग औपचारिकता थी।

सम्पूर्ण हरेन्द्र आज आया। कल की तरीखें गलत दर्ज। गोशाला की पत्नी को पीछे का बकाया - १०० रुपये दिया। किशन सूर्य को वाला आकर बड़े चिन्ह दे गया। पैसा बहुत लेता है। २०० रुपये की दिल दिया है।

डा० बच्चनजी नारायणपुर के आगे मिले पर सो प्रभु आवेंगे - पत्र के लिये - पं० कैलाशपति मिश्र के नाम अन्य कार्य के लिये।

सुख चाहते हो तो दूसरोंको सुख दो और दुःख चाहते हो तो दुःखका दान करो।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

आहुस्त्वामृषयः सर्वे देवर्षिर्नारदस्तथा। असितो देवलो व्यासः स्वयं चैव ब्रवीषि मे ॥ १३ ॥
सर्वमेतदृतं मन्ये यन्मां वदसि केशव। न हि ते भगवन्व्यक्तिं विदुर्देवा न दानवाः ॥ १४ ॥
स्वयमेवात्मनात्मानं वेत्थ त्वं पुरुषोत्तम। भूतभावन भूतेश देवदेव जगत्पते ॥ १५ ॥

सूर्योदय ५। ६
सूर्यास्त ६। ५४

āhustvāmṛṣayaḥ sarve devarṣirnāradastathā।
asito devalo vyāsaḥ svayaṁ caiva bravīṣi me ॥ 13 ॥
sarvametadṛtaṁ manye yanmāṁ vadasi keśava।
na hi te bhagavanvyaktiṁ vidurdevā na dānavāḥ ॥ 14 ॥
svayamevātmanātmānaṁ vettha tvaṁ puruṣottama।
bhūtabhāvana bhūteśa devadeva jagatpate ॥ 15 ॥

भा० ११ आषाढ़ पं० १८ आषाढ़

आज स्वदेश गया। वीरेश्वर उपाध्याय से मिलकर एक विषय के लिये उलझा।

ब्रह्मदेव को उनका कथा २००० रुपया देना है। उसमें उन्हें मजदूरी का काम के लिए दिया। केशव राम के लड़के के संबंध में कहा और उनके कार्यालय में जाने का आग्रह किया।

मैं ही गीता का केवल रखती। [illegible] राजाराम को उसमें ब्रह्मदेव को धारा [illegible]

[illegible] इनके काल को भी कहा मुलाकात मिलने को अगले एक घंटे तक सत्संग होता रहा। इकले दशहरे आज देखेंगे।

आषाढ़ कृष्ण १०, वि०सं० २०५१, रविवार, JULY 3. 1994 [दिन १८४

सूर्योदय ५। ६ सूर्यास्त ६। ५४ पं० १९ आषाढ़ भा० १२ आषाढ़

आज गैस चूल्हा आ गया। श्री केशव राम जी पहुँचाये। श्री अच्छन जी राम नारायणपुर के, आये। उन्हें [illegible] दिया। [illegible] मजदूरी [illegible] दिया। षड़ंगधारी शंकरजी। जन्म दिवस [illegible]

पुत्रका पहुँचा है [illegible]। यदि हमें [illegible] वहाँ भोजनादि उनके मिलेगा। [illegible]

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

वक्तुमर्हस्यशेषेण दिव्या ह्यात्मविभूतयः। याभिर्विभूतिभिर्लोकानिमांस्त्वं व्याप्य तिष्ठसि ॥१६॥
कथं विद्यामहं योगिंस्त्वां सदा परिचिन्तयन्। केषु केषु च भावेषु चिन्त्योऽसि भगवन्मया ॥ १७॥
विस्तरेणात्मनो योगं विभूतिं च जनार्दन। भूयः कथय तृप्तिर्हि शृण्वतो नास्ति मेऽमृतम्॥ १८॥

सूर्योदय ५।७ सूर्यास्त ६।५४

vaktumarhasyaśeṣeṇa divyā hyātmavibhūtayaḥ।
yābhirvibhūtibhirlokānimāṁstvaṁ vyāpya tiṣṭhasi ॥ 16॥
kathaṁ vidhyāmahaṁ yogiṁstvāṁ sadā paricintayan।
keṣu keṣu ca bhāveṣu cintyo'si bhagavanmayā ॥ 17॥
vistareṇātmano yogaṁ vibhūtiṁ ca janārdana।
bhūyaḥ kathaya tṛptirhi śṛṇvato nāsti me'mṛtam ॥ 18॥

भा० १३ आषाढ़ पं० २० आषाढ़

योगिनी एकादशीव्रत

ॐ कृष्णाय श्री केशवराजजी के छन्द पागपुर देवूंपरा ब्रह्मचर्य नगर। प्रकोप को विद्या माड़ ई० तथा ध्रुवम् ध्रुवम् के लिये दिया। कई कठिनाइयों के बाद आजीवन विधिक डीए रहा आकिफ़ पागपुर में, जो विद्या केम का ठिकाना है, फिर पत्र अनन्तोगत्वा ई० वेज वर्णन दिया जो आवश्यक से पागपुर के अग्नि उपले चलना लड़े सोने के आभूषण पहने। कलेक्ट्रेट कन्या भी उसी देखने पढ़ने आदि, प्रसन्नता की पुत्र नहीं माना यह उनकी उपलब्धि है, पत्नी का कारण देखना सहायक विद्यालय के पूरे धर्मसेवा मंगलवार होगा तभी गाड़ी आगे बढ़ सकेगी। जो ग्यारह वर्ष से सेवारत है, उनकी लालसा भी पूर्ण होना प्रमोद सदस्यों में भी, उनका किसी परिवार उन्हें कैसा का नहीं है, उनकी राह में रोड़े अटकाए हुए हैं।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

श्रीभगवानुवाच

हन्त ते कथयिष्यामि दिव्या ह्यात्मविभूतयः। प्राधान्यतः कुरुश्रेष्ठ नास्त्यन्तो विस्तरस्य मे॥ १९॥
अहमात्मा गुडाकेश सर्वभूताशयस्थितः। अहमादिश्च मध्यं च भूतानामन्त एव च॥ २०॥

सूर्योदय ५।७ सूर्यास्त ६।५४

śrībhagavānuvāca

hanta te kathayiṣyāmi divyā hyātmavibhūtayaḥ।
prādhānyataḥ kuruśreṣṭha nāstyanto vistarasya me॥ 19॥
ahamātmā guḍākeśa sarvabhūtāśayasthitaḥ।
ahamādiśca madhyaṁ ca bhūtānāmanta eva ca॥ 20॥

भा० १४ आषाढ़ पं० २१ आषाढ़

** संस्कृति **

चिरंतन प्रगतिशील मानव-जीवन प्रकृति और मानव-समाज के जिन-जिन असंख्य प्रभावों और संस्कारों से संस्कृत और प्रभावित होता है, उन सब के एक सामूहिक स्वरूप को ही आज संस्कृति के नाम से संबोधित करते हैं। युगों से मानव का अनवरत-चिन्तन और अनवरत कर्मधारा कभी प्रकृति के प्रभाव से प्रभावित, कभी आन्तरिक प्रेरणा से प्रेरित एवं कभी-न-कभी व्यक्तियों के विचारों के पारस्परिक संपर्क से संपन्न होता है। संस्कृति इन्हीं समष्टिगत समाज अनुभवों से उत्पन्न होती है।

संस्कृति ही राष्ट्र बनाती है। किसी राष्ट्र का निर्माण एक संस्कृति पर होता है। अतः संस्कृति को राष्ट्र-रूपी शरीर का मेरुदण्ड कह सकते हैं। भाषा संस्कृति का मूलाधार या वाहन है।

** भारतीय-संस्कृति **

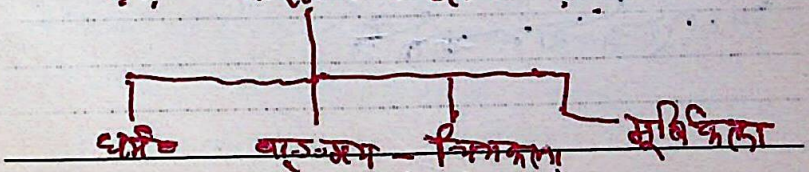

दुनियामें जीते वही हैं जिनमें साहस है।

(शेष पृष्ठ १७८-७१ पर)

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

आदित्यानामहं विष्णुर्ज्योतिषां रविरंशुमान्। मरीचिर्मरुतामस्मि नक्षत्राणामहं शशी ॥ २१ ॥
वेदानां सामवेदोऽस्मि देवानामस्मि वासवः। इन्द्रियाणां मनश्चास्मि भूतानामस्मि चेतना ॥ २२ ॥
रुद्राणां शंकरश्चास्मि वित्तेशो यक्षरक्षसाम्। वसूनां पावकश्चास्मि मेरुः शिखरिणामहम् ॥ २३ ॥

सूर्योदय ५।७ सूर्यास्त ६।५४

ādityānāmahaṁ viṣṇurjyotiṣāṁ raviraṁśumān।
marīcirmarutāmasmi nakṣatrāṇāmahaṁ śaśī ॥ 21 ॥
vedānāṁ sāmavedo'smi devānāmasmi vāsavaḥ।
indriyāṇāṁ manaścāsmi bhūtānāmasmi cetanā ॥ 22 ॥
rudrāṇāṁ śaṅkaraścāsmi vitteśo yakṣarakṣasām।
vasūnāṁ pāvakaścāsmi meruḥ śikhariṇāmaham ॥ 23 ॥

भा० १५ आषाढ़ पं० २२ आषाढ़

प्रदोषव्रत

आज कमरे की जाँच स्टेशन गये। १५ समय रिक्शा को दिया। ६ समय राजदेव सिंह लुके को पेंशन की मंजूरी के लिये दिया। भ्रम से उन्हें वैकुंठ सिंह समझा। अतः पेंशन रिवी कृत होने पर भी वकील जनार्दन राय को नहीं मिली। सुपरिन्टेंडेन्ट जी आये उन्हें काशी चलने का कार्यक्रम बताया।

स्वामी धर्मेन्द्र का शर्मिंद आवास किये। वे वहाँ का शीघ्र जायेंगे। प्रमः अपना रखा हुआ दण्ड लेंगे।

ये सभी वेषधारी सब संन्यासी विचित्र हैं। धर्मसंयोग का ध्यान नहीं रखते। उदहारा के पास बनते हैं।

उच्च स्थानतक टेढी-मेढ़ी सीढ़ीके विना नहीं पहुँचा जा सकता।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

पुरोधसां च मुख्यं मां विद्धि पार्थ बृहस्पतिम्। सेनानीनामहं स्कन्दः सरसामस्मि सागरः॥ २४॥
महर्षीणां भृगुरहं गिरामस्म्येकमक्षरम्। यज्ञानां जपयज्ञोऽस्मि स्थावराणां हिमालयः॥ २५॥
अश्वत्थः सर्ववृक्षाणां देवर्षीणां च नारदः। गन्धर्वाणां चित्ररथः सिद्धानां कपिलो मुनिः॥ २६॥

सूर्योदय ५।८ सूर्यास्त ६।५४

purodhasāṁ ca mukhyaṁ māṁ viddhi pārtha bṛhaspatim।
senānīnāmahaṁ skandaḥ sarasāmasmi sāgaraḥ॥ 24॥
maharṣīṇāṁ bhṛgurahaṁ girāmasmyekamakṣaram।
yajñānāṁ japayajño'smi sthāvarāṇāṁ himālayaḥ॥ 25॥
aśvatthaḥ sarvavṛkṣāṇāṁ devarṣīṇāṁ ca nāradaḥ।
gandharvāṇāṁ citrarathaḥ siddhānāṁ kapilo muniḥ॥ 26॥

भा० १६ आषाढ़ पं० २३ आषाढ़

आकर्षणका प्रान्त है। फल का वर्षा जाने का किया है।
१००० के लक्ष्यवेधी मध्यमा पंक्ति में।
आम १२० में। १०० तक के निकट विशेष रूप से
के मालिक नहीं।
ध्यान देने वाली बात यह है कि
कार्य के लिये। नियमित काल पोस्ट आफिस के
पास ले जाना होगा।

8.00 स्वामीनाथ सेवाश्रम - कहे एवं थोड़े समय
के कार्यक्रम किये गये।
ब्रह्मदेव को बीज तथा ध्यान दिये।
शाकाहार का विरोध करने को नैया नहीं।
बच्चे खूने, लाभदायी और चारित्र व्यक्तित्व के हैं।
गेल को डांटा फटकारा। तुलना न मीनाक्षी
भोजन पालन को नैया कहीं। कालेजाय्या बीज
विषय लाभदायी। रोग वैद्य को चिकित्सा

विषयासक्ति जब अत्यन्त बढ़ जाती है, तब दूसरेके भले-बुरेकी परवा नहीं रहती।

हुआ है। अध्यक्ष भी सभी से तथा देखभाल
अधिक में सहयोग के लिये रहा।

Rajkumar Mishra, Shivaji, Varanasi Collection.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

उच्चैःश्रवसमश्वानां विद्धि माममृतोद्भवम्। ऐरावतं गजेन्द्राणां नराणां च नराधिपम्॥ २७॥
आयुधानामहं वज्रं धेनूनामस्मि कामधुक्। प्रजनश्चास्मि कन्दर्पः सर्पाणामस्मि वासुकिः॥ २८॥
अनन्तश्चास्मि नागानां वरुणो यादसामहम्। पितॄणामर्यमा चास्मि यमः संयमतामहम्॥ २९॥

सूर्योदय ५।८
सूर्यास्त ६।५४

uccaiḥśravasamaśvānāṁ viddhi māmamṛtodbhavam।
airāvataṁ gajendrāṇāṁ narāṇāṁ ca narādhipam॥ 27॥
āyudhānāmahaṁ vajraṁ dhenūnāmasmi kāmadhuk।
prajanaścāsmi kandarpaḥ sarpāṇāmasmi vāsukiḥ॥ 28॥
anantaścāsmi nāgānāṁ varuṇo yādasāmahaṁ।
pitṛīṇāmaryamā cāsmi yamaḥ saṁyamatāmaham॥ 29॥

भा॰ १७ आषाढ़ पं॰ २४ आषाढ़

अमावास्या

उठा हुआ एक सैप द्वारा बक्सर से कार्यक्रम चले। ८ बजे ठाकुरगंज पहुँचे। वहां से वाराणसी कैंट पहुँचने में करीब डेढ़ घंटे। अकेले एक लीटर। २ बजे के बाद सबने खाया। अमलाश का अचार, टमाटर की चटनी, मिला। बाद में ठंडी ककड़ी चीनी आयी। अमिला, लेंजा, और आगरे का पेड़ा आदि। फल अनार है।

भोजन बना। अरहर की दाल का भोजन किया। विश्राम किया। बाकी सुरेन्द्र को चम्पा लिखवाया। सहस्रनाम - राजनीतिराम और यन्त्रमीन विभूतियों पर लिख भेजे। दर्शन डेढ़ किलो १२ बजे।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

प्रह्लादश्चास्मि दैत्यानां कालः कलयतामहम्। मृगाणां च मृगेन्द्रोऽहं वैनतेयश्च पक्षिणाम्॥ ३०॥
पवनः पवतामस्मि रामः शस्त्रभृतामहम्। झषाणां मकरश्चास्मि स्रोतसामस्मि जाह्नवी॥ ३१॥
सर्गाणामादिरन्तश्च मध्यं चैवाहमर्जुन। अध्यात्मविद्या विद्यानां वादः प्रवदतामहम्॥ ३२॥

सूर्योदय ५।९ सूर्यास्त ६।५४

prahlādaścāsmi daityānāṁ kālaḥ kalayatāmaham।
mṛgāṇāṁ ca mṛgendro'haṁ vainateyaśca pakṣiṇām॥ 30॥
pavanaḥ pavatāmasmi rāmaḥ śastrabhṛtāmaham।
jhaṣāṇāṁ makaraścāsmi srotasāmasmi jāhnavī॥ 31॥
sargāṇāmādirantaśca madhyaṁ caivāhamarjuna।
adhyātmavidyā vidyāṇāṁ vādaḥ pravadatāmaham॥ 32॥

भा० १८ आषाढ़ पं० २५ आषाढ़

आज डा० चंद्रेश्वर मिश्र-सीतापुरी, नक्सलाइट के वर्तमान अभीक्षक को ग्रन्थ-पुस्तकें भेंट की गयीं। गोली भी चलाने में विशारद-कोड़मजी, बउधामाओं दीपक, ब्राह्मण कौण। चक्रधरपुर-रिक्त। बउधामल मठ-काम आदि डा० द्रोणाचार्य जी, पं० गणेश मिश्र, श्री दयाराम-पुरी-पुजारी हिमाचल-पर्वतारोहण, श्री दयाकृष्ण, श्रीपति राम-मथुरा-वाले आदि को चन्दन-रोली, शंख-घंटा-घड़ियाल एवं पंचक की प्रसाद करोड़। भोजपुरि अंकोली-उत्तरकुंडेल पंचक-उत्तरा वाली पुरोहित, पंचक-भोजपुरि पंचकिना आदि। अतः सबके यहाँ से लिखे-पढ़े हो गया। डा० केशवप्रसाद के चलीला संन्यास-ग्रहण के संन्यास लेने की मनोवृत्ति से अवगत हुए हैं। अब विशेषता स्वयं ईश्वरानुग्रह के पूर्वाभास से प्रेमी-भक्त स्वामी विद्यानंद गिरि के प्रति।

श्री पुरुषोत्तम मेरे यहाँ आये।

आषाढ़ शुक्ल २, विं०सं० २०५१, रविवार, JULY 10. 1994 [दिन १९१

सूर्योदय ५।९ सूर्यास्त ६।५४ पं० २६ आषाढ़ भा० १९ आषाढ़

श्रीजगदीश-रथयात्रा

आज प्रातः ६७ चन्द्रेश्वर मिश्र-अधेड़ सीतापुरी, वक्षःस्थल-पीड़ा से दउधामल' को फोन मेरे यहाँ से गयी। विजय दिवस दो दिवस पूर्व गये। आखिर का ही दो दिवस का बाकी १५७ तक पहुँच गये। विधाता की कैसे पहुँचने की लीला-मठ पंचमढ़ी-मामले लगे। वरुण-एमजेन्सी रक्षा-अब आगे की सूचना पुनः। ब्रह्मचारी विधिन कृतज्ञता के लिए हो सिमरी का ब्रह्म ध्यान-कमल गन्धा। उसके ज्ञान पं रामनरेश पांडे को २२-२३ अलग्दे को कार्यक्रम पहुँचने की सूचना। राजेन्द्र चौधरी-मधुबनी-ग्रामज्ञान की सूचना

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

अक्षराणामकारोऽस्मि द्वन्द्वः सामासिकस्य च। अहमेवाक्षयः कालो धाताहं विश्वतोमुखः॥ ३३॥
मृत्युः सर्वहरश्चाहमुद्भवश्च भविष्यताम्। कीर्तिः श्रीर्वाक्च नारीणां स्मृतिर्मेधा धृतिः क्षमा॥ ३४॥
बृहत्साम तथा साम्नां गायत्री छन्दसामहम्। मासानां मार्गशीर्षोऽहमृतूनां कुसुमाकरः॥ ३५॥

सूर्योदय ५।१ सूर्यास्त ६।५४

akṣarāṇāmakāro'smi dvandvaḥ sāmāsikasya ca।
ahamevākṣayaḥ kālo dhātāhaṁ viśvatomukhaḥ॥ 33॥
mṛtyuḥ sarvaharaścāhamudbhavaśca bhaviṣyatām।
kīrtiḥ śrīrvākca nārīṇāṁ smṛtirmedhā dhṛtiḥ kṣamā॥ 34॥
bṛhatsāma tathā sāmnāṁ gāyatrī chandasāmaham।
māsānāṁ mārgaśīrṣo'hamṛtūnāṁ kusumākaraḥ॥ 35॥

भा० २०
आषाढ़
पं० २७
आषाढ़

[illegible] दि०- [illegible] के [illegible] के माध्यम से [illegible]
में [illegible] प्राप्त हुआ उसमें 'वक्तव्य' की प्रतिभेंट
करने के लिये [illegible] प्रकरण [illegible] की [illegible]
की [illegible]। [illegible] के साधुसेवी वासुदेव [illegible]
[illegible] बोधु [illegible] के [illegible] रखें [illegible] [illegible]
[illegible] की [illegible]

[illegible] को [illegible] [illegible] के "[illegible]
[illegible] माध्यमिक [illegible] [illegible], [illegible], [illegible]
[illegible] [illegible] आदेश। के [illegible] की [illegible]
[illegible] [illegible] के [illegible] के क्रम में [illegible]
के [illegible] [illegible] में [illegible]।

[illegible] के बाद, [illegible] के [illegible] [illegible]
[illegible] [illegible]। की [illegible] [illegible]
[illegible] [illegible] [illegible] [illegible]
[illegible] [illegible] [illegible] [illegible]
[illegible] [illegible] [illegible] [illegible]
[illegible] [illegible] [illegible] [illegible]
[illegible] [illegible] [illegible] [illegible]
[illegible] [illegible] [illegible] [illegible]
[illegible] [illegible] [illegible] [illegible]
[illegible] [illegible] [illegible] [illegible]
[illegible] [illegible] [illegible] [illegible]

विषयानुराग और वैराग्य एक साथ कैसे रह सकते हैं ?

[illegible]

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

द्यूतं छलयतामस्मि तेजस्तेजस्विनामहम्। जयोऽस्मि व्यवसायोऽस्मि सत्त्वं सत्त्ववतामहम्॥ ३६॥
वृष्णीनां वासुदेवोऽस्मि पाण्डवानां धनंजयः। मुनीनामप्यहं व्यासः कवीनामुशना कविः॥ ३७॥
दण्डो दमयतामस्मि नीतिरस्मि जिगीषताम्। मौनं चैवास्मि गुह्यानां ज्ञानं ज्ञानवतामहम्॥ ३८॥

सूर्योदय ५।१० सूर्यास्त ६।५४

dyūtaṁ chalayatāmasmi tejastejasvināmaham।
jayo'smi vyavasāyo'smi sattvaṁ sattvavatāmaham॥ 36॥
vṛṣṇīnāṁ vāsudevo'smi pāṇḍavānāṁ dhanañjayaḥ।
munīnāmapyahaṁ vyāsaḥ kavīnāmuśanā kaviḥ॥ 37॥
daṇḍo damayatāmasmi nītirasmi jigīṣatām।
maunaṁ caivāsmi guhyānāṁ jñānaṁ jñānavatāmaham॥ 38॥

भा० २१ आषाढ़ पं० २८ आषाढ़

आज प्रातः गैस-सिलिंडर आया। ५०२ रुपये लगे। हीरालाल आया। भिक्षु रिन-पोछे के पत्र का उत्तर दिखाया। सायंकाल नवप्रकाश देखने गये, मिले। पं० बद्रीप्रसाद शर्मा का कैंसर का पुराना भाग। अब वे अस्पताल में हैं। [illegible] स्वास्थ्य बहुत अच्छा है। अधिकांश पत्रों के उत्तर भेजे। [illegible] कुछ लेख देखने लगे। [illegible] इसी ७०० रुपये हैं। श्रद्धा पी एम पारखेय एवं रामप्रसाद पांडे को मेरु-चिकित्सा एवं पुस्तक प्रकाशन के संबंध में पत्र लिखे।

* पञ्चौषधीय के तीन धागे एवं नवतंतु *

तीन धागे तीन महणों के प्रतीक हैं।
१- पितृ-ऋण २- ऋषि ऋण ३- देव ऋण। तीन धागों के नवतंतु ॐ में नवदेवता और कामिवात सर्वे उनके तात्पर्य:—

(१) ॐ —— [illegible] एकत्व का प्रकाश, ब्रह्म ज्ञान,
(२) अग्नि —— तेज, प्रकाश, पावकाइ
(३) अर्यमे —— आचार धैर्य, [illegible] स्थान।
(४) चन्द्रमा- शीतलता, [illegible] सुधावर्षा सर्वौषधिपति।

जबतक विषयोंके मोहमें पड़कर हम अन्धे हो रहे हैं, तबतक भगवत्प्रेमका उदय होना सम्भव नहीं है।

(५) पितृऋण —— [illegible] आशीर्वाद दान
(६) [illegible] —— [illegible]

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding by MoE-Grant-2

(ब) वायु ——— [illegible]

(च) सूर्य ——— स्वास्थ्यप्रदान, मलशोषण, अंधकारसाक्ष प्रभा

(छ) चन्द्रमा ——— दैनंदिनि, सात्विक भोजन,

१९४ दिन] आषाढ़ शुक्ल ६, वि॰ सं॰ २०५१, बुधवार, JULY 13. 1994 [गीता

यच्चापि सर्वभूतानां बीजं तदहमर्जुन। न तदस्ति विना यत्स्यान्मया भूतं चराचरम्॥ ३९॥
नान्तोऽस्ति मम दिव्यानां विभूतीनां परंतप। एष तूद्देशतः प्रोक्तो विभूतेर्विस्तरो मया॥ ४०॥
यद्यद्विभूतिमत्सत्त्वं श्रीमदूर्जितमेव वा। तत्तदेवावगच्छ त्वं मम तेजोंऽशसंभवम्॥ ४१॥

सूर्योदय ५।१० सूर्यास्त ६।५३	*yaccāpi sarvabhūtānāṁ bījaṁ tadahamarjuna।* *na tadasti vinā yatsyānmayā bhūtaṁ carācaram॥ 39॥* *nānto'sti mama divyānāṁ vibhūtīnāṁ paraṁtapa।* *eṣa tūddeśataḥ prokto vibhūtervistaro mayā॥ 40॥* *yadyadvibhūtimatsattvaṁ śrīmadūrjitameva vā।* *tattadevāvagaccha tvaṁ mama tejoṁ'śasaṁbhavam॥ 41॥*	भा॰ २२ आषाढ़ पं॰ २९ आषाढ़

आज प्रातः आगरा से श्री विवेकी राय के साहित्य मनीषी, उपाधि से सम्मानित होने तथा अभिनन्दन ग्रन्थ राशि के उपलक्ष्य होने का समाचार पत्र। श्री विवेकी राय को पुष्पमाला सूचक पत्र सहित भेजा। डा॰ लक्ष्मीनारायण त्रिपाठी को उनके दिल्ली के पते पर - भोगीलाल लहरचंद इन्स्टीच्यूट, आफ इंडोलॉजी, २० वाँ किलोमीटर, जी॰ टी॰ रोड (पानीपत का काल खंड) दिल्ली उपाध्याय के संबंध में पत्र लिखा है।

श्री वशिष्ठ त्रिपाठी - श्रीमद्भा॰ उपसंपादक 'माया' को पता लिखा कि उनके कथनानुसार 'माया' में 'ब्रह्मचर्य' के संबंध में अवलंब कुछ लिखा नहीं जा सका।

* अपना अन्तःकरण देखना चाहिए। अपनी त्रुटियाँ पकड़नी चाहिए। मेरी पूजा-सम्बन्धी और तात्त्विक है। वह जिज्ञासा दिखावा नहीं है, उसमें अन्धकार नहीं चल।

सत्य के विषय में विवेक वर्णित नहीं अनुभूति। बिना विवेक के कल्याण संभव नहीं। विवेक के लिए भागवत्, पुराण और वेदों का अध्ययन। उनको झकझोरना चाहिए।

कामकी ज्वाला विचारमात्रसे प्रज्वलित होती है; परन्तु विचारमात्रसे ही बुझती भी है।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

अथवा बहुनैतेन किं ज्ञातेन तवार्जुन। विष्टभ्याहमिदं कृत्स्नमेकांशेन स्थितो जगत् ॥ ४२ ॥

ॐ तत्सदिति श्रीमद्भगवद्गीतासूपनिषत्सु ब्रह्मविद्यायां योगशास्त्रे श्रीकृष्णार्जुनसंवादे
विभूतियोगो नाम दशमोऽध्यायः ॥ १० ॥

सूर्योदय ५।११ सूर्यास्त ६।५३

athavā bahunaitena kiṁ jñātena tavārjuna।
viṣṭabyāhamidaṁ kṛtsnamekāṁśena sthito jagat ॥ 42 ॥

om tatsaditi śrīmadbhagavadgītāsūpaniṣatsu brahmavidyāyāṁ
yogaśāstre śrīkṛṣṇārjunasaṁvāde vibhūtiyogo
nāma daśamo'dhyāyaḥ ॥ 10 ॥

भा० २३ आषाढ़ पं० ३० आषाढ़

प्रातः जलाभिषेक के पश्चात् प्रभोदकुमार [illegible] के लिये भोजन के लाने उनके कक्ष की यात्रा पर रवाना। [illegible] महोत्सव में भागलपुर के [illegible] उसके उपरान्त महाकुंड के [illegible] विभागीय अधिकारियों के [illegible]।

[illegible] वाराणसी-देहरादून [illegible] में [illegible] पठें- महामण्डलेश्वर [illegible] रात्रि भोजनादि [illegible] चलेंगे। ९ बजे के लगभग हरिद्वार पहुंचेंगे। वहां से [illegible] गंगा के [illegible] दूसरे घंटे लगेंगे। यह गाड़ी बहुत धूम करके [illegible] इसके लिये बहुत [illegible]।

पर्यटन से प्राकृतिक सुषमा, नदी तट के [illegible] धार्मिक भाव [illegible] उस समय के [illegible] उस समय के [illegible] अधिक [illegible] बहुत [illegible] हिमाली [illegible] पर्वतीय [illegible] [illegible]

महाकुंड के [illegible] [illegible] [illegible]

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

ॐ

एकादशोऽध्यायः

अर्जुन उवाच

मदनुग्रहाय परमं गुह्यमध्यात्मसंज्ञितम्। यत्त्वयोक्तं वचस्तेन मोहोऽयं विगतो मम ॥ १ ॥
भवाप्ययौ हि भूतानां श्रुतौ विस्तरशो मया। त्वत्तः कमलपत्राक्ष माहात्म्यमपि चाव्ययम् ॥ २ ॥

सूर्योदय ५।११ सूर्यास्त ६।५३

arjuna uvāca

madanugrahāya paramam guhyamadhyātmasamjñitam।
yattvayoktam vacastena moho'yam vigato mama ॥ 1 ॥
bhavāpyayau hi bhūtānām śrutau vistaraśo mayā।
tvattaḥ kamalapatrākṣa māhātmyamapi cāvyayam ॥ 2 ॥

भा० २४ आषाढ़ पं० ३१ आषाढ़

आषाढ़ शुक्ल ७, विक्रमसंवत् २०५१, शुक्रवार, JULY 15. 1994

प्रातः गाड़ी में ही शौच स्नानादि से निवृत्त होकर सवा छः बजे इलाहाबाद स्टेशन पर उतरे। मुझसे छोटे श्वसुर श्री के इस अचानक आगमन से घर के लोग आश्चर्य में पड़ गये। बहुत ही प्रेम की प्रसन्नता हुई। मैं तत्काल सर्वांग स्नान करके हरिगंगा महानन्द लेकर अपने नित्य अभिषेक के निमित्त आसन पर बैठा। अब छोटे श्वसुर श्री पूजा संध्या की तैयारी में लग गये और मैं अपने नित्य कर्म में। पूजा के पश्चात् श्वसुर जी ने आश्रम के प्रबन्ध के विषय में कुछ विचार विमर्श किया। मैंने भी अपने विचार प्रकट किये। आश्रम के इतिहास तथा प्रगति विकास के लेखे जोखे के लिए मैंने कुछ लिखने के लिए कहा। अन्त में आश्रम के महत्व, विस्तार एवं उन्नति के लिए कुछ सुझाव दिये। आश्रम की सुरक्षा के दृष्टिकोण से चहारदीवारी के निर्माण के लिए भी कहा। दोपहर को भोजन के पश्चात् ३-३० बजे गाड़ी से वापस चल दिये। रास्ते में [illegible]

अत्युक्ति झूठकी सगी रिश्तेदार है और लगभग उतनी ही दोषयुक्त।

श्री स्वामी हरिहरानन्द सरस्वती के समय में [illegible]

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

एवमेतद्यथात्थ त्वमात्मानं परमेश्वर। द्रष्टुमिच्छामि ते रूपमैश्वरं पुरुषोत्तम ॥ ३ ॥
मन्यसे यदि तच्छक्यं मया द्रष्टुमिति प्रभो। योगेश्वर ततो मे त्वं दर्शयात्मानमव्ययम् ॥ ४ ॥

सूर्योदय ५। १२
सूर्यास्त ६। ५३

evametadyathāttha tvamātmānaṁ parameśvara।
draṣṭumicchāmi te rūpamaiśvaraṁ puruṣottama ॥ 3 ॥
manyase yadi tacchakyaṁ mayā draṣṭumiti prabho।
yogeśvara tato me tvaṁ darśayātmānamavyayam ॥ 4 ॥

भा० २५ आषाढ़ पं० १ श्रावण

प्रातः महामण्डलेश्वर [illegible] से मिलने उच्चाभिलाषि अभिलाषी।
उन्हें अर्पण महाकाव्य 'वेदव्यास' की प्रति भेंट की। पिताजी की पुण्यतिथि।
विक्रमा - हीरकजयंती की तैयारी। अनेक पदाभिषेक-उत्सव के
२५ वर्षपूर्ति के पर कैलाश-आश्रम हरिद्वार में अखिल भारतीय कवि-सम्मेलन
की तिथि का पत्र [illegible] एक अनुष्ठान के रूप में कार्यक्रम किया।
महामण्डलेश्वर कैलाश-आश्रम में चतुर्मास हेतु पधारने का सत्संग, आग्रह
अष्टक रचा। मैंने कुछ कार्यक्रमों के कारण स्वीकार नहीं किया।
अनेक उत्तराधिकारी की बात महाराजश्री ने इसी सत्संग में कही।
समीक्षक से एक सिद्धहस्त शिष्य मिला। स्वामी हरिचैतन्य को अभी
नहीं जानता था। अभी।

गोरखपुर के प्रशासनीय डॉक्टर, जो महा राजकीय होमियोपैथिक
चिकित्सालय के डॉक्टर इंचार्ज थे के प्रभाव से कैलाश आश्रम में रहते
उनसे घनिष्ठ परिचय हुआ। आत्मकथा लिखने की प्रेरणा। अनेक गोष्ठी,
गोष्ठियों में काव्यपाठ। [illegible] कहा।
प्रेमी के संस्मरणीय और सच्चे मित्र थे। उनका हित
साधक है। वे आगे भी मेरे प्रति रहेंगे।

आषाढ़ शुक्ल ९, वि०सं० २०५१, रविवार, JULY 17. 1994 [दिन १९८

सूर्योदय ५। १२ सूर्यास्त ६। ५२ पं० २ श्रावण भा० २६ आषाढ़

प्रातः प्रातः कैलाश पीठाधिपति के दर्शन किये। महामण्डलेश्वर जी से प्रातः
अभिलाषा [illegible] की। देवराज जी से 'प्रत्यक्षतत्व' की चर्चा की।
और आज्ञा की [illegible] की। [illegible] [illegible]
[illegible] [illegible] [illegible]
[illegible] [illegible] [illegible]
[illegible]

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

श्रीभगवानुवाच

पश्य मे पार्थ रूपाणि शतशोऽथ सहस्रशः। नानाविधानि दिव्यानि नानावर्णाकृतीनि च ॥ ५ ॥
पश्यादित्यान्वसून्रुद्रानश्विनौ मरुतस्तथा। बहून्यदृष्टपूर्वाणि पश्याश्चर्याणि भारत ॥ ६ ॥

सूर्योदय ५।१३ सूर्यास्त ६।५२

śribhagavānuvāca

paśya me pārtha rūpāṇi śataśo'tha sahasraśaḥ।
nānāvidhāni divyāni nānāvarṇākṛtīni ca ॥ 5 ॥
paśyādityānvasūnrudrānaśvinau marutastathā।
bahūnyadṛṣṭapūrvāṇi paśyāścaryāṇi bhārata ॥ 6 ॥

भा० २७ आषाढ़ पं० ३ श्रावण

श्री स्वामी विश्वम्भरगिरिजी, एक परम तपस्वी संत, महात्मा जी और आश्रम अभिन्न हैं जो अध्यात्मिक अमृतघट के मूर्तिमान स्वरूप हैं।

आज प्रातः ८ बजे महामंडलेश्वर जी के यहाँ पुष्पाञ्जलि क्रम में जो स्वामी जी साधु संघ आगत श्रोताओं में संकेत उसी को किया। श्रीरामचरितमानस भी कुछ पंक्तियाँ (५) पंक्तियों की ही रही। कार्यक्रम के संचालक भी उन्हीं के प्रचारक भी।

अंक भोजपुरी फिल्म्स पुरुष अभिनेता नवीन दिग्दर्शक एवं प्रसिद्ध कर कैमरामैन के प्रकाशक के संबंध में कल्याण जाएगा, प्रमोद के दो पंक्ति के संबंध में Royal सलाह संयोग मंगा। सावन में भी आने का निमंत्रण भेजा। नौरसन-सिद्धार्थनगर के डायरेक्टर सुरेश राम के सत्य विश्वंभर (राय) कौशिक जिले। उनसे पारिवारिक दीर्घकृत सुना कानी मुलाकात हुई अपितु कार्यक्रम हुई।

× × × ×

औद्योगिक-गौशीय सजातीय कुछ लोगों का परिचय

① गोरखपुर जिले में, बाँसगाँव तहसील में, जगहाँ-इन्हीं गाँवों से पुराने गोरखपुर-फिर बस्ती (वर्तमान) जिले के नौरसन मठ में आवले। जो पहले में देवरिया जिला बना। जो १७३२ में देवरिया जिला बंगा। १७८३ में बस्ती से सिद्धार्थनगर जिला बना।

जिस प्रकार खौलते हुए पानीमें अपना प्रतिबिम्ब दिखायी नहीं दे सकता, उसी प्रकार क्रोधी मनुष्य यह समझ नहीं सकता कि उसकी भलाई किसमें है?

① विश्वंभर (राय) कौशिक, कौशिक (राय) कौशिक उपर्युक्त →

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

इहैकस्थं जगत्कृत्स्नं पश्याद्य सचराचरम्। मम देहे गुडाकेश यच्चान्यद्द्रष्टुमिच्छसि ॥ ७ ॥
न तु मां शक्यसे द्रष्टुमनेनैव स्वचक्षुषा। दिव्यं ददामि ते चक्षुः पश्य मे योगमैश्वरम् ॥ ८ ॥

सूर्योदय ५।१३ सूर्यास्त ६।५१

ihaikasthaṁ jagatkṛtsnaṁ paśyādya sacarācaram।
mama dehe guḍākeśa yaccānyaddraṣṭumicchasi ॥ 7 ॥
na tu māṁ śakyase draṣṭumanenaiva svacakṣuṣā।
divyaṁ dadāmi te cakṣuḥ paśya me yogamaiśvaram ॥ 8 ॥

भा० २८ आषाढ़ पं० ४ श्रावण

हरिशयनी एकादशीव्रत

सनातन सेवा-मंडल, द्वारिका के महामंडलेश्वर अनंत श्री
१०८ मायानन्दजी महाराज का पत्र मिला।
प्रातः अष्टमी - केदारपीठाधीश्वर स्वामी दिव्यानंदगिरीजी,
की पुष्पांजलि में उनके पास गये।
महाराज श्री ने वल्लभाचार्य जयंती के अवसर पर अन्य कुछ संन्यासी-
वक्ताओं तथा मारवाड़ी लोगों को। आज श्री पंचोपचार पूजा
की। बड़ा सेठ जुगलकिशोर बिरला तथा ७१७१ रुपये नगद विदाई दी।
श्री पवनकुमार को पूजक सम्मान और विदाई वस्त्रादि प्राप्त हुए।
रामरक्षा मंत्रों से अष्टाक्षर मंत्र के बाद श्री सुरेन्द्रनाथ शर्मा सपत्नी
उपनीत बालक सहित हरिद्वार से यहां आ पहुंचे और मिले।
हरिद्वार से १०-३० देहरादून एक्सप्रेस द्वारा वापसी
चले। ट्रेन देर तक खड़ी रही। लोग दादा के कारण
एक स्टेशन मास्टर से पूछने पर भी ट्रेन दुर्घटनाग्रस्त होने की
थी - ट्रेन धीमे गति से चलती रही। इलाहाबाद ९० उतर
८ बजे ट्रेन यहां उतरे। रिक्शे से आये। भोजन कर
विश्राम किया।

शास्त्रोंको मानना संतोंको मानना है।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

संजय उवाच

एवमुक्त्वा ततो राजन्महायोगेश्वरो हरिः। दर्शयामास पार्थाय परमं रूपमैश्वरम्॥ ९॥
अनेकवक्त्रनयनमनेकाद्भुतदर्शनम्। अनेकदिव्याभरणं दिव्यानेकोद्यतायुधम्॥ १०॥

सूर्योदय ५। १४ सूर्यास्त ६। ५१

sañjaya uvāca

evamuktvā tato rājanmahāyogeśvaro hariḥ।
darśayāmāsa pārthāya paramaṁ rūpamaiśvaram॥ 9॥
anekavaktranayanamanekādbhutadarśanam।
anekadivyābharaṇaṁ divyānekodyatāyudham॥ 10॥

भा॰ २९ आषाढ़ पं॰ ५ श्रावण

प्रदोषव्रत

हिमालय पर्वती अपने एक गर्व के लक्ष्योक्ति छोड़ित का देखे है। वे ब्रह्मपुत्र के लक्षण हैं मैं विक्रमी हैं।
गुरुपूर्णिमा की पंक्तियां होने लगीं

→ ※ ← ※ → ※

→ ※ इंस-मन्त्र से प्रणव की प्राप्ति → ※

प्राणिमात्र श्वास-प्रश्वास से इस-मंत्र का उच्चारण करते हैं। इस मंत्र में भी सदा 'प्रणव' का ही जप होता है। इस बात को स्वामी कार्तिकेय, स्वामी वासुदेव के प्रति कहते हैं: →

"प्रतिलोमात्मकं हंसं वक्ष्यामि प्रणवोद्भवम्।
नव सैनाद् वामदेव, सावधानतया शृणु॥
व्यञ्जनस्य सकारस्य, इकारस्य वर्णमात्र।
ओमित्येव भवेत् स्थूलो वाचकः परमात्मनः॥"

अर्थात् हे वामदेव! इस मंत्र के प्रतिलोम (विपरीत) 'सैनाइं' मंत्र से प्रणव की प्राप्ति के विषय में मैं तुमसे कहता हूँ, सावधान होकर सुनो। व्यञ्जन-'स' कार और स्वर-'इ'-कार के वर्जन से 'ॐ' इस प्रकार परमात्मा का वाचक स्थूल अक्षर होता है।

सत्त तीर्थोंको भी तीर्थ बनाते हैं—'तीर्थीकुर्वन्ति तीर्थानि।'

अर्थात् शिवजी काशी में शरीर त्याग करनेवालों को मरते समय इसी मंत्र का उपदेश देकर मुक्त करते हैं।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

दिव्यमाल्याम्बरधरं दिव्यगन्धानुलेपनम्। सर्वाश्चर्यमयं देवमनन्तं विश्वतोमुखम्॥ ११॥
दिवि सूर्यसहस्रस्य भवेद्युगपदुत्थिता। यदि भाः सदृशी सा स्याद्भासस्तस्य महात्मनः॥ १२॥

सूर्योदय ५।१४ सूर्यास्त ६।५१

divyamālyāmbaradharaṁ divyagandhānulepanam।
sarvāścaryamayaṁ devamanantaṁ viśvatomukham॥ 11॥
divi sūryasahasrasya bhavedyugapadutthitā।
yadi bhāḥ sadṛśī sā syādbhāsastasya mahātmanaḥ॥ 12॥

भा० ३० आषाढ़ पं० ६ श्रावण

स्वामी हरिवंशानंद महाराजजी से आशीर्वाद। ५ किलो दाल। ५ किलो बड़ा चना तथा ५ kg उपमेन्ट्स दिये। इसके लिये फूलमाला भंगाया गया। मंगलेश्वरिका चित्र, ५० रुपये देकर मंगाया गया।

वक्त्यर रेड्डी, भैरवकाना सेनी (कुरुक्षेत्र) अपना मत्था पत्नी तथा पुत्रादि सहित आये। दर्शन आदि के लिये कहा। लड़केको नोट लिखाने के लिये सैन्ट्रल स्कूल में कहा दिया।

सहस्रानंद से श्री रामेश्वर राम, आये। वस्त्राभिषेक के लिये एक बोरी शकरगंज के लिये भगवान लेकर आये।

श्री अखंडानंद जी आये। गुरुपूर्णिमा में सम्मिलित हुए।

* 'प्रणव' तारक-मंत्र है *

इस प्रणव-मंत्र को तारक-मंत्र कहा जाता है। क्योंकि इस मंत्र से प्राणीमात्र भव-समुद्र से तर जाते हैं। भगवान शंकर कहते हैं।

'एनमेवाहं वेदेवा सर्वमंत्राणां शिरोमणिम्।
काश्यामहं प्रयास्यामि जीवान्मुक्तिहेतवे॥ (रुद्रसं अ३-श्लो १०)

अर्थात् हे देवि! सर्वमंत्रों के शिरोमणि इस ॐकार को ही मैं काशी में प्राणत्याग करने वाले जीवों को मुक्ति देता हूँ। स्वामी कार्तिकेय भी वामदेव से कहते हैं:—

बिना सोचे बोलना, बिना निशानेकी गोली चलाना है।

→ 'एनमेव महामंत्रं जीवत्राणं च मानुषाणां मनु।
काश्यां संप्राप्य मरणादे मुक्तिं यत्नं विदुः॥'

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

तत्रैकस्थं जगत्कृत्स्नं प्रविभक्तमनेकधा। अपश्यद्देवदेवस्य शरीरे पाण्डवस्तदा॥ १३॥
ततः स विस्मयाविष्टो हृष्टरोमा धनंजयः। प्रणम्य शिरसा देवं कृताञ्जलिरभाषत॥ १४॥

सूर्योदय ५।१५ सूर्यास्त ६।५०

tatraikastham jagatkṛtsnam pravibhaktamanekadhā।
apaśyaddevadevasya śarīre pāṇḍavastadā॥ 13॥
tataḥ sa vismayāviṣṭo hṛṣṭaromā dhanañjayaḥ।
praṇamya śirasā devam kṛtāñjalirabhāṣata॥ 14॥

भा० ३१ आषाढ़ पं० ७ श्रावण

गुरुपूर्णिमा, व्यासपूजा

आज सैर हुआ। गुरु पूजनी। माधोपुर के चंद्र आए, अलवर के राजकुल तथा जयपुर के लोग आए। गुरुपूजनी। रचनेवाले पिताजी-पत्नी सहित आए। आज्ञा। राजकिलाड़ शर्मा-सविहरि के प्रणधनी-पत्नीयों सहित आए, गुरुपूजन किया।
वेणीपुरा के राजेन्द्र शर्मा आए-अपने माता-पिता को साथ लेकर अपनी माता तथा अपने पिताजी मैंगलीया ली। बहुत बधाईयां। अखण्डानन्द एवं काशी संस्कार वाराणसी गए। कुशलता-आने के अतिरिक्त ही शिक्षक और पत्रकार में नोकझोंक हो गई। आगंतुक-अधिकारी भी काफी देरी आए। पूजा में विघ्न हुए। श्री आगंतुक भाई जी आज अपने अखण्डानन्द गुरुपूजन-समारोह में लक्ष्मीजी हुए। आज ही शंकरलालजी अपनी धर्मपत्नी सहित, कैलाश सहित आए। पूजा दिया। अपने-अपने गुरुओं को अपने-अपने किया। मेरा कोटो आगया ले आये।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

श्रावण कृष्ण १, वि॰सं॰ २०५१, शनिवार, श्रीकृष्ण-सं॰ ५२२०, JULY 23. 1994

अर्जुन उवाच

पश्यामि देवांस्तव देव देहे
सर्वांस्तथा भूतविशेषसङ्घान्।
ब्रह्माणमीशं कमलासनस्थ-
मृषींश्च सर्वानुरगांश्च दिव्यान्॥ १५॥

सूर्योदय ५।१५ सूर्यास्त ६।५०

arjuna uvāca

paśyāmi devāṁstava deva dehe
sarvāṁstathā bhūtaviśeṣasaṅghān।
brahmāṇamīśaṁ kamalāsanastha-
mṛṣīṁśca sarvānuragāṁśca divyān॥ 15॥

भा॰ १ श्रावण शक १९१६ पं॰ ८ श्रावण

आज राजगुरुमठ की न्यास-समिति की बैठक है।

राजेन्द्रवासी वेणीपुर, पृथुमाधवजी, रामेश्वर, रामदत्तमाधवदीक्षित, ये सभी विद्वान आमंत्रित थे। पं॰ रामेश्वर पाराशर भी उपस्थित थे। उपाध्यक्ष लौटाये। उन्हें नेपेश्वरमिश्र, जलेश्वरीमठ के प्रबंधक को आने के लिए पत्र भेजा। इन्हें छात्रों के बीमार है उनका उत्तर आया। नंदकिशोर त्रिवेदी की बीमारी के कारण वह नहीं आये। बोर्ड के श्रीकृष्णमाधव-अभिभावक भी नहीं आये। बैठक हुई। अध्यक्ष पाराशर ने सभी का स्वागत धूमधाम से किये। विद्वानों का प्रस्ताव स्वीकृत हुए।

श्रावण कृष्ण २, वि॰सं॰ २०५१, रविवार, JULY 24. 1994 [दिन २०५
सूर्योदय ५।१६ सूर्यास्त ६।४९ पं॰ ९ श्रावण भा॰ २ श्रावण

आज नगर प्रधिकारी का कार्यालय में सामाजिक कार्यक्रम के लिए गया। मुख्यालय अधिकारी से मुलाकात हुई। उन्होंने कहा कि लेखी लेखी पाठशाला बंद। अभिभावकों को सूचना देने की सूचना। अभी नगर में धूमधाम की सूचना है। दो दिन रुका गया वापस आ गया। दोपहर को वेणीपुर से भेजा।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

अनेकबाहूदरवक्त्रनेत्रं
पश्यामि त्वां सर्वतोऽनन्तरूपम्।
नान्तं न मध्यं न पुनस्तवादिं
पश्यामि विश्वेश्वर विश्वरूप ॥ १६ ॥

सूर्योदय ५।१६ सूर्यास्त ६।४९

anekabāhūdaravaktranetraṁ
paśyāmi tvāṁ sarvato'nantarūpam।
nāntaṁ na madhyaṁ na punastavādiṁ
paśyāmi viśveśvara viśvarūpa ॥ 16 ॥

भा० ३ श्रावण पं० १० श्रावण

आज जानकीजी के परमेष्ठ श्वसुर-पुत्र-के अवसिंह का श्वसुर-सहसा मैं एकबाल पढ़ने-चलने वैय वन्दे करने का पड़ा। ये सन्यासदीक्षा चाहते हैं। भरद्वितीय ने इन्हें लाजों में मँगवाकर पढ़ाया। नारदसनत्कुमार-संवाद-भजनकला को कह दिया। यह भी उन्हें कह दिया। मैं बुद्धतत्व और तीसरी आँख रह चुके।

सायंकाल प्रमोद के मामा-औ पटना पुलिस में थे, पहुँचाया ये उनकी आकस्मिक मृत्यु जीवनपुरुष में अभी। आई प्रथैटना है गयी थे प्रारब्धभोग कर्म भिड़ते। उन्हीं वातावरण में गीता को लेकर धीरे लेकर चल पड़ा। महाभारत सम्पुट लिया है।

× × ×

"थरकर चरण विजन शुओं पर भेंड़ नहीं उड़ाते हैं।
अपनी ईख उँगली पर औ रंकर की अंग घुड़ाते हैं॥
नींद कहीं उनकी आँखों में नो चुभन के मतवाले हैं।
गति का रूखा और वक्र, पर ते पद में जब छाले हैं॥"
—दिनकर।

रात को ईद्राम का से कहे। पता चला कि- उन के पुत्री के मामा- जो पुलिस में थे, पहलवान थे उन्हीं के आकस्मिक मृत्यु हो गई। दिल में ही हृदय आघात। चन्द्र अंक के माथा कर नवयुवक। तुम सेवी पांडे ने कह कर भी ईश्वर को यहाँ के रहने पर मिश्रित नहीं कहा।

भटक रहे हैं जहाँ कुछ अपनी चाह है, वहाँ प्रेम नहीं है। ये सड़ियाँ बंधन में फंसाती हैं।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

किरीटिनं गदिनं चक्रिणं च
तेजोराशिं सर्वतो दीप्तिमन्तम्।
पश्यामि त्वां दुर्निरीक्ष्यं समन्ता-
द्दीप्तानलार्कद्युतिमप्रमेयम् ॥ १७ ॥

सूर्योदय ५।१७ सूर्यास्त ६।४८

kirīṭinaṁ gadinaṁ cakriṇaṁ ca
tejorāśiṁ sarvato dīptimantam।
paśyāmi tvāṁ durnirīkṣyaṁ samantā-
ddīptānalārkadyutimaprameyam ॥ 17 ॥

भा० ४ श्रावण पं० ११ श्रावण

श्रीगणेशचतुर्थीव्रत

प्रातः सुरेन्द्रनाथ शर्मा आश्रम गाजीपुर से पधारे।
मेरे चीफ बहादुर शर्मी शास्त्री - कैंट वाले, श्रीमायाराम शर्मी समधुला आ अन्य
अनेक मित्र। मिलाकर लगभग शिष्यों को श्रीरामकथा सुनाई शर्मी
के माध्यम से पधारे थे। अब पञ्चतत्व में प्रमोदकुमार द्वारा-
श्रीहोरा की दिव्यता पुजवा सबकी आरती उतारे। फिर विदा किया।
१७० तपसे होरा प्रसाद पाण्डेय उसके भी मूल्यांकन किये।
वहाँ कितने की व्यवस्था आदि वहाँ से। भेजा यह पढ़ने
रखने आदि। भागीरथ जी पटेगा मेरा भोजन आदि की व्यवस्था
गाड़ी आदि के मदद देंगे। आज उसका आवेदन पत्र भेजा।
गंगा ती कॉलेज में महेन्द्र राय-द्वारा दीक्षा हुआ। श्री सुरेन्द्र
भगत, शिष्यों को श्रीरामकथा का रहस्य नथमी राम शर्मी द्वारा
आशीर्वाद-उपदेश का पत्र लिखा भेजा।

भूतकालको शोकपूर्ण दृष्टिसे न देखो, वह पुनः लौट नहीं सकता, बुद्धिमत्ताके साथ वर्तमानकी उन्नति करो, वह तुम्हारा है।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

त्वमक्षरं परमं वेदितव्यं
त्वमस्य विश्वस्य परं निधानम्।
त्वमव्ययः शाश्वतधर्मगोप्ता
सनातनस्त्वं पुरुषो मतो मे॥ १८॥

सूर्योदय ५।१७ सूर्यास्त· ६।४८

tvamakṣaraṁ paramaṁ veditavyaṁ
tvamasya viśvasya paraṁ nidhānam।
tvamavyayaḥ śāśvatadharmagoptā
sanātanastvaṁ puruṣo mato me॥ 18॥

भा० ५ श्रावण पं० १२ श्रावण

प्रमोद कुमार के साथ राजनीति राय-वी० एम० तिवारी वैद्य के पास सिद्धिशिरोमणि - को गये। भारतीय शिशुमंदिर के पास उनके निवासस्थान पर। सौन्दरनंद महाकाव्य प्रमोद नहीं ला सके। "बोधिचर्यावतार" पुस्तक तिवारी जी को दे आये। चंपरासा में, मेरी दवा के संबंध में नहीं पूछ सके।

बहुत परिश्रम करके ऊपर के घर का छिद्र बंद किया गया। सीमेंट ४ किलो १२ रुपये, सेंडा १ रुपये। किसी तरह सिर पर अपने पर वह काली हुआ। किसी छान का कार्ड सहयोग नहीं।

मध्यह्न राजनीति राय अपनी दवा लेकर घर वापस गये। २० रुपये सहायता भी दे गये।

हरेन्द्र के पीके लिये दवा रुपये। चौका खर्च के लिये १४ रुपये २० रुपये धूमोदकों, २० रुपये मुझे अभी खर्च के लिये खर्च निकाला गया। पोस्टकार्ड लिफाफा ४ रुपये।

दुःखका मूल कारण आसक्ति है।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

अनादिमध्यान्तमनन्तवीर्य-
मनन्तबाहुं शशिसूर्यनेत्रम्।
पश्यामि त्वां दीप्तहुताशवक्त्रं
स्वतेजसा विश्वमिदं तपन्तम्॥ १९॥

सूर्योदय ५।१८ सूर्यास्त ६।४७

anādimadhyāntamanantavīrya-
manantabāhuṁ śaśisūryanetram।
paśyāmi tvāṁ dīptahutāśavaktraṁ
svatejasā viśvamidaṁ tapantam॥ 19॥

भा० ६ श्रावण पं० १३ श्रावण

आज प्रातः रात में ७ बजे प्रमोद कुमार दीक्षित - चुन्नी अपने मामा की अंत्येष्टि में शामिल होने गये। वहां से घर जायेंगे। आठ दिनों के बाद आने की बात कहकर गये। दिन में भोजन - जलपान किया। हरेन्द्र का प्रपन्न पी० राम० एंड नो बंगाली कॉलेज में दाखिला किया गया। हरेराम बैचैनी में सभी काम औपचारिक ढंग से बपते हैं। अपने को चतुरकोण कुर्सी हिस्स समझते हैं। ऐसा करूं? किसके सहारे जीवन यात्रा की प्रक्रिया पूरी करूं? समझ खोखला होता जा रहा है। दूध-तरकारी - लिपाफा पोस्टकार्ड सबसे कम रट रुपये खर्च हुए। सब भार मेरे मत्थे पर भारी बोझ है। कहां जाऊं कैसे जीवन चलाऊं? कैसे सामाजिक मर्यादा की रक्षा करूं? कभी कभी बहुत घबराहट होती है। आंख नहीं बनने से लिखना पढ़ना भी पूर्णतः बंद है। कुछ आवश्यक पत्रादि बहुत कष्ट से टो-टोकर लिखना पड़ता है।

दूसरोंके मुँहसे पानी नहीं पिया जा सकता, हमें स्वयं उसे पीना होगा।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

द्यावापृथिव्योरिदमन्तरं हि
व्याप्तं त्वयैकेन दिशश्च सर्वाः।
दृष्ट्वाद्भुतं रूपमुग्रं तवेदं
लोकत्रयं प्रव्यथितं महात्मन्॥ २०॥

सूर्योदय ५।१८ सूर्यास्त ६।४७

dyāvāpṛthivyoridamantaraṁ hi
vyāptaṁ tvayaikena diśaśca sarvāh।
dṛṣṭvādbhutaṁ rūpamugraṁ tavedaṁ
lokatrayaṁ pravyathitaṁ mahātman॥ 20॥

भा० ७ श्रावण पं० १४ श्रावण

आज रेलवे के मानाथीपास के सभी लोगों के विशिष्ट लोगों के धमाल के लिये रद्द होने की सरकारी दिल्ली की खबर 'जागरण' में पढ़ा। नकशा पास करने के क्रम में नगर प्राधिकरण कार्यालय में सेवारत लिपिक ताराचंद नकशा सहित भारी ढट्ठा लेकर आया। उस जलूल-सी बातें करता रहा। नक्शा और ढट्ठा दे गया। मैंने इस संबंध में तत्काल श्री हरिकृष्ण ठाकुर जी को लंबा पत्र लिखा। नक्शा बनाने वाले अभियंता श्री डी० पी० सिंह को भी उनके परगना-कार्यालय के पते पर पत्र लिखा। ढट्ठा की प्रतिलिपि के साथ ठाकुर जी और डी० पी० सिंह के पत्र कल डाक में छोड़ेंगे।

पत्र डाक में डाले गये पर अवकाश होने से सोमवार को चलेंगे क्रियाशील होंगे।

श्री साहेब दयालराय बछुपर को भी पत्र भेजकर अनशन त्यागने तथा काशी आने को लिखा।

आचरण एक दर्पण है जिसमें प्रत्येक व्यक्ति अपना चित्र प्रदर्शित करता है।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

अमी हि त्वां सुरसङ्घा विशन्ति
केचिद्भीताः प्राञ्जलयो गृणन्ति।
स्वस्तीत्युक्त्वा महर्षिसिद्धसङ्घाः
स्तुवन्ति त्वां स्तुतिभिः पुष्कलाभिः ॥ २१ ॥

सूर्योदय ५।१९ सूर्यास्त ६।४६

amī hi tvāṁ surasaṅghā viśanti
kecidbhītāḥ prāñjalayo gṛṇanti।
svastītyuktvā maharṣisiddhasaṅghāḥ
stuvanti tvāṁ stutibhiḥ puṣkalābhiḥ ॥ 21 ॥

भा० ८ श्रावण पं० १५ श्रावण

आज हुमायूं से प्रो० तेजनारायण कुमार की धर्मपत्नी अपने संगी साथी सहित काशीदर्शन करने आयीं। गारा के विद्यासागर राय भी मुगलसराय से टहलते आ पहुँचे हैं। जयप्रकाश- महाभारत सी, भिकम्मा, स्वार्थी और गुमानी धाम है। ऐसों का यहां रहना अब ठीक नहीं है। उन्हें पन्द्रह अगस्त के बाद हटना होगा।

श्रावण कृष्ण ८, वि०सं० २०५१, रविवार, JULY 31. 1994 [दिन २१२

सूर्योदय ५।१९ सूर्यास्त ६।४५ पं० १६ श्रावण भा० ९ श्रावण

आज डा० रामकरण शर्मा, संस्कृत-मनीषी और उच्चाधिकारी को पत्र लिखा जिसमें प्रमोद कुमार के आर्य के संबंध में तथा बड़थ्वाल के संबंध में चर्चा की गयी है।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

रुद्रादित्या वसवो ये च साध्या
विश्वेऽश्विनौ मरुतश्चोष्मपाश्च।
गन्धर्वयक्षासुरसिद्धसङ्घा
वीक्षन्ते त्वां विस्मिताश्चैव सर्वे॥ २२॥

सूर्योदय ५।२०
सूर्यास्त ६।४५

rudrādityā vasavo ye ca sādhyā
viśve'śvinau marutaścoṣmapāśca।
gandharvayakṣāsurasiddhasaṅghā
vīkṣante tvāṁ vismitāścaiva sarve॥ 22॥

भा॰ १० श्रावण पं॰ १७ श्रावण

आज प्रातः रामदिनाथ राय-बुधवर के पुत्र विजयशंकर एवं साँईदयाल के भ्रातृव्य बुधवर के ओर से साईंद दयाल के विलापर पड़े अश्रुधारा नीचे की वार्ता बताई। मैंने साईंद दयाल को आश्वासन देने और विजयशंकर बाबू के परिवार से बात किया।

श्रीलक्ष्मणप्रसाद-पुत्री की धर्मपत्नी श्रीमती पार्वती गयी। ७॰ रुद्राक्ष पूजा दिया। उनके लाने के पश्चात् श्रावण-भाद्र के शिविर। जो उनके घर में रहकर पूजा उपासना करते हैं। वे भी अपना पत्रिका लेकर आयें। उनको १५ रुद्राक्ष पूजा दिया। २०० रुपये विजयशंकर दुबे को दे दिये। शेष रुपये के ऋण में दे दिया।

[illegible] ७५० पूजा आयी। १७५० मेरी जमा है। पूजा अभिषेक ४२० है। १०० रुपये ध्रुव के लिये। अभी तक अंग्रेजी के रूट नोट नहीं हुआ।

साईंदयाल को इसका प्रमोद कुमार को पढ़ने में सूचना दिया। अभी तो प्राणियों को देखने में ही देखे आते हैं। फिर धर जायेंगे। आजकल रहना अवश्य करते।

जीवनमें कोई स्थिति ऐसी खराब नहीं है कि उसका सुधार न हो सके।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

रूपं महत्ते बहुवक्त्रनेत्रं
महाबाहो बहुबाहूरुपादम्।
बहूदरं बहुदंष्ट्राकरालं
दृष्ट्वा लोकाः प्रव्यथितास्तथाहम्॥ २३॥

सूर्योदय ५।२०
सूर्यास्त ६।४४

rūpaṁ mahatte bahuvaktranetraṁ
mahābāho bahubāhūrupādam।
bahūdaraṁ bahudaṁṣṭrākarālaṁ
dṛṣṭvā lokāḥ pravyathitāstathāham॥ 23॥

भा० ११ श्रावण पं० १८ श्रावण

आज सिरफिरे किसैंया — पुँ० रमाशंकर जी तथा दो भाई विक्रम शर्मा - वेणी माधव शर्मा जी पधारेंगे - चर्चा करेंगे। पटना ब्रह्मर्षि उमाजी - रूप की ऊर्मी - स्मारिका की प्रति मिली।

* * *

"भगवान शंकर का प्रणवरूप"

"नमः प्रणव वाच्याय नमः प्रणव लिंगिने (लिङ्गिने)।
नमः सृष्ट्यादिकर्त्रे च नमः पञ्चमुखाय ते॥"

ऐसा में भगवान शंकर का विशेष वर्णन है। यजुर्वेद के प्रधान देव भगवान रूद्र हैं।

"नमः शंभवाय च मयोभवाय च नमः शंकराय च।
मयस्कराय च नमः शिवाय च नमः शिवतराय च॥"

प्राणियों को भोग मोक्ष रूप सुखके दाता, (- यजुर्वेद १६-४१) कल्याणरूप, कल्याणकारी शिवको नमस्कार है इत्यादि। यजुर्वेद में रुद्र (अध्याय) के नाम से प्रसिद्ध है। रुद्राध्याय के नाम से प्रसिद्ध है।

वेदों के अतिरिक्त अनेक स्मृतियों तथा इतिहास पुराणों में भी शंकर के स्वरूप का अति स्पष्ट वर्णन पाया जाता है और स्कन्दपुराण, लिंगपुराणादि में तो परमात्मा शिव का माहात्म्य तथा स्वरूप अति उत्तम रीति से वर्णित है। उनमें भगवान शंकर के अनेक रूपों तथा माहात्म्य का वर्णन है। परन्तु भगवान शंकर के →

सुखका उद्गम वही है जहाँसे मनुष्यकी सहानुभूतिका स्रोत अन्यके लिये उमड़ पड़ता है।

→ प्रणव स्वरूप का वर्णन जैसा शिवपुराण में स्पष्ट तथा विस्तृत रूप से मिलता है वैसा अन्य ग्रंथों में नहीं मिलता।

Rajkot Mahila Shivala Vanprastha Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

नभःस्पृशं दीप्तमनेकवर्णं
व्यात्ताननं दीप्तविशालनेत्रम्।
दृष्ट्वा हि त्वां प्रव्यथितान्तरात्मा
धृतिं न विन्दामि शमं च विष्णो ॥ २४ ॥

सूर्योदय ५।२१ सूर्यास्त ६।४३

nabhaḥspṛśaṁ dīptamanekavarṇaṁ
vyāttānanaṁ dīptaviśālanetram।
dṛṣṭvā hi tvāṁ pravyathitāntarātmā
dhṛtiṁ na vindāmi śamaṁ ca viṣṇo ॥ 24 ॥

भा॰ १२ श्रावण पं॰ १९ श्रावण

कामदा एकादशीव्रत

आज प्रातः चारपत्र (Postcard) पर शशिकान्त रावी, गाजीपुर
से श्रीमज्जगद्गुरु के कृपाप्राप्त भक्त श्री॰ नीलरत्न मुखोपाध्याय जी
को समर्पित श्री॰ स्वामी सच्चिदानन्द गिरि की जन्मभूमि, विभूतीराम
जी॰ नड़ियाकली। उपलब्धि का माध्यम 'इलाहाबाद' को पत्रोत्तर।
श्रीनीलरत्न मुखोपाध्याय को 'वसन्तपञ्चमी' के संबंध में जो भी
सामग्री की प्रकाशनार्थ।

× × × ×

→ एक समय भगवान् शंकर कैलासपर्वत के सुरम्य शिखर पर
भगवती पार्वती के सहित विराजमान थे। वहीं पर
पूजा आदि सब कर्मों को देखी है, प्रसन्नतापूर्वक वर्णन कर रहे थे, उसको
देवी के पूछने पर उन्होंने प्रणव के संबंध में कहा →

• प्रणवार्थ का परिज्ञान ही मोक्षलाभ का साधन है। प्रणवरूपमंत्र
सब विद्याओं का बीज है, वह नश्वीज के समान अति सूक्ष्म और
मधुर अर्थवाला है। वह वेदों का आदि तथा सार है एवं ओंकारस्वरूप
है। तीन गुण से अतीत, सर्वेश, सर्वेश्वर, सर्वेप्रभु, सर्वगत,
त्रिपदरूप मंत्र में ॐ अक्षर में स्थित है। तीन गुणों में ब्रह्म—
प्राणरूप होकर जगत् में जो कुछ वस्तु है वह सगुण और व्यक्त
रूप से प्रणवाक्षी ही है। यह प्रणव सर्वेश्वर का साधक है
और अक्षर ब्रह्म है।

अपने दुःखको दबा लेनेकी अपेक्षा अपने आनन्दको छिपा लेनेवाला अधिक महान् है।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

दंष्ट्राकरालानि च ते मुखानि
दृष्ट्वैव कालानलसन्निभानि।
दिशो न जाने न लभे च शर्म
प्रसीद देवेश जगन्निवास ॥ २५ ॥

सूर्योदय ५।२१ सूर्यास्त ६।४३

daṁṣṭrākarālāni ca te mukhāni
dṛṣṭvaiva kālānalasannibhāni।
diśo na jāne na labhe ca śarma
prasīda deveśa jagannivāsa ॥ 25 ॥

भा० १३ श्रावण पं० २० श्रावण

प्रदोषव्रत

आज पुनः पियरीदे में रामरक्षावल्ली शाम्भवाद्य प्रकरण को पुनर्लिखित करके तैयार किया। पहले लिखा था। किन्तु पुस्तक के अशुद्ध-पुनः लिखित तैयार किया।

"प्रणव वाणी का [illegible] है ॐ स्वरूप का आत्मा है। प्रणव स्वरूप मंत्र सब दिशाओं का बीज है। षड् वर्ण बीजों का बड़ ....."

× ——— ⟩* ——— ⟩* ——→.

"इस कारण इसी प्रणव से सर्वप्रथम शिवजी जगत का निर्माण करते हैं। जो शिव है वही प्रणव है, जो प्रणव है वही शिव है क्योंकि वाच्य और वाचक में कोई भेद नहीं होता। इसीलिये ब्रह्मवादी लोग मुझे एकाक्षर ओंकाररूप ब्रह्म कहते हैं। मुमुक्षु को चाहिये कि इस प्रणव को ही सदाशिव, निर्विकार, निर्गुण शिव स्वरूप समझे।"

इसी प्रसंग में भगवान शंकर ने 'प्रणव मंत्र' से 'नमः शिवाय' मंत्र की भी उत्पत्ति बतलाई है। कथा: →

"अकारात् पञ्चाक्षरं जज्ञे शैवं सकलसम्मतं।
अकारादि क्रमेणैव नकारादि यथाक्रमम् ॥"

अर्थात् इसी प्रणव से पञ्चाक्षर मंत्र हुआ है। अर्थात् अकार से नकार, उकार से मकार, मकार से शि, बिन्दु से वा और नाद से यकार उत्पन्न हुआ है।

आलस्यका सबसे बुरा फल कुप्रवृत्तियोंको उकसाना है।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

अमी च त्वां धृतराष्ट्रस्य पुत्राः
सर्वे सहैवावनिपालसङ्घैः।
भीष्मो द्रोणः सूतपुत्रस्तथासौ
सहास्मदीयैरपि योधमुख्यैः ॥ २६ ॥

सूर्योदय ५।२२ सूर्यास्त ६।४२

amī ca tvāṁ dhṛtarāṣṭrasya putrāḥ
sarve sahaivāvanipālasaṅghaiḥ।
bhīṣmo droṇaḥ sūtaputrastathāsau
sahāsmadīyairapi yodhamukhyaiḥ ॥ 26 ॥

भा० १४ श्रावण पं० २१ श्रावण

आज सिकरौरा यात्री [illegible] के उपलक्ष्य में आतिशबाजी भी छोड़ने का संदेश भी लाया। मौजूदगी स्वयं उनकी पत्नी अम्मी। सम्मान स्वयं उनका पूजा किया। मधुर वाक्यों से श्री द्रोणाचार्य-कृपाचार्य के व्यक्तित्व का आभास हो। आत्मविभोर की सराहना की। श्री गंगा का दर्शन हुआ। भावविह्वल वातावरण एवं द्रौपदी साथ - गायत्री आदि।

ऐसका नाम प्रणव क्यों है?

"प्रादि प्रकृतिव जन्य संसारस्य मदोदधेः।
नवं नावावस्थितिं प्रणवं वै विदुर्बुधाः॥"

अर्थात् (प्र) प्रकृति से उत्पन्न हुए संसार-सागर (वि० सं० २०५१ श्रावण कृ० १४) के लिये (नवम्) यह प्रणव नौका रूप है। इस कारण से पण्डितलोग इसे प्रणव कहते हैं। अथवा :→

"प्रः प्रपञ्चो हि नास्ति मो मुक्ताकं प्रणवं विदुः।
प्रपञ्चेन [illegible] मोक्षस्तस्मान्मोक्षं यः प्रणवं विदुः॥"

(प्र) प्रपञ्च (न) नहीं है (वः) तुम में अर्थात् जिसको प्रपञ्च से संसार नहीं रहता उसका नाम प्रणव है। अथवा →

जो लोग पीड़ाका अनुभव नहीं कर सकते वे इस योग्य भी नहीं होते कि आनन्दका अनुभव कर सकें।

अर्थात् ब्रह्मा से लेकर स्थावर पर्यन्त समस्त प्राणियों का यह 'प्रणव' ही प्राण है। →

CC-0. Jangamwadi Math Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

XX पृष्ठ २०१ पर देखें - (बुधवार) पाँचवें।

वक्त्राणि ते त्वरमाणा विशन्ति
दंष्ट्राकरालानि भयानकानि।
केचिद्विलग्ना दशनान्तरेषु
संदृश्यन्ते चूर्णितैरुत्तमाङ्गैः ॥ २७ ॥

सूर्योदय ५।२३ सूर्यास्त ६।४१

vaktrāṇi te tvaramāṇā viśanti
daṁṣṭrākarālāni bhayānakāni।
kecidvilagnā daśanāntareṣu
saṁdṛśyante cūrṇitairuttamāṅgaiḥ ॥ 27 ॥

भा० १५ श्रावण पं० २२ श्रावण

आज पं० रामभद्र शर्मी आँवे और भेंट पाती हुई। रामायण पाठ जी [illegible] कथा होती रही। आने का बल पड़ा। वक्ता के द्वारा प्रणाम की चर्चा चली तो मैंने बता दिया।

→ ✕ → ✕ → ✕ → ✕

'प्र' प्रकृष्ट रूप से (नः) मोक्ष को ले जाता है (वः) जपने वाले पुरुषों को, इस प्रकार इसका नाम 'प्रणव' है। अथवा →

स्व आपकानां यौगिनां स्वर्गप्रपूजकस्य च।
सर्वकर्मक्षयं कृत्वा दिव्यज्ञानं तु नूतनम् ॥'

अर्थात् अपना पूजन करने वालों को। उसके सर्वकर्म क्षयकर, दिव्यज्ञान देने से यह 'प्रणव' कहलाता है। अथवा →

श्रावण कृष्ण ३०, वि०सं० २०५१, रविवार, AUG. 7. 1994 [दिन २१९

सूर्योदय ५।२३ सूर्यास्त ६।४१ पं० २३ श्रावण भा० १६ श्रावण

अमावास्या

"तमेव मात्ररहितं नूतनं परिचक्षते।
प्रकर्षेण मदुद्भावं नवं शुद्धस्वरूपकम् ॥
नूतनं वै करोतीति प्रणवं वै विदुर्बुधाः।"

अर्थात् मात्रा रहित होने से प्रणव को 'नूतन' कहते हैं। नूतन करने वाला होने के कारण पंडित लोग इसे प्रणव कहते हैं।

नमः शिवाय भी कहते हैं। — कैवल्य उपनिषद् - ब्रह्मा जी

'ब्रह्मादिस्थावरान्तानां सर्वेषां प्राणिनां खलु।
प्रायः प्रणव एवायं वासस्तत्र प्रकथितः ॥"

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

ब्रह्मर्षिवंश के सपूत - शिवराय के पुत्र सेमरा के

पं० बद्री प्रसाद शर्मा का पदार्थ प्रातः आठ बजे अग्निवर पर हुआ।

यथा नदीनां बहवोऽम्बुवेगाः
समुद्रमेवाभिमुखा द्रवन्ति।
तथा तवामी नरलोकवीरा
विशन्ति वक्त्राण्यभिविज्वलन्ति ॥ २८ ॥

सूर्योदय ५।२४
सूर्यास्त ६।४०

yathā nadīnāṁ bahavo'mbuvegāḥ
samudramevābhimukhā dravanti।
tathā tavāmī naralokavīrā
viśanti vaktrāṇyabhivijvalanti ॥ 28 ॥

भा॰ १७ श्रावण
पं॰ २४ श्रावण

आज शेषनाथ पाराज्य घर सिमरी वापस गये। वे रावर्टसगंज से कल आकर मठ में ठके थे। वीसरुपेन्द्र पूजा किया। आज आरव-वगणों के लिये ठगि धन्यवाद दे गये। आज भी क्वीन्स कॉलेज में हरेन्द्र के नामांकन की समस्या हल नहीं हो सकी है। आशा है देखें क्या होता है? सायंकाल सिमरी से हरेन्द्र के पिता - उसकी पूछ में आये। रामगोपाल का समाचार कहा। गायत्री मार-सी है। डा० योगेन्द्रनाथ शर्मा उनकी धर्मपत्नी आयी। उनके सबकी - मार्डि पार्वेन्टिट के राजनीतिप्रधान अपने युग दिनों से सहित आये। [illegible] हरेन्द्र का नाम अभी नहीं लिखा जा सका। विहार के नाम पर [illegible] है। आशा है रामायणी वाचस्पति की पहल से कल-परसों तक उलझन दूर हो जायेगी।

परिस्थितियाँ! परिस्थितियाँ मैं स्वयं बनाता हूँ।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

यथा प्रदीप्तं ज्वलनं पतङ्गा
विशन्ति नाशाय समृद्धवेगाः ।
तथैव नाशाय विशन्ति लोका-
स्तवापि वक्त्राणि समृद्धवेगाः ॥ २९ ॥

सूर्योदय ५।२४ सूर्यास्त ६।४०

yathā pradīptaṁ jvalanaṁ pataṅgā
viśanti nāśāya samṛddhavegāḥ ।
tathaiva nāśāya viśanti lokā-
stavāpi vaktrāṇi samṛddhavegāḥ ॥ 29 ॥

भा० १८ श्रावण पं० २५ श्रावण

आज भी हरेन्द्र के नामाङ्कन का कोई स्पष्ट निर्णय नहीं हुआ। इसमें अवेदनपत्र और लब्धाङ्कपत्र की सर्कॉलेज में एम० पी० सिंह को दे दिया। रामायणी जी राधेश्याम के पहल पर इनकी आशा है। रामायणी ०० राधेश्याम को मैंने अपनी ओर से एक अनुरोधपत्र लिख दिया कि लड़के का कार्य हो जाय।

** द्वादश-ज्योतिर्लिङ्ग **

" सोमनाथ सौराष्ट्र में, वैद्यनाथ, केदार।
मल्लिकार्जुन, शैल-श्री, महाकाल, ओंकार ॥
महाकाल ओंकार त्र्यम्बक, प्रभु घुश्मेश्वर।
रामेश्वर नागेश डाकिनी-संग भीमेश्वर ॥
विश्वनाथ दातार दरश काशी में पायें।
ये द्वादश महादेव, जो ज्योतिर्लिङ्ग कहाये ॥

दोहा

इनके दर्शन मात्र से, नासत पाप पहार।
निसि-दिन सुमिरन जो करै, हो जाये उद्धार ॥

घमण्डसे आदमी फूल सकता है, फैल नहीं सकता।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

लेलिह्यसे ग्रसमानः समन्ता-
ल्लोकान्समग्रान्वदनैर्ज्वलद्भिः ।
तेजोभिरापूर्य जगत्समग्रं
भासस्तवोग्राः प्रतपन्ति विष्णो ॥ ३० ॥

सूर्योदय ५।२५ सूर्यास्त ६।३९

lelihyase grasamānaḥ samantā-
llokānsamagrānvadanairjvaladbhiḥ ।
tejobhirāpūrya jagatsamagraṁ
bhāsastavogrāḥ pratapanti viṣṇo ॥ 30 ॥

भा० १९ श्रावण पं० २६ श्रावण

[illegible] पंडीगण से [illegible] राय-शिक्षक, [illegible] के दामाद-[illegible] के सर्वलोक आये। [illegible] को दे दिया।

* * *

सायंकाल [illegible] के मक्करी चन्द्रभाल राय आये। समाचार हुआ। तीन पांच [illegible] नहीं। रामचन्द्र शर्मा का पत्र मिला। हरिकृष्ण ठाकुर का भी पत्र मिला।

* * *

* राजनीतिज्ञ शंकर *

मूसे पर सांप राखै, साँप पर मोर राखै, —
बैल पर सिंह राखै वाके कहाँ भीति है।
पूत जिको भूत राखै, भूत को विभूति राखै,
छमुख को गजमुख यहै बड़ी नीति है।
काम पर वाम राखै, विख को विभूष राखै,
आग पर पानी राखै, सोई जग जीति है।
'देवीदास' देखौ ज्ञानी, शंकर की सावधानी,
सब विधि लायक पै राखै राजनीति ॥

—— o ——

अहिंसाका मूल प्रेममें है, कायरताका घृणामें।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

आख्याहि मे को भवानुग्ररूपो
नमोऽस्तु ते देववर प्रसीद।
विज्ञातुमिच्छामि भवन्तमाद्यं
न हि प्रजानामि तव प्रवृत्तिम्॥ ३१॥

सूर्योदय ५।२५ सूर्यास्त ६।३८

ākhyāhi me ko bhavānugrarūpo
namo'stu te devavara prasīda।
vijñātumicchāmi bhavantamādyam
na hi prajānāmi tava pravṛttim॥ 31॥

भा० २० श्रावण पं० २७ श्रावण

नागपञ्चमी

आज पाराडेय कॉलोनी में 'वरुणाला' के लोकार्पण में नगेश्वर सिंह सम्मिल की वेबसाइट की के उद्घोष में. सेवक का जाना नहीं हो सका। उनकी फोटो खींची एक लीजिये।

ॐ ईश्वर भगवान शिव के आचरणों से शिक्षा →

समस्त इतिहास-पुराण आगम ग्रंथों में भगवान शंकर का जो स्वरूप निर्दिष्ट है, उससे स्पष्ट होता है कि वे सर्वत्यागी, सर्वाधिक विरक्त यहाँ तक कि वस्त्र, आभूषण, गृह आदि से भी विहीन होकर परब्रह्म चिन्तन में रत रहते हैं। विश्व के सर्वश्रेष्ठ सर्वेश्वर देवता होते हुए भी योग-क्षेम और सम्पूर्ण वैभव, अन्न-धन आदि की चिन्ता से शून्य संग्रह-रहित कैलाश-जैसे वन-पर्वतों पर निवास करनेवाले, योग-ज्ञान, विद्या, वैराग्य में सर्वश्रेष्ठ और स्वभाव से सर्वथा निर्दोष होकर धर्मरक्षा, विश्वरक्षा, साधु-संतों की रक्षा तथा परोपकार आदि में निरन्तर रत रहते हैं।

* * *

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

श्रीभगवानुवाच

कालोऽस्मि लोकक्षयकृत्प्रवृद्धो
लोकान्समाहर्तुमिह प्रवृत्तः ।
ऋतेऽपि त्वां न भविष्यन्ति सर्वे
येऽवस्थिताः प्रत्यनीकेषु योधाः ॥ ३२ ॥

सूर्योदय ५।२६ सूर्यास्त ६।३७

भा॰ २१ श्रावण पं॰ २८ श्रावण

śrībhagavānuvāca

kālo'smi lokakṣayakṛtpravṛddho pravṛttaḥ ।
lokānsamāhartumiha
ṛte'pi tvāṁ na bhaviṣyanti sarve
ye'vasthitāḥ pratyanīkeṣu yodhāḥ ॥ 32 ॥

आज ईश्वर-परिवार के लोगों को पढ़ाने जाऊँगा।
डा॰ श्रीकृष्णभक्त श्रीमती-लपरिवार-पुष्पेण आदि के साथ कल्याण शेषपुर जाऊँगा।

०) भगवान् राम के अवतार का उद्देश्य है मर्यादा की स्थापना और रक्षा था, अतः अपने चरित्र द्वारा उन्होंने माता-पिता के प्रति कर्तव्य, पति का पत्नी के प्रति कर्तव्य, पत्नी का पति के प्रति कर्तव्य, भाई का भाई के प्रति कर्तव्य, मित्र का मित्र के प्रति, ज्येष्ठ का कनिष्ठ के प्रति, स्वामी का सेवक के प्रति, सेवक का स्वामी के प्रति, आराध्य का अनुचर के प्रति, शरणम् का शरणागत के प्रति, राजा का प्रजा के प्रति जो मर्यादित कर्तव्य है उसकी शिक्षा संसार को दी और अपना मर्यादापुरुषोत्तम दिशेषण अन्वर्थक बनाया।।

* * *

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

तस्मात्त्वमुत्तिष्ठ यशो लभस्व
जित्वा शत्रून्भुङ्क्ष्व राज्यं समृद्धम्।
मयैवैते निहताः पूर्वमेव
निमित्तमात्रं भव सव्यसाचिन्॥ ३३॥

सूर्योदय ५। २६ सूर्यास्त ६। ३६

tasmāttvamuttiṣṭha yaśo labhasva
jitvā śatrūnbhuṅkṣva rājyaṁ samṛddham।
mayaivaite nihatāḥ pūrvameva
nimittamātraṁ bhava savyasācin॥ 33॥

भा० २२ श्रावण पं० २९ श्रावण

गोस्वामी श्रीतुलसीदास-जयन्ती

आज श्री रामायणजी का किसी पत्र लेखा इन्द्र क्रीड़ा-कॉलेज गया। परीक्षक वर्ग सर्वेक्षण-लक्ष्यांकपत्र लेकर कुर्सी के पास बंगीशिक्षकों के पास गया तो प्राचार्य ने कहा कि ऐसे पिटारा का औचित्य है गया नहीं होगा। उन्य रामायणजी योगलेखा को जोड़ेंगे तो उसकी क्या प्रसन्न होगा।

× ×

प्रातःकाल ही सिर में भारी दर्द था। दोपहर में कुछ भोजन के बाद डाक्टर विश्वास सेन के पास कुछ राहत मिली। रहे तो कुछ हल्का मन्थन हुआ। 'कल्याण' का शिव-उपासना अंक' पढ़ना-देखना रहा।

श्रावण शुक्ल ८, वि०सं० २०५१, रविवार, AUG. 14. 1994 [दिन २२६

सूर्योदय ५। २७ सूर्यास्त ६। ३५ पं० ३० श्रावण भा० २३ श्रावण

श्रीतेंगनाथजी स्वामी वीरपुर- उनके शिष्यगण आये हैं कहीं वावरपुर के प्रेम में गये थे- वहाँ से आज आये। उसी समय दक्ष के कैलाशचन्द्र पोस्टमास्टर आये। कविराज कुमार उनके पुत्र अच्छे हैं उन्हें देखने और मैं भी मांगने आज पत्र दो लिखे थी- पहुँचाने। फिर- विवाहोत्सव गये। दूध आठ तक प्रमोद के अतिरिक्त लेनावाला भी था अभी से निकलकर आया आराम नहीं। होगा मानो तिकड़मी है। वेतन ऐसे का कोमी-वेतन, वेतनवर। उसिल अनुभव का विचार नहीं। रेलवे ही समाज है ही से हटकर है।

CC-0. RaGuruMath, Shivala, Varanasi. Digitized by eGangotri

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

द्रोणं च भीष्मं च जयद्रथं च
कर्णं तथान्यानपि योधवीरान्।
मया हतांस्त्वं जहि मा व्यथिष्ठा
युध्यस्व जेतासि रणे सपत्नान्॥ ३४॥

सूर्योदय ५। २७ सूर्यास्त ६। ३४

droṇaṁ ca bhīṣmaṁ ca jayadrathaṁ ca
karṇaṁ tathānyānapi yodhavīrān।
mayā hatāṁstvaṁ jahi mā vyathiṣṭhā
yudhyasva jetāsi raṇe sapatnān॥ 34॥

भा॰ २४ श्रावण पं॰ ३१ श्रावण

स्वतन्त्रता-दिवस

आज राजकीय-उत्सव-समारोह आदि के दिन है। कैसा राष्ट्र की श्री के मूल्यों के दो सौ वर्षीय अंग्रेजों के वर्तन किया वे वापस चक्कर गये। स्वतन्त्रता श्री को चक्कर आश्रम के सत्संग-मंडल की ओर से राष्ट्रीय संगीत के संदेश में उपयोगिक मधुर पत्र भेजने के लिये लिखा।

जीवन में दो-दो घंटे शुभाशुभ एवं शिवोपासना है? का अध्ययन करना है। कुछ बोध-लाभ होता है। जिन की वाणी में सहजता मिलती है, निष्कामित्व का विवेक जागता है। मोह-ममता ही होती है। सत्य-निष्ठा की आवश्यकता है ही। प्रमोद वृत्ति या ईर्षा दोनों में कैसे नहीं आना। प्रमाद को बचाने लायक करते हैं वे ही करते हैं ही। श्रद्धा-विश्वास के बल हैं। ईश्वर संबल स्वयं सिद्धि की है। बल उसके मतलब वीर्य है, मन की महत्ता है। जो है, उसमें मन में प्रतिक्रिया जागा ठीक नहीं है।

अहिंसाका अर्थ है—अनन्त प्रेम और उसका गूढ़ार्थ है—कष्ट सहनेकी अनन्त शक्ति।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

संजय उवाच

एतच्छ्रुत्वा वचनं केशवस्य
कृताञ्जलिर्वेपमानः किरीटी।
नमस्कृत्वा भूय एवाह कृष्णं
सगद्गदं भीतभीतः प्रणम्य ॥ ३५ ॥

सूर्योदय ५।२७ सूर्यास्त ६।३३

भा० २५ श्रावण पं० १ भाद्रपद

sañjaya uvāca

etacchrutvā vacanaṁ keśavasya
kṛtāñjalirvepamānaḥ kirīṭī।
namaskṛtvā bhūya evāha kṛṣṇaṁ
sagadgadaṁ bhītabhītaḥ praṇamya ॥ 35 ॥

"आज बहुत प्रयास के बाद डा० राधेश्याम जी 'रामायणी' के विशेषाधिकार से इरेन्द्र का क्रीसकालेज में नामाङ्कन हो गया। कुल ३१७ ही सौ सत्रह रु० लगे।"

देखें आगे गाड़ी कैसे चलती है। संसार की स्थिति युगानुरूप विरुद्ध तथा तुच्छ घृणित स्वार्थ की ओर ही बढ़ती दिखाई देती है। परमार्थ की भावना दुर्लभ और कठिन होती जाती है। उसकी कमजोरी ही नजर आती है।

रात में बगुला से प्रमोद कुमार की धर्मपत्नी, शारदा प्रसाद एवं उनकी कन्या और अपनी बच्चियों सहित मठ में आयीं।

नवयुवकोंका तमाम शिक्षण फिजूल है, अगर उन्होंने सद्व्यवहार नहीं सीखा।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

सूर्योदय ५।२८
सूर्यास्त ६।३२

भा० २६ श्रावण पं० २ भाद्रपद

अर्जुन उवाच

स्थाने हृषीकेश तव प्रकीर्त्या
जगत्प्रहृष्यत्यनुरज्यते च।
रक्षांसि भीतानि दिशो द्रवन्ति
सर्वे नमस्यन्ति च सिद्धसङ्घाः ॥ ३६ ॥

arjuna uvāca

sthāne hṛṣīkeśa tava prakīrtyā
jagatprahṛṣyatyanurajyate ca।
rakṣāṁsi bhītāni diśo dravanti
sarve namasyanti ca siddhasaṅghāḥ ॥ 36 ॥

पुत्रदा एकादशीव्रत

प्रातः शारदा प्रसाद व उनकी बेटी कन्या मिले। वीणा एवं नमः पूजाकक्ष में मिले। साईं बाबा का समाचार प्राप्त किया। वे कुरुक्षेत्र में आवेंगे। पड़ोसी शर्मा की पत्नी का निधन आज डाक में छप गया। सायंकाल आचार्यवर पं० रामचन्द्र शास्त्री आये, कुशल समाचार हुआ। उन्हें गीताहृदय की १२ प्रतियाँ दी गयीं, शेष १३ प्रतियाँ कोटा की यात्रा में ले जावेंगे। सहजानन्द की बातें हुईं। पुरुषों की नसबन्दी की जाती समाज टूटने की बात है। समाज टूट रहा है। पतनोन्मुख है। जिले की व्यवस्था बहुत कठिन काम है। रात को देवीपुर के श्री चिरंजीलाल शर्मा के पुत्र जो शिक्षक हैं। संन्यासी भोजन के क्रम में आये तब और उनकी धर्मपत्नी आदि सामने बैठकर गये। वे लोग हिमगिरि आश्रम में कंचनसिंह जिलाधीश के यहाँ ठहरे-खाते हैं। यह भोगोन्मुखी समाज की मनोवृत्ति का भौतिक है।

मनभर चर्चासे कणभर आचरण अच्छा।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

कस्माच्च ते न नमेरन्महात्मन्
गरीयसे ब्रह्मणोऽप्यादिकर्त्रे।
अनन्त देवेश जगन्निवास
त्वमक्षरं सदसत्तत्परं यत्॥ ३७॥

सूर्योदय ५।२८
सूर्यास्त ६।३२

kasmācca te na nameranmahātman
garīyase brahmaṇo'pyādikartre।
ananta deveśa jagannivāsa
tvamakṣaraṁ sadasattatparaṁ yat॥ 37॥

भा० २७
श्रावण
पं० ३
भाद्रपद

प्रदोषव्रत

आज मठ में रिश्वत संतो चाणों आदि का भोजन रेवतीपुर के स्व० शिवपूजन राय को प्रेम मास्टर साहेब की ओर से हुआ। उनमें १७० लाख के लाख की पूड़ी खीर बनी थी।

गैस समाप्त हो गया तो 'रामायणी' जी के यहां से मांगकर आया।

* * *

(१) ज्ञाता — ज्ञान — ज्ञेय
(२) ध्याता — ध्यान — ध्येय
(३) कर्ता — क्रिया — कर्म
(४) भोक्ता — भोग — भोग्य
(५) द्रष्टा — दर्शन — दृश्य

इन पाँच त्रिपुटियों का जब लय हो जाय तब केवल मैं न ब्रह्म में तीव्र हो जाता है। इसी को ब्रह्मबोध या आत्मबोध कहते हैं।

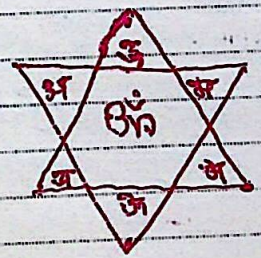

अज्ञान मनकी रात है, लेकिन ऐसी रात, जिसमें न चाँद है न तारे।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

त्वमादिदेवः पुरुषः पुराण-
स्त्वमस्य विश्वस्य परं निधानम्।
वेत्तासि वेद्यं च परं च धाम
त्वया ततं विश्वमनन्तरूप ॥ ३८ ॥

सूर्योदय ५।२९ सूर्यास्त ६।३१

tvamādidevaḥ puruṣaḥ purāṇa-
stvamasya viśvasya paraṁ nidhānam।
vettāsi vedyaṁ ca paraṁ ca dhāma
tvayā tataṁ viśvamanantarūpa ॥ 38 ॥

भा० २८ श्रावण पं० ४ भाद्रपद

आज गैस सिलिण्डर आया। रामायणी जी को वापस दिया गया। १०५ रुपये हरिराम को मैंने दिये। ईश्वर सभी के हिस्से दिये गये। खर्च का भार कठिन होता जा रहा है। आय का साधन भी कोई नहीं। पर खर्च राजसी है, भगवत् कृपा से गाड़ी किसी तरह सरक रही है।

"जातिरेका हि विप्राणां, क्रिया तत्र गरीयसी।
यत्र यत्र क्रिया श्रेष्ठा, तत्र तत्र कुलीनता ॥"

(१) छ गाँठ वाले दण्ड का नाम - सुदर्शन
(२) आठ गाँठ वाले दण्डों का नाम - नारायण
(३) दस गाँठ वाले दण्ड का नाम - गोपाल
(४) बारह गाँठ वाले दण्ड का नाम - वासुदेव
(५) चौदह गाँठ वाले दण्ड का नाम - अनन्त

पंचप्रकार के दण्डों के नाम

मोह और स्वार्थ अज्ञानके पुत्र हैं, अतएव अज्ञानी मनुष्य ही दुष्ट और कायर होते हैं।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

वायुर्यमोऽग्निर्वरुणः शशाङ्कः
प्रजापतिस्त्वं प्रपितामहश्च ।
नमो नमस्तेऽस्तु सहस्रकृत्वः
पुनश्च भूयोऽपि नमो नमस्ते ॥ ३९ ॥

सूर्योदय ५।२९ सूर्यास्त ६।३०

vāyuryamo'gnirvaruṇaḥ śaśāṅkaḥ
prajāpatistvaṃ prapitāmahaśca ।
namo namaste'stu sahasrakṛtvaḥ
punaśca bhūyo'pi namo namaste ॥ 39 ॥

भा० २९ श्रावण पं० ५ भाद्रपद

व्रत-पूर्णिमा

आज प्रातः हैदराबाद जाने वाली फ्लाइट पकड़नी है। हिमालयजी आज प्रातः पक्का जाते-जाते रुपया हाँ मोर में गठ में आवेंगे। [illegible] साथ आवेंगे। उनका [illegible] आक्रान्त था। [illegible] अस्पताल में रखी है। [illegible] अभी रुकेंगे। सहस्रमुखेजी अस्पताल से [illegible] आ गये हैं। [illegible]

श्रावण शुक्ल १५, वि०सं० २०५१, रविवार, AUG. 21. 1994 [दिन २३३

सूर्योदय ५।३० सूर्यास्त ६।२९ पं० ६ भाद्रपद भा० ३० श्रावण

पूर्णिमा, श्रावणी कर्म (यज्ञोपवीत-पूजन), रक्षाबन्धन

प्रातः हैदराबाद - [illegible] गये। मैंने कहलाया था नहीं आना - यहाँ प्रबन्ध करने की कोई नहीं। होने [illegible] जरूरत है [illegible] नहीं जाऊँगा - लौटकर मेरे आये हैं पर नहीं आया। [illegible] प्रातः डेढ़ घण्टा [illegible] समय निश्चित [illegible] पश्चात् [illegible] [illegible] [illegible]

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

नमः पुरस्तादथ पृष्ठतस्ते
नमोऽस्तु ते सर्वत एव सर्व।
अनन्तवीर्यामितविक्रमस्त्वं
सर्वं समाप्नोषि ततोऽसि सर्वः ॥ ४० ॥

सूर्योदय ५।३० सूर्यास्त ६।२८

namaḥ purastādatha pṛṣṭhataste
namo'stu te sarvata eva sarva।
anantavīryāmitavikramastvaṁ
sarvaṁ samāpnoṣi tato'si sarvaḥ ॥ 40॥

भा॰ ३१ श्रावण पं॰ ७ भाद्रपद

→ ※ ※ शिव-तत्त्व ※ ※ ←

'सत्यं शिवं सुन्दरम्' → शंकरजी का यह सुन्दर नाम ब्रह्म के स्वरूप-लक्षण 'सत्यम् ज्ञानम् आनन्दम् ब्रह्म' का प्रतीक है। माण्डूक्योपनिषद (मंत्र ७) में स्पष्टरूप से लिखा है — 'शिवमद्वैतं चतुर्थं मन्यन्ते चतुर्थम् — तुरीय अर्थात ब्रह्म का प्रतीक है) वाचक है।

ब्रह्म निर्गुण निराकार है एवं माया की उपाधि से सभुज-साकार रूप में भी उपलब्ध होता है। भगवान् शिव को लिङ्गरूप निराकार तथा मूर्तिरूप साकार का वाचक है और वास्तव में दोनों रूप ही ब्रह्म से अभिन्न हैं। अभिन्न हैं।

※ ——— ※ ——— ※ ——— ※

"पार्थिं विष्णुः क्रिया ब्रह्मा कारणं तु महेश्वरः
प्रयोजनार्थं रूपेण मूर्तिरेका त्रिधा कृता ।।"
— 'रुद्र-हृदय-उपनिषद'

बहुत कम लोग मृत्युके पहले अपनेको पहचान पाते हैं।

भगवत्त्व जिस उपाधि से प्रकट होता है, उसका भी विशेष उस विशेषण से उपलक्षित होने वाले महिमा में

Rajguru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

सखेति मत्वा प्रसभं यदुक्तं
हे कृष्ण हे यादव हे सखेति।
अजानता महिमानं तवेदं
मया प्रमादात्प्रणयेन वापि ॥ ४१ ॥

सूर्योदय ५।३१ सूर्यास्त ६।२७

sakheti matvā prasabham yaduktam
he kṛṣṇa he yādava he sakheti।
ajānatā mahimānam tavedam
mayā pramādātpraṇayena vāpi ॥ 41 ॥

भा० १ भाद्रपद शक १९१६ पं० ८ भाद्रपद

आज मङ्गलपुर के गुलाब शर्मा के पत्नी गुजर। सत्यही-कालकलु में दर्शनपुरी-मङ्गलपुरी के अपने शिक्षा दीक्षा जीवन भरी का गीत प्रतियोगिता। आज दर्शन के लिए नहीं किया। मन प्रमोद के लगातार नहीं अलग से पुरुषार्थ पर अपने मन को ही शान्तिकारी है। शाम-दाम सबकोई लोकभूमि। यह संसार स्वार्थ का प्रतिरूप है। पैसे बहुत खर्च होते हैं पर उसकी कमी नहीं है।

** उपनिषत् संदर्भ में शिवोपासना **

* शिव-विज्ञान से विमुक्ति *

जगत शिव-शक्तिमय है और सदाचार मिट्टी और वर्तमान शक्तिमय है। शिव मृत्तिका तुल्य है। शक्तियुक्त शिव ईश्वर संज्ञक है। वह बीज तुल्य है। हिरण्यगर्भ अङ्कुर तुल्य है। वैकल्पिक पत्र, पुष्प, फल, वृक्ष तुल्य है। इस प्रकार शक्ति के योग से शिव की ईक्षण। हिरण्यगर्भ और विराट् रूप से अभिव्यक्ति है। संपूर्ण जगत् का अभिन्ननिमित्तोपादान शिव-तत्व है। अतः जगत शिवरूप है। निर्गुण-निराकार शिवतत्व अभिव्यक्तीत परात्पर ब्रह्म है। सगुण-निराकार अन्तर्यामी ईश्वर 'कारण-ब्रह्म' है। सगुण-साकार

आनन्द दूसरेके कष्टसे नहीं, बल्कि स्वयं स्वेच्छया कष्ट सहनेसे आता है।

हिरण्यगर्भ और विराट् 'कार्यब्रह्म' है। कारणब्रह्म जब सगुण निराकार है, वहाँ अभिन्न तीनाशक्तिके योगसे सगुण-साकार होकर प्रकाश है। — वे. मं.

Rakshit Mam Shimla Yadav Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

श्री [illegible] ज्यारी राजगुरुवर के धर्मादेश द्वारा ५१ रुपये मिले एवं पं० वज्रीप्रसाद शर्मा के परमपद की सूचना

धर्मादेश के कूपन में शिखा प्राप्त हुआ।

यच्चावहासार्थमसत्कृतोऽसि
विहारशय्यासनभोजनेषु
एकोऽथवाप्यच्युत तत्समक्षं
तत्क्षामये त्वामहमप्रमेयम् ॥ ४२ ॥

सूर्योदय ५।३१ सूर्यास्त ६।२६	*yaccāvahāsārthamasatkṛto'si vihāraśayyāsanabhojaneṣu* । *eko'thavāpyacyuta tatsamakṣaṁ tatkṣāmaye tvāmahamaprameyam* ॥ 42 ॥	भा० २ भाद्रपद पं० ९ भाद्रपद

कज्जली तृतीया, श्रीगणेशचतुर्थीव्रत, बहुलाव्रत

पं० वज्रीप्रसाद शर्मा का देहावसान सावन शुक्ल पक्ष सोमवार तृतीया को प्रातः आठ बजे होने की सूचना भी गुरुश्री शर्मा द्वारा आज यहां मठ में मिली। आज हरेराम प्रमोद को बुलावे या आने की सूचना देने घर गये। श्री सुरेन्द्र नाथ शर्मा को पंडितजी के संबंध में एक श्रद्धाञ्जलि एवं समवेदना सूचक पत्र लिखने में जा।

× × ×

आँख का बनना बहुत आवश्यक है। लाचारी है, दूसरों की सहायता से सब कुछ होना है। भगवत् कृपा जैसी होगी। अखिल ब्रह्माण्डनायक महाप्रभु की नाम है, खेल हो रहा है, जैसे है।
"हरियै न हिमत मिसारियै न हरियम।"
जाही विधि राखे राम, वाही विधि रहिये।"

आनन्दका मूल संतोष है।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

पितासि लोकस्य चराचरस्य
त्वमस्य पूज्यश्च गुरुर्गरीयान्।
न त्वत्समोऽस्त्यभ्यधिकः कुतोऽन्यो
लोकत्रयेऽप्यप्रतिमप्रभाव ॥ ४३ ॥

सूर्योदय ५।३२ सूर्यास्त ६।२५

pitāsi lokasya carācarasya
tvamasya pūjyaśca gururgarīyān।
na tvatsamo'styabhyadhikaḥ kuto'nyo
lokatraye'pyapratimaprabhāva ॥ 43 ॥

भा० ३ भाद्रपद पं० १० भाद्रपद

आज भी वीपुके मूर्धि-गण नहीं पधारे। मद्ज्योत्स्नाजी इसी कार्यवाही में व्यस्त रहीं। निजी व्यक्तिगत स्वरूप हीदा इसीको संसार कहते हैं। अहं प्रबंधकारणाद्य कलाचलाना अजामिलेना कार्तस्वरा लक्ष्मणरेखा है। कि क्षेप होती जाती है।

* * *

एक ही ईश्वर सर्वत्र है और इसलिये यह ब्राह्मण, गाय, संन्यासी, माता, पिता, पति, गुरु या मूर्ति उसी का पूजास्थान है, यह समझकर पूजा करो। इससे राग-द्वेष नहीं होगा।

* * *

स्थूल शरीर प्रत्यात्मक होता है तो सूक्ष्म शरीर वासनात्मक और कारण शरीर अज्ञानात्मक होता है। कारण-शरीर तत्व नहीं है। सूक्ष्म शरीर वासनात्मक होने से वासनाश्रय सूक्ष्म-द्रव्य वहाँ है। वासना शून्य में नहीं रहती, अतः सूक्ष्म शरीर भी द्रव्यात्मक ही है। कारण शरीर को योग, सांख्य और वेदान्त मानते हैं। पर वेदान्ती कहते हैं: "अपने को न जानना अज्ञान है। इस अभाव के कारण इसे अनात्म साक्ष्य सूक्ष्म शरीर के मान लिया, अतः तदात्मत्व नहीं है। गये। अपने को जानने पर सूक्ष्म शरीर का आलस्य जीवित मनुष्यकी कब्र है।
उपाधि साथ न मरण का देह के साथ जायेगे।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

तस्मात्प्रणम्य प्रणिधाय कायं
प्रसादये त्वामहमीशमीड्यम्।
पितेव पुत्रस्य सखेव सख्युः
प्रियः प्रियायार्हसि देव सोढुम्॥ ४४॥

सूर्योदय ५।३२ सूर्यास्त ६।२४

tasmātpraṇamya praṇidhāya kāyam
prasādaye tvāmahamīśamīḍyam।
piteva putrasya sakheva sakhyuḥ
priyaḥ priyāyārhasi deva soḍhum॥ 44॥

भा० ४ भाद्रपद पं० ११ भाद्रपद

चन्द्रषष्ठीव्रत

आज १ बजे इंटरव्यू आया। मैंने कुछ इच्छा नहीं। फलतः वे विपक्ष में क्या पूछें? पता चला कि काल संभवतः के आये। स्वेच्छा विदाई लिखाई जा चुकी आगे। छुट्टी दे दी। सत्संग के शब्द सुनते रहे। पत्रादि के दर्शन के लिये दे गये।

× × ×

→ अन्न से मन बना है, तो मन से देह, अन्न बना है। इन्हें आदि-काल भाव का विवरण अत्यावश्यक है। बिना अन्न के मन नहीं बन सकता, और बिना मन के अन्न नहीं बन सकता। उपनिषद्-पठन के अज्ञान की निवृत्ति हो जाती है अर्थात् स्थूल एवं सूक्ष्म देह के साथ 'अहंमन' नहीं रहता है। अधिष्ठान से स्वरूप का ज्ञान हो जाता है। सब चला गया स्थूल देह में। अतः जब आगे का शरीर छूटेगा तो उसमें स्थूल देह के साथ सूक्ष्म देह भी नष्ट हो जायेगी। अभी की स्थूल देह भस्म होती है, सूक्ष्म देह भस्म नहीं होती है; क्योंकि सूक्ष्म देह तो उनके आत्मा के साथ जीवात्मा है। आगे के लिये स्थूल शरीर और सूक्ष्म शरीर दोनों जातीतिक्त हो जाते हैं। प्रतीतिमात्र है, बस तो सब वहीं का वहीं

आलस्यकी कब्रमें सभी सद्गुण दफन होते हैं।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

अदृष्टपूर्वं हृषितोऽस्मि दृष्ट्वा
भयेन च प्रव्यथितं मनो मे।
तदेव मे दर्शय देवरूपं
प्रसीद देवेश जगन्निवास ॥ ४५ ॥

सूर्योदय ५। ३३ सूर्यास्त ६। २३

adṛṣṭapūrvaṁ hṛṣito'smi dṛṣṭvā
bhayena ca pravyathitaṁ mano me।
tadeva me darśaya devarūpaṁ
prasīda deveśa jagannivāsa ॥ 45 ॥

भा० ५ भाद्रपद पं० १२ भाद्रपद

हलषष्ठी (ललहीछठ)

आज अपराह्न श्री० राजनारायण शर्मा श्रीरामपुर अयोध्या समस्तीपुर - श्री० लक्ष्मणनारायण के साथ पधारे। महर्षि दिव आज हैं। यजमानोंकि प्रतीक्षामें ब्राह्मण सभा बैठक का बैठना आरम्भ है। उनके कहने से सभी गोपनीय हैं। फलों उगाएं हैं। फूल मन्त्रणागृह के आगे लगाए हैं। वाले कपास जगन्नाथपुरी के ठाकुरजी। श्री० राजनारायण ने. विद्यार्थी के ब्रह्मचर्य संबंधी बातें मैं पिताजी से अंग्रेजी में अच्छा बोलते हैं और पंडितों को उन्हें यजमानों के यहां भोजन करने के संकेत किए। प्रसाद की पत्रा - आगामी पूर्णिमा - ठाकुर तथा पंडितों की तथा श्रीकृष्णजन्म की दो पृथक्-पृथक् मैंने लिखे। वापस आने के लिए राजनारायण अयोध्या जी के लिए प्रतीक्षा कर रहे हैं। उनके लिए कार आएगी। मैं (अपराह्न) विश्राम के लिए हूं। उनके कार आने पर जाऊंगा।

भाद्रपद कृष्ण ७, वि०सं० २०५१, रविवार, AUG. 28. 1994 [दिन २४०

सूर्योदय ५। ३३ सूर्यास्त ६। २२ पं० १३ भाद्रपद भा० ६ भाद्रपद

श्रीकृष्णजन्माष्टमीव्रत (स्मार्त)

आज अष्टमी का औदयिक मनाया जाएगा। उपवास आज पहले दिन गए। पत्रा के अनुसार जन्म तथा तीर्थों (जन्म पूजन) को दिये जाएंगे। पंचामृत से उनका स्नान कराएंगे। पूजा के बाद प्रसाद को ग्रहण करेंगे। श्री० राजनारायण जी साथ पूजा जाएंगे तथा फिर वापस आएंगे। उनके लौटने पर भोजन का प्रोग्राम है। अष्टमी पर्व में किसी काम की छुट्टी नहीं।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

किरीटिनं गदिनं चक्रहस्त-
मिच्छामि त्वां द्रष्टुमहं तथैव।
तेनैव रूपेण चतुर्भुजेन
सहस्रबाहो भव विश्वमूर्ते ॥ ४६ ॥

सूर्योदय ५।३४
सूर्यास्त ६।२१

kirīṭinaṁ gadinaṁ cakrahasta-
micchāmi tvāṁ draṣṭumahaṁ tathaiva।
tenaiva rūpeṇa caturbhujena
sahasrabāho bhava viśvamūrte ॥ 46 ॥

भा० ७
भाद्रपद
पं० १४
भाद्रपद

श्रीकृष्णजन्माष्टमीव्रत (वैष्णव) रोहिणीयुक्त

"गंगाजी बह रही हैं। कभी उनमें पुष्प बहते आये, कभी मुर्दा। जीवन की गंगा बह रही है। इसमें कभी अपने अनुकूल आता है तो कभी प्रतिकूल। इसे तुम सदा सहते आये हो और आगे भी सहना ही पड़ेगा।" ✗ ✗

आज प्रातः पाँच बजे प्रमोद कुमार दीक्षित हियालाल चौधरी के साथ पटना गये। प्रातः सात बजे कमलाकान्त शेखर होते आये। अपने पुत्र अरुण कुमार की पैरवी में प्रयाग होते चित्रकूट गये। वहाँ पं० कैलासपति मिश्र का पत्र लेकर नानाजी देशमुख के पास गये। पत्र दिव्यदिवालय में दिवंगत की नियुक्ति हेतु पदविज्ञापन निकला है।

जो आशाओंपर जीता है, वह फाके करके मरेगा।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

श्रीभगवानुवाच

मया प्रसन्नेन तवार्जुनेदं
रूपं परं दर्शितमात्मयोगात्।
तेजोमयं विश्वमनन्तमाद्यं
यन्मे त्वदन्येन न दृष्टपूर्वम्॥ ४७॥

सूर्योदय ५।३४ सूर्यास्त ६।२०

भा० ८ भाद्रपद पं० १५ भाद्रपद

śrībhagavānuvāca

mayā prasannena tavārjunedam
rūpam param darśitamātmayogāt।
tejomayam viśvamanantamādyam
yanme tvadanyena na dṛṣṭapūrvam॥ 47॥

आज कुँवरेश्वर के कमलताराम. ऐ.ई. दीक्षित कण्वरूप राजेन्द्रम. को श्री० शुक्लजीने, मुरैगुरुके शिष्य थे - टिकटिके समय श्री० एम० सिंहके लिए कहा। कोचीमें एक कालिका - विमानतल स्थापित करना चाहते हैं। श्रीमान् रेलमिनिस्टर तथा मंत्री कपूरनाथजी आदि और गुलामनबीजी भी आरहे हैं कि उनसे लड़नेका मिलेगा - मैंने एतद्विषयक कहा। उनसे कहने लगे कि आपका आशीर्वाद चाहिये। मैंने उनकी अस्वस्थताके संकटकी ओर उनका ध्यान दिया। वेणुगोपालजीसे दवा आती। कुवेटसे आती।

प्रमोदपटेल से मिले। वहांका समाचार कहा - पर उनकी डा०रत्नाजी मानसिक चिकित्सा कैसे विश्वासपात्र मित्रकी से ठीक नहीं हो पायी। डा० शंकरवल्लभ शर्मीलेमेंट डॉक्टर। उनसे दिल्ली जानेकी उनके सुझावकी चर्चा मालूम हुई। वहां से वे ठीक उत्तर की रोगिष्ठ प्रणालिकाके से शोधसंबंधी बातें की चर्चा चलती रही तथा उन्हांने [illegible] और अनेक लक्षणों के बारेमें पता रहे।

लंका रामरीस रामेश्वरका संदेश तथा उनके मनोकल्पों की आनाकानीवालेसे कहे।

जिसका हृदय सहानुभूतिसे परिपूर्ण है, उसे ही आलोचना करनेका अधिकार है।

श्रीराम परसे मनी पत्नी कथा कहीं आदि
A पत्नी की मनोवे - ठीक रहेगा

RaiGuru Math, Shivala, Varanasi

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

न वेदयज्ञाध्ययनैर्न दानै-
र्न च क्रियाभिर्न तपोभिरुग्रैः।
एवंरूपः शक्य अहं नृलोके
द्रष्टुं त्वदन्येन कुरुप्रवीर ॥ ४८ ॥

सूर्योदय ५।३५ सूर्यास्त ६।१९

na vedayajñādhyayanairna dānai-
rna ca kriyābhirna tapobhirugraiḥ।
evaṁrūpaḥ śakya ahaṁ nṛloke
draṣṭum tvadanyena kurupravīra॥ 48॥

भा० १ भाद्रपद पं० १६ भाद्रपद

आज पौत्री कमला राम श्वं जा रेलवे ग्रीन ड्रम; मऊ में दो-तीन दिने आये। प्रबल अशोध राम उक्त पौत्री का विवाह के स्वागत की तैयारी-विवाह मेरी राम को आमन्त्रित बनाते रहे। आमन्त्रण पत्रिका का गठन हुआ। 89-92 सदस्यों का काम-प्रतिनिधित्व हुआ। कुछ विशेष व्यक्ति इन्हें सामान्य सभी निमंत्रक को लेकर एक पृथक में आँकड़े को 12 दिवस कोर्पोरेशन-पूर्ण विवाह चाहे। योजना को अधिक देने का निर्णय हुआ।

इसके बाद डुबकी का एक सम्पर्क से दान गोरखपुर आना चाहती जो संयोग से जीवन के साथ आने के प्रार्थना पर आया। मुख्य ब्राह्मणों की व्यवस्था की जिसका काला हो। उसे एक लोकाचार तथा अन्यत्र के लिए वह गोरखपुर चला गया। दिनांक को वापस लौटने तक अवेगे। उन्हें सांगठनों के लिए। वे भोताहदय की दो-तीन दिन के लिए नौकरी को लौटेंगे।—

जिसके बहुतसे मित्र हों, निश्चय जानो उसका एक भी मित्र नहीं।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

मा ते व्यथा मा च विमूढभावो
दृष्ट्वा रूपं घोरमीदृङ्ममेदम्।
व्यपेतभीः प्रीतमनाः पुनस्त्वं
तदेव मे रूपमिदं प्रपश्य ॥ ४९ ॥

सूर्योदय ५।३५ सूर्यास्त ६।१८

mā te vyathā mā ca vimūḍhabhāvo
dṛṣṭvā rūpaṃ ghoramīdṛṅmamedam।
vyapetabhīḥ prītamanāḥ punastvaṃ
tadeva me rūpamidaṃ prapaśya ॥ 49 ॥

भा० १० भाद्रपद पं० १७ भाद्रपद

अजा एकादशीव्रत

आज लंबा व्रत वाला गीता। प्रमोद जगमोहनके यहाँ गयी थी। मैं उसे वे शमीवाले के आँगनमें। रामरतन सेनी बैठ रही थी वे आपके गाँव के। [illegible] मैं चाचाके आँगन। पांचजन्य दिया। उनसे स्वेच्छापूर्वक मोक्षिक पाले हुई रही। मांडूक्य कारिका प्रवचन तथा अन्नमयोपनिषद देखते हुए। आत्मचिंतन। आत्मनिरीक्षण किया।

मंदाकिनी बौद्ध ग्रंथ आलोक आगये। पढ़ाई पढ़ना नहीं। पद्मे लड़कपन कुवाल लगाना छूटा। वल्लभ के आश्रम का महिलाओं आनायुवा। वे आत्मा है। किडनी-गुर्दा की व्याधि है, एलर्जी कारण के प्रभाव पर लाकड़ी गाड़ी। उसे पानी पिलाने के डाक्टर को दिखाइये। दवा का वक्सर या का वाला आयेंगे। उनसे लंबी आने मिलने का आग्रह किया।

भोगासक्ति तनको बिगाड़ती है, द्रव्यासक्ति मनको बिगाड़ती है।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

संजय उवाच

इत्यर्जुनं वासुदेवस्तथोक्त्वा
स्वकं रूपं दर्शयामास भूयः।
आश्वासयामास च भीतमेनं
भूत्वा पुनः सौम्यवपुर्महात्मा ॥ ५० ॥

सूर्योदय ५।३६ सूर्यास्त ६।१६

भा० ११ भाद्रपद पं० १८ भाद्रपद

sañjaya uvāca

ityarjunaṁ vāsudevastathoktvā
svakaṁ rūpaṁ darśayāmāsa bhūyaḥ।
āśvāsayāmāsa ca bhītamenaṁ
bhūtvā punaḥ saumyavapurmahātmā ॥ 50 ॥

आज स्वदेशबिहारी तिवारी पत्नी सहित आये। सत्संग में घंटे भर रुके रहे। १० रुपये दूध के लिये दे गये। इसके पूर्व प्रातः [illegible] श्री प्रातः [illegible] गये। ५० रुपये [illegible] में दे गये। रात ही में मदीही से आये थे। [illegible] कहे थे।
[illegible] सशोधन कार्य करता रहा। आज मध्याह्न हरेराम शर्मा अपने कार्यवश आ गये। [illegible] Employment Exchange कार्यालय में।

संसार दुःख नहीं देता, संसारकी आसक्ति दुःख देती है।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

अर्जुन उवाच

दृष्ट्वेदं मानुषं रूपं तव सौम्यं जनार्दन। इदानीमस्मि संवृत्तः सचेताः प्रकृतिं गतः ॥ ५१ ॥

श्रीभगवानुवाच

सुदुर्दर्शमिदं रूपं दृष्टवानसि यन्मम। देवा अप्यस्य रूपस्य नित्यं दर्शनकाङ्क्षिणः ॥ ५२ ॥

सूर्योदय ५। ३६ सूर्यास्त ६। १५

arjuna uvāca

dṛṣṭvedaṁ mānuṣaṁ rūpaṁ tava saumyaṁ janārdana।
idānīmasmi saṁvṛttaḥ sacetāḥ prakṛtiṁ gataḥ ॥ 51 ॥

śrībhagavānuvāca

sudurdarśamidaṁ rūpaṁ dṛṣṭavānasi yanmama।
devā apyasya rūpasya nityaṁ darśanakāṅkṣiṇaḥ ॥ 52 ॥

भा० १२ भाद्रपद पं० १९ भाद्रपद

शनिप्रदोष

आज प्रातः भोजनोपरान्त इसे लिख रहा हूँ। पड़ोस का बच्चा अक्षरमपर लिखने के लिये मेरा। फुलपत्ती मुझसे पूछने के लिये] आते समय आपके एक चीते गेंदे - लेते आने को कहा। मेरे पास पहले से अगरबत्ती रखा था। कमलेश पी.आर.पी. ने भी। चहलकदमी सामाजिक बातें इतनी हुईं। उसने इलाहाबाद मेरठ कोई - कार्यालय - माध्यमिक शिक्षा परिषद कार्यालय के रिक्त पद के लिये अभिलाषा की थी। काफी कोशिश से संपर्क में उनके दिनेश सिंह से मेरा उन्हीं राजाराम द्वारा सजकर आर्थिक लिये सहायक प्राप्त कार्य के लिये कार्यालय का आमंत्रण दिया। फलेवा पुत्रा चुकिलेद उत्पाद लिये अपनी ओर से लिखित उनका सामान ले गये।

भाद्रपद कृष्ण १४, वि०सं० २०५१, रविवार, SEPT. 4. 1994 [दिन २४७

सूर्योदय ५। ३७ सूर्यास्त ६। १४ पं० २० भाद्रपद भा० १३ भाद्रपद

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

नाहं वेदैर्न तपसा न दानेन न चेज्यया। शक्य एवंविधो द्रष्टुं दृष्टवानसि मां यथा ॥ ५३ ॥
भक्त्या त्वनन्यया शक्य अहमेवंविधोऽर्जुन। ज्ञातुं द्रष्टुं च तत्त्वेन प्रवेष्टुं च परंतप ॥ ५४ ॥

सूर्योदय ५।३७ सूर्यास्त ६।१३	*nāhaṁ vedairna tapasā na dānena na cejyayā।* *śakya evaṁvidho draṣṭuṁ dṛṣṭavānasi māṁ yathā* ॥ 53 ॥ *bhaktyā tvananyayā śakya ahamevaṁvidho'rjuna।* *jñātuṁ draṣṭuṁ ca tattvena praveṣṭuṁ ca paraṁtapa* ॥ 54 ॥	भा० १४ भाद्रपद पं० २१ भाद्रपद

कुशोत्पाटिनी, सोमवती अमावास्या

आज गोंडउर के श्री व्रजविहारी शर्मा-शिक्षक आये। थोड़ी देर बाद डा० योगीन्द्रनाथ शर्मा आ गये। तीन दिन रहेंगे। परिवार नियोजन का प्रशिक्षण किया है। ५३० वजरात को सत्यनारायण पांडे डा० योगीन्द्र शर्मा के मित्र... जो आयुर्वेदीय चिकित्सा पद्धति का [illegible] आ गये। [illegible] से [illegible]। [illegible] आदि [illegible] आये।

डा० योगीन्द्रनाथ सहसा आ पहुँचे।

इच्छापर विचारका शासन होना चाहिये।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

मत्कर्मकृन्मत्परमो मद्भक्तः सङ्गवर्जितः। निर्वैरः सर्वभूतेषु यः स मामेति पाण्डव ॥ ५५ ॥

ॐ तत्सदिति श्रीमद्भगवद्गीतासूपनिषत्सु ब्रह्मविद्यायां योगशास्त्रे श्रीकृष्णार्जुनसंवादे
विश्वरूपदर्शनयोगो नामैकादशोऽध्यायः ॥ ११ ॥

सूर्योदय
५।३७
सूर्यास्त
६।१२

matkarmakṛnmatparamo madbhaktaḥ saṅgavarjitaḥ।
nirvairaḥ sarvabhūteṣu yaḥ sa māmeti pāṇḍava ॥ 55 ॥

oṁ tatsaditi śrīmadbhagavadgītāsūpaniṣatsu brahmavidyāyāṁ
yogaśāstre śrikṛṣṇārjunasaṁvāde viśvarūpadarśanayogo
nāmaikādaśo'dhyāyaḥ ॥ 11 ॥

भा० १५
भाद्रपद
पं० २२
भाद्रपद

प्रातः ५० बजे उठकर शौचादि से निवृत्त होकर ध्यान किया।
तबियत ठीक नहीं रही। जुकाम है। अंगड़ाई। कृष्णगोपाल का
- पटीदार का कुछ प्रश्न आये। वहाँ जाना नहीं। वेदव्यास जी का
फलित ७ दिन में ठीक आजमाने लेंगे।
भी पशुपतिनाथ मिट - १५ बजे आये। ३० बजे तक आनेवाले
दीक्षा में गये है। आज: सामान्यतः कल के अंतर की जांच आगे
जायेगी।

आज आंखों की जांच हुई। दाहिनी आंख बिगड़ चुकी है।
चश्मा से लाभ नहीं। उसमें सुधार की आशा नहीं। बायीं भी
१० % आसी प्रतिशत लेकर होगी है ७० प्रतिशत बनी है उसमें
सुधार का चश्मा होगा।

जो शासन करना नहीं जानते, उन्हें आज्ञा-पालन करना चाहिये।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

ॐ

द्वादशोऽध्यायः

अर्जुन उवाच

एवं सततयुक्ता ये भक्तास्त्वां पर्युपासते। ये चाप्यक्षरमव्यक्तं तेषां के योगवित्तमाः ॥ १ ॥

श्रीभगवानुवाच

मय्यावेश्य मनो ये मां नित्ययुक्ता उपासते। श्रद्धया परयोपेतास्ते मे युक्ततमा मताः ॥ २ ॥

सूर्योदय ५।३८ सूर्यास्त ६।११	*arjuna uvāca*	भा० १६ भाद्रपद पं० २३ भाद्रपद
	evaṁ satatayuktā ye bhaktāstvāṁ paryupāsate।	
	ye cāpyakṣaramavyaktaṁ teṣāṁ ke yogavittamāḥ ॥ 1 ॥	
	śrībhagavānuvāca	
	mayyāveśya mano ye māṁ nityayuktā upāsate।	
	śraddhayā parayopetāste me yuktatamā matāḥ ॥ 2 ॥	

भाद्रपद शुक्ल २, वि०सं० २०५१, बुधवार, SEPT. 7. 1994

आज आंखकी डालने खेमेकी दवा तथा १०सुई लीगयी। तीन सप्ताह दवा करके पुनः २८ सितम्बरको जांच करायी जायेगी। दवा में २४० रुपये लगे। पत्नी की दवा १५ रुपये। [illegible] लगे।

वह मनुष्य ठीक तरहसे शासन भी नहीं कर सकता, जिसने प्रसन्नतासे आज्ञा-पालन करना नहीं सीखा है।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

ये त्वक्षरमनिर्देश्यमव्यक्तं पर्युपासते। सर्वत्रगमचिन्त्यं च कूटस्थमचलं ध्रुवम्॥ ३॥
संनियम्येन्द्रियग्रामं सर्वत्र समबुद्धयः। ते प्राप्नुवन्ति मामेव सर्वभूतहिते रताः॥ ४॥

सूर्योदय ५।३८ सूर्यास्त ६।१०

ye tvakṣaramanirdeśyamavyaktaṁ paryupāsate।
sarvatragamacintyaṁ ca kūṭasthamacalaṁ dhruvam॥ 3॥
saṁniyamyendriyagrāmaṁ sarvatra samabuddhayaḥ।
te prāpnuvanti māmeva sarvabhūtahite ratāḥ॥ 4॥

भा० १७ भाद्रपद पं० २४ भाद्रपद

हरितालिकाव्रत (चन्द्रदर्शन निषिद्ध)

[illegible]

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

क्लेशोऽधिकतरस्तेषामव्यक्तासक्तचेतसाम् । अव्यक्ता हि गतिर्दुःखं देहवद्भिरवाप्यते ॥ ५ ॥
ये तु सर्वाणि कर्माणि मयि संन्यस्य मत्पराः । अनन्येनैव योगेन मां ध्यायन्त उपासते ॥ ६ ॥

सूर्योदय ५।३९ सूर्यास्त ६।९

kleśo'dhikatarasteṣāmavyaktāsaktacetasām ।
avyaktā hi gatirduḥkhaṁ dehavadbhiravāpyate ॥ 5 ॥
ye tu sarvāṇi karmāṇi mayi saṁnyasya matparāḥ ।
ananyenaiva yogena māṁ dhyāyanta upāsate ॥ 6 ॥

भा० १८ भाद्रपद पं० २५ भाद्रपद

श्रीगणेशचतुर्थीव्रत

आज डा० योगेन्द्र गये। आंख की हालत अच्छी नहीं है। पलकें दो पहलकें हो गई हैं। एक वाली गेहूँ वाला से ले आया। संसेगाम्बन का कोई काम नहीं रह गया है। वैसे है, पर मन नहीं लगता है। मैंने डा० स्वामी नाथ तिवारी और श्री राम वचन को कहा-कल्याण को पत्र लिखा। अच्छे होने के बारे में।

शारीरिक दुर्बलता और त्रिवेणी यात्रा की फिकर खाए जा रही है। पर चिट्ठी पत्रियों के कोने पिछा है। यह संकट है। पर नहीं चलेगा। धैर्य और साहस रखकर चलना होगा है। विश्वास बने रहने का काम है। यह अग्नि परीक्षा है। 'इसमें न हिम्मत, विश्वास में हो लोग जरूरी सिद्धि राम - बुद्धि सिद्धि रहिय।'

किसी सुदामा पर बाई है। लगा है बहु है।" 'कल्याण' की बात याद आती है। पीड़ित लोगों-बालकों के प्रेम-चिह्न का राई देखकर उनसे-प्रेम। लगा है।

आदमीसे डरना ईश्वरमें विश्वासके अभावका द्योतक है।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

श्रेयो हि ज्ञानमभ्यासाज्ज्ञानाद्ध्यानं विशिष्यते। ध्यानात्कर्मफलत्यागस्त्यागाच्छान्तिरनन्तरम् ॥ १२ ॥
अद्वेष्टा सर्वभूतानां मैत्रः करुण एव च। निर्ममो निरहंकारः समदुःखसुखः क्षमी ॥ १३ ॥
संतुष्टः सततं योगी यतात्मा दृढनिश्चयः। मय्यर्पितमनोबुद्धिर्यो मद्भक्तः स मे प्रियः ॥ १४ ॥

सूर्योदय ५।४० सूर्यास्त ६।४

śreyo hi jñānamabhyāsājjñānāddhyānaṁ viśiṣyate।
dhyānātkarmaphalatyāgastyāgāccchāntiranantaram ॥ 12 ॥
adveṣṭā sarvabhūtānāṁ maitraḥ karuṇa eva ca।
nirmamo nirahaṁkāraḥ samaduḥkhasukhaḥ kṣamī ॥ 13 ॥
saṁtuṣṭaḥ satataṁ yogī yatātmā dṛḍhaniścayaḥ।
mayyarpitamanobuddhiryo madbhaktaḥ sa me priyaḥ ॥ 14 ॥

भा० २२ भाद्रपद पं० २९ भाद्रपद

आज प्रमोदकुमार दीक्षित-पटना से लौटकर सायंकाल आये। उन्हें कैलाशपति मिश्र से भेंट हुई। गण्डकी-नदी जोड़ पर दक्षती जिला-मुख्यालय से उत्तर देगा। पुल्का नहीं है, वह व्यक्ति वाराणसी आया नहीं था। डा० रामवचन्द्र शेखर सिंह उनके प्रस्ताव के साथ कार्यालय में विवरणिका (Synopsis) तैयार कर दी। वृहस्पति से आज उन्हें डा० रामेश्वर प्रसाद सिंह से मिले। उनसे चर्चा हुई। पुनः उन्हें उनके कार्यालय में कहाँ का प्रस्ताव आने पर उन्हें सूचना। वृहस्पति एक बैठे आदमी का एक चौथे है। उनके भोजन में कोई कष्ट नहीं है। महत्त्व नहीं है। कुण्डली पास्ती है। आत्मकुमार मुन्ना को लाभ-हानि और उपेक्षा-मोहन के कारण चला गया है। यह क्यों नहीं मिलती है। पत्र को कलियुग के कारण से पढ़ा जाता है। आश्रम का भविष्य कैसा उज्ज्वल है। ४० वर्ष पार्वती कोयला को प्रोत्साहन पोस्टकार्ड लिखे दिये गये। मालिकुल के चुनाव-अधिनियम के कानूनी अधिकारी देखे दस्तावेज हैं। वे गंगे की उपेक्षा तथा धार्मिक उपासना रोकने के लिये प्रयास नहीं देते। कलाम के अधिक को पत्र भेजा होगा। सोचना कि कितने तहसील का विद्यालय है। समय बहुत नाजुक है। अनेक कार्यों का प्रतीक्षा चलते हैं।

नीच-विचार हमारे सुखमें भी हमें डंक मारते हैं और सद्विचार हमें कष्टोंमें भी सान्त्वना देते रहते हैं।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

यस्मान्नोद्विजते लोको लोकान्नोद्विजते च यः। हर्षामर्षभयोद्वेगैर्मुक्तो यः स च मे प्रियः ॥ १५ ॥
अनपेक्षः शुचिर्दक्ष उदासीनो गतव्यथः। सर्वारम्भपरित्यागी यो मद्भक्तः स मे प्रियः ॥ १६ ॥
यो न हृष्यति न द्वेष्टि न शोचति न काङ्क्षति। शुभाशुभपरित्यागी भक्तिमान्यः स मे प्रियः ॥ १७ ॥

सूर्योदय ५।४१ सूर्यास्त ६।३

yasmānnodvijate loko lokānnodvijate ca yaḥ।
harṣāmarṣabhayodvegairmukto yaḥ sa ca me priyaḥ ॥ 15॥
anapekṣaḥ śucirdakṣa udāsīno gatavyathaḥ।
sarvārambhaparityāgī yo madbhaktaḥ sa me priyaḥ ॥ 16॥
yo na hṛṣyati na dveṣṭī na śocati na kāṅkṣati।
śubhāśubhaparityāgī bhaktimānyaḥ sa me priyaḥ ॥ 17॥

भा॰ २३ भाद्रपद पं॰ ३० भाद्रपद

आज हिमालय चौधरी-मथुरा-शिवदयाल दोनों, अमेरिका गये। २०-२५ मिनट को लगभग आने वाले थे उसमें को कह गया है। श्री राम सिंह जी आये। आंख की ड्रेसिंग की। दो दवायें चलाने को दी। उन्हें दो तीन पोटी कुत्तों को दिया। सुखदेव लाभ शंकर जी को अधिक। प्रसाद अन्तर्गत आगरा कालोनी लखनऊ लखनऊ लखनऊ ब्राह्मण कॉलेज आदि। हिमालय ने कहीं कल्याण का "शिवोपासना" अंक। २५ कॉपी में लिखा। अगले सितम्बर तक एक प्रति लेनी होगी।

कुकर्म करते हुए मीठे और सुखदायी लगते हैं लेकिन फल भोगते समय बहुत दुःखदायी।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

समः शत्रौ च मित्रे च तथा मानापमानयोः। शीतोष्णसुखदुःखेषु समः सङ्गविवर्जितः ॥ १८ ॥
तुल्यनिन्दास्तुतिर्मौनी संतुष्टो येन केनचित्। अनिकेतः स्थिरमतिर्भक्तिमान्मे प्रियो नरः ॥ १९ ॥

सूर्योदय ५।४१ सूर्यास्त ६।२	*samaḥ śatrau ca mitre ca tathā mānāpamānayoḥ।* *śītoṣṇasukhaduḥkheṣu samaḥ saṅgavivarjitaḥ ॥ 18 ॥* *tulyanindāstutirmaunī saṁtuṣṭo yena kenacit।* *aniketaḥ sthiramatirbhaktimānme priyo naraḥ ॥ 19 ॥*	भा० २४ भाद्रपद पं० ३१ भाद्रपद

पद्मा एकादशीव्रत

आज पं० जीत बहादुर शर्मा के पुत्र [illegible] आये। वे फुलपुर में प्राइवेट कम्पनी में कार्यरत हैं। वीरगंज हैं। बड़े भद्र हैं। च [illegible] का पता बताया। १९ रुपये पूजा रूप में दिये। श्री जीत बहादुर शर्मा श्री विश्वास शर्मा के समय से आने की बात बतायी उनको।
सायंकाल वंशनारायण मंचेरे में अपनी माता जी और बहादुर के साथ आये। दवा उपचार या मनबहलाव के लिये।

यह जानकर भी कि ठीक क्या है, उसे न करना साहसकी कमी है।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

ये तु धर्म्यामृतमिदं यथोक्तं पर्युपासते। श्रद्दधाना मत्परमा भक्तास्तेऽतीव मे प्रियाः ॥ २० ॥

ॐ तत्सदिति श्रीमद्भगवद्गीतासूपनिषत्सु ब्रह्मविद्यायां योगशास्त्रे श्रीकृष्णार्जुनसंवादे
भक्तियोगो नाम द्वादशोऽध्यायः ॥ १२ ॥

सूर्योदय ५।४१ सूर्यास्त ६।१

ye tu dharmyāmṛtamidaṁ yathoktaṁ paryupāsate।
śraddadhānā matparamā bhaktāste'tīva me priyāḥ ॥ 20 ॥

oṁ tatsaditi śrīmadbhagavadgītāsūpaniṣatsu brahmavidyāyāṁ
yogaśāstre śrīkṛṣṇārjunasaṁvāde bhaktiyogo
nāma dvādaśo'dhyāyaḥ ॥ 12 ॥

भा० २५ भाद्रपद पं० १ आश्विन

श्रीवामनद्वादशी

आज "ब्लड-सूगर" की जाँच- गुलाटी-पैथॉलोजी में हुई। दोबार जाना पड़ा। भोजन के पूर्व एवं भोजन के दो घंटे बाद। ५० रुपये-बीस लागी। रिक्शा भाड़ा दोबार आने जाने में १२ रुपये लागे। वंशनारायण शर्मा सहित सभी उनकी माता-बहन प्रयाग प्रवास के लिये गयीं।

राम प्रेम पथ पेखिऐ दिएँ बिषय तनु पीठ।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

ॐ

त्रयोदशोऽध्यायः

श्रीभगवानुवाच

इदं शरीरं कौन्तेय क्षेत्रमित्यभिधीयते। एतद्यो वेत्ति तं प्राहुः क्षेत्रज्ञ इति तद्विदः ॥ १ ॥
क्षेत्रज्ञं चापि मां विद्धि सर्वक्षेत्रेषु भारत। क्षेत्रक्षेत्रज्ञयोर्ज्ञानं यत्तज्ज्ञानं मतं मम ॥ २ ॥

śrībhagavānuvāca

सूर्योदय ५।४२ सूर्यास्त ६।००

idaṁ śarīraṁ kaunteya kṣetramityabhidhīyate।
etadyo vetti taṁ prāhuḥ kṣetrajña iti tadvidaḥ ॥ 1 ॥
kṣetrajñaṁ cāpi māṁ viddhi sarvakṣetreṣu bhārata।
kṣetrakṣetrajñayorjñānaṁ yattajjñānaṁ mataṁ mama ॥ 2 ॥

भा० २६ भाद्रपद पं० २ आश्विन

भाद्रपद शुक्ल १३, वि०सं० २०५१, शनिवार, SEPT.17.1994

शनिप्रदोष, विश्वकर्मापूजा

आज भी डा० राधेश्याम जी तथा पर्णी, दादा पक्षधरजी के यहाँ गन्ना का फोनाकिलाफि ब्रह्मस्थान में अपने बालक बाड़का पाही चरावते। प्रमोद वत्सल गये। अपराह्न कुलदीप के वासुदेव शर्मी आये। पंडे मदनैका। श्रीमद्भागवत का द्वादशी के आशापुर में ऑफिस का अंतिम दिवस हुआ है। वहीं पुजवा के लिये। पुनः आयेंगे। रात तक प्रमोद नहीं आये। चिन्ता लगी है। शंकादे गॉल सूखे के वेदी जाने की। पद्मजी वत्सलगाती। [illegible] के लोगेपा वापिस आयेंगे।

भाद्रपद शुक्ल १४, वि०सं० २०५१, रविवार, SEPT. 18. 1994 [दिन २६१

सूर्योदय ५।४२ सूर्यास्त ५।५८ पं० ३ आश्विन भा० २७ भाद्रपद

अनन्त चतुर्दशीव्रत, महारविवारव्रत

आज आंतर्चतुर्दशी को प्रमोद वेलक वहीं आ पाये। डा० राधेश्याम शर्मा की 'प्रणवित्र' आने। मोजनाकला विक्षा शर्मी विकास के नीकाने व्यवस्था हो गया। [illegible] का कंडेप्ल के कल लाएन दानिंग की व्यवस्था की हुई। आज दत्तात्रेयजी के चक्रवर्तक [illegible] आने चाहिये थे। पंडित प्रमोद के यहाँ। वाहिकादर्शन। उनसे मिलकर उनके आने के बारे में। [illegible] वहाँ से [illegible] आशापुर के [illegible]

RajGuru Math, Shivala, Varanasi

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

तत्क्षेत्रं यच्च यादृक्च यद्विकारि यतश्च यत्। स च यो यत्प्रभावश्च तत्समासेन मे शृणु ॥ ३ ॥
ऋषिभिर्बहुधा गीतं छन्दोभिर्विविधैः पृथक्। ब्रह्मसूत्रपदैश्चैव हेतुमद्भिर्विनिश्चितैः ॥ ४ ॥
महाभूतान्यहंकारो बुद्धिरव्यक्तमेव च। इन्द्रियाणि दशैकं च पञ्च चेन्द्रियगोचराः ॥ ५ ॥

सूर्योदय ५।४३
सूर्यास्त ५।५७

tatkṣetraṁ yacca yādṛkca yadvikāri yataśca yat।
sa ca yo yatprabhāvaśca tatsamāsena me śṛṇu ॥ 3 ॥
ṛṣibhirbahudhā gītaṁ chandobhirvividhaiḥ pṛthak।
brahmasūtrapadaiścaiva hetumadbhirviniścitaiḥ ॥ 4 ॥
mahābhūtānyahaṁkāro buddhiravyaktameva ca।
indriyāṇi daśaikaṁ ca pañca cendriyagocarāḥ ॥ 5 ॥

भा० २८
भाद्रपद
पं० ४
आश्विन

पूर्णिमा, महालयारम्भ

आज नवदेश प्रमोद कुमार और कई पंच, खड्गधारी, केशव शर्मा तथा अनिल कुमार आदि को लेकर तथा आवेदन का प्रारूप लेकर गये। सुरेन्द्र नाथ को "अष्टादशाह गीता प्रवचन" स्वामी विद्यानंद गिरि का पंजे को वो सप्ताह के लिये दिया।

द्रवहिं जानकी कंत, तब छूटै संसार दुःख।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

इच्छा द्वेषः सुखं दुःखं संघातश्चेतना धृतिः। एतत्क्षेत्रं समासेन सविकारमुदाहृतम् ॥ ६ ॥
अमानित्वमदम्भित्वमहिंसा क्षान्तिरार्जवम्। आचार्योपासनं शौचं स्थैर्यमात्मविनिग्रहः ॥ ७ ॥
इन्द्रियार्थेषु वैराग्यमनहंकार एव च। जन्ममृत्युजराव्याधिदुःखदोषानुदर्शनम् ॥ ८ ॥

सूर्योदय ५।४३ सूर्यास्त ५।५६

icchā dveṣaḥ sukhaṁ duḥkhaṁ saṅghātaścetanā dhṛtiḥ।
etatkṣetraṁ samāsena savikāramudāhṛtam ॥ 6 ॥
amānitvamadambhitvamahiṁsā kṣāntirārjavam।
ācāryopāsanaṁ saucaṁ sthairyamātmavinigrahaḥ ॥ 7 ॥
indriyārtheṣu vairāgyamanahaṅkāra eva ca।
janmamṛtyujarāvyādhiduḥkhadoṣānudarśanam ॥ 8 ॥

भा० २९ भाद्रपद पं० ५ आश्विन

प्रतिपदा-श्राद्ध

आज स्वामी हरिदर्शनानंद सरस्वती प्रातः १० बजे वाराणसी उतरकर मठ में पैदल पहुँचे। भोजन विश्राम किया। समाचार बताया-कहा। परमहंस शर्मा-अरहंती की गतिविधि की चर्चा की। वे नरसिंहस्वामी के भक्त प्रेमी - उनकी मान्यता में रहते हैं - यह पता लगा।

दान यश देता है, सदाचार सुख देता है और सत्य स्वर्ग देता है।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

असक्तिरनभिष्वङ्गः पुत्रदारगृहादिषु। नित्यं च समचित्तत्वमिष्टानिष्टोपपत्तिषु ॥ ९ ॥
मयि चानन्ययोगेन भक्तिरव्यभिचारिणी। विविक्तदेशसेवित्वमरतिर्जनसंसदि ॥ १० ॥
अध्यात्मज्ञाननित्यत्वं तत्त्वज्ञानार्थदर्शनम्। एतज्ज्ञानमिति प्रोक्तमज्ञानं यदतोऽन्यथा ॥ ११ ॥

सूर्योदय ५।४३ सूर्यास्त ५।५५

asaktiranabhiṣvaṅgaḥ putradāragṛhādiṣu।
nityaṁ ca samacittatvamiṣṭāniṣṭopapattiṣu ॥ 9 ॥
mayi cānanyayogena bhaktiravyabhicāriṇī।
viviktadeśasevitvamaratirjanasaṁsadi ॥ 10 ॥
adhyātmajñānanityatvaṁ tattvajñānārthadarśanam।
etajjñānamiti proktamajñānaṁ yadato'nyathā ॥ 11 ॥

भा० ३० भाद्रपद पं० ६ आश्विन

द्वितीया-श्राद्ध

आज श्री ईदवीरानंद हुकेरेहे। श्रीवीर शुक्लाव शमीका पत्र आनंदवर्धन आयुर्वेद। पिता का अभिलाषा। उसमें गुलाबचंद। मध्यप्रदेश शमीकी पत्नीकी जिद्द भी कि स्वामीजी इंदौरमें ही रहें। वे कोचीन जाना चाहते हैं... अभि। यह कल्याणीका है। वैद्यजी का है।

श्रीवीर-पुनीत आ गये। उन्हें का खाना। फल। रात्रिमें कार्यकर्ताओंका आयोजन। प्रातः ६ बजे जाना। स्वामी ईदवीरानंद मिलेंगे। उन्हें पत्र की प्रति को दिखाना पुनः कार्यक्रम में मध्यप्रदेश के लिये सुझाव।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

ज्ञेयं यत्तत्प्रवक्ष्यामि यज्ज्ञात्वामृतमश्नुते। अनादिमत्परं ब्रह्म न सत्तन्नासदुच्यते ॥ १२ ॥
सर्वतःपाणिपादं तत्सर्वतोऽक्षिशिरोमुखम्। सर्वतःश्रुतिमल्लोके सर्वमावृत्य तिष्ठति ॥ १३ ॥
सर्वेन्द्रियगुणाभासं सर्वेन्द्रियविवर्जितम्। असक्तं सर्वभृच्चैव निर्गुणं गुणभोक्तृ च ॥ १४ ॥

सूर्योदय ५।४४ सूर्यास्त ५।५४

jñeyaṁ yattatpravakṣyāmi yajjñātvāmṛtamaśnute।
anādimatparaṁ brahma na sattannāsaducyate ॥ 12 ॥
sarvataḥpāṇipādaṁ tatsarvato'kṣiśiromukham।
sarvataḥśrutimalloke sarvamāvṛtya tiṣṭhati ॥ 13 ॥
sarvendriyaguṇābhāsaṁ sarvendriyavivarjitam।
asaktaṁ sarvabhṛccaiva nirguṇaṁ guṇabhoktṛ ca ॥ 14 ॥

भा० ३१ भाद्रपद पं० ७ आश्विन

तृतीया-श्राद्ध

प्रातः कृत्यादिकसे निवृत्त होकर श्राद्धकी तैयारी प्रारम्भ कर दी। ११ बजे तक सब तैयार हो गया। ब्राह्मण भोजनके लिये आमन्त्रित किये गये थे। उनके आनेपर श्राद्ध करना था। इसलिये तैयारी की गयी थी। इसका संक्षिप्त विवरण इस प्रकार है। मथुरा जिलेके चौमुहाँ ग्रामके मथुराधीश मन्दिरके गोस्वामी श्रीगोपीनाथजी महाराजके यहाँ श्राद्ध किया। यजमान स्वयं उपस्थित थे। बिना पैसेके लोटे। सबमें १० कुशके लगभग गोल है। प्रत्येकमें तिलगोपीचन्दन और कुशके एक साथ तीन छल्ले मिलाकर पहनाये गये हैं। इसे पवित्री कहते हैं। इसे पहनकर श्राद्ध किया।

श्राद्धके समाप्त होनेपर ब्राह्मणोंको भोजन कराया गया। आज मैंने सिखाया। ब्राह्मणोंने

चापलूसी करना बहुतसे लोग जानते हैं; बहुत कम लोग जानते हैं कि प्रशंसा कैसे की जाती है।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

बहिरन्तश्च भूतानामचरं चरमेव च। सूक्ष्मत्वात्तदविज्ञेयं दूरस्थं चान्तिके च तत्॥ १५॥
अविभक्तं च भूतेषु विभक्तमिव च स्थितम्। भूतभर्तृ च तज्ज्ञेयं ग्रसिष्णु प्रभविष्णु च॥ १६॥
ज्योतिषामपि तज्ज्योतिस्तमसः परमुच्यते। ज्ञानं ज्ञेयं ज्ञानगम्यं हृदि सर्वस्य विष्ठितम्॥ १७॥

सूर्योदय ५।४४ सूर्यास्त ५।५२

bahirantaśca bhūtānāmacaraṁ carameva ca।
sūkṣmatvāttadavijñeyaṁ dūrasthaṁ cāntike ca tat॥ 15॥
avibhaktaṁ ca bhūteṣu vibhaktamiva ca sthitam।
bhūtabhartṛ ca tajjñeyaṁ grasiṣṇu prabhaviṣṇu ca॥ 16॥
jyotiṣāmapi tajjyotistamasaḥ paramucyate।
jñānaṁ jñeyaṁ jñānagamyaṁ hṛdi sarvasya viṣṭhitam॥ 17॥

भा॰ १ आ॰ शक १९१६ पं॰ ८ आश्विन

चतुर्थी-श्राद्ध, श्रीगणेशचतुर्थीव्रत

प्रत॰ ब्रह्मचारी किये। ९ बजसबसे श्रद्धाजलिलेकर किया।
इक्कीसवाँ - कौशलेन्द्रका। मेरा और ब्रह्मचारीका। १०बजसे
ऐरोप्लेन गया - भोजन लाकर - भोजनादि किया।
ब्रह्मचारी श्रीदरबारीके विद्यालयसे संस्कृतोत्सव आदि गये।
विश्वनाथ जी भोजनके लिये गये।
अपराह्न - कृष्ण कोलाल शर्मा महोदयके आये। पूछकर लौटा
गये - "पण्डाल के उत्तराधिकारीसे फिर देखा करेंगे।
ब्रह्मचारी को अंचला - चादर नहीं किया। जगदीशलाल को भी
दिया। वे गदगद रहते थे कि से हैं। मेरी इच्छा है कि यहीं
का होकर मैं ही अन्तिम हवन किया करूँ।
प्रमोद तोमरके को आये। खाना किये। उनको
पूर्वजन्म का कहे। खड़खड़ी अस्पतालमें ही काम आरम्भ
रहते हैं। पर डॉक्टरको कि लखनऊ गाड़ी लेकर
चलते हैं।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

इति क्षेत्रं तथा ज्ञानं ज्ञेयं चोक्तं समासतः। मद्भक्त एतद्विज्ञाय मद्भावायोपपद्यते ॥ १८ ॥
प्रकृतिं पुरुषं चैव विद्ध्यनादी उभावपि। विकारांश्च गुणांश्चैव विद्धि प्रकृतिसम्भवान् ॥ १९ ॥
कार्यकरणकर्तृत्वे हेतुः प्रकृतिरुच्यते। पुरुषः सुखदुःखानां भोक्तृत्वे हेतुरुच्यते ॥ २० ॥

सूर्योदय ५।४५ सूर्यास्त ५।५१

iti kṣetraṁ tathā jñānaṁ jñeyaṁ coktaṁ samāsataḥ।
madbhakta etadvijñāya madbhāvāyopapadyate ॥ 18 ॥
prakṛtiṁ puruṣaṁ caiva viddhyanādī ubhāvapi।
vikārāṁśca guṇāṁścaiva viddhi prakṛtisambhavān ॥ 19 ॥
kāryakaraṇakartṛtve hetuḥ prakṛtirucyate।
puruṣaḥ sukhaduḥkhānāṁ bhoktṛtve heturucyate ॥ 20 ॥

भा० २ आश्विन पं० ९ आश्विन

(पञ्चमी-श्राद्ध)

प्रातः प्रणाम के पश्चात् हुई। कार्यक्रम का प्रारंभ है - विश्वविभूतिम् ... श्लोक से। तत्पश्चात् सम्मानगीत। श्रीमान् कक्षा-कक्ष के संचालन में श्री० बीरेन्द्रकुमार पण्डा - राजनीतिशास्त्र विभाग तथा वरिष्ठ-श्री सच्चिदानंद राय - रोजिला। ब्रह्मानंद गिरि जी में, सम्मानवादी पक्ष के। पक्ष रखे गये और प्रमुख दो अंगदेशीय एवं दो स्थानीय अंगवासी। बीरेन्द्र कुमार जी जैसे ही अंग: समीपवर्ती एवं दो प्रौढ़ - शिक्षा से जुड़े हुए लोगों से भी कोई सरोकार नहीं - जानकारी है मुझे गर्व। आज छुट्टी।

आश्विन कृष्ण ५, वि०सं० २०५१, रविवार, SEPT. 25. 1994 [दिन २६८
सूर्योदय ५।४५ सूर्यास्त ५।५० पं० १० आश्विन भा० ३ आश्विन

(षष्ठी-श्राद्ध)

आज प्रातः हिमालय चौधरी - दो साथियों के साथ आये। उनमें एक मकनपुर के चेजा पं० परमेश्वर शर्मा के नाती हैं। उनसे पंडित जी की वार्ता हुई। बाली उम्र के वृद्धावस्था - प्रणाम की चर्चा करती मेंगे। पाण्डुलिपि पंडित जी के बस्ते में बहुत बड़ी होगी। फाल्गुन में प्रकाशित करेंगे। हिमालय को 'श्रवण कुमार' की उपाधि दी गयी। पं० रामसुरेश पांडे जी डा० योगेन्द्रनाथ शर्मा के लिखा मेमकल्प योग के लिये बंगलौर जा रहे।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

पुरुषः प्रकृतिस्थो हि भुङ्क्ते प्रकृतिजान्गुणान्। कारणं गुणसङ्गोऽस्य सदसद्योनिजन्मसु ॥ २१ ॥
उपद्रष्टानुमन्ता च भर्ता भोक्ता महेश्वरः। परमात्मेति चाप्युक्तो देहेऽस्मिन्पुरुषः परः ॥ २२ ॥
य एवं वेत्ति पुरुषं प्रकृतिं च गुणैः सह। सर्वथा वर्तमानोऽपि न स भूयोऽभिजायते ॥ २३ ॥

सूर्योदय ५।४६ सूर्यास्त ५।४९

puruṣaḥ prakṛtistho hi bhuṅkte prakṛtijānguṇān।
kāraṇam guṇasango'sya sadasadyonijanmasu ॥ 21 ॥
upadraṣṭānumantā ca bhartā bhoktā maheśvaraḥ।
paramātmeti cāpyukto dehe'sminpuruṣaḥ paraḥ ॥ 22 ॥
ya evaṁ vetti puruṣaṁ prakṛtiṁ ca guṇaiḥ saha।
sarvathā vartamāno'pi na sa bhūyo'bhijāyate ॥ 23 ॥

भा० ४ आश्विन पं० ११ आश्विन

सप्तमी-श्राद्ध

आज मेरे मैं आठवजे कृष्णजी की औद्धदेहिक श्राद्ध-क्रिया के आरम्भ हैं। आपके पिताजी औंकारेश्वर के तीर्थिकी व्यवस्था गये। आगे के सेवा-कार्य, पूजा आदि में करेंगे। ब्राह्मणों को दीपदान। १० बजे बच्चों के यज्ञोपवीत में रक्षा-मिठाई को लिखे।

श्री कृष्णजी के अन्त्येष्टि कार्य हिन्दू में श्री० रामजी मैं नर्मदा काठा है। किसी आत्मीय को भेजने जाने को देने का प्रबन्ध करेंगे।

जो लोग शक्ति-सामर्थ्य रहते विषयोंको छोड़ते हैं, वे ही प्रशंसाके भाजन होते हैं।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

ध्यानेनात्मनि पश्यन्ति केचिदात्मानमात्मना। अन्ये सांख्येन योगेन कर्मयोगेन चापरे ॥ २४ ॥
अन्ये त्वेवमजानन्तः श्रुत्वान्येभ्य उपासते। तेऽपि चातितरन्त्येव मृत्युं श्रुतिपरायणाः ॥ २५ ॥
यावत्संजायते किंचित्सत्त्वं स्थावरजङ्गमम्। क्षेत्रक्षेत्रज्ञसंयोगात्तद्विद्धि भरतर्षभ ॥ २६ ॥

सूर्योदय ५।४६
सूर्यास्त ५।४८

dhyānenātmani paśyanti kecidātmānamātmanā।
anye sāṅkhyena yogena karmayogena cāpare ॥ 24 ॥
anye tvevamajānantaḥ śrutvānyebhya upāsate।
te'pi cātitarantyeva mṛtyuṁ śrutiparāyaṇāḥ ॥ 25 ॥
yāvatsaṁjāyate kiṁcitsattvaṁ sthāvarajaṅgamam।
kṣetrakṣetrajñasaṁyogāttadviddhi bharatarṣabha ॥ 26 ॥

भा० ५ आश्विन पं० १२ आश्विन

जीवत्पुत्रिकाव्रत

आज सुरेन्द्र माधवराम-वटुकने पीएसएसिंहके काल
की भूमिदेखी। संदेह है, घर पर चित्रा फिर रो बैठेंगे। प्रवीण भोजन
करके प्रसन्न होने लगा गया। १०१ रुपये पूजा दक्षिणा दिया।

जिसे कभी पहले दुःख नहीं हुआ, वह हृदय सुख अनुभव नहीं कर सकता है।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

समं सर्वेषु भूतेषु तिष्ठन्तं परमेश्वरम्। विनश्यत्स्वविनश्यन्तं यः पश्यति स पश्यति ॥ २७ ॥
समं पश्यन्हि सर्वत्र समवस्थितमीश्वरम्। न हिनस्त्यात्मनात्मानं ततो याति परां गतिम् ॥ २८ ॥
प्रकृत्यैव च कर्माणि क्रियमाणानि सर्वशः। यः पश्यति तथात्मानमकर्तारं स पश्यति ॥ २९ ॥

सूर्योदय ५।४७ सूर्यास्त ५।४७

samaṁ sarveṣu bhūteṣu tiṣṭhantaṁ parameśvaram।
vinaśyatsvavinaśyantaṁ yaḥ paśyati sa paśyati ॥ 27 ॥
samaṁ paśyanhi sarvatra samavasthitamīśvaram।
na hinastyātmanātmānaṁ tato yāti parāṁ gatim ॥ 28 ॥
prakṛtyaiva ca karmāṇi kṛiyamāṇāni sarvaśaḥ।
yaḥ paśyati tathātmānamakartāraṁ sa paśyati ॥ 29 ॥

भा० ६ आश्विन पं० १३ आश्विन

अष्टमी-श्राद्ध

आज प्रमोद कुमार अपने घरेलू-निमंत्रण पर जगदेपुर गये।.. अन्त की दवाएँ समाप्त हो गयी है।

कामिनी और काञ्चन ही माया है, इनके आकर्षणमें पड़नेपर जीवकी सब स्वाधीनता चली जाती है।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

यदा भूतपृथग्भावमेकस्थमनुपश्यति। तत एव च विस्तारं ब्रह्म सम्पद्यते तदा ॥ ३० ॥
अनादित्वान्निर्गुणत्वात्परमात्मायमव्ययः । शरीरस्थोऽपि कौन्तेय न करोति न लिप्यते ॥ ३१ ॥

सूर्योदय ५।४७ सूर्यास्त ५।४६

yadā bhūtapṛthagbhāvamekasthamanupaśyati।
tata eva ca vistāraṁ brahma saṁpadyate tadā ॥ 30 ॥
anāditvānnirguṇatvātparamātmāyamavyayaḥ ।
śarīrastho'pi kaunteya na karoti na lipyate ॥ 31 ॥

भा० ७ आश्विन पं० १४ आश्विन

नवमी-श्राद्ध

आज डा० सतीश चन्द्र सिंह ने आश्वासन दिया कि वी० ठाकुर को नेगजांच के लिए कोम करेंगे पर नहीं कर सके। ढीले पड़ गये। 'रामश्री' का अंतिम ४ अंक आया।

विचार भाग्यका दूसरा नाम है।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

यथा सर्वगतं सौक्ष्म्यादाकाशं नोपलिप्यते। सर्वत्रावस्थितो देहे तथात्मा नोपलिप्यते ॥ ३२ ॥
यथा प्रकाशयत्येकः कृत्स्नं लोकमिमं रविः। क्षेत्रं क्षेत्री तथा कृत्स्नं प्रकाशयति भारत ॥ ३३ ॥

सूर्योदय ५।४८ सूर्यास्त ५।४५

yathā sarvagataṁ saukṣmyādākāśaṁ nopalipyate।
sarvatrāvasthito dehe tathātmā nopalipyate ॥ 32 ॥
yathā prakāśayatyekaḥ kṛtsnaṁ lokamimaṁ raviḥ।
kṣetraṁ kṣetrī tathā kṛtsnaṁ prakāśayati bhārata ॥ 33 ॥

भा॰ ८ आश्विन पं॰ १५ आश्विन

दशमी-श्राद्ध

आज प्रातः वी॰ जफुर के यहाँ ए.उ.पर गये। डाक्टर ने
घर से पहुँचने पर जांच की। कोई प्रगति नहीं होने की बात बताया।
साथ ही पुनः कुछ दवा और 5 सूइयाँ लेने को लिख कर दिया। [illegible]
बैंक से [illegible] दवा के निमित्त निकाला गया।
प्रमोद ने भी नेत्र परीक्षा करायी। [illegible] लगे। कुछ दवा और
6 सूई डाक्टर ने लिख कर दिया।

यदि कष्टके पश्चात् सुख न आता तो उसे कौन सहन करता ?

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

तत्र सत्त्वं निर्मलत्वात्प्रकाशकमनामयम्। सुखसङ्गेन बध्नाति ज्ञानसङ्गेन चानघ ॥ ६ ॥
रजो रागात्मकं विद्धि तृष्णासङ्गसमुद्भवम्। तन्निबध्नाति कौन्तेय कर्मसङ्गेन देहिनम् ॥ ७ ॥
तमस्त्वज्ञानजं विद्धि मोहनं सर्वदेहिनाम्। प्रमादालस्यनिद्राभिस्तन्निबध्नाति भारत ॥ ८ ॥

सूर्योदय ५।५०
सूर्यास्त ५।४०

tatra sattvaṁ nirmalatvātprakāśakamanāmayam।
sukhasaṅgena badhnāti jñānasaṅgena cānagha ॥ 6 ॥
rajo rāgātmakaṁ viddhi tṛṣṇāsaṅgasamudbhavam ।
tannibadhnāti kaunteya karmasaṅgena dehinam ॥ 7 ॥
tamastvajñānajaṁ viddhi mohanaṁ sarvadehinām।
pramādālasyanidrābhistannibadhnāti bhārata ॥ 8 ॥

भा० १३ आश्विन पं० २० आश्विन

अमावास्या, मातामहश्राद्ध

आज स्वामी हरिहरीशानंद जी. मधुमलपुर से कार्यक्रम करके वापस आये। वे दस दिन तक यहाँ रहेंगे। उनसे वहाँ का समाचार मिला। श्री नरहरि सेठजी की अस्वस्थता का पता चला। आज तार दिया है।

आज अपने लिये. लालस्वामी का पुराना खरीदा गया पंखा खोलने के लिये। प्रसाद की परीक्षा ली. बहुत अच्छी। उन्हें चीजों का आदी रहना चाहिये।

मैं भी कल बहुत अच्छा भोजन करूँगा. बहुत प्रसाद खाऊँगा।

तृष्णाने मनुष्यजातिपर ऐसा सर्वव्यापी प्रभुत्व जमा लिया है कि सम्पत्तिको अपने अधिकारमें करनेकी अपेक्षा लोग सम्पत्तिके अधिकारमें हो गये हैं।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

सत्त्वं सुखे संजयति रजः कर्मणि भारत। ज्ञानमावृत्य तु तमः प्रमादे संजयत्युत ॥ ९ ॥
रजस्तमश्चाभिभूय सत्त्वं भवति भारत। रजः सत्त्वं तमश्चैव तमः सत्त्वं रजस्तथा ॥ १० ॥
सर्वद्वारेषु देहेऽस्मिन्प्रकाश उपजायते। ज्ञानं यदा तदा विद्याद्विवृद्धं सत्त्वमित्युत ॥ ११ ॥

सूर्योदय ५।५१ सूर्यास्त ५।३९

sattvaṁ sukhe sañjayati rajaḥ karmaṇi bhārata।
jñānamāvṛtya tu tamaḥ pramāde sañjayatyuta ॥ 9 ॥
rajastamaścābhibhūya sattvaṁ bhavati bhārata।
rajaḥ sattvaṁ tamaścaiva tamaḥ suttavaṁ rajastathā ॥ 10 ॥
sarvadvāreṣu dehe'sminprakāśa upajāyate।
jñānaṁ yadā tadā vidyādvivṛddhaṁ sattvamityuta ॥ 11 ॥

भा० १४ आश्विन पं० २१ आश्विन

शारदीय नवरात्रारम्भ

प्रातः प्रमोदके लिये सुगलसराय गया। मगधएक्सप्रेस से कार्मेचा पहुँचे। उनकी जामुमौसी धूरगभी, पहलेजैसे चीकनापन उन्हेंमोगण पड़ा। दाढ़ीनये बक्सर पड़ुँचे। केवलराय से मिले। पंजाब के आजमें कोई प्रगति नहीं। केशवराय हैदराबाद इस्लाक्टर के दो लाखमें मेधांश्रेंके लिये हैं। पञ्चपर्वमोद-क्रम कारीले उधेड़ें।

सटे तनु पहिले। रिक्शासे आमघाट पहुँचा। दर्द कीस्थिति परीक्षित देखा। हरलाहें प्रमोदके लिये तनु भीवा-भीका उपः किराएसेट। रिक्शासे क्षत्रपुरागया। प्रमोदजुआ मिन्धा पे मनः का गये। आलस्छुआ उन्हा। कागज्ये पे।

कृत्युए शाकुनी कि लिये गया हुआ। यज्ञ लेकर गणी रामि मिश्र। पंडाजके कागजकी वगरि चीवातें हुई। कंपनी वर्क ग रहेहैं। काशी दशहरा बाद होने का पत्र मिला है।

दरिद्रताको कुछ वस्तुओंकी आवश्यकता रहती है, विलासिताको अनेक वस्तुओंकी और तृष्णाको समस्त वस्तुओंकी।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

लोभः प्रवृत्तिरारम्भः कर्मणामशमः स्पृहा। रजस्येतानि जायन्ते विवृद्धे भरतर्षभ ॥ १२ ॥
अप्रकाशोऽप्रवृत्तिश्च प्रमादो मोह एव च। तमस्येतानि जायन्ते विवृद्धे कुरुनन्दन ॥ १३ ॥
यदा सत्त्वे प्रवृद्धे तु प्रलयं याति देहभृत्। तदोत्तमविदां लोकानमलान्प्रतिपद्यते ॥ १४ ॥

सूर्योदय ५।५१ सूर्यास्त ५।३८

lobhaḥ pravṛttirārambhaḥ karmaṇāmaśamaḥ spṛhā।
rajasyetāni jāyante vivṛddhe bharatarṣabha ॥ 12 ॥
aprakāśo'pravṛttiśca pramādo moha eva ca।
tamasyetāni jāyante vivṛddhe kurunandana ॥ 13 ॥
yadā sattve pravṛddhe tu pralayaṁ yāti dehabhṛt।
tadottamavidāṁ lokānamalānpratipadyate ॥ 14 ॥

भा॰ १५ आश्विन पं॰ २२ आश्विन

प्रातः जलयान के बाद रिक्शा से आश्रम पर पहुँचा - मद्धाके बरमेश्वर मिले। हेमदापुर के भी संबंधी थे। पेंशन की किताब दुर्गाप्रेस से ३० रुपये में मंगाया।

अलीगढ़ से तालामंगल की बातें हुईं। बाद अधीक्षक डा० चन्द्रेश्वर मिश्र भी घर चला गये हैं। दशहरे के बाद आवेंगे। प्रमोद रात गये आये। दिन में कुछ खाया पिया नहीं।

मैले बर्तनमें साफ पानी भी मैला हो जाता है। द्वेषसे भरा हुआ हृदय पवित्र विनोद भी नहीं सह सकता।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

रजसि प्रलयं गत्वा कर्मसङ्गिषु जायते। तथा प्रलीनस्तमसि मूढयोनिषु जायते ॥ १५ ॥
कर्मणः सुकृतस्याहुः सात्त्विकं निर्मलं फलम्। रजसस्तु फलं दुःखमज्ञानं तमसः फलम् ॥ १६ ॥
सत्त्वात्संजायते ज्ञानं रजसो लोभ एव च। प्रमादमोहौ तमसो भवतोऽज्ञानमेव च ॥ १७ ॥

सूर्योदय ५।५२ सूर्यास्त ५।३६

rajasi pralayam gatvā karmasaṅgiṣu jāyate।
tathā pralīnastamasi mūḍhayoniṣu jāyate ॥ 15॥
karmaṇaḥ sukṛtasyāhuḥ sāttvikam nirmalam phalam।
rajasastu phalam duḥkhamajñānam tamasaḥ phalam ॥ 16॥
sattvātsañjāyate jñānam rajaso lobha eva ca।
pramādamohau tamaso bhavato'jñānameva ca ॥ 17॥

भा० १६ आश्विन पं० २३ आश्विन

प्रातः प्रमोद कक्षहरिजने। वहि कार्यक्रम चला।
कलाश कल्याणजन की फोटो खींची कल्या। पुरः कृतपुरा गये।
वहीं भोजन किया। रात्रि ८ बजे आ० राजकिशोरी के लिये
प्रयास किया फिर वाहन के तार के उसी पाये जोड़ने में लग गये।
पुनः वहाँ से चले पञ्चकोसी पर। पहले कल्याण।
१०० मीटर की दूरी पर मंदिर में कल्या। फिर के अनावरण
देखा। प्रातःकाल कुछ के ही लिखित कार्य की लिखे।

आश्विन शुक्ल ५, वि०सं० २०५१, रविवार, OCT. 9. 1994 [दिन २८२
सूर्योदय ५।५२ सूर्यास्त ५।३५ पं० २४ आश्विन भा० १७ आश्विन

आज प्रातः आरती बैठक हुई। श्री श्रीगणपत राय,
शिवबचन राय, राजकिशोर राय, सच्चिदानंद राय आदि सभी
पं० राजनाथ को पगड़ी दी। श्री बालाराय ने प्रमोदकुमार खड्गवंशी
को पगड़ी दी। राय दिनेश्वर प्रसाद, अखिलेश्वर प्रसाद
उपस्थित थे। चाय के बाद उत्तम दीक्षित दिया हुआ।
श्री कृष्णजी के प्रयोग की सीढ़ी के दृश्य की
दो फोटो खींची। एक ग्रुप फोटो [illegible] एक फोटो [illegible]
[illegible] रहेगा। [illegible] [illegible] [illegible]

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

ऊर्ध्वं गच्छन्ति सत्त्वस्था मध्ये तिष्ठन्ति राजसाः। जघन्यगुणवृत्तिस्था अधो गच्छन्ति तामसाः॥ १८॥
नान्यं गुणेभ्यः कर्तारं यदा द्रष्टानुपश्यति। गुणेभ्यश्च परं वेत्ति मद्भावं सोऽधिगच्छति॥ १९॥
गुणानेतानतीत्य त्रीन्देही देहसमुद्भवान्। जन्ममृत्युजरादुःखैर्विमुक्तोऽमृतमश्नुते॥ २०॥

सूर्योदय ५।५३ सूर्यास्त ५।३४

ūrdhvaṁ gacchanti sattvasthā madhye tiṣṭhanti rājasāḥ।
jaghanyaguṇavṛttisthā adho gacchanti tāmasāḥ॥ 18॥
nānyaṁ guṇebhyaḥ kartāraṁ yadā draṣṭānupaśyati।
guṇebhyaśca paraṁ vetti madbhāvaṁ so'dhigacchati॥ 19॥
guṇānetānatītya trīndehī dehasamudbhavān।
janmamṛtyujarāduḥkhairvimukto'mṛtamaśnute॥ 20॥

भा० १८ आश्विन पं० २५ आश्विन

अज श्रीप्रमोदकुमार खाडेके गये आये। उन्होंने राम-कृष्ण के विषयमें कोई प्रश्न किये। मैंने कहा आपसे कहूँगा। रामकिंकरजी को तो किसी की मजदूरी के लिये मिस्त्री को ढूंढने जाना। फलतः वे भोजन दूधका किया। रातमें भी अमरीकासे फोन आये। वाशिंगटन रीजिनल हास्पिटलका फोन है, वहाँ कैंसर के लिये रामजी चंदा करने वाले उनके रिसर्च-स्कालर। खड्गधारी सिंह, उनके पुत्रों के संबंध में तथा मेरे पुत्र को फंसाने के संबंध में आये हुये।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

अर्जुन उवाच

कैर्लिङ्गैस्त्रीन्गुणानेतानतीतो भवति प्रभो। किमाचारः कथं चैतांस्त्रीन्गुणानतिवर्तते ॥ २१ ॥

श्रीभगवानुवाच

प्रकाशं च प्रवृत्तिं च मोहमेव च पाण्डव। न द्वेष्टि संप्रवृत्तानि न निवृत्तानि काङ्क्षति ॥ २२ ॥

सूर्योदय ५। ५३
सूर्यास्त ५। ३३

arjuna uvāca

kairlingaistrīnguṇānetānatīto bhavati prabho।
kimācāraḥ katham caitāṁstrīnguṇānativartate ॥ 21 ॥

śrībhagavānuvāca

prakāśaṁ ca pravṛttiṁ ca mohameva ca pāṇḍava।
na dveṣṭi saṁpravṛttāni na nivṛttāni kāṅkṣati ॥ 22 ॥

भा० १९ आश्विन पं० २६ आश्विन

आज प्रातः प्रसादकुमार राजभैया एम.ऑर्डर पंजाब नेशनल बैंक पावापुरी पहुँचे। दिलीपनगरी। वाहनसे आयी। एकैडमीमें पहुँचे। भोजन बना समीमें किया। विश्राम किया। इंद्रदत्त स्वामी हरिदर्शनानंदजी शांतिनगरसे हरिपुर थे।

दयालु रविकिरण का उपक्रम हुआ।

बोर्डोंपर पिलानी के दोनों ओरपड़ोसी की रोकथाम पानीपत कानपुर और रविकिरण पहलेसे उनके थे। दोहजार लगभग हमने किये। एकहजार उनका पालीकल्पंक, तथा एकहजार सदीजकिंद। अबतो भी बहुत की वृद्धि से सहारे।

मैंने तत्काल उन्हें धन्यवाद का मार्मिक पत्र और उनकी मांग के अनुसार दो रसीदबुकें रसन्नेकी प्रत्येक बहुत सुन्दरी गोपियों उनके मेरे-दोनों पत्रों के पत्रका रजिस्ट्रा पार्सिलसे भेजा। पढ़कर मेरे लगे।

तनिकसे तिरस्कारपर नाराज हो जाना सदा हमारे अहंकारको प्रकट करता है या हमारी बुद्धिकी कमीको।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

उदासीनवदासीनो गुणैर्यो न विचाल्यते। गुणा वर्तन्त इत्येव योऽवतिष्ठति नेङ्गते ॥ २३ ॥
समदुःखसुखः स्वस्थः समलोष्टाश्मकाञ्चनः। तुल्यप्रियाप्रियो धीरस्तुल्यनिन्दात्मसंस्तुतिः ॥ २४ ॥
मानापमानयोस्तुल्यस्तुल्यो मित्रारिपक्षयोः। सर्वारम्भपरित्यागी गुणातीतः स उच्यते ॥ २५ ॥

सूर्योदय ५। ५४
सूर्यास्त ५। ३२

udāsīnavadāsīno guṇairyo na vicālyate।
guṇā vartanta ityeva yo'vatiṣṭhati neṅgate ॥ 23 ॥
samaduḥkhasukhaḥ svasthaḥ samaloṣṭāśmakāñcanaḥ।
tulyapriyāpriyo dhīrastulyanindātmasaṁstutiḥ ॥ 24 ॥
mānāpamānayostulyastulyo mitrāripakṣayoḥ।
sarvārambhaparityāgī guṇātītaḥ sa ucyate ॥ 25 ॥

भा॰ २०
आश्विन
पं॰ २७
आश्विन

श्रीदुर्गाष्टमीव्रत

प्रातः स्नानादि नैमित्तिक कृत्य करके पवित्रीके अनुवेदोंका अन्वय-अवकाल प्राप्त होनेपर उसका अन्वय करके जौका कार्य-दर्भ से कहीं अवकाश गया। उसके अनन्तर पात्रादि पवित्रके ऊपर कुशोंका पात्र करें।

अनन्तर प्रणीता पात्रके ऊपर अंगुष्ठ के नीचे तर्जनी अंगुलीके अग्रभाग से स्नानादि जलसे पूर्व गये।

कमजोरोंके लिये जो पत्थर मार्गका रोड़ा होता है, वह बलवानोंके मार्गमें ऊपर चढ़नेकी एक सीढ़ी बन जाता है।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

मां च योऽव्यभिचारेण भक्तियोगेन सेवते। स गुणान्समतीत्यैतान्ब्रह्मभूयाय कल्पते ॥ २६ ॥
ब्रह्मणो हि प्रतिष्ठाहममृतस्याव्ययस्य च। शाश्वतस्य च धर्मस्य सुखस्यैकान्तिकस्य च ॥ २७ ॥

ॐ तत्सदिति श्रीमद्भगवद्गीतासूपनिषत्सु ब्रह्मविद्यायां योगशास्त्रे श्रीकृष्णार्जुनसंवादे
गुणत्रयविभागयोगो नाम चतुर्दशोऽध्यायः ॥ १४ ॥

सूर्योदय ५।५४ सूर्यास्त ५।३१

mām ca yo'vyabhicāreṇa bhaktiyogena sevate।
sa guṇānsamatītyaitānbrahmabhūyāya kalpate ॥ 26 ॥
brahmaṇo hi pratiṣṭhāhamamṛtasyāvyayasya ca।
śāśvatasya ca dharmasya sukhasyaikāntikasya ca ॥ 27 ॥
oṁ tatsaditi śrīmadbhagavadgītāsūpaniṣatsu brahmavidyāyāṁ
yogaśāstre śrīkṛṣṇārjunasaṁvāde guṇatrayavibhāgayogo
nāma caturdaśo'dhyāyaḥ ॥ 14 ॥

भा० २१ आश्विन पं० २८ आश्विन

श्रीदुर्गानवमीव्रत

प्रातः प्रभातकुमार एवं रेवतीजी हरिद्वार गये। उनसे भेंट हुई। वे भी यज्ञ-दानों का लगभग पक्ष तटीय कार्यक्रमों के गोलों की बात थी। यह तय हुआ कि प्रभात दोनों को लेकर आज ही। क्या कार्यक्रम बनाया है।
सायंकाल ७ बजे कनखल आश्रम में सत्संग होगा। सामूहिक भोजन भी मिलेगा होगा।

इसी बीच आज के कार्यक्रम की रूपरेखा, गंगा-स्नान के लिए घाट तक जाने की व्यवस्था में लगे हैं। सत्संग का भोजन तो बनेगा।

सायंकाल ७ बजे श्रीकृष्ण सिंह जी का स्वर्गवास के लिए इष्ट सेवा का निर्णय - या कनखल आये।

विजया दशमी के शुभ कामना के। कहा।
प्रभात ने दो या इसमें मेरा भाग भी जोड़ लेना।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

ॐ

पञ्चदशोऽध्यायः

श्रीभगवानुवाच

ऊर्ध्वमूलमधःशाखमश्वत्थं प्राहुरव्ययम्। छन्दांसि यस्य पर्णानि यस्तं वेद स वेदवित्॥ १॥

अधश्चोर्ध्वं प्रसृतास्तस्य शाखा
गुणप्रवृद्धा विषयप्रवालाः।
अधश्च मूलान्यनुसंततानि
कर्मानुबन्धीनि मनुष्यलोके॥ २॥

सूर्योदय ५।५५
सूर्यास्त ५।३०

śrībhagavānuvāca
ūrdhvamūlamadhaḥśākhamaśvatthaṁ prāhuravyayam।
chandāṁsi yasya parṇāni yastaṁ veda sa vedavit॥ 1॥
adhaścordhvaṁ prasṛtāstasya śākhā
guṇapravṛddhā viṣayapravālāḥ।
adhaśca mūlānyanusantatāni
karmānubandhīni manuṣyaloke॥ 2॥

भा० २२ आश्विन
पं० २९ आश्विन

आश्विन शुक्ल १०, वि०सं० २०५१, शुक्रवार, OCT.14.1994
विजयादशमी

खम-पामदि ग्राम सूई नहीं पड़ी। प्रमोदकुमार के नहीं रहने पर कोई ध्यान नहीं देते। पढ़ने लिखने और पत्रोत्तर लिखने में समय बिताया गया।

श्री हरिकृष्ण ठाकुर श्री सहस एवं से सहसा आ पहुँचे। स्थान में बनवारी सेवा के श्री अर्थात् के एक कार्यकर्ता - हरिजन थे। उनका समाचार जाना सुना। वे बक्सर २० ता. की शाम को पहुँचेंगे। साथ में उधुरा-भिवानी के साधु बेनीमाधव दास सेवा में शामिल होंगे। २० की रात में बक्सर आश्रम में रहेंगे। प्रमोदकुमार को खोज रहे थे। अपनी जन्मकुंडली की सूचना कर रहे थे। साथ बक्सर जाने को कहा।

निर्दोषता और रहस्य कभी एक साथ नहीं रहते।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

अ० १५] आश्विन शुक्ल ११, वि०सं० २०५१, शनिवार, OCT. 15. 1994 [दिन २८८

न रूपमस्येह तथोपलभ्यते
नान्तो न चादिर्न च संप्रतिष्ठा।
अश्वत्थमेनं सुविरूढमूल-
मसङ्गशस्त्रेण दृढेन छित्त्वा ॥ ३ ॥

सूर्योदय ५।५५ सूर्यास्त ५।२९

na rūpamasyeha tathopalabhyate
nānto na cādirna ca saṁpratiṣṭhā।
aśvatthamenaṁ suvirūḍhamūla-
masaṅgaśastreṇa dṛḍhena chittvā ॥ 3 ॥

भा० २३ आश्विन पं० ३० आश्विन

पापांकुशा एकादशीव्रत

दिल्ली से त्रिपुरारी राय संस्थापक अध्यक्ष श्री स्वामी महानन्द सरस्वती हितकारी संस्थान नामक संस्था का पत्र आया। विवेक, मेरी जीवनी तथा स्वामी जी से संबंधित कार्यकलापों के विचारण के संबंध में।

आश्विन शुक्ल १२, वि०सं० २०५१, रविवार, OCT. 16. 1994 [दिन २८९

सूर्योदय ५।५६ सूर्यास्त ५।२८ पं० ३१ आश्विन भा० २४ आश्विन

प्रदोषव्रत

आज भी जगमोहन राय जी आये। उन्होंने ही द्वारा और भट्ट विकेश की उग्रनीयामा का, तथा महामंडलेश्वर स्वामी श्री महामंडलेश्वर मणिन्द्र कुलतिलक स्वामी विद्यानन्द सिरिजी से अपनी भेंटवाली का विचारण सुनाया। महामंडलेश्वर द्वारा मेरे स्वास्थ्य का समाचार और कुशलता पूछे जाने की बात भी उन्होंने कही बतायी।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

ततः पदं तत्परिमार्गितव्यं
यस्मिन्गता न निवर्तन्ति भूयः।
तमेव चाद्यं पुरुषं प्रपद्ये
यतः प्रवृत्तिः प्रसृता पुराणी ॥ ४ ॥

सूर्योदय ५।५६ सूर्यास्त ५।२७

tataḥ padaṁ tatparimārgitavyaṁ
yasmingatā na nivartanti bhūyaḥ।
tameva cādyaṁ puruṣaṁ prapadye
yataḥ pravṛttiḥ prasṛtā purāṇī ॥ 4 ॥

भा० २५ आश्विन पं० १ कार्तिक

वाराणसी में भी, देश की राजधानी जैसी मुख्य मंत्री परिषद् के निर्णय द्वारा कार्यकारिणी भंग कर राज्यपाल शासन लगाया जाता है। वैसे ही सामान्य चित्त का कल-पर्यन्त कार्यक्रम अपने पूर्व निश्चित लक्ष्य पर से आगे न बढ़ा। उसे परमहंस जैसी संन्यास की उच्च भूमिका से संबंध नहीं होने से, सद्योग प्राप्त होगा। वह उसे अवश्य करने देगा।

स्वामी हरिहरानंद जी. सब कार्यक्रम तय करके, अपने कार्यक्रम के अनुसार कार्यालय, वाराणसी में आने वाले व्यक्तियों के यहाँ पहुँच। उनके साथ कार्य हाथ में लेने की बड़ी चर्चा की।

प० कैलाश में डा० योगेन्द्र नाथ आये। उनसे, निर्मल और उत्साही मैत्री हो। व्यवसाय की परिस्थिति के संबंध में पहले काम के लिये खुलासा किया। पहले जो हानि की, हुई। आगे को परिस्थिति होगी वह कार्य गुरुदेव की कृपा से सफल होगा।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

निर्मानमोहा जितसङ्गदोषा
अध्यात्मनित्या विनिवृत्तकामाः ।
द्वन्द्वैर्विमुक्ताः सुखदुःखसंज्ञै-
र्गच्छन्त्यमूढाः पदमव्ययं तत् ॥ ५ ॥

सूर्योदय ५।५७ सूर्यास्त ५।२६

nirmānamohā jitasaṅgadoṣā
adhyātmanityā vinivṛttakāmāḥ ।
dvandvairvimuktāḥ sukhaduḥkhasaṁjñair-
gacchantyamūḍhāḥ padamavyayaṁ tat ॥ 5 ॥

भा० २६ आश्विन पं० २ कार्तिक

शरत्-पूर्णिमाव्रत

अत्यन्त प्रातः डा० यौगीन्द्र नाथ शर्मा, शेरपुर गये। आराके मुख्तार युगके से गये। आज तबियत ठीक नहीं थी। योग नहीं किया दिन में।

श्रीदलेश्वरराय, बेरावर - गोलाघाट गोरखपुर के पते पर पत्र लिखा। इकट्ठा-श्री श्रीरामपाण्डेयजी को तथा दिल्ली - त्रिपुरारीराय सं० अध्यक्ष, स्वामी - सहजानंद सरस्वती हितकारी संस्थान। को पत्र लिखा। श्री श्री० राजनारायण शर्मा - श्रीरामपुर अयोध्या - जि० समस्तीपुर - दिहार के पत्र का उत्तर लिखा। पत्र कल छोड़ा जायेगा।

प्रपञ्चमें मनुष्यका आत्मपतन हो ही जाता है।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

श्रोत्रं चक्षुः स्पर्शनं च रसनं घ्राणमेव च। अधिष्ठाय मनश्चायं विषयानुपसेवते॥ ९॥
उत्क्रामन्तं स्थितं वापि भुञ्जानं वा गुणान्वितम्। विमूढा नानुपश्यन्ति पश्यन्ति ज्ञानचक्षुषः॥ १०॥
यतन्तो योगिनश्चैनं पश्यन्त्यात्मन्यवस्थितम्। यतन्तोऽप्यकृतात्मानो नैनं पश्यन्त्यचेतसः॥ ११॥

सूर्योदय ५।५८ सूर्यास्त ५।२४

śrotraṁ cakṣuḥ sparśanaṁ ca rasanaṁ ghrāṇameva ca।
adhiṣṭhāya manaścāyaṁ viṣayānupasevate॥ 9॥
utkrāmantaṁ sthitaṁ vāpi bhuñjānaṁ vā guṇānvitam।
vimūḍhā nānupaśyanti paśyanti jñānacakṣuṣaḥ॥ 10॥
yatanto yoginaścainaṁ paśyantyātmanyavasthitam।
yatanto'pyakṛtātmāno nainaṁ paśyantyacetasaḥ॥ 11॥

भा० २८ आश्विन पं० ४ कार्तिक

आज प्रातः चन्द्रमणि तिवारी-सहस्रनाम के आये।
के. हरिकृष्णठाकुरजीके मयंकमुकुल के उनके यहाँ आये हैं।
श्री कमलाप्रसाद पांडे ठकुरन्हा के यहाँ ठकुरैं। प्रातःकृत्य अर्चन गे।
सपरिकार हरिकृष्णठाकुरजी एवं श्री० हरिदर्शन बाबूजी अनुचर आये। रात में अलग में ठकुरैठहरे। बिना विग्रहवीहआ। सभासभ्य आधिक को चर्चा की जाती। श्याम कृष्ण मिश्र-कृत रामायण देख पड़ुंचलता। कहरीक बातें हुईं। भोला पाण्डेय भी थे। प्रगाढ़ ज्ञान उपलब्ध थे। अतः कोई अध्ययन नहीं हुआ।

बहुत बार ऐसा हुआ है कि पुस्तकोंके अध्ययनने मनुष्यके भविष्यको बना दिया है।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

यदादित्यगतं तेजो जगद्भासयतेऽखिलम्। यच्चन्द्रमसि यच्चाग्नौ तत्तेजो विद्धि मामकम्॥ १२॥
गामाविश्य च भूतानि धारयाम्यहमोजसा। पुष्णामि चौषधीः सर्वाः सोमो भूत्वा रसात्मकः॥ १३॥
अहं वैश्वानरो भूत्वा प्राणिनां देहमाश्रितः। प्राणापानसमायुक्तः पचाम्यन्नं चतुर्विधम्॥ १४॥

सूर्योदय ५।५९ सूर्यास्त ५।२३

yadādityagatam tejo jagadbhāsayate'khilam।
yaccandramasi yaccāgnau tattejo viddhi māmakam॥ 12॥
gāmāviśya ca bhūtāni dhārayāmyahamojasā।
puṣṇāmi cauṣadhīḥ sarvāḥ somo bhūtvā rasātmakaḥ॥ 13॥
aham vaiśvānaro bhūtvā prāṇināṁ dehamāśritaḥ।
prāṇāpānasamāyuktaḥ pacāmyannaṁ caturvidham॥ 14॥

भा० २९ आश्विन पं० ५ कार्तिक

प्रातः श्रीकृष्णाश्रम भक्तमण्डलीके तथा हरिदर्शनार्थी जनोंकी कारसे उधर गये। पं० शम्भुजीका परिवार भी अपनी गाड़ीसे आये। बकुलकी ४-३० पर गये। छायाजी ५ बजे प्रातःकाल उधर ही वंशीमाधवजी के यहाँ पहुँचे।

उधरसे दोपहर २ मिनट पर श्रीवंशीमाधवजी से भेंट हुई। अच्छे परिचित बकुलकी शिवमूर्ति एवं हरिदर्शन की बातें होती रहीं। विशेष प्रसिद्ध फल का परिचय हुआ (उद्दोले काशीनाथ के राजगुरुमठ के अधिष्ठाता के पास पर कोई सज्जन देने से इन्कार किया अभी लाये नहीं)। गायें जमना किनारे ले उद्दोले अच्छा किसान है। खेती करते हैं, झाड़वाली और बगदरवाली विशेषता से कोदो करते हैं। २ घर ब्राह्मण के घर हैं ४०० के लगभग हैं। उद्दोले मुखियाके कुलमें कोई हो तो पंच मंदिर के संबंध में कुछ भी कहीं बड़ा-छोटा को मुखिया कर एकमत देते हैं। छायाजी तीनचार बजे लौटे। बकुलकी हरिदर्शनार्थ जानेका छायाजी बजे पहुँचे। गाड़ीपर चढ़ते समय [illegible]

एक उत्तम पुस्तक एक महान् आत्माका जीवन-रक्त है जो इस जीवनके उस परेवाले जीवनके उद्देश्यसे सुगन्धित, सुपोषित किया गया है।

मोपेंगे केलाश
जय जानकी रमण!

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding by MoE-Grant-2

अ० १५] कार्तिक कृष्ण ३, विक्रमसं० २०५१, शनिवार, OCT. 22. 1994 [दिन २९५

सर्वस्य चाहं हृदि सन्निविष्टो
मत्तः स्मृतिर्ज्ञानमपोहनं च।
वेदैश्च सर्वैरहमेव वेद्यो
वेदान्तकृद्वेदविदेव चाहम्॥ १५॥

द्वाविमौ पुरुषौ लोके क्षरश्चाक्षर एव च। क्षरः सर्वाणि भूतानि कूटस्थोऽक्षर उच्यते॥ १६॥

सूर्योदय ५।५९ सूर्यास्त ५।२२

sarvasya cāhaṁ hṛdi sanniviṣṭo
mattaḥ smṛtirjñānamapohanaṁ ca।
vedaiśca sarvairahameva vedyo
vedāntakṛdvedavideva cāham॥ 15॥
dvāvimau puruṣau loke kṣaraścākṣara eva ca।
kṣaraḥ sarvāṇi bhūtāni kūṭastho'kṣara ucyate॥ 16॥

भा० ३० आश्विन पं० ६ कार्तिक

[illegible] के आश्रम में सपरिवार आये थे। रामचंद्रजी को दो दिनों की मछली पुरुषपने दिया। वे भी [illegible] हैं।

पं० उमापति शास्त्री के अनुरोधपर वेणीमाधवके भीतर "शालग्रामशिला" के दर्शन हुए। [illegible] लिया। [illegible] प्रजापतिक्षेत्र आगए। सूर्यास्त ५।३० [illegible] संकल्प और पूजाके लिए [illegible] हुई। वे [illegible] नामी लक्ष्मीनंद [illegible] लगाए हुए थे। बहुतसी [illegible] में [illegible] पूजा की। मंत्र-शास्त्रोंके [illegible] वाले [illegible] हैं। मैं [illegible] के आशीर्वाद दे।

कार्तिक कृष्ण ४, विक्रमसं० २०५१, रविवार, OCT. 23. 1994 [दिन २९६
सूर्योदय ६।०४ सूर्यास्त ५।२२ पं० ७ कार्तिक भा० १ कार्तिक शक १९१६

श्रीगणेशचतुर्थीव्रत (करवा चौथ)

आज प्रातःकालसे [illegible] जल [illegible]। [illegible] के संबंधमें [illegible] के प्रति [illegible]। मैंने [illegible] देखी पद्धतिके [illegible] "[illegible]" [illegible] करूंगा। [illegible] आदि [illegible] हाथकाढ़ने [illegible]। [illegible] [illegible] [illegible]

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

उत्तमः पुरुषस्त्वन्यः परमात्मेत्युदाहृतः । यो लोकत्रयमाविश्य बिभर्त्यव्यय ईश्वरः ॥ १७ ॥
यस्मात्क्षरमतीतोऽहमक्षरादपि चोत्तमः । अतोऽस्मि लोके वेदे च प्रथितः पुरुषोत्तमः ॥ १८ ॥
यो मामेवमसंमूढो जानाति पुरुषोत्तमम् । स सर्वविद्भजति मां सर्वभावेन भारत ॥ १९ ॥

सूर्योदय ६।०० सूर्यास्त ५।२१

uttamaḥ puruṣastvanyaḥ paramātmetyudāhṛtaḥ ।
yo lokatrayamāviśya bibhartyavyaya īśvaraḥ ॥ 17 ॥
yasmātkṣaramatīto'hamakṣarādapi cottamaḥ ।
ato'smi loke vede ca prathitaḥ puruṣottamaḥ ॥ 18 ॥
yo māmevamasaṁmūḍho jānāti puruṣottamam ।
sa sarvavidbhajati māṁ sarvabhāvena bhārata ॥ 19 ॥

भा० २ कार्तिक पं० ८ कार्तिक

श्री वैराग्यायण - अमराज - प्रयाग जाये। १७ रुपये "राहुल सांकृत्य" को लिये अंग्रेजी प्रश्न को सूची के साथ दिया।
त्रिपुरारि राम के अनुरोध का - स्वामी राजाजी सरस्वती संबंधी जो रव लिखने की व्यवस्था किया। सामग्री जुटाया।
आँख की दवा पड़ी नहीं, खाने की दवा भी नहीं खायी जाती। हियालाल चौधरी - भवनाथपुर से आ गये। सके हैं।
× × ×
सिर का १६ रुपये। मंजा २ रुपये।

ईंधनकी एक लकड़ी जो स्वयं प्रज्वलित नहीं हुई, ईंधनकी अन्य लकड़ियोंको प्रज्वलित कैसे कर सकती है ?

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

इति गुह्यतमं शास्त्रमिदमुक्तं मयानघ। एतद्बुद्ध्वा बुद्धिमान्स्यात्कृतकृत्यश्च भारत ॥ २० ॥

ॐ तत्सदिति श्रीमद्भगवद्गीतासूपनिषत्सु ब्रह्मविद्यायां योगशास्त्रे श्रीकृष्णार्जुनसंवादे
पुरुषोत्तमयोगो नाम पञ्चदशोऽध्यायः ॥ १५ ॥

सूर्योदय ६।१ सूर्यास्त ५।२०

iti guhyatamaṁ śāstramidamuktaṁ mayānagha।
etadbuddhvā buddhimānsyātkṛtakṛtyaśca bhārata ॥ 20 ॥

oṁ tatsaditi śrīmadbhagavadgītāsūpaniṣatsu brahmavidyāyāṁ
yogaśāstre śrīkṛṣṇārjunasaṁvāde puruṣottamayogo
nāma pañcadaśo'dhyāyaḥ ॥ 15 ॥

भा० ३ कार्तिक पं० ९ कार्तिक

आज से, जातिवादी एवं संप्रदायिक संकीर्णता के संबंध में स्वामी जी का विचार दर्शन संबंधी लेख शुरू कुछ लिखना शुरू हुआ। इस संबंध में सतत चिन्तन करते रहे। सामग्री जुटते रहे।

श्री राधेश्याम पाराडेय
Laldaugā - लाल डंगा
पो० आर्द्रा
जिला - पुरुलिया प० बंगाल (W.B.)
श्रीशिवपूजन शास्त्री
के सगे भाई - स्व० महेश पांडे - सिमरी
बकुल अंबड़ी के पास

जीवन्मुक्त वह पुरुष है जिसमें साधारण, क्षणिक उत्तेजनापूर्ण भावोंका अभाव है।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

ॐ

षोडशोऽध्यायः

श्रीभगवानुवाच

अभयं सत्त्वसंशुद्धिर्ज्ञानयोगव्यवस्थितिः। दानं दमश्च यज्ञश्च स्वाध्यायस्तप आर्जवम्॥ १॥
अहिंसा सत्यमक्रोधस्त्यागः शान्तिरपैशुनम्। दया भूतेष्वलोलुप्त्वं मार्दवं ह्रीरचापलम्॥ २॥
तेजः क्षमा धृतिः शौचमद्रोहो नातिमानिता। भवन्ति संपदं दैवीमभिजातस्य भारत॥ ३॥

सूर्योदय ६।२
सूर्यास्त ५।१९

śrībhagavānuvāca

abhayaṁ sattvasaṁśuddhirjñānayogavyavasthitiḥ।
dānaṁ damaśca yajñaśca svādhyāyastapa ārjavam॥ 1॥
ahiṁsā satyamakrodhastyāgaḥ śāntirapaiśunam।
dayā bhūteṣvaloluptvaṁ mārdavaṁ hrīracāpalam॥ 2॥
tejaḥ kṣamā dhṛtiḥ śaucamadroho nātimānitā।
bhavanti saṁpadaṁ daivīmabhijātasya bhārata॥ 3॥

भा० ४ कार्तिक
पं० १० कार्तिक

कार्तिक कृष्ण ७, वि०सं० २०५१, बुधवार, OCT.26.1994

आज प्रातः सायंकाल दोनों वेलालेकर ५ घंटे तक निबंध लिखा गया। १६ पृष्ठ तक लिखा गया। बाते बहुत ही हैं। प्रसंग जुटाकर लिखना पड़ता है।

खुदको जाने बिना दुनियाको जानना—बड़ी-से-बड़ी भूल है।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

दम्भो दर्पोऽभिमानश्च क्रोधः पारुष्यमेव च। अज्ञानं चाभिजातस्य पार्थ संपदमासुरीम् ॥ ४ ॥
दैवी संपद्विमोक्षाय निबन्धायासुरी मता। मा शुचः संपदं दैवीमभिजातोऽसि पाण्डव ॥ ५ ॥
द्वौ भूतसर्गौ लोकेऽस्मिन्दैव आसुर एव च। दैवो विस्तरशः प्रोक्त आसुरं पार्थ मे शृणु ॥ ६ ॥

सूर्योदय ६।३ सूर्यास्त ५।१८

dambho darpo'bhimānaśca krodhaḥ pāruṣyameva ca।
ajñānaṁ cābhijātasya pārtha saṁpadamāsurīm ॥ 4 ॥
daivī saṁpadvimokṣāya nibandhāyāsurī matā।
mā śucaḥ saṁpadaṁ daivīmabhijāto'si pāṇḍava ॥ 5 ॥
dvau bhūtasargau loke'smindaiva āsura eva ca।
daivo vistaraśaḥ prokta āsuraṁ pārtha me śṛṇu ॥ 6 ॥

भा० ५ कार्तिक पं० ११ कार्तिक

अहोईव्रत

आज प्रातः पल्यल लेख वाले को यहाँ गये। लेख देखा और व्यापार करते [illegible] बातें तय हुईं। दिल्ली के [illegible] को [illegible] संबंधी पत्र लिखा। [illegible] भी [illegible] लिखकर पूरा करवा दिया। [illegible] जोड़ने की बातें भी लिखकर तैयार करनी। [illegible] को [illegible] जायेगा।

जीव और परमात्मा दोनों एक हैं—इस बातको जान लेना ही ज्ञान है।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

कामामाश्रित्य दुष्पूरं दम्भमानमदान्विताः । मोहाद्गृहीत्वासदग्राहान्प्रवर्तन्तेऽशुचिव्रताः ॥ १० ॥
चिन्तामपरिमेयां च प्रलयान्तामुपाश्रिताः । कामोपभोगपरमा एतावदिति निश्चिताः ॥ ११ ॥
आशापाशशतैर्बद्धाः कामक्रोधपरायणाः । ईहन्ते कामभोगार्थमन्यायेनार्थसञ्चयान् ॥ १२ ॥

सूर्योदय ६।४ सूर्यास्त ५।१७

kāmamāśritya duspūram dambhamānamadānvitāḥ ।
mohādgṛhītvāsadgrāhānpravartante'śucivratāḥ ॥ 10 ॥
cintāmaparimeyām ca pralayāntāmupāśritāḥ ।
kāmopabhogaparamā etāvaditi niścitāḥ ॥ 11 ॥
āśāpāśaśatairbaddhāḥ kāmakrodhaparāyaṇāḥ ।
īhante kāmabhogārthamanyāyenārthasañcayān ॥ 12 ॥

भा० ७ कार्तिक पं० १३ कार्तिक

आज रात में श्री० रणजीत सिंह बहुत दिनों के बाद मेरे आफिस में आये और आंकड़ों की सूची दी। उनसे टेलीफोन पर विचार विमर्श हुआ।

मैंड्याडीह से दो आदमी पैदल - पलामू जिला परिषद के कार्यालय में दो दिनों के लिये भेजे जायेंगे। तीन दिनों के लिये जीप भेजी जायेगी। इसके लिये पत्र भी लिखा जायेगा।

साथ में हिसाब भी भेजना होगा।

आज पत्र का जवाब है - पंचायत समिति की बैठक दो दिनों के लिये स्थगित की गयी है। संशोधन के लिये - अब दो दिनों बाद बैठक होगी - आज ही पत्र भेजेंगे। सभी को बुलाया जायेगा।

कार्तिक कृष्ण ११, विक्रमसं० २०५१, रविवार, OCT. 30. 1994 [दिन ३०३
सूर्योदय ६।५ सूर्यास्त ५।१६ पं० १४ कार्तिक. भा० ८ कार्तिक

रम्भा एकादशीव्रत (स्मार्त)

आज प्रातः इलिकुवा से ईदलाल की पत्नी जी आयी थी। उनसे मेरी पत्नी के विषय में चर्चा हुई। [illegible] तथा रामकुमार के अभिभावक के संबंध में कहे हुई। [illegible] रामकुमार की संबंध में [illegible] [illegible] रामकुमार का [illegible] दोनों रामकुमार को [illegible] को [illegible] [illegible] [illegible]

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

इदमद्य मया लब्धमिमं प्राप्स्ये मनोरथम्। इदमस्तीदमपि मे भविष्यति पुनर्धनम्॥ १३॥
असौ मया हतः शत्रुर्हनिष्ये चापरानपि। ईश्वरोऽहमहं भोगी सिद्धोऽहं बलवान्सुखी॥ १४॥
आढ्योऽभिजनवानस्मि कोऽन्योऽस्ति सदृशो मया। यक्ष्ये दास्यामि मोदिष्य इत्यज्ञानविमोहिताः॥ १५॥

सूर्योदय ६।६ सूर्यास्त ५।१५

idamadya mayā labdhamimaṁ prāpsye manoratham।
idamastīdamapi me bhaviṣyati punardhanam॥ 13॥
asau mayā hataḥ śatrurhaniṣye cāparānapi।
īśvaro'hamahaṁ bhogī siddho'haṁ balavānsukhī॥ 14॥
ādhyo'bhijanavānasmi ko'nyo'sti sadṛśo mayā।
yakṣye dāsyāmi modiṣya ityajñānavimohitāḥ॥ 15॥

भा० ९ कार्तिक पं० १५ कार्तिक

रम्भा एकादशीव्रत (वैष्णव), वत्सद्वादशी

आज कई दिनों से अपने प्रियसंबंधियों के कुछ संस्मरण लिखने की प्रेरणा हो रही थी। परंतु कुछ न कुछ ऐसी परिस्थिति आती रही कि लिख नहीं सका। [illegible]

कल तुलसी पत्रिका के पुनरोदय होने उपरांत ही पुनर्यात्रा के साथ लिखने की आशा है। कल प्रातः मंगलवार आयेगा। पुनः फाइल में आयेंगे। खोजना है। लक्ष्मण के मौलिक पत्रों में खोजेंगे एवं प्रयास में लगा जाएँ। कठिन कार्य है।

परिचय के प्रसार दिसंबर-फरवरी के एक सप्ताह यहाँ जोधपुर घूमने पुलिस की कि में कि जोधपुर में और कहाँ से वापस आने से प्रेमोद से उनसे पता लगा।

कहीं की कहीं पर आने पर सिलाई के किसी संबंधी के साथ पता लगाने पर यहाँ धार्मिकों में आने। देखना है यहाँ महिलाओं के [illegible]

मैं तेरा विधवा रायबरेली पाकिस्तान का पता जानने के उपरांत रायबरेली की कि कला में आने का संबंध लिखा है। [illegible] पत्र लिखा गया। [illegible] पत्र लिखा है।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

अनेकचित्तविभ्रान्ता मोहजालसमावृताः । प्रसक्ताः कामभोगेषु पतन्ति नरकेऽशुचौ ॥ १६ ॥
आत्मसंभाविताः स्तब्धा धनमानमदान्विताः । यजन्ते नामयज्ञैस्ते दम्भेनाविधिपूर्वकम् ॥ १७ ॥
अहंकारं बलं दर्पं कामं क्रोधं च संश्रिताः । मामात्मपरदेहेषु प्रद्विषन्तोऽभ्यसूयकाः ॥ १८ ॥

सूर्योदय ६।६ सूर्यास्त ५।१५

anekacittavibhrāntā mohajālasamāvṛtāḥ ।
prasaktāḥ kāmabhogeṣu patanti narke'śucau ॥ 16 ॥
ātmasambhāvitāḥ stabdhā dhanamānamadānvitāḥ ।
yajante nāmayajñaiste dambhenāvidhipūrvakam ॥ 17 ॥
ahaṅkāraṁ balaṁ darpaṁ kāmaṁ krodhaṁ ca saṁśritāḥ ।
māmātmaparadeheṣu pradviṣanto'bhyasūyakāḥ ॥ 18 ॥

भा० १० कार्तिक पं० १६ कार्तिक

धनतेरस, धन्वन्तरि-जयन्ती, भौमप्रदोष

आज प्रातः वंशीधरजी शर्मा एवं उनके पुत्र अनिरुद्ध के यज्ञोपवीत संस्कार के उपलक्ष में उनके निवास पर पूजा थी।

भोजनोपरान्त वहाँ से चलकर लगभग ४ बजे हम लोग रेलवे फाटक पार करके आ पहुँचे। वे चतुर्वेदी परिवार धन्यवाद के पात्र हैं।

आज प्रसाद कुमार रामाज्ञा राय के आमंत्रण पर उनके घर गये और ८ बजे लौटे। वहाँ प्रतीक्षा के बाद ७५-८० वर्ष के गौतम हृदय पुरुष के दर्शन हुए। वार्तालाप हुआ।

सायंकाल श्री लक्ष्मीनारायण जी चौधरी, अध्यक्ष श्री दीनदयाल वस्त्र भण्डार, जिनके आमंत्रण पर वहाँ के लायन्स क्लब के अगले सप्ताह होने वाले अधिवेशन की तैयारी के संबंध में कुछ विचार-विमर्श हुआ।

आज मैंने सोमवार को दोपहर का भोजन संस्कृत विद्यालय में करने का निश्चय किया। उसके बाद मानस मंदिर में दर्शन करके दोनों विद्यालयों में जाकर रहूँगा। सायंकाल वहाँ से चलकर ७ बजे तक गदवे में अपने स्थान पर आ जाऊँगा।

सुखमें शक्तिका जन्म नहीं होता, वह तो चिरकालके कष्टसहनके सन्नाटेकी गहरायीमें पैदा होती है।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

तानहं द्विषतः क्रूरान्संसारेषु नराधमान्। क्षिपाम्यजस्रमशुभानासुरीष्वेव योनिषु ॥ १९ ॥
आसुरीं योनिमापन्ना मूढा जन्मनि जन्मनि। मामप्राप्यैव कौन्तेय ततो यान्त्यधमां गतिम् ॥ २० ॥
त्रिविधं नरकस्येदं द्वारं नाशनमात्मनः। कामः क्रोधस्तथा लोभस्तस्मादेतत्त्रयं त्यजेत् ॥ २१ ॥

सूर्योदय ६।७ सूर्यास्त ५।१४

tānahaṁ dviṣataḥ krūrānsaṁsāreṣu narādhamān।
kṣipāmyajasramaśubhānāsurīṣveva yoniṣu ॥ 19 ॥
āsurīṁ yonimāpannā mūḍhā janmani janmani।
māmaprāpyaiva kaunteya tato yāntyadhamāṁ gatim ॥ 20 ॥
trividhaṁ narakasyedaṁ dvāraṁ nāśanamātmanaḥ।
kāmaḥ krodhastathā lobhastasmādetattrayaṁ tyajet ॥ 21 ॥

भा० ११ कार्तिक पं० १७ कार्तिक

नरक चतुर्दशी, श्रीहनुमज्जयन्ती

अध्यक्षः ब्राह्मण का पुनर्विवाह कुरेजट प्रणाम पवित्र आत्मा-शरीर मास के बजाय घरे विषेगद। सेन्क जारमजला नहा। वे भी दिल्लीके भेजगेवाला लाख साथ्य करते हैं। ५२ बजे मोक्ष बजे लगा। दा बेज कथा [illegible] ब्राह्मण में पाण्डेके प्रतीयोगिता लज्जण अगुमोहारण अपने दामाद इंजीनियर कमलेश राय पटने उनके घोते भी साथ थे, आयेंगे; बंटेमर वाते चलेंगी। बाजेवजे के लगभग मोजनकिया। तबियत अच्छी नहीं थी। प्रमोद लाख और [illegible] मिश्र का पत्र वे नाव नीचे वाला डाकघर में रजिस्ट्रेशन करने गये। रविशंकर ने मैं दिल्ली के प्रमोद वाले पत्र में पेक्सेस लेंगे तब बकसर के पेज में उलझे लगे। मेडिकल में 'सीकिया' लगा। सिलेगा बंद था। बासुदेव कमलेश्वर - [illegible] पुस्तक की प्रति दी। जागेश्वर राय, केशवनंदन की एकदम आगमन पटने के लिये लौ गये।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

एतैर्विमुक्तः कौन्तेय तमोद्वारैस्त्रिभिर्नरः। आचरत्यात्मनः श्रेयस्ततो याति परां गतिम् ॥ २२ ॥
यः शास्त्रविधिमुत्सृज्य वर्तते कामकारतः। न स सिद्धिमवाप्नोति न सुखं न परां गतिम् ॥ २३ ॥

सूर्योदय ६।७
सूर्यास्त ५।१३

etairvimuktaḥ kaunteya tamodvāraistribhirnaraḥ।
ācaratyātmanaḥ śreyastato yāti parām gatim ॥ 22 ॥
yaḥ śāstravidhimutsṛjya vartate kāmakārataḥ।
na sa siddhimavāpnoti na sukham na parām gatim ॥ 23 ॥

भा० १२ कार्तिक
पं० १८ कार्तिक

अमावास्या, दीपावली

आज भी संस्कृत लिखता रहा। पूरा पृष्ठ लिखकर आ। आँखें बीचमें सजग हुईं नहीं पढ़ती। पाठ्यक्रम लिए पुस्तिकाओंमें उत्तरोत्तर कठिनता ही आती जाती है। कहते हैं संस्कृत और हिन्दी आँखके रहस्य उघाड़ती ही जाती हैं, मनकी कोई सहायता नहीं करते। पिताजी, पत्नी-बेटी, भाई आदि कोई भी कुछ नहीं देखते, अभिवादनमें सर झुकाकर आशीर्वाद लेते हैं, गुरुजन डाँटते हैं। दीपावली की अमावस्या की रात्रि है। प्रमोदकुमार अग्रवाल की ओर झुकते जा रहे हैं पर मेरे लिखनेमें व्यवधान नहीं करते। आलोकमें सबसे बीचका पंखा ही काम देता है, ट्यूबलाइट कबतक रहेगी आलोकित देखना।

मूर्खोंकी संगतिमें अपनी सबसे अच्छी बातें मत करो।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

तस्माच्छास्त्रं प्रमाणं ते कार्याकार्यव्यवस्थितौ । ज्ञात्वा शास्त्रविधानोक्तं कर्म कर्तुमिहार्हसि ॥ २४ ॥

ॐ तत्सदिति श्रीमद्भगवद्गीतासूपनिषत्सु ब्रह्मविद्यायां योगशास्त्रे श्रीकृष्णार्जुनसंवादे
दैवासुरसंपद्विभागयोगो नाम षोडशोऽध्यायः ॥१६॥

सूर्योदय ६।८ सूर्यास्त ५।१३

tasmācchāstraṁ pramāṇaṁ te kāryākāryavyavasthitau ।
jñātvā śāstravidhānoktaṁ karma kartumihārhasi ॥ 24 ॥

oṁ tatsaditi śrīmadbhagavadgītāsūpaniṣatsu brahmavidyāyāṁ
yogaśāstre śrīkṛṣṇārjunasaṁvāde daivāsurasampadvibhāgayogo
nāma ṣoḍaśo'dhyāyaḥ ॥ 16 ॥

भा० १३ कार्तिक पं० १९ कार्तिक

अन्नकूट, गोवर्धनपूजा

आज प्रातः भी संस्मरण के कुछ पृष्ठ लिखे। २० नवंबर भी बैठक के लिये कुछ सदस्यों को पत्र भेजा- सुरेन्द्रनाथ शर्मा, गाजीपुर, राजनीति राय, चन्द्रमणि तिवारी को। सहस्र संत था। हिमालय [illegible] को। जयपुर भी के जाने के संबंध में सूचना दी। २८ नवंबर को [illegible] के संबंध में लिखा। धर्मानुकूल सज्जन सेवक होकर भी समय के अनुसार थोड़ी काम अर्थ भी।

मन ही मनका बोधक है, मन ही मनका साधक, मन ही मनका बाधक और मन ही मनका घातक है।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

ॐ

सप्तदशोऽध्यायः

अर्जुन उवाच

ये शास्त्रविधिमुत्सृज्य यजन्ते श्रद्धयान्विताः। तेषां निष्ठा तु का कृष्ण सत्त्वमाहो रजस्तमः ॥ १ ॥

श्रीभगवानुवाच

त्रिविधा भवति श्रद्धा देहिनां सा स्वभावजा। सात्त्विकी राजसी चैव तामसी चेति तां शृणु ॥ २ ॥

सूर्योदय ६।८ सूर्यास्त ५।१२

arjuna uvāca

ye śāstravidhimutsṛjya yajante śraddhayānvitāḥ।
teṣāṁ niṣṭhā tu kā kṛṣṇa sattvamāho rajastamaḥ ॥ 1 ॥

śrībhagavānuvāca

trividhā bhavati śraddhā dehināṁ sā svabhāvajā।
sāttvikī rājasī ,caiva tāmasī ceti tāṁ śṛṇu ॥ 2 ॥

भा० १४ कार्तिक पं० २० कार्तिक

कार्तिक शुक्ल २, विक्रमसंवत् २०५१, शनिवार, NOV.5.1994
यमद्वितीया (भैयादूज)

मैं त्रिपुरारीराम, संस्थापक अध्यक्ष, स्वामी सहजानन्द सरस्वती हिन्दी समाज नामक संस्था, नई दिल्ली के स्वीकृति अनुरोधपत्र आदेश-दिनांक के अनुसार सदस्य बन गया हूँ। मेरा पता वही है जो प्रार्थना पत्र में लिखा गया है। मेरे जीवन संबंधी कुछ संस्मरण आदि भी प्रेषित करने हैं। श्री सुरेन्द्रनाथ शर्मी - गाजीपुर से अच्छे लड़के के रूप में आये और वापस चले गये।

कार्तिक शुक्ल ३, विक्रमसंवत् २०५१, रविवार, NOV. 6. 1994 [दिन ३१०
सूर्योदय ६।९ सूर्यास्त ५।११ पं० २१ कार्तिक भा० १५ कार्तिक

आज पुनः श्री सुरेन्द्रनाथ शर्मी गाजीपुर से आये थे। मनोगत कुछ बातें हुईं। रात को रुके। उन्हें आश्रम के प्रबंधादि के विषय में विभाविशेष से ज्ञात रहा।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

सत्त्वानुरूपा सर्वस्य श्रद्धा भवति भारत। श्रद्धामयोऽयं पुरुषो यो यच्छ्रद्धः स एव सः॥ ३॥
यजन्ते सात्त्विका देवान्यक्षरक्षांसि राजसाः। प्रेतान्भूतगणांश्चान्ये यजन्ते तामसा जनाः॥ ४॥
अशास्त्रविहितं घोरं तप्यन्ते ये तपो जनाः। दम्भाहंकारसंयुक्ताः कामरागबलान्विताः॥ ५॥

सूर्योदय ६।१० सूर्यास्त ५।१०

sattvānurūpā sarvasya śraddhā bhavati bhārata।
śraddhāmayo'yaṁ puruṣo yo yacchraddhaḥ sa eva saḥ॥ 3॥
yajante sāttvikā devānyakṣarakṣāṁsi rājasāḥ।
pretānbhūtagāṇaṁścānye yajante tāmasā janāḥ॥ 4॥
aśāstravihitaṁ ghoraṁ tapyante ye tapo janāḥ।
dambhāhaṅkārasaṁyuktāḥ kāmarāgabalānvitāḥ॥ 5॥

भा० १६ कार्तिक पं० २२ कार्तिक

सत्संग के बिना जो साधन है, वह साधकोंको बाँधनेवाला कठिन बन्धन है।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

कट्वम्ललवणात्युष्णातीक्ष्णरूक्षविदाहिनः । आहारा राजसस्येष्टा दुःखशोकामयप्रदाः ॥ ९ ॥
यातयामं गतरसं पूति पर्युषितं च यत् । उच्छिष्टमपि चामेध्यं भोजनं तामसप्रियम् ॥ १० ॥
अफलाकाङ्क्षिभिर्यज्ञो विधिदृष्टो य इज्यते । यष्टव्यमेवेति मनः समाधाय स सात्त्विकः ॥ ११ ॥

सूर्योदय ६।११ सूर्यास्त ५।९

kaṭvamlalavaṇātyuṣṇatīkṣṇarūkṣavidāhinaḥ ।
āhārā rājasasyeṣṭā duḥkhaśokāmayapradāḥ ॥ 9 ॥
yātayāmaṁ gatarasaṁ pūti paryuṣitaṁ ca yat ।
ucchiṣṭamapi cāmedhyaṁ bhojanaṁ tāmasapriyam ॥ 10 ॥
aphalākāṅkṣibhiryajño vidhidṛṣṭo ya ijyate ।
yaṣṭavyameveti manaḥ samādhāya sa sāttvikaḥ ॥ 11 ॥

भा० १८ कार्तिक पं० २४ कार्तिक

सूर्यषष्ठीव्रत

आज दोपहर बाद श्री हरिराम यादव की धर्मपत्नी जगदम्बा देवी का अल्पकाल का निधन हो गया। जिसका कि मुझे बहुत दुःख है और मेरे मन में उनके लिए श्रद्धा भी है, परन्तु मेरे संयम में सफलता नहीं प्राप्त हो रही है, किसी अंश में लक्ष्य नहीं पहुँच पा रहा हूँ। देह धारण का अन्त तो था, वह भी नहीं मानता। रागद्वेषादि के अतिरिक्त भी उसे स्वयं में रहने देना। कर्तव्य और मनोविज्ञान का विषय बना है। अतः उसे हटाना ही होगा। आज के दैनिक पूजन संदेश बाद अपनी व्यवहार में लिखे हैं। अब आगे सभी नहीं दे सकूँगा। कोशिश करूँगा अपने पतन का कारण किसी को शाश्वत ही पसंद है।

जो बड़ा भारी विरक्त बनता है, पर हृदयमें अधर्म, कामरत रहता है, वह भी निश्चित दुःसङ्ग है।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

अभिसंधाय तु फलं दम्भार्थमपि चैव यत्। इज्यते भरतश्रेष्ठ तं यज्ञं विद्धि राजसम्॥ १२॥
विधिहीनमसृष्टान्नं मन्त्रहीनमदक्षिणम्। श्रद्धाविरहितं यज्ञं तामसं परिचक्षते॥ १३॥
देवद्विजगुरुप्राज्ञपूजनं शौचमार्जवम्। ब्रह्मचर्यमहिंसा च शारीरं तप उच्यते॥ १४॥

सूर्योदय ६।१२ सूर्यास्त ५।८

abhisaṁdhāya tu phalaṁ dambhārthamapi caiva yat।
ijyate bharataśreṣṭha taṁ yajñaṁ viddhi rājasam॥ 12॥
vidhihīnamasṛṣṭānnaṁ mantrahīnamadakṣiṇam।
śraddhāvirahitaṁ yajñaṁ tāmasaṁ paricakṣate॥ 13॥
devadvijaguruprājñapūjanaṁ śaucamārjavam।
brahmacaryamahiṁsā ca śārīraṁ tapa ucyate॥ 14॥

भा० १९ कार्तिक पं० २५ कार्तिक

गोपाष्टमी

कल प्रभादकुमार बांहकी सूती स्वैटर वहाँ रुपये में ले आये।
आजकी गंगी भी रुपये में मिली।

जो उपकार जतानेका इच्छुक है, वह द्वार खटखटाता है, जिसमें परहितकी सहज प्रवृत्ति है उसके लिये द्वार खुला है।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

अनुद्वेगकरं वाक्यं सत्यं प्रियहितं च यत्। स्वाध्यायाभ्यसनं चैव वाङ्मयं तप उच्यते ॥ १५ ॥
मनःप्रसादः सौम्यत्वं मौनमात्मविनिग्रहः। भावसंशुद्धिरित्येतत्तपो मानसमुच्यते ॥ १६ ॥
श्रद्धया परया तप्तं तपस्तत्त्रिविधं नरैः। अफलाकाङ्क्षिभिर्युक्तैः सात्त्विकं परिचक्षते ॥ १७ ॥

सूर्योदय ६।१३
सूर्यास्त ५।८

anudvegakaraṁ vākyaṁ satyaṁ priyahitaṁ ca yat।
svādhyāyābhyasanaṁ caiva vāṅmayaṁ tapa ucyate ॥ 15॥
manaḥprasādaḥ saumyatvaṁ maunamātmavinigrahaḥ।
bhāvasaṁśuddhirityetattapo mānasamucyate ॥ 16॥
śraddhayā parayā taptaṁ tapastattrividhaṁ naraiḥ।
aphalākāṅkṣibhiryuktaiḥ sāttvikaṁ paricakṣate ॥ 17॥

भा॰ २० कार्तिक
पं॰ २६ कार्तिक

अक्षयनवमी

आज प्रो॰ एम॰ सिंह के राज में शाम को मुझे लगातार, चुने हुए ही दर्द में ज्वलन उसी लिंग पक्षर तथा, मिनली आवाज़ें, शरीर से पसीना चलने लगा। बहुत बेचैनी, घबराहट आने लगे थी। पुरुष दर्द में मानसिक तुंग-भेदु जलन का दर्द सा भी।

विश्वनाथ राय: नई दिल्ली के एक मनोवैज्ञानिक संस्थान में मरीजों की सेवा किए तथा पूरी प्रेक्षित लोगों के बहुत से की भी चर्चा की।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

अ० १७] कार्तिक शुक्ल १०, वि०सं० २०५१, शनिवार, NOV. 12. 1994 [दिन ३१६

सत्कारमानपूजार्थं तपो दम्भेन चैव यत्। क्रियते तदिह प्रोक्तं राजसं चलमध्रुवम्॥ १८॥
मूढग्राहेणात्मनो यत्पीडया क्रियते तपः। परस्योत्सादनार्थं वा तत्तामसमुदाहृतम्॥ १९॥
दातव्यमिति यद्दानं दीयतेऽनुपकारिणे। देशे काले च पात्रे च तद्दानं सात्त्विकं स्मृतम्॥ २०॥

सूर्योदय ६।१३ सूर्यास्त ५।७

satkāramānapūjārthaṁ tapo dambhena caiva yat।
kriyate tadiha proktaṁ rājasaṁ calamadhruvam॥ 18॥
mūḍhagrāheṇātmano yatpīḍayā kriyate tapaḥ।
parasyotsādanārthaṁ vā tattāmasamudāhṛtam॥ 19॥
dātavyamiti yaddānaṁ dīyate'nupakāriṇe।
deśe kāle ca pātre ca taddānaṁ sāttvikaṁ smṛtam॥ 20॥

भा० २१ कार्तिक पं० २७ कार्तिक

आज भी कुछ लिखने में मन नहीं लग रहा है। शरीर तो बिल्कुल ही साथ नहीं दे रहा है। उसे संतोष तथा अनुशासित करके अभीष्ट की ओर लगाना होगा। प्रमाद वश यह क्रम कभी न टूटे, इसका ध्यान रखना होगा।

जन लोगों में से किसी से कुछ भी सहयोग प्राप्त नहीं है। आज दिल्ली में मेरा जन्मदिन मनाया जा रहा है। मैं अकेला ही हूँ। [illegible]

आज का दिन [illegible] से आरम्भ हुआ। कार्यक्रम में निम्नलिखित कार्य करने हैं →

कार्तिक शुक्ल ११, वि०सं० २०५१, रविवार, NOV. 13. 1994 [दिन ३१७

सूर्योदय ६।१४ सूर्यास्त ५।७ पं० २८ कार्तिक भा० २२ कार्तिक

(प्रबोधिनी एकादशीव्रत)

आज [illegible] के लिये। अकस्मात [illegible] के [illegible] मध्यान्ह [illegible] मध्यान्ह [illegible] [illegible] [illegible]

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

यत्तु प्रत्युपकारार्थं फलमुद्दिश्य वा पुनः। दीयते च परिक्लिष्टं तद्दानं राजसं स्मृतम्॥ २१॥
अदेशकाले यद्दानमपात्रेभ्यश्च दीयते। असत्कृतमवज्ञातं तत्तामसमुदाहृतम्॥ २२॥
ॐ तत्सदिति निर्देशो ब्रह्मणस्त्रिविधः स्मृतः। ब्राह्मणास्तेन वेदाश्च यज्ञाश्च विहिताः पुरा॥ २३॥

सूर्योदय ६।१४ सूर्यास्त ५।६

yattu pratyupakārārthaṁ phalamuddiśya vā punaḥ।
dīyate ca parikliṣṭaṁ taddānaṁ rājasaṁ smṛtam॥ 21॥
adeśakāle yaddānamapātrebhyaśca dīyate।
asatkṛtamavajñātaṁ tattāmasamudāhṛtam॥ 22॥
oṁ tatsaditi nirdeśo brahmaṇastrividhaḥ smṛtaḥ।
brāhmaṇāstena vedāśca yajñāśca vihitāḥ purā॥ 23॥

भा० २३ कार्तिक पं० २९ कार्तिक

आज भी शिवपूजन शास्त्री के भाई राधेश्याम
आये [illegible] पूजन किया। [illegible]
[illegible] दिया [illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]

बदलेकी भावना आध्यात्मिक आत्म-हत्या है।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

तस्मादोमित्युदाहृत्य यज्ञदानतपःक्रियाः । प्रवर्तन्ते विधानोक्ताः सततं ब्रह्मवादिनाम् ॥ २४ ॥
तदित्यनभिसंधाय फलं यज्ञतपःक्रियाः । दानक्रियाश्च विविधाः क्रियन्ते मोक्षकाङ्क्षिभिः ॥ २५ ॥
सद्भावे साधुभावे च सदित्येतत्प्रयुज्यते । प्रशस्ते कर्मणि तथा सच्छब्दः पार्थ युज्यते ॥ २६ ॥

सूर्योदय ६।१५ सूर्यास्त ५।६

tasmādomityudāhṛtya yajñadānatapaḥkriyāḥ ।
pravartante vidhānoktāḥ satatam brahmavādinām ॥ 24 ॥
tadityanabhisāmdhāya phalam yajñatapaḥkriyāḥ ।
dānakriyāśca vividhāḥ kriyante mokṣakāṅkṣibhiḥ ॥ 25 ॥
sadbhāve sādhubhāve ca sadityetatprayujyate ।
praśaste karmaṇi tathā sacchabdaḥ pārtha yujyate ॥ 26 ॥

भा० २४ कार्तिक पं० ३० कार्तिक

भौमप्रदोष

आज प्रातःकाल उठते, उनके पुत्र उन्हें बाहर दीवानखाने में
ले गए और वहाँ उन्होंने स्वयं प्रेमकुमार को लाल सेब
देकर मिठाई के लिए ललचाकर बारंबार चुंबन किया। उन्होंने
बड़ी सहजता पूर्वक देखकर वरदाक्ष मोक्षकामी और गोलोकाभि
लाषी दीखते हैं। दोनों कार्यकारण अन्वेषण करने में तत्पर दीख
पड़ते हैं और देखकर औत्सुक्यता उत्पन्न होती है। तथा
आधे घंटे तो श्रवण की सांगिक एकाग्रता हुए
समाप्त हो जायगा। फिर तो नहीं देंगे।
आज कल ही फलदेंगे। फाल्गुन में।
फलश्रुति के पढ़ते पढ़ते श्रोताओं के चित्तवृत्ति को देखकर
पुस्तक के भीतर पत्रों को कल पर जायेंगे। पुस्तक
पुरश्चरण प्रकार आगे और इतना नहीं पाठ पूरी होने पर
गोलोकारोहण क्रम एवं देवों के पुष्पवर्षण होंगे।
इन पाठों के फलों को कल पर रख दूँ। इसका रहस्य है।
क्योंकि पढ़ा ले मुख्य मतलबी नहीं। अब कुछ ईश्वर है।

पाप और पारा कोई पचा नहीं सकता है।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

यज्ञे तपसि दाने च स्थितिः सदिति चोच्यते। कर्म चैव तदर्थीयं सदित्येवाभिधीयते ॥ २७ ॥
अश्रद्धया हुतं दत्तं तपस्तप्तं कृतं च यत्। असदित्युच्यते पार्थ न च तत्प्रेत्य नो इह ॥ २८ ॥

ॐ तत्सदिति श्रीमद्भगवद्गीतासूपनिषत्सु ब्रह्मविद्यायां योगशास्त्रे श्रीकृष्णार्जुनसंवादे
श्रद्धात्रयविभागयोगो नाम सप्तदशोऽध्यायः ॥ १७ ॥

सूर्योदय ६।१६
सूर्यास्त ५।६

yajñe tapasi dāne ca sthitiḥ saditi cocyate।
karma caiva tadarthīyaṁ sadityevābhidhīyate ॥ 27 ॥
aśraddhayā hutaṁ dattaṁ tapastaptaṁ kṛtaṁ ca yat।
asadityucyate pārtha na ca tatpretya no iha ॥ 28 ॥
oṁ tatsaditi śrīmadbhagavadgītāsūpaniṣatsu brahmavidyāyāṁ
yogaśāstre śrīkṛṣṇārjunasaṁvāde śraddhātrayavibhāgayogo
nāma saptadaśo'dhyāyaḥ ॥ 17 ॥

भा० २५
कार्तिक
पं० १
मार्गशीर्ष

"मैं जीवन संघर्ष में [illegible] लिखा है। [illegible] कब [illegible] तक [illegible] पुनः एकपक्ष [illegible] प्रयोक्ता [illegible] [illegible] प्रयोक्ता [illegible] [illegible] [illegible]

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

शरीरवाङ्मनोभिर्यत्कर्म प्रारभते नरः। न्याय्यं वा विपरीतं वा पञ्चैते तस्य हेतवः ॥ १५ ॥
तत्रैवं सति कर्तारमात्मानं केवलं तु यः। पश्यत्यकृतबुद्धित्वान्न स पश्यति दुर्मतिः ॥ १६ ॥

सूर्योदय ६।२३ सूर्यास्त ५।३

śarīravāṅmanobhiryatkarma prārabhate naraḥ।
nyāyyaṁ vā viparītaṁ vā pañcaite tasya hetavaḥ ॥ 15 ॥
tatraivaṁ sati kartāramātmānaṁ kevalaṁ tu yaḥ।
paśyatyakṛtabuddhitvānna sa paśyati durmatiḥ ॥ 16 ॥

भा॰ ४ मार्गशीर्ष पं॰ १० मार्गशीर्ष

स्व० श्री तीर्थराज तिवारी
|
स्व० बंशनारायण तिवारी
|
श्री स्वदेश बिहारी तिवारी
धर्मपत्नी श्रीमती शकुन्तला तिवारी
ग्राम - बरवा -
पोस्ट मेहनाजपुर
जिला आजमगढ़

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

नियतं सङ्गरहितमरागद्वेषतः कृतम्। अफलप्रेप्सुना कर्म यत्तत्सात्त्विकमुच्यते ॥ २३ ॥
यत्तु कामेप्सुना कर्म साहंकारेण वा पुनः। क्रियते बहुलायासं तद्राजसमुदाहृतम् ॥ २४ ॥

सूर्योदय ६।२७ सूर्यास्त ५।३

niyatam saṅgarahitamarāgadveṣataḥ kṛtam।
aphalaprepsunā karma yattatsāttvikamucyate ॥ 23 ॥
yattu kāmepsunā karma sāhaṅkāreṇa vā punaḥ।
kriyate bahulāyāsam tadrājasamudāhṛtam ॥ 24 ॥

भा॰ ९ मार्गशीर्ष पं॰ १५ मार्गशीर्ष

प्रदोषव्रत

प॰ शिंकर को मेरी आंख का ऑपरेशन होगा। १२०० तक के अनुष्ठान होंगे। उन का काम कर दिये जाएंगे।
बुध को ५० तक के अनुष्ठान का वर्कर भाग लौटकर मैना गया। चावल मेरठ के एवं है। धोती भी भेजी गयी है। पीतल - तूना आंवलखेड़ा को, अश्वत्थ का बच्चा पं॰ ऋषिदेव शरण मंगलपुरी को भेजेंगे।

श्री प्रभुनारायण सिंह - महामात्य को आंख के ऑपरेशन की सूचना दे दी गयी। साथ ही सभी इच्छुकों को भी सूचना दी गयी कि इनकी व्यवस्था नहीं करेंगे। क्योंकि संन्यास दीक्षा की विधि-प्रक्रिया पूरे एक सप्ताह चलती है। प॰ जी की आंख के ऑपरेशन के कारण - दुर्गमिधीक्षित विधिवत् ही अधिकांश को दिक्षा प्रदान करेंगे।

अनजान होना इतने शर्मकी बात नहीं, जितना सीखनेके लिये तैयार न होना।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

अनुबन्धं क्षयं हिंसामनवेक्ष्य च पौरुषम्। मोहादारभ्यते कर्म यत्तत्तामसमुच्यते ॥२५॥
मुक्तसङ्गोऽनहंवादी धृत्युत्साहसमन्वितः। सिद्ध्यसिद्ध्योर्निर्विकारः कर्ता सात्त्विक उच्यते ॥२६॥

सूर्योदय ६।२८ सूर्यास्त ५।३

anubandhaṁ kṣayaṁ hiṁsāmanavekṣya ca pauruṣam।
mohādārabhyate karma yattattāmasamucyate ॥ 25 ॥
muktasaṅgo'nahaṁvādī dhṛtyutsāhasamanvitaḥ।
siddhyasiddhyornirvikāraḥ kartā sāttvika ucyate ॥ 26 ॥

भा० १०
मार्गशीर्ष
पं० १६
मार्गशीर्ष

आज दिल्ली से त्रिपुरारि राय का फोन प्राप्त हुआ कि आपको १७ दिसंबर को सभी एडाजेंसी सरस्वती सिन्हा स्मृति पुरस्कार एवं प्रशस्ति पत्र हेतु आपको दिल्ली में समारोह में सम्मान किया जायेगा। मैं ने उन्हें यथोचित उत्तर भेज दिया। सम्मान की राशि है वह चेक द्वारा भेजा जायेगा। यात्रा की व्यवस्था की उन्होंने कहा उत्तर भेजा गया। उनके लिखे पुस्तकों के प्राप्ति की सूचना दी गयी। बधाई भी दी गयी। कोई भी दुर्भावना नहीं भेजा। यात्रिक मार्ग का अंश। अब यहाँ से आगे के लिखेंगे।

धीरेन्द्र बच्चन जी का फोन आया कि मध्यप्रदेश से आयेंगे तो वह भी अवश्य यहाँ जरूर आयेंगे। यह सम्मान का विषय है।

याद रखना है तो दूसरोंके उपकारको याद रखो ।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

यया धर्ममधर्मं च कार्यं चाकार्यमेव च। अयथावत्प्रजानाति बुद्धिः सा पार्थ राजसी ॥ ३१ ॥
अधर्मं धर्ममिति या मन्यते तमसावृता। सर्वार्थान्विपरीतांश्च बुद्धिः सा पार्थ तामसी ॥ ३२ ॥

सूर्योदय ६।३१ सूर्यास्त ५।३

yayā dharmamadharmaṁ ca kāryaṁ cākāryameva ca।
ayathāvatprajānāti buddhiḥ sā pārtha rājasī ॥ 31 ॥
adharmaṁ dharmamiti yā manyate tamasāvṛtā।
sarvārthānviparītāṁśca buddhiḥ sā pārtha tāmasī ॥ 32 ॥

भा० १४ मार्गशीर्ष पं० २० मार्गशीर्ष

आज प्रातः परमहंस शर्मा करहरी की संन्यासदीक्षा का कार्य संपन्न करने के प्रथम दिन का कार्यक्रम प्रारंभ हुआ। दशविध स्नान और प्रधानसंकल्प का कार्य प्रणोदकुमार दीक्षित ने पूरा कराया।

स्वामी हरिदक्षिणाजी भोजनोपरान्त महामलपुर वापस गये। संध्याकाल में पं. रामसिंहासन शर्मा जी आये हैं।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

धृत्या यया धारयते मनःप्राणेन्द्रियक्रियाः। योगेनाव्यभिचारिण्या धृतिः सा पार्थ सात्त्विकी ॥ ३३ ॥
यया तु धर्मकामार्थान्धृत्या धारयतेऽर्जुन। प्रसङ्गेन फलाकाङ्क्षी धृतिः सा पार्थ राजसी ॥ ३४ ॥

सूर्योदय ६।३२ सूर्यास्त ५।३

dhṛtyā yayā dhārayate manaḥprāṇendriyakriyāṇ।
yogenāvyabhicāriṇyā dhṛtiḥ sā pārtha sāttvikī ॥ 33 ॥
yayā tu dharmakāmārthāndhṛtyā dhārayate'rjuna।
prasaṅgena phalākāṅkṣī dhṛtiḥ sā pārtha rājasī ॥ 34 ॥

भा० १५ मार्गशीर्ष पं० २१ मार्गशीर्ष

आज दीक्षा कार्यक्रम का द्वितीय दिन था। अग्नि स्थापन
रात्रि जागरण तथा अन्यान्य कार्य हुए। रात में स्वामी
हरिदेवीनाथ वहां के कुछ सहायकों के साथ आ गये।
गड़ेरियों की सहानुभूति सहयोग मंत्री सहआई तथा
वे सक्रिय हैं। फटका के राघव शर्मा भी आये हैं।

जीते जी कौन मर चुका है ? उद्यमहीन।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

यया स्वप्नं भयं शोकं विषादं मदमेव च। न विमुञ्चति दुर्मेधा धृतिः सा पार्थ तामसी ॥ ३५ ॥
सुखं त्विदानीं त्रिविधं शृणु मे भरतर्षभ। अभ्यासाद्रमते यत्र दुःखान्तं च निगच्छति ॥ ३६ ॥

सूर्योदय ६।३२ सूर्यास्त ५।३

yayā svapnam bhayam śokam viṣādam madameva ca।
na vimuñcati durmedhā dhṛtiḥ sā pārtha tāmasī ॥ 35 ॥
sukham tvidānīm trividham śṛṇu me bharatarṣabha।
abhyāsādramate yatra duḥkhāntam ca nigacchati ॥ 36 ॥

भा० १६ मार्गशीर्ष पं० २२ मार्गशीर्ष

श्रीराम-विवाह

आज संन्यास-दीक्षा का अंतिम संस्कार संपन्न हुआ। अंजली घाट पर गंगा में दीक्षा दी गयी गयी। पिंडदान किया। अग्नि को समर्पित किया। राम नवमी का दिन था। राम जन्म का दिन था। कल्याण का दिन भी आ गया है।

उन्हें मोक्ष मिला— स्वामी परमप्रकाशानंद जरस्वती महाराज। दाह संस्कार के बाद अग्नि को समर्पित किया गया। भोजन का राघवेन्द्र कीर्तन भी आयोजित है। आज लगातार तीसरा पर्व का दिन है। भोजन भी तीन हुआ। लिखना लिखा गया।

स्वामी हरिकृष्णानंद जी ने मनोनुकूल पाठ किया। उन्हें दिया उनकी कल्पना किया। (मेरा भी दही कांजीवरम। दक्षिणा भी अच्छा उनको देखकर दी। किसी पंथ के मोह के कारण मदद की।

ईर्ष्यालु लोग औरोंके लिये कष्टकर हैं, मगर स्वयं अपने लिये महादुःखदायक।

श्री स्वामी परमप्रकाशानंद जरस्वती महाराज की जय हो।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

यत्तदग्रे विषमिव परिणामेऽमृतोपमम्। तत्सुखं सात्त्विकं प्रोक्तमात्मबुद्धिप्रसादजम् ॥ ३७ ॥
विषयेन्द्रियसंयोगाद्यत्तदग्रेऽमृतोपमम् । परिणामे विषमिव तत्सुखं राजसं स्मृतम् ॥ ३८ ॥

सूर्योदय ६।३३ सूर्यास्त ५।३

yattadagre viṣamiva pariṇāme'mṛtopamam।
tatsukhaṁ sāttvikaṁ proktamātmabuddhiprasādajam ॥ 37 ॥
viṣayendriyasaṁyogādyattadagre'mṛtopamam ।
pariṇāme viṣamiva tatsukhaṁ rājasaṁ smṛtam ॥ 38 ॥

भा० १७ मार्गशीर्ष पं० २३ मार्गशीर्ष

आज प्रातः प्रभादत्त का लाए देखिये का समाचार बथा योगाश्रम दैनिक पत्र पढ़कर सोनम् अथकलाए क्रेने को आये।

श्रीरंगनाथम का सौवेल्लमाम महिमाके मंदिरके कामों- पत्रादेज भी लाये। योगाश्रम के कोलि कोलिकलीगल को-विधायक का चलिमिला चुनाव राय कला मादास के लिए है। आलतीमोहला गया इसके लिए के सोनेवलाने मंदिर के मुख्य संस्थापक-अधिकारी के लाभार्थ गोलियां मारकर गये। इसकी इत्यादि मनने मारे गये। मध्यमके लिये तोमर एवं आंवलका एक कहे। सभाके राम उपस्थित गणेशन और वरिष्ठ कोष्ठकों की दृष्टि सुबह सभाके अवलोकन और पुरुष का बोलके है। रामानुजी को ये किसे

~~भगवान् से योगेश्वर के का इरादा किसे।~~

जिस सभ्यताकी स्प्रिट् (Sprit) स्वार्थ हो, वह सभ्यता नहीं है; संसारके लिये अभिशाप है और समाजके लिये विपत्ति।

आकर पढ़ेंगे किया गया। मेरे लिखनी दोकिये भगवद्गीता उसको भेजकिया है, गीतावाद की। आज अधिवक्ता पिटे को इस

Rajkumar Mishra, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

यदग्रे चानुबन्धे च सुखं मोहनमात्मनः। निद्रालस्यप्रमादोत्थं तत्तामसमुदाहृतम्॥ ३९॥
न तदस्ति पृथिव्यां वा दिवि देवेषु वा पुनः। सत्त्वं प्रकृतिजैर्मुक्तं यदेभिः स्यात्त्रिभिर्गुणैः॥ ४०॥

सूर्योदय ६।३३ सूर्यास्त ५।३

yadagre cānubandhe ca sukhaṁ mohanamātmanaḥ।
nidrālasyapramādotthaṁ tattāmasamudāhṛtam॥ 39॥
na tadasti pṛthivyāṁ vā divi deveṣu vā punaḥ।
sattvaṁ prakṛtijairmuktaṁ yadebhiḥ syāttribhirguṇaiḥ॥ 40॥

भा० १८ मार्गशीर्ष पं० २४ मार्गशीर्ष

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

अ० १८] मार्गशीर्ष शुक्ल ८, वि० सं० २०५१, शनिवार, DEC. 10. 1994 [दिन ३४४

ब्राह्मणक्षत्रियविशां शूद्राणां च परंतप। कर्माणि प्रविभक्तानि स्वभावप्रभवैर्गुणैः ॥ ४१ ॥
शमो दमस्तपः शौचं क्षान्तिरार्जवमेव च। ज्ञानं विज्ञानमास्तिक्यं ब्रह्मकर्म स्वभावजम् ॥ ४२ ॥

सूर्योदय ६। ३४ सूर्यास्त ५। ३

brāhmaṇakṣatriyaviśāṁ śūdrāṇāṁ ca paraṁtapa।
karmāṇi pravibhaktāni svabhāvaprabhavairguṇaiḥ ॥ 41 ॥
śamo damastapaḥ śaucaṁ kṣāntirārjavameva ca।
jñānaṁ vijñānamāstikyaṁ brahmakarma svabhāvajam ॥ 42 ॥

भा० १९ मार्गशीर्ष पं० २५ मार्गशीर्ष

कर्नाटक एवं आंध्र में सत्तारूढ़ कांग्रेस की पराजय कांग्रेस के पतन का द्योतक है।

मार्गशीर्ष शुक्ल ९, वि०सं० २०५१, रविवार, DEC. 11. 1994 [दिन ३४५

सूर्योदय ६। ३५ सूर्यास्त ५। ३ पं० २६ मार्गशीर्ष भा० २० मार्गशीर्ष

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

इदं ते नातपस्काय नाभक्ताय कदाचन। न चाशुश्रूषवे वाच्यं न च मां योऽभ्यसूयति ॥ ६७ ॥
य इमं परमं गुह्यं मद्भक्तेष्वभिधास्यति। भक्तिं मयि परां कृत्वा मामेवैष्यत्यसंशयः ॥ ६८ ॥

सूर्योदय ६।४३ सूर्यास्त ५।१०

idaṁ te nātapaskāya nābhaktāya kadācana।
na cāśuśrūṣave vācyaṁ na ca māṁ yo'bhyasūyati ॥ 67 ॥
ya imaṁ paramaṁ guhyaṁ madbhakteṣvabhidhāsyati।
bhaktiṁ mayi parāṁ kṛtvā māmevaiṣyatyasaṁśayaḥ ॥ 68 ॥

भा॰ ५ पौष पं॰ १२ पौष

आचार्य तारिणीश झा
आवास विकास कालोनी - 3
आवास संख्या 3/433 L9G
झूंसी - इलाहाबाद
पिन - 221506

विक्रम ठाकुर
आवास संख्या F N "282
सी॰ सी॰ एल॰ कालोनी
(पी॰ टी॰ पी॰ एस पतरातू)
हजारी बाग
पिन ~~82~~0019
829119

जैसे हम द्वेषसे जगत्को नरक सदृश बनाते हैं, ऐसे ही प्रेमसे उसे स्वर्गके समान भी बना सकते हैं।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

श्रद्धावाननसूयश्च शृणुयादपि यो नरः। सोऽपि मुक्तः शुभाँल्लोकान्प्राप्नुयात्पुण्यकर्मणाम् ॥ ७१ ॥
कच्चिदेतच्छ्रुतं पार्थ त्वयैकाग्रेण चेतसा। कच्चिदज्ञानसंमोहः प्रनष्टस्ते धनंजय ॥ ७२ ॥

सूर्योदय ६।४४ सूर्यास्त ५।११

śraddhāvānanasūyaśca śṛṇuyādapi yo naraḥ।
so'pi muktaḥ śubhāṁllokānprāpnuyātpuṇyakarmaṇām ॥ 71 ॥
kaccidetacchrutaṁ pārtha tvayaikāgreṇa cetasā।
kaccidajñānasaṁmohaḥ pranaṣṭaste dhanañjaya ॥ 72 ॥

भा० ७ पौष पं० १४ पौष

सफला एकादशीव्रत

Sarb Daman Rai
Priepal
At — Ujjar
P.O. — Karantadih
DSH — Ballia.

Sant. Binoro He Sopah
(Dohariyat)
Man

जो किसीको दुःखमें देखकर उसपर दया नहीं करता, वह ईश्वरके कोपका पात्र होता है।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

अर्जुन उवाच

नष्टो मोहः स्मृतिर्लब्धा त्वत्प्रसादान्मयाच्युत। स्थितोऽस्मि गतसन्देहः करिष्ये वचनं तव ॥ ७३ ॥

संजय उवाच

इत्यहं वासुदेवस्य पार्थस्य च महात्मनः। संवादमिममश्रौषमद्भुतं रोमहर्षणम् ॥ ७४ ॥

सूर्योदय ६। ४५ सूर्यास्त ५। १२

arjuna uvāca

naṣṭo mohaḥ smṛtirlabdhā tvatprasādānmayācyuta।
sthito'smi gatasandehaḥ kariṣye vacanaṁ tava ॥ 73 ॥

sañjaya uvāca

ityahaṁ vāsudevasya pārthasya ca mahātmanaḥ।
saṁvādamimamaśrauṣamadbhutaṁ romaharṣaṇam ॥ 74 ॥

भा० ८ पौष पं० १५ पौष

B. P. Singh
Shankar Bhawan
Civil Lines, Sasaram
821115
Rohtas (Bihar)

शत्रुसे भी प्रेम रखो, दान अथवा शुभ कर्ममें फलकी कामना न करो; तभी प्रभु प्रसन्न होगा।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

व्यासप्रसादाच्छ्रुतवानेतद्गुह्यमहं परम्। योगं योगेश्वरात्कृष्णात्साक्षात्कथयतः स्वयम् ॥ ७५ ॥
राजन्संस्मृत्य संस्मृत्य संवादमिममद्भुतम्। केशवार्जुनयोः पुण्यं हृष्यामि च मुहुर्मुहुः ॥ ७६ ॥

सूर्योदय ६।४५ सूर्यास्त ५।१२

vyāsaprasādācchrutavānetadguhyamahaṁ param।
yogaṁ yogeśvarātkṛṣṇātsākṣātkathayataḥ svayam ॥ 75 ॥
rājansaṁsmṛtya saṁsmṛtya saṁvādamimamadbhutam।
keśavārjunayoḥ puṇyaṁ hṛṣyāmi ca muhurmuhuḥ ॥ 76 ॥

भा० ९ पौष पं० १६ पौष

प्रदोषव्रत

महाभारत (भीष्मपर्व)
पठकाः पाठकाश्चैव - - - सर्वे - - चिन्तकाः।
सर्वे व्यसिनो मूर्खाः

जिनका जीवनाधार ईश्वर नहीं है वे मर्त्य हैं और जिनके जीवनका आधार ईश्वर है वे अमर हैं।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

श्री हरिकृष्ण ठाकुर (पटना) 650045 - कोड 0612
सरस्वती सदन
रोड नं० - 12,
पटना - 16

॥ श्रीहरिः ॥

आरती

जय भगवद्गीते, जय भगवद्गीते ।
हरि-हिय-कमल-विहारिणि, सुन्दर सुपुनीते ॥
कर्म-सुमर्म-प्रकाशिनि, कामासक्ति हरा ।
तत्त्वज्ञान-विकाशिनि, विद्या ब्रह्म परा ॥ जय०
निश्चल-भक्ति-विधायिनि, निर्मल, मलहारी ।
शरण-रहस्य-प्रदायिनि, सब विधि सुखकारी ॥ जय०
राग-द्वेष-विदारिणि, कारिणि मोद सदा ।
भव-भय-हारिणि, तारिणि, परमानन्दप्रदा ॥ जय०
आसुर भाव-विनाशिनि, नाशिनि तम-रजनी ।
दैवी सद्गुणदायिनि, हरि-रसिका सजनी ॥ जय०
समता-त्याग सिखावनि, हरि-मुखकी बानी ।
सकल शास्त्रकी स्वामिनि, श्रुतियोंकी रानी ॥ जय०
दया-सुधा बरसावनि मातु ! कृपा कीजै ।
हरि-पद-प्रेम दान कर अपनो कर लीजै ॥ जय०

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

इन्द्रजीत शर्मा,
२७/४ आर्मेनियन स्ट्रीट, कलकत्ता
(झगड़ा-कोठी) (प० बं०)

डा० स्वामीनाथ तिवारी, विधायक
आर० ब्लाक, रोड न० ६
फ्लैट - न० २ पटना, बिहार
दूरभाष — २२६१९६.

श्री केलाशपति मिश्र,
वीरचन्द्र पटेल मार्ग,
क्वार्टर न० ४
भा० ज० पार्टी कार्यालय

श्री सीताराम शर्मा, ग्राम - वीरनचक
पो० - फरीदपुर 801113.
via. नेऊरा जि० पटना

श्री लेनी माधवदास, जी, महंथ,
श्री खाकी बाबा का मंदिर,
भिवानी हरियाणा.

श्री दिनेशकुमार पाराडेय
क्वार्टर न० ४४९, सेक्टर III B.
बोकारो - स्टील सिटी.

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

स्मरण-पत्र

डा० रामकरण शर्मा, ६३, विज्ञानविहार
दिल्ली - 110092.

श्री महेश पाराडेय, रोड नं० 16, ई 4 1.9
टेल्को - कॉलोनी.
जमसेदपुर - 831004. बिहार

डा० शान्ति ओझा, पुस्तकालय अधीक्षक
श्री सिनहा-लाइब्रेरी-कैम्पस
श्री तारकेश्वर सिंह - एकाउन्टेन्ट, (बरिकल्याणपुर)
श्री रामप्रवेश शास्त्री, बी. 1299
इन्दिरानगर कॉलोनी
लखनऊ.

श्री कैलाश पाराडेय

श्री सुरेन्द्रनाथ राय,
सेक्टर ~~[illegible]~~ 4F
4, एफ क्वार्टर - 3141.
बोकारो स्टील सिटी.
पिन - 827004 बोकारो

श्री हरिकृष्ण ठाकुर
सरस्वती सदन, रोड नं० 12
राजेन्द्र नगर - पटना - 16

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

डॉ० प्रभु नारायण विद्याधी
अपर समाहर्ता सह विशेष कार्य पद 10
A-6 अशोकपुरी, खजपुरा,
बेलीरोड, पटना-14

जगमोहन राय (मोहन बिला)
पहाड़िया चौरहा से
बाईं तरफ रमरेपुर रोड पर
करीब २५० गज आगे।

स्वामी विद्यानन्द गिरिजी
श्री कैलास आश्रम, कैलास गेट,
ऋषिकेश (उ० प्र०) पिन २४९२०१
फोन नं० ३०५९८

D.P. SINHA.
TIRTHANKAR DESIGN.
111 A. ASHINA PLAZA
BUDH-MARG.
PatNa. 800001

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE Grant-2

डॉ० शान्ती आम्भा
पुस्तकालय अधीक्षिका बिहार
सिंहा लाइब्रेरी कैम्पस (पटना)
तारकेश्वर सिंह
एकाउन्टेन्ट
वरन्तियार पुर

सं० २०५० पौषसे सं० २०५१ ज्येष्ठ (२९ दिसम्बर १९९३ से

सं० २०५० पौष	तिथि	कृ.१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१४	३०	×
	वार	बु.	बृ.	शु.	श.	रवि.	चं.	मं.	बु.	बृ.	शु.	श.	रवि.	चं.	मं.	×
	घटी	५३	५१	४९	४५	४१	३५	३०	२४	१८	१२	७	२	५५	५३	×
	नक्षत्र	आर्द्रा	पुन.	पुष्य	श्ले.	मघा	पू.फा.	उ.फा.	ह.	चि.	स्वा.	अनु.	ज्ये.	मूल	पू.षा.	×
	घटी	२४	२५	२४	२३	२०	१७	१३	९	५	१	५४	५१	४९	४९	×
	दिस./जन.	२९	३०	३१	ज.१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	×
सं० २०५० माघ	तिथि	कृ.१	२	३	४	५	६	८	९	१०	११	१२	१३	१४	३०	×
	वार	शु.	श.	रवि.	चं.	मं.	बु.	बृ.	शु.	श.	रवि.	चं.	मं.	बु.	बृ.	×
	घटी	२७	२४	१९	१४	८	२	५१	४५	४१	३७	३३	३१	३०	३१	×
	नक्षत्र	श्ले.	मघा	पू.फा.	उ.फा.	ह.	चि.	स्वा.	वि.	अनु.	ज्ये.	मू.	पू.षा.	उ.षा.	श्र.	×
	घटी	४३	४०	३७	३४	३०	२६	२१	१८	१४	११	१०	९	९	१०	×
	जन./फर.	२८	२९	३०	३१	फ.१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	×
सं० २०५० फाल्गुन	तिथि	कृ.२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	३०	×
	वार	रवि.	चं.	मं.	बु.	बृ.	शु.	श.	रवि.	चं.	मं.	बु.	बृ.	शु.	श.	×
	घटी	५१	४६	४०	३४	२८	२३	१८	१४	११	९	८	८	१०	१३	×
	नक्षत्र	उ.फा.	ह.	चि.	स्वा.	वि.	अनु.	ज्ये.	मू.	पू.षा.	उ.षा.	श्र.	धनि.	शत.	पू.भा.	×
	घटी	५५	५१	४७	४२	३८	३३	३२	३०	२९	२९	३०	३२	३६	४२	×
	फर./मार्च	२७	२८	मा.१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	×
सं० २०५०-५१ चैत्र	तिथि	कृ.१	२	३	४	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	३०	×
	वार	चं.	मं.	बु.	बृ.	शु.	श.	रवि.	चं.	मं.	बु.	बृ.	शु.	श.	रवि.	×
	घटी	२२	१६	१०	४	५४	५०	४६	४४	४३	४४	४६	४८	५२	५७	×
	नक्षत्र	ह.	चि.	स्वा.	वि.	ज्ये.	मू.	पू.षा.	उ.षा.	श्र.	ध.	शत.	पू.भा.	पू.भा.	उ.भा.	×
	घटी	१२	८	४	०	५३	५१	४९	४९	५०	५२	५६	६०	०	६	×
	मार्च/अप्रैल	२८	२९	३०	३१	अ.१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	×
सं० २०५१ वैशाख	तिथि	कृ.१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	३०
	वार	मं.	बु.	बृ.	शु.	श.	रवि.	चं.	मं.	बु.	बृ.	शु.	श.	रवि.	चं.	मं.
	घटी	४३	३७	३२	२७	२५	१९	१७	१६	१६	१८	२१	२५	२९	३४	४०
	नक्षत्र	स्वा.	वि.	अनु.	ज्ये.	मू.	पू.षा.	उ.षा.	श्र.	धनि.	शत.	पू.भा.	उ.भा.	रे.	अश्वि.	भ.
	घटी	२४	२०	१७	१३	११	९	९	१०	११	१५	१९	२४	३०	३७	४३
	अप्रैल/मई	२६	२७	२८	२९	३०	म.१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०
सं० २०५१ ज्येष्ठ	तिथि	कृ.१	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	११	१२	१३	१४	३०
	वार	बृ.	शु.	श.	रवि.	चं.	मं.	बु.	बृ.	शु.	श.	रवि.	चं.	मं.	बु.	बृ.
	घटी	३	५४	५०	४८	४७	४७	४९	५१	५५	६०	०	५	१०	१४	१८
	नक्षत्र	ज्ये.	मू.	पू.षा.	उ.षा.	श्र.	धनि.	शत.	पू.भा.	उ.षा.	रे.	अश्वि.	भ.	म.	कृ.	रो.
	घटी	३४	३२	३०	२९	३०	३१	३४	३८	४३	४९	५६	६०	२	९	१४
	मई/जून	२६	२७	२८	२९	३०	३१	जू.१	२	३	४	५	६	७	८	९

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

२३ जून १९९४तक) की तिथि, वार, घटी और नक्षत्र-घटी

पौ.शु.	ति.१	२	३	४	५	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५
वार	बु.	बृ.	शु.	श.	रवि.	चं.	मं.	बु.	बृ.	शु.	श.	रवि.	चं.	मं.	बु.	बृ.
घटी	५२	५२	५४	५७	६०	१	५	११	१६	२१	२६	२९	३१	३२	३२	३०
नक्षत्र	उ.पा.	श्र.	धनि.	शत.	पू.भा.	पू.भा.	उ.भा.	रे.	अश्वि.	भ.	कृ.	रो.	मृग.	आर्द्रा	पुन.	पुष्य
घटी	४९	५१	५४	५८	६०	३	९	१६	२२	२८	३४	३८	४२	४४	४५	४४
जनवरी	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७
मा.शु.	ति.१	२	३	४	५	६	७	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५
वार	शु.	श.	रवि.	चं.	मं.	बु.	बृ.	शु.	श.	रवि.	चं.	मं.	बु.	बृ.	शु.	श.
घटी	३३	३६	४०	४४	५०	५५	६०	०	४	८	१०	१०	१०	८	५	१
नक्षत्र	घ.	शत.	पू.भा.	उ.भा.	रे.	अश्वि.	भ.	कृ.	रो.	मृग.	मृग.	आ.	पुन.	पुष्य	श्ले.	मघा.
घटी	१३	१७	२२	२८	३४	४१	४७	५३	५७	६०	१	३	४	४	३	१
फरवरी	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६
फा.शु.	ति.१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	×
वार	रवि.	चं.	मं.	बु.	बृ.	शु.	श.	रवि.	चं.	मं.	बु.	बृ.	शु.	श.	रवि.	×
घटी	१७	२२	२७	३३	३७	४२	४५	४७	४७	४६	४४	४२	३८	३३	२७	×
नक्षत्र	उ.भा.	रे.	अश्वि.	अश्वि.	भ.	कृ.	रो.	मृग.	आर्द्रा	पुन.	पुष्य	श्ले.	म.	पू.फा.	उ.फा.	×
घटी	४७	५३	६०	०	६	१२	१७	२०	२३	२५	२५	२४	२२	१९	१६	×
मार्च	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	×
चै.शु.	ति.१	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१५	×
वार	चं.	मं.	बु.	बृ.	शु.	श.	रवि.	चं.	मं.	बु.	बृ.	शु.	श.	रवि.	चं.	×
घटी	६०	२	७	१२	१६	१९	२१	२१	२०	१८	१५	११	६	१	४९	×
नक्षत्र	रे.	अश्वि.	भ.	कृ.	रो.	मृग.	आर्द्रा	पुन.	पुष्य	श्ले.	मघा	पू.फा.	उ.फा.	ह.	चि.	×
घटी	११	१८	२४	३०	३६	४०	४३	४४	४५	४४	४२	४०	३६	३३	२८	×
अप्रैल	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	×
वै.शु.	ति.१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	×
वार	बु.	बृ.	शु.	श.	रवि.	चं.	मं.	बु.	बृ.	शु.	श.	रवि.	चं.	मं.	बु.	×
घटी	४४	४८	५१	५३	५३	५२	५०	४७	४३	३८	३३	२७	२१	१५	९	×
नक्षत्र	कृ.	रो.	मृग.	आर्द्रा	आर्द्रा	पुन.	पुष्य	श्ले.	मघा	पू.फा.	ह.	चि.	स्वा.	वि.	अनु.	×
घटी	५०	५५	५९	६०	२	४	५	५	३	१	५४	५०	४९	४१	३८	×
मई	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	×
ज्ये.शु.	ति.१	२	३	४	५	६	७	८	९	११	१२	१३	१४	१५	×	×
वार	शु.	श.	रवि.	चं.	मं.	बु.	बृ.	शु.	श.	रवि.	चं.	मं.	बु.	बृ.	×	×
घटी	२१	२३	२४	२३	२१	१७	१३	८	३	५१	४५	३९	३३	२८	×	×
नक्षत्र	मृ.	आर्द्रा	पुन.	पुष्य	श्ले.	मघा	पू.फा.	उ.फा.	ह.	चि.	स्वा.	वि.	ज्ये.	मू.	×	×
घटी	१९	२२	२४	२५	२५	२४	२१	१८	१५	११	७	२	५५	५२	×	×
जून	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	×	×

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0 In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

श्री चन्द्रेश्वर राय (हेड कांस्टेबल)
जारी पुलिस-चौकी (नैनी)
इलाहाबाद

सं० २०५१ आषाढ़से सं० २०५१ मार्गशीर्ष (२४ जून १९९४ से

सं० २०५१ आषाढ़	तिथि	कृ.१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	३०	×
	वार	शु.	श.	रवि.	चं.	मं.	बु.	बृ.	शु.	श.	रवि.	चं.	मं.	बु.	बृ.	शु.	×
	घटी	२३	२०	१८	१६	१६	१८	२०	२४	२८	३३	३८	४३	४७	५०	५२	×
	नक्षत्र	पू.षा.	उ.षा.	श्र.	धनि.	शत.	पू.भा.	उ.भा.	उ.भा.	रे.	अश्वि.	भ.	कृ.	रो.	मृग.	आर्द्रा	×
	घटी	५०	४९	४९	५१	५३	५७	६०	२	८	१४	२१	२७	३३	३७	४१	×
	जून/जुलाई	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०	जु.१	२	३	४	५	६	७	८	×
सं० २०५१ श्रावण	तिथि	कृ.१	२	३	४	५	६	७	८	८	९	१०	११	१२	१३	१४	३०
	वार	श.	रवि.	चं.	मं.	बु.	बृ.	शु.	श.	रवि.	चं.	मं.	बु.	बृ.	शु.	श.	रवि.
	घटी	४६	४५	४५	४६	४९	५२	५७	६०	२	७	११	१५	१८	२०	२१	२०
	नक्षत्र	उ.षा.	श्र.	धनि.	शत.	पू.भा.	उ.भा.	रे.	अश्वि.	भ.	कृ.	रो.	मृग.	आर्द्रा	आर्द्रा	पुन.	पुष्य
	घटी	९	९	१०	१२	१५	२०	२६	३२	३८	४५	५१	५६	६०	०	२	४
	जुलाई/अग.	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०	३१	अ.१	२	३	४	५	६	७
सं० २०५१ भाद्रपद	तिथि	कृ.१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	३०	×
	वार	चं.	मं.	बु.	बृ.	शु.	श.	रवि.	चं.	मं.	बु.	बृ.	शु.	श.	रवि.	चं.	×
	घटी	१४	१५	१८	२१	२६	३१	३६	४१	४५	४८	५०	५१	५०	४८	४५	×
	नक्षत्र	शत.	पू.भा.	उ.भा.	रे.	अश्वि.	भ.	कृ.	कृ.	रो.	मृग.	आर्द्रा	पुन.	पुष्य	श्लेषा	मघा	×
	घटी	३०	३३	३८	४३	४९	५६	६०	२	८	१३	१८	२१	२२	२३	२२	×
	अगस्त/सित.	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०	३१	सि.१	२	३	४	५	×
सं० २०५१ आश्विन	तिथि	कृ.१	२	३	४	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	३०
	वार	मं.	बु.	बृ.	शु.	श.	रवि.	चं.	मं.	बु.	बृ.	शु.	श.	रवि.	चं.	मं.	बु.
	घटी	४८	५५	५७	६०	२	७	१२	१६	१९	२१	२२	२२	२०	१७	१४	९
	नक्षत्र	उ.भा.	रे.	रे.	अश्वि.	भ.	कृ.	रो.	मृग.	आर्द्रा	पुन.	पुष्य	श्ले.	मघा	पू.फा.	उ.फा.	ह.
	घटी	५५	६०	०	६	१३	१९	२५	३१	३५	३९	४१	४१	४१	४०	३७	३४
	सित./अक्टू.	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०	अ.१	२	३	४	५
सं० २०५१ कार्तिक	तिथि	कृ.१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	३०	×
	वार	बृ.	शु.	श.	रवि.	चं.	मं.	बु.	बृ.	शु.	श.	रवि.	चं.	मं.	बु.	बृ.	×
	घटी	३०	३५	४०	४५	५०	५३	५५	५६	५६	५४	५१	४८	४३	३८	३५	×
	नक्षत्र	अ.	भ.	कृ.	रो.	मृग.	आर्द्रा	पुन.	पुष्य	श्ले.	श्ले.	मघा	उ.फा.	ह.	चि.	स्वा.	×
	घटी	२३	३०	३६	४३	४८	५३	५७	५९	६०	०	०	५७	५४	५०	४६	×
	अक्टू./नव.	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०	३१	न.१	२	३	×
सं० २०५१ मार्गशीर्ष	तिथि	कृ.१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	×	×
	वार	श.	रवि.	चं.	मं.	बु.	बृ.	शु.	श.	रवि.	चं.	मं.	बु.	बृ.	शु.	×	×
	घटी	१६	२१	२५	२९	३१	३२	३२	३०	२७	२४	१९	१४	८	२	×	×
	नक्षत्र	रो.	रो.	मृग.	आर्द्रा	पुन.	पुष्य	श्ले.	मघा	पू.फा.	उ.फा.	ह.	चि.	स्वा.	वि.	×	×
	घटी	६०	०	५	१०	१४	१७	१८	१९	१८	१५	१३	१०	६	२	×	×
	नव./दिस.	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०	दि.१	२	×	×

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

बीमा नहीं NOT INSURED

लगाये गये डाक टिकटों का मूल्य रु० 18 पै०
Amount of Stamps affixed Rs. P.

एक रजिस्ट्री* ..... प्राप्त किया
Received a Registered* ..... तारीख मोहर Date Stamp

पाने वाले का नाम स्वामी सच्चिदानन्द परस्वती अलकारी
Addressed to 109-D बेनीराम बाग़

पानेवाले अधिकारी के हस्ताक्षर
Signature of Receiving Office

क्रमांक No. 841

१४	१५	×	×
बृ.	शु.	×	×
२२	४९	×	×
बृ.	पू.भा.	×	×
१२	१०	×	×
११	२२	×	×
४	१५	×	×
ा.	रवि.	×	×

बीमा नहीं/NOT INSURED

लगाये गये डाक टिकटों का मूल्य रु० 9 पै०
Amount of stamps affixed Rs. P.

एक रजिस्ट्री* ..... प्राप्त किया
Received a Registered* ..... तारीख-मोहर Date-stamp

पाने वाले का नाम ..... 10 च-4 से
Addressed to 9 4 12

पाने वाले अधिकारी के हस्ताक्षर
Signature of Receiving Officer

क्रमांक/2069

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

गुरुकी →

वकुलहाँ - पादपूजा

श्री शिवपूजनशास्त्री २० रु०

श्री शिवनाथ पाराडेय - पादपूजा २५ + दिवाह २१ रु०

श्री नमोनारायण पाराडेय - ५० रुपये।

श्री रामसिंहासन पाराडेय - १०

१२६

अँजोर पुर - रमेश राय पुत्र श्री राजेन्द्र राय

श्री रामप्रवेश शास्त्री
B / 1299, इन्दिरा नगर कालोनी
लखनऊ

गान्धी भवन
शहीद स्मारक के निकट (लखनऊ)

श्री जगमोहन राय
(मोहन बिल्डा)
सा. ६/१८८
पटाड्या - रमकेपुर रोड
पो० सारनाथ
वाराणसी

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding: IKS-MoE-Grant

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection